



‘भरणा बली रे

अकला कलो रे

[गाधीजीकी नाब्राखालीकी धमयात्राकी डायरी]

मनुबहन गाधी

अनुवाक

रामनारायण डौधरी



नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद-१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

© नवजीवन ट्रस्ट, १९५७

पहली आवृत्ति ३०००, १९५७

पुनमुद्रण ५०००, १९६१

प्रस्तावना

सारा मानव-समाज एक और अखण्ड होत हुआ भी अनेक आघारों पर धुमके अलग अलग समूह संगठित होते ह। ये संगठित समूह विनाल मानव-समाजक अग हाते हैं फिर भी बहुत बार अुनके बीच परस्पर सघप हुआे विना नहीं रहता। मानव-समाजके दो समूहोंके बीच जब कभी याय अन्यायका प्रश्न खडा हुआ है तब अयायके निवारणके लिये दोनोंके बीच युप्रस अुप्र सघप हुआे है।

मानव-जातिके अलग अलग समूह अयायके निवारणके लिये हिंसाके अुपाय आजमाते आये हैं। परन्तु अनुभव यह हुआ कि हिंसासे काजी अन्याय दूर नहीं होता, दूर होनेका भासमात्र कुछ समयके लिये होना है और अन्तमें दूसरे अनेक रूपमें अयाय जारी रहता है या नये रूपमें फूट पडता है।

मनुष्यकी रचना ही कुछ असी है कि मानव-समाजके विभिन्न समूहके बीच मतभेद श्रद्धाभेद और विरोधका रहना अनिवाय-सा है। अिन भेदा या विरोधाका शान्त किये विना मानव-समाजका जीवन सुख-सुनसे बीत तही सक्ता। बल्कि यह कहना चाहिये कि भेदा या विरोधाको शान्त करना भी मनुष्यका स्वभाव है। परन्तु अयायको दूर करने या भेदों अथवा विगधाका शान्त करनेके लिये यदि हिंसाका ही अुपाय काममें लिया जाय, तो अुसस भेद या विरोध शान्त नहीं होते और न अन्यायका ही निवारण होता है।

जिसलिये मानव-जातिके सामने प्रश्न यह अुपस्थित हुआ है कि भेद या विरोधके शान्तके लिये और अयायके निवारणके लिये हिंसाके अुपायके बन्धेमें सचमुच काम दे सके असा कोजी दूसरा अुपाय है या नहीं ?

जिसमें शका नहीं रि ब्यक्ति और ब्यक्तिके बीच अथवा मानवोंके छोटे-छाटे समूहके बीच विरोधा या भेदोंके कारण अुत्पन्न होनेवाले सघपोंको शान्त करनेके लिये हिंसाके बन्धे अहिंसा या प्रेमका अुपाय सक्ता

पूर्वक आजमानके प्रयाग दुनियामें होते आय ह। परन्तु मानव-जातिके अग्र-रूप बड़-बड़ समूहाके बीचका विरोध शान्त करनेके लिये असे प्रयोग बहुत अधिक नहीं हुआ ह। गांधीजीन भदा या विरोधाको शांत करन और अयायका निवारण करनेके खातिर अहिंसा अथवा प्रमके अुपायको व्यावहारिक रूप देनेके लिये जीवनभर अखंड साधना की। हिंदू समाजके अन्तगत विरोधाका शमन करनेके लिये और अग्रज जनता तथा भारतीय जनताके बीचके अन्यायमूलक सवधमें निहित भदाको शान्त करनेके लिये गांधीजीन अपन जीवन द्वारा जिस अुपायका सफल प्रयोग कर दिलाया। असा कहा जा सकता है कि मानव-जातिकी मूल अकता सिद्ध करनेके लिये जो प्रम आवश्यक है उस प्रमके द्वारा विरोध शान्त करन अथवा अयाय दूर करनेका माग मानव-समाजको बताना ही अुनके जीवनका मुख्य काय था।

यह काय करते करते अुनके जीवनके अंतिम भागमें भारतीय प्रजाके दा अगा—हिंदू और मुस्लिम समाज—के बीच दीधकालसे चले आय विरोधन अुग्र रूप धारण किया और अुसका भयकर परिचय सब प्रथम यगालमें और अुसके पूर्वी कोनमें मिला।

गांधीजीने अपन जीवन-कायके प्रति वफादार रहकर जिस विरोधसे अुत्पन्न हुआ भयकर परिस्थितिका दूर करनेके लिये अहिंसक अर्थात् प्रमका अुपाय आजमानका बीडा अुठाया।

अुनके जीवनका यह अंतिम प्रयाग कितना और कसा सफल हुआ, अिसकी चर्चा यहां जरूरी नहीं है। परन्तु अहिंसाकी काय-पद्धतिके भावी विकासका दृष्टिस अिस प्रयागका बहुत बडा महत्त्व है। अत अिस प्रयागके निनामें गांधीजी जसा जीवन वितात थ और जो महान पुण्याथ करते थ अुमका प्रतिनिजकी डायरी भावी पीणियाके लिये सुरक्षित रहे अिस बातका स्वयं गांधीजी भी महत्त्वपूर्ण मानते थ।

अिस कारणसे अुन्हान आरम्भसे ही अपनी सवाक लिये और अपन भारी कामकाजमें मदद पहचानके लिये थी मनुबहन गांधीको अपन साथ रारा था। गांधीजीन नाआगवाला और अय स्थानाकी अपनी निचर्याकी डायरी था मनुबहनसे आग्रहपूर्वक रजवाअ थी। अिस पुस्तकमें नोआ ताआका अंकी पत्न यात्राका विवरण था मनुबहनकी डायरीके रूपमें रूट किया गया है।

अस टायरीमें गाधीजीकी दिनचर्या, लोगसे और ब्यक्तियासे काम लेनेका अनुका तरीका और सबसे बढकर तो अपने कामके लिअे आवश्यक मनुष्याको तालीम देनेकी अनुकी वखके समान कठोर होत हुअे भी फूलके समान कोमल पद्धति — जसे अनेक रोचक अग ह। परंतु जीवनके अतिम भागमें गाधीजीने अपने स्वीकृत मिशनको सफल बनानेके लिअे अकले हाया जा प्रयोग किया था अुसक विस्तृत विवरणका मानव-जातिके भावी विकासकी दृष्टिसे बहुत बडा महत्व है। अहिंसाकी काय-पद्धतिके सफर बनानेका प्रयाग करनेके अिच्छुक सब लोग जिन विवरणको अितनी सावधानी और अितनी चिन्तासे सुरक्षित रखनेवाली थी मनुबहन गाधीके सदा अणी रहगे।*

बम्बयी ४-१-'५४

मोरारजी देसायी

* मूल गुजराती सस्करणकी प्रस्तावना ।

अकलल कलल रल

[गलघीलकल नलअखललीकल घमयलतुरलकल डलयरी]

वह घन्य दिवस

अक्तूबर १९४६ में मुझे पारिवारिक कामसे अुदयपुर जाना पडा। अुत्तने समयमें देगमें नये-नये परिवर्तन हो गये। बगाममें भयकर दगे छिड गये। अिमकी प्रतिक्रिया बिहारमें हुआ और बापूजीका बगाल जाना पडा। अिस बीच अुन्हाने मुझे अुदयपुर यह पत्र लिखा

२३-१०-४६

चि० मनुदी

तुम्हारा अुदयपुरका पत्र कल मिला। अब तो मानता हू कि म अेक-दो दिनमें बगाल जाअूगा। अिससे पहले तुम आ गयी होती तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अब तुम्ह जैसा ठीक लगे वसा करना, अिसस तुम सुखी हाओ और सवा करने लगा अुसीमें मुझे सताप है। अुमियाका सन्ताप हो तब तक वहीं रहना। तुम्हारा स्वास्थ्य वहा अच्छा हो जाना चाहिये। वहाके जल्बापुकी तारीफ की जाती है।

बापूके आगीवादि

कलकत्ता चले जानेके बाद मैं कटा हू अिमका ठीक पता न होनेसे बापूजीने मेरे पिताजीका पत्र लिखा

कलकत्ता

४-११-४६

चि० जयमुखलाल,

चि० मनुका पत्र मिला है। अुसीके साथ तुम्हारा अुप्त लिखा हुआ पत्र भी मिला। अुसकी माग पर ये दोना लौटा रहा हू। मनुदी वहा पहुची होगी या नहीं, अिसका यकीन न होनेसे तुम्हीका लिख रहा हू। अुने अलग लिखनेका समय नहीं है। मट पत्र लिखनेका भी नहीं है असा कह सकता हू। परन्तु लिखना पड रहा है।

अंकला चलो रे

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे डर है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके निस्सेसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लगाका मानस न सुधरे तो मैं अक्सका माशी नहीं रह सकूंगा। अभी भी मैं अध-अपवास जसा ही कर रहा हूँ। जिसका मुख्य कारण शरीर है। परन्तु बिहार मुझ अनगनकी आर ले जायगा। परसा नोआखाली जाऊंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूँ। लवा तो आज यहा आनके बाट ही लिखा है। जिसलिअ जिस समय मनुवा स्थान मरे पास ही हा सकता है। लेकिन अब तो जिस असभव मानता हूँ। भगवान करे वह ब्याधिमुक्त हो और मुखी रहे। और ता जो कुछ होगा वह अवचारमें दसोगे।

बापूके आशीर्वात्
 १ जिसम्बरको मैं महुवा पहुचा तब अपन पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मन पत्र और असी रात रेडिया द्वारा खबर मिली कि बापूजान अपन सभी साधियाको अलग अलग गावामें रख दिया है। गाधीजीके पत्रमें यह पत्रकर कि जिस समय मनुका स्थान मरे पास ही हो सकता है मरा हृदय घड़ी भरके लिखे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझ अपनी निजी सेवाक जिअ रखें तो? परन्तु गायन अब यह असभव है। अगर पानक साधियाको भी अलग कर दिया है तो जितनी दूरम मुझ मला क्या बुलायेंगे?

जिस विचारमें नाम नहीं आती। पिताजीको जगाया। अन्त पूछा। ये थोड़ा तुम जिवा ता मही सेवा करनकी तुम्हारी सच्ची भावना होगी ता जरूर स्पष्ट होगी। अन्त दालसे मुझ और प्रोत्साहन मिला और रातके बड़ बड़ मन बापूको पत्र लिखा। असमें स्पष्ट लिखा कि यदि मुझ किसी गावमें बगनका जिराग हा तो मुझ वहा नहा आना है असा ही जिराग हा तब तो यहा बटकर जितना बनता है अतना काम करती ही हूँ। परन्तु आर अपनी ब्यक्तिगत सेवा करन दनको गत पर आन दें ता हा मेरी जिअ वहा आनकी है। मरा प्रस्ताव आपको मजूर हा तो मुझ तारसे खबर दें ताकि आपका पत्रक यात्रा शुरू हानम पहल म वहां पहुच सकूँ। मैं बचन करता हूँ कि जिसमें बदन बडा मन्तरा अगनके जिअ नी मैं तयार रहूगी।

कौन जाने रातके डेढ बजे किम गुम भुहानमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ। ता० ११-१२-४६ की गामका दूरसे तारवालेको आता देखकर मनमें अत्यंत हृषकी भावना दौड गयी। तार खोलने पर बापूजीका ही निबला। तार जिस प्रकार था

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me
Wire arrival Khadi Pratisthan, College Square, Calcutta

Bapu

यह तार पडते ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता पिताके आशीर्वादका ही यह फल है। सबथा असंभव बातके संभव हा जाने पर जैसी भावनाका अनुभव होता है वसी ही भावना मने अनुभव की और शीघ्रके अहर्निश अपकारसे हृदय धयता अनुभव करने लगा।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मजूर करायी। अिम वीच मने बापूजीको जो पत्र लिखा था, अुमे मेरे नोआखाली पहुचने पर अुन्हाने 'जीवनभर संभाल रखने' का आशेण देकर मुये वापस दे दिया। अुम पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था, अिमीलिअे गायद संभालकर रखनेको कहा होगा। बापूजीको लिखे गये मेरे विसी अय पत्रको अिस तरह संभालकर रखनेको अुन्हाने कभी नहीं कहा। मेरा वह लिखित निश्चय अिस प्रकार था

महुवा,

१२-१२-४६

परमपूज्य बापूजी सेवामें

आपका तार बल गामको मिला। मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जानकर बहुत ही आनन्द हुआ। पू० भाजी (मेरे पिताजी) ने भावनगरमे तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मागी है। वह मित्र जायगी और जल्दीसे जल्दी २२-२३ तारीख

अँकला चलो रे

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे डर है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके किस्सेसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लोगका मानस न सुधरे तो म अुसका साथी नहीं रह सकूंगा। अभी भी म अघ-अुपवास जसा ही कर रहा हूँ। जिसका मुख्य कारण गरीर है। परन्तु बिहार मुझे अनशनकी ओर ले जायगा। परसा नोआखाली जाऊंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूँ। ल्वा तो आज यहा आनके बाद ही लिखा है। जिसलिअे अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है। लेकिन अब ती अिसे असभव मानता हूँ। भगवान करे वह व्याधिमुक्त हो और सुखी रहे। और तो जो कुछ होगा वह अखबारमें दखोग।

बापूके आशीर्वाँ
 १ तिसम्बरको म महुवा पहुची तब अपने पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मन पत्र और अुसी रात रेडिया द्वारा खबर मिली कि बापूजीने अपन सभी साधियाको अलग अलग गावामें रख दिया है। गाधीजीके पत्रमें यह पत्रकर कि अिस समय मनुका स्थान मरे पास ही हो सकता है मरा हून्य घडी भरके लिअे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझ अपनी निजी सेवाक लिअ रखें ता? परन्तु गायद अब यह असभव है। अगर पामके साधियाको भी अलग कर दिया है ता अितनी दूरसे मुझ भला क्या बुलायेंग?

गिम विचारमें नाद नहीं आजी। पिताजीको जगाया। अुनस पूछा। ये थोले तुम लिखो ता सही सवा करनकी सुम्हारी सच्ची भावना होगी ता जरूर मफल हागी। अुनक शब्दासे मुप और प्रोत्साहन मिला और रातक बड बज मन बापूको पत्र लिखा। अुममें स्पष्ट लिखा कि यन्ि मुझ किसी गावमें बगानका अिराग हा तो मुझ वहा नहा आना है असा ही अिराग हो तय तो यहा बठकर जितना बनता है अतना काम करती ही हूँ। परन्तु आप अपनी ध्यस्तिगत सेवा करन दनकी गत पर आन दें तो ही मेरी अिच्छा बहाँ आनकी है। मेरा प्रस्ताव आपको मजूर हा तो मुप तारसे खबर दें ताकि आपकी पत्रल यात्रा गुरू हानस पट्ट म वहा पहुच मकू। म वचन बगरा।

कौन जाने रातके डेढ़ बजे किस घुम मुहूर्तमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ। ता० ११-१२-४६ की गामका दूरस तारवालेका आता देखकर मनमें अत्यंत हृषकी भावना दौड़ गयी। तार खोलने पर बापूजीका ही निकला। तार जिस प्रकार था

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me
Wire arrival Khadi Pratisthan, College Square, Calcutta

Bapu

यह तार पढ़ने ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता पिताके आशीर्वादिका ही यह फल है। सचथा असम्भव बातके सम्भव हा जाने पर जसी भावनाका अनुभव होता है वैसी ही भावना मने अनुभव की, और श्रीश्वरके अहर्निग उपकारसे हृदय धयता अनुभव करने लगा।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मजूर करायी। जिस बीच मने बापूजीको जो पत्र लिखा था, उसे मरे नौआखाली पहुचने पर बुन्हाने जीवनभर सभाल रखने का आदेश दकर मुझे वापस दे दिया। उस पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था जिमीलिअे शायद सभालकर रखनेको कहा होगा। बापूजीको लिखे गये मेरे किसी अन्य पत्रको जिस तरह सभालकर रखनेको बुन्होने कभी नही कहा। मेरा वह लिखित निश्चय जिस प्रकार था

महुवा,

१२-१२-४६

परमपूज्य बापूकी सेवामें

आपका तार बल गामको मिला। मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जानकर बहुत ही आनन्द हुआ। पू० भात्री (मेरे पिताजी) ने भावनगरसे तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मागी है। वह मिल जायगी और जल्दीसे जल्दी २२-२३ तारीख

अकेला चलो दे

तब व मुझ वहा छोड़ जायग। वहा पहुचनसे पहले खादी प्रतिष्ठानको तारसे सूचना कर देंग।

आपको अितना लम्बा तार देनेकी जरूरत तो नहीं थी। क्योंकि आपके अस प्रवासमें अकेले रहना पसन्द करन पर भी मन और पू० भागीन भीमान्तरीसे और वहा आनके खतरेका पूरी तरह विचार करके ही अस गत पर वहा आनका निणय किया था कि आप मुझ अपनी निजी सेवा करन देना पसन्द करेगे। यह ब्योरा अस पत्रमें लिखा ही था। असलिये सिफ आनकी ही अनुमति दे दी होती तो काम चल जाता।

आज मुझ आपका अक वाक्य याद आता है। अक बार जाहेता कातावहन आदि मेरी सभी सहेलिया जानवाली थी तब मने कह था वापू अत तो म अकेली हो गयी। तब आपन मुझसे कहा था तुम और म अकेले ही रहेंग। म जीता हू तब तक तुम अकेली कमी हो? और फिर आपने गीताके आपूयमाणम् श्लोकका अय समझाया था। वह दिन सचमुच आ गया। म तो श्रीस्वरसे प्रायना करती हू कि वह मुय अन्त तक प्रामाणिकतासे आपकी सेवा करनकी शक्ति दे।

आपका अक पत्र (पूज्य भाआने नामका) मिला है। म तो मूर्सा हू ही। असमें शका कहा है? समझदार होती तो असा होता ही क्या? परन्तु मुझ स्यना है कि श्रीस्वर मूर्साका भी बली होना है। अिम तरह मरे लाडमरे नाम ता पड! परन्तु जो हुआ सो हुआ। आपका मुझ समपत्कार बनाना हागा। अब तो आपकी सेवाका लाभ मिल्गा अिम आगामें सब कुछ भूट गयी हू। सेवा करत करते बोओ छरा भी भाव दगा ता सगीम वह दुख सह लूगी। मेरा सपना है कि मरे आनम पहले आपकी पल्ल याना शुरू नहीं होगी। युगमे पहले पन्च जानकी म आगा रखती हू। अधिक तो क्या लिखू? आपकी सचायन अच्छी हागी।

आपकी पुत्री मनुडीने
दण्डवत् प्रणाम

हम ता० १५-१२-४६ के दिन कलकत्तेके लिये रवाना हुये। कलकत्तेसे नाआखाली जानेके लिये हमारे साथ खादी प्रतिष्ठानसे एक मागदगाव आये। कलकत्तेसे काजीरखिल, जहा गांधी छावनीका मुख्य केन्द्र था, पहुंचनेमें २४ घंटे लगे। और सफर भी बहुत ही कठिन था। अन्तमें ता० १९-१२-४६ को दोपहरके काजी तीन बजे हम श्रीरामपुर पहुंचे, जहा बापूजी ठहरे हुये थे। यह घण्टा दिवस जीवनके जेक सुनहले दिनके रूपमें हृदयमें अंकित हा गया।

२

आत्म-समर्पणकी दीक्षा

श्रीरामपुर,

१९-१२-४६, गुस्वार

हम जब दोपहरके तीन बजेके करीब बापूजीके पास पहुंचे, तब बापूजी जेक तह्त पर बठे अकेले ही चरवा चला रह थे और आसपास आजी० अंत० अ० (आजाद हिन्द फौज) के कुछ लोग तथा बनल जीवनसिंहजी चगरा बातें करत हुये बापूजीसे प्रश्न पूछ रहे थे। वे सब बापूजीके साथ जिस काममें गरीब होना चाहते थे। सब बातोंमें तल्लीन थे।

हमने अंस थोपडीमें प्रवेश किया। थोपडीकी देहलीमे बापूजीकी बैठक काजी चार फुट दूर थी। म वहासे सीधी बापूजीको प्रणाम करने दौडी। बापूजीने एक जारकी धप लगायी, कान पकडा अुनकी प्रेमपूण चपत गाल पर पडी और गाल खींचकर बोले, जाखिर आ पहुंची! बनल साहबसे कहने लगे, यह लडकी यहा मरनेकी तयारी करके आयी है जिसलिये आप लागोंके दो मिनट ले लिये! अब जाप बात कहिये।”

पाच-सात मिनटमें वे सब चले गये। बादमें बापूजीने मेरे स्वास्थ्यके समाचार पूछे। मने पूछा आपको कसा लगता है? 'जैसीकी तसी है, परन्तु लगता है वजन बढा होगा।”

अिकके बाद मेरे पिताजीसे बोले, अब चले थे? रास्तेमें भीड तो नही थी? मनुडीका पत्र मिला था। यह तिल्ली आयी थी तब भी अपने

अंकला चलो रे

पास रहनका मन खूब समझाया था। मगर अिसकी बिच्छा बुमियाके पास जानेकी हुअी। मेरे नाम अब पत्र लिखकर छाड गअी। वह मुझे बहुत अच्छा लगा था। मने बहुत कुछ अिस बारेमें मनुको लिखा भी था। वास्तव तो बगाल आना हो गया। यहां तो करना या मरना है। अिसके लिअ मनुकी तयारी होगी अिसका मुझे विश्वास नहीं था। परन्तु अितनमें मनुका पत्र मुझे मिला। अुस पत्रका तारसे जवाब मागा था अिसलिअे तार दिया। यहां अिसकी परीक्षा हागी। मन अिस हिंदू मुस्लिम-अेकताको यज्ञ कहा है। अिस यज्ञमें जरा भी मल हा तो काम नहीं चल सकता। अिसलिअे मनुके मनमें जरा भी मल होगा ता अिसका बुरा हाल हागा। यह सब तुम समय लो अिससे अब भी वापस जाना हो तो यह तुम्हारे साथ चली जाय। बादमें बुरा हाल होन पर जाय अुसके बजाय अभी लौट जाना ज्याण अच्छा है।

अुपरकी बात कहनके बाद मेरे सामन देखकर बापूजीन कहा जयमुखलालको मन जो कहा वह अच्छी तरह समयमें न आया हो तो अिनसे समझ लेना। यहां तुम्हारी कडी कसौटी होगी।

यह बात यही रुक गअी। अितनमें कुलरजनबाब लौट आय। अये हा रहा था अिसलिअे बापूजीने भाअीका (अर्थात् मेरे पिताजीको) जानके लि कहा। मरा बिस्तर आया नहीं था। मुअ तो बापूजीन यही रहनेको कहा क्वाकि म अुनके पास रहनक लिअ ही आअी थी। भाअीसे बोले यह तो यज्ञ चल रहा है। म तुम्ह यहां सोने या खानकी अिजाअत नहीं दे सकता। अिसलिअे तुम काजीरखिल लौट जाओ। मनुका बिछोना भज देना। मेरा बिस्तर नहीं आया था अिसलिअे बापूजीन अेक गतरजी निवाल दी। साड नौ बज वे सोय।

रातको ठीक १२॥ बज मेरे सिर पर हाथ फरकर बापूजीन मुअ जगाया। मनुडी जागती हो क्वा? मुअ तुम्हारे साथ बातें करनी ह। तुम अपना धम अच्छी तरह समझ लो और जयमुखलालसे बातें करके जो फसला करना हो झट कर ला क्वाकि अुस भी ज्यादा छट्टी नहीं है। *

* यह बात विस्तारस नवजीवन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित बापू — मेरी मा के दूसरे प्रकरणमें मिलेगी।

कम शामका म यहा आयी हू। तबमे बापूजीकी जा वार्ते मने सुनी
 नून परसे यह वणन करना सबथा असभव है कि यहा अुनकी क्या स्थिति है,
 सा अदभुत काय अुह करना है और किस प्रकारकी कठिनाअियाका
 तमना वे कर रहे ह। बापूजाका स्थिति पर लागू होनेवाला अखा भगतका
 यह भजन बडा मार्मिक है

अकल कला खेलत नर नानी।
 जसे हि नाव हिरे फिरे दसा दिश
 ध्रुवतारे पर रहत निशानी। अकल०
 चलन बलन अवनी पर बाकी,
 मनकी सुरत अकाश ठहरानी,
 तत्त्व-समाप्त भया है स्वततर,
 जसे हिम हावत है पानी। अकल०
 छूपी आदि अत नही पाया
 आयी न सकत जहा मन बानी,
 ता घर स्थिति भआ है जिनकी
 कहि न जात असी अकथ कहानी। अकल०
 अजब खेल अदभुत अनुपम है,
 जाकू है पहिचान पुरानी, •
 गगन हि गेव भया नर बोले,
 अेहि अन्वा जानत कोअी नानी। अकल०

श्रीरामपुर

२०-१२-४६ शुक्रवार

फिर बापूजीने साटे तीन बजे मुझे प्रायनाके लिये अुठाया। अुससे
 पहले बापूजी जा गये थे। अुस दिनकी अपनी डायरीमें बापूजीने लिखा

'आज रातको १२-३० बजे अुठा मनुका १२-४५ को जगाया।
 अुसके घमके बारेमें सय समझाया। जयमुखलालसे वार्ते करनेका भा
 कहा। अुसे निश्चय बदलना हो तो अभी बल्ल सकती है, परन्तु
 यनमें कूद पडनके बाद सभी खतरे अुठाने होंगे। वह टससे मस नही
 हूअी। जयमुखलालसे मेरी खातिर बात करेगी। परन्तु जयमुखलालने

अबता चलो रे

तो सब कुछ अुगी पर छा लिया है और छोड़गा। अिग प्रकार बातामें सवा बज गया और फिर कुछ दर गावर तान बने प्रायनाख लिखे मुठा।'

अितनी बात बापूजीन अपन हाथगे अपनी टायरीमें लिनी और मेरे लिअ जो कुछ लिखा गया हो अुसकी ताल करके मेरे पिताजीको भज दनके लिअ कहा। अिसमें साढ़ तीन बज गये। प्रायना हुअी। प्रायनामें आजसे दोना समय भजन और गीतापाठ करनका मुअ आयेग लिया। प्रायनामें निमलबावू और परपुरामजी थ।

प्रायनाके बाद बापूजीने मुअ फिर रातकी बाता पर विचार करनका कहा। मने अपगा निश्चय कह सुनाया जहा आप वहां म मेरी यह अग गत आपको मजूर हो तो फिर म किनी भी परीभाका और आपकी किग भी गतका स्वागत करुगी। भाअीन तो मुअ बचपनस ही सपूण स्वतंत्रता दे रखी है। मुअ पर कभी दावाकी नजर नहीं रती। अिसलिअ आपको अुनकी अिच्छाकी अपेशा मेरी अिच्छा अधिक समझानी होगी।

म बापूजीके लिअे गरम पानी करत गअी अुस बीच अुन्हान मेरे नाम चिटठी लिखी

चि० मनुडी

अपना वचन पालन करना। मुअसे अब भी विचार छिपाना मत। जो बात पूछू अुसका बिल्कुल सच्चा अुत्तर देना। आज मने जो वदम अुठाया वह खूब विचारपूर्वक अुठाया था। अुमका तुम्हारे मन पर जा असर हुआ हो वह मुय लिख देना। म तो अपन सब विचार तुम्ह बताअुगा ही परन्तु अितना वचन मुअ अभी तुम्हारी आरस चाहिये। यह हृदयमें अकित करके रख लेना कि म जो कुछ कहूगा या चाहूगा अुसमें तुम्हारा भला ही मेरे सामन होगा।

बापू

(मन कहा मुअ जो भी बठिनाअी या कष्ट सहन करने पड़गे वे मरते दम तक सहूगी। मुचे आप पर सपूण अ्रद्धा और विस्वास है। आप जैसे-जैसे नोआखालीका भयकर चिन मरे सामन रखते जाते ह वसे वसे मेरा मन दृढ़ होता जा रहा है। अिसलिअ कपानी

लिखा) यदि असा ही हो ता मुझे कुछ पूछनेको नहीं रह-
जायगा, केवल समझनाका हा रहगा। तुम्हारी श्रद्धा सबमुच ही यहा
तक पहुच गयी हो ता तुम सुरक्षित हो। तुम जिस महायज्ञमें पूरा
भाग अदा करोगी — मूख हा तो भी। जिसे सभालकर रखना।
समयमें न आये सा पूछ लेना।

वापू

साढे सात बजे वापूजी घूमने निकले। घूमते घूमते बोले ' यह न
समझना कि मैंने तुम्हें यहा केवल अपनी सेवाके लिये ही बुलाया है। मेरी
सेवा तो तुम करोगी ही। परन्तु जहा छोटीसी लडकी या बड स्त्री भी
सुरक्षित नहीं, वहा तुम्हें, १६-१७ वषकी जवान लडकीका मैंने अपने पास
रखा है। यदि फोआ गुण्डा तुम्हे तग करे और तुम अुसका सामना
बहादुरीके साथ कर सको अथवा सामना करते करते मर जाओ तो
मैं खुशीस नाचूगा। तुम्हें बुलानेमें मेरा यह अेक प्रयोग भी है।”

नाआखालीमें कही-कही बासके पुल पार करना पडते हैं। वापूजी जिस
प्रदशकी यात्रा करने जा रहे हैं, वहा अमे पुल पार करना पडेंगे। जिस
लिये वे अुन पर चलनेकी आत्त डाल रह हैं। अमे पुला पर वहाक
बालक तो आसानीसे चल सकत हैं, परन्तु अनजान आदमी अगर चल न
सके तो नीचे खात्रीमें ही गिरता है।

घूमकर आनेक बाद मने वापूके पर धोये। मालिग की। मालिगमें
वापूजी आघा घटा सा गये थे। नहा लेनेके बाद दस बजे जब वापूजी
भोजन कर रहे थे अुस समय मेर पिताजी अतिम बिदा लेने आये। वापूने
कहा “ मनुडी ता टसमे मस नहीं होता। मने अुससे बहुत बातें की। अब
तुम निश्चिन्त होकर जाओ। जिसकी चिन्ता न करना।”

पिताजीने कहा ' अब तो आप जिसे जब तक चाहें रख सकने हैं।
और आपके पाम रह ता फिर मुझे चिन्ता ही क्या हो सकती है ? '

वापू — मेरी धारणा है कि जब तब म जिन्दा हू तब तक अुसे जानेको
नहीं कहूंगा। यह तग आ जाय तो भले जा सकती है। परन्तु मेरा तो
अभयदान है कि यह चाहे तो मुझे छोड सकती है, पर मैं जिसे नहीं छोडूंगा,
सिवाय जिसके कि दानामें से कोअी मर जाय। मरे तो भी क्या ? शरीर अलग

हागे आत्मा तो अमर है। मरी यह प्रबल अच्छा है कि अंग लडकी जो छिपे हुआ गुण भने देख ह बुद्ध प्रवागमें लाजू।

मेरे पिताजी साठ ग्यारह बज महुवा जानके लिअ रवाना हुआ। मरे सायका तमाम फालतू सामान अउनके साथ वापस भज देनेकी सूचना वापूजीने की। तीन बज कातते हुआ अन्हान मेरी डायरी सुनानको कहा। मन कहा अपनी ही डायरी म नही सुनाऊगी।

वापून कहा हमेगा अपनी भूल स्वय ही स्वीकार करनमें जितनी श्रेष्ठता है अतनी कागज पर लिखकर स्वीकार करनमें या किसी औरके मार पत स्वीकार करनमें नही। असलिअ तुम पढो। अुमसे मुअ पता लगगा कि तुम मेरी बाताको कितना समझी हो। बादमें म अुस पर अपनी सही कर दूगा। असस पढनमें मेरा समय नही बिगडगा आखानी गक्ति भी बच जायगी। और तुम्हे तो अब मेरी जो भी सवा हो सो करनी ही है। असलिअ यह भी अक सेवा ही है असा मानकर मेरे सामन पढ जाओ। मन अपनी कल्की डायरी सुनाओ। वापूजीने कातकर अुसके नीचे सही की।

चार बज कुछ पत्र लिखवाय और कहा महादेव और प्रभासे मन जो नाम लिया है वही तुमसे लेना है।

गामकी प्राथनाके बाद म अकेली बठकर वापूजीने दिन भर जो गभीर बातें कही थी अुन पर गातिसे विचार कर रही थी और सोच रही थी कि म अंग बडी जिम्मेदारीको पूरा कर सकूगी या नही?

वापू कहने लग तुम अितनी गभीर क्या हो? अपनी मासे कुछ भी छिपाओगी तो पाप लगगा। भले अच्छा विचार आपे या बुरा सब मुझे कह दना।

मन कहा आज आपन को जो पत्र लिखाय अुनमें अस बात पर प्रकाग डाला है कि आप मुअसे किम प्रकार काम रनकी आगा रलने ह और मुअ पर कसी जिम्मेदारिया ह। वे सब आगायें म पूरी कर सकूगी और अन जिम्मेदारियाको निवाह सकूगी या नही अिमी पर अकान्तमें बठी विचार कर रही हू।

वापू — असकी चिन्ता हम किस लिअ कर? चिन्ता करनसे काम नही चलेगा। हा हमारी भावना गढ हो तो सफरता जरूर मिलगी। हम सब

काम बीश्वरकी ही सौंपकर क्या न करे? अुससे हार्दिक प्रायना कर तो अपने-आप वह शक्ति हममें आ ही जायगी। रामनाम रटें। राम पर पूरा भरासा करके यह काम अुसे सौंप दो। छोटा बच्चा भूख लगने पर रा देता है तब मा अुस दूध पिलानी है। परन्तु अपनी भूख मिटानेकी चिन्ता अुस बालकको नहा होती, माका होनी है। वस ही तुम कामकी चिन्ताका भार मन पर रखोगी ता निभ ही नहीं सकोगी। यह भार मुच पर और बीश्वर पर छोडकर वह जो भी शक्ति द अुसक अनुसार काम करती रहो।

गामकी साबजनिक प्रायनामें सबके सामने भजन गानेका पहला ही अवसर हानेसे म गाते समय कुछ वाप रही थी। अिसका भी बापूजीने अच्छी तरह खयाल रखा और मुचस कहा 'प्रायना क्वल मुहस बाल जाने या गानेके लिये नहीं है। प्रायनामें सच्ची भावना अुत्पन्न हा तो ही सुननेवाला पर अुसका भव्य प्रभाव पडता है। दो-चार दिन करागी तो सकाच जाता रहेगा।'

रातका साडे आठ बजे बापूजीने बगला बणमाला लिखी। मैंने डाकमें आये पत्र और अखबार पडकर सुनाये। आजस बापूजीका सभी काम मने सभाल लिया है।

बीश्वरकी मुझ पर कितनी कृपा है? पूज्य वाकी भी अिस प्रकार अेकान्तमें सेवा करनेका मुने अवसर मिला था। और आज दुनियाके अिस महापुरुषकी घोर तपश्चर्यामें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सत्यकी ही जय है यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रही हू। बीश्वरसे प्रायना करती हू कि हे बीश्वर, तुझ पर मेरी असी थड्डा बनी रहने दे और मुझे मिल रही प्रसादीको पचाने योग्य बना।

(बापू श्रीरामपुर २०-१२-'४६)

(बापूजीने रातको साडे नौ बजे मेरी आजकी डायरी पत्रकर तुरत ही जूपर लिखे अनुसार हस्ताक्षर कर दिये।)

काम सभाल लिया

श्रीरामपुर,

२१-१२-४६ गनिवार

साढ़ तीन बजे प्रायनासे कुछ समय पहले बापूजीने कुछ पत्र जो मुझसे बल लिखवाय थ हस्ताक्षर किये। अितनमें प्रायनाका समय हो गया।

प्रायनाके बाद बापूजीन गरम पानी और गह्व लेकर निमल्दाने प्रायना प्रवचनकी जो रिपोर्ट तयार की थी अुस सुधारा। सारा समय जिसमें चला गया। सात बज मोसबीका रस पीकर घूमन निकले। आज बहुत दूर तक घूमने गय थे। बापूजीके साथ म तथा प्रेस रिपोटर थ। लगनग ४० मिनट तक घूमे। बीचमें अुन्होन मेरी गीताकी पन्नाओके बारेमें पूछा। मन वहा जल्स छूटनेके बाद ठीक तरहसे मने गीताका अध्ययन नहा किया। अपने आप पूठे सच्चे अय जरूर करती रही। दूसरासे गीताका अय न करानेमें मेरी यह अिच्छा थी कि दूसरे लोग अय किसी विषयमें भले मेरे गुरु वनें परन्तु मेरे गीताके अध्ययनके गुरु तो आप ही रहे। बापूजीको मरी अिस बातसे दुःख हुआ। अुन्हान मुझ समझाया

अिस अिच्छामें तुम्हारा झूठा मोह है। अच्छी बात सीखनम हजारा क्या लावा गुरु भी हम क्यों न बनायें? और जब छोटा बच्चा हो तो अुससे भी सीखें। अच्छी बात किसीसे सीखनमें गम काहे की? परन्तु जब जाग तभी सवेरा मानना चाहिय। अब हम आजसे ही गीताका अध्ययन गर कर दें। अुच्चारणमें अधिन कुछ करनकी जरूरत नहीं है। परन्तु गीताक अय नहीं साल यह मुय बहुत खटकता है। तुम्ह हमेगा पाच रओकोका अय लिखना चाहिय। तुम जानती हो कि तीसरा अध्याय यका है। भगवान कहते ह कि जो मनप्य यन किय बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। यह तो बडा महत्वपूर्ण वचन हुआ कयाकि चोरीका अन्न खाना बच्चा पारा खान-जसा है। बच्चा पारा हजम नहीं होता। वह

खा लिया जाय तो फूट निबलता है। इसी तरह चारीका अन्न खाया जाय तो वह फूट निकलेगा। यन्के बिना मनुष्य घडीभर भी रहे तो वह चोर ठहरता है। अिमलिजे यन हम सबको करता चाहिये। सदभाग्यसे जिसका हृदय स्वस्य है गुड है अुमके लिजे यन सरल वस्तु है। और यनके लिजे न घनकी आवश्यकता है न बुद्धिकी और न पढाओकी। यज्ञका अय है कोओ भी परोपकारी काय। जिसका जीवन पूरी तरह यनमय हो अुसके लिजे कहा जा सकता है कि वह चोरीका अन्न नहीं खाता। अत यह कह सकते हैं कि जा थोडासा यन करता है वह कम चोर है। अिस प्रकार मूढमताम देखा जाय तो थोडी-बहुत चारी हम सब करते हैं। जब स्नायमानत्रका त्याग कर दें तभी कहा जायगा कि पूरा यन किया है। स्वायका त्याग करनेका अय है अहता, मेरापन, छोडना। यह मेरा भाओी है और वह पराया है यह मेरी बहन है और वह पराओी है, असा भाव मनमें रहना ही नहीं चाहिये। अमा वही कर सकता है जो अपना सब कुछ कृष्णापण कर द। असा व्यक्ति जा भी सेवा करता है वह सब ओश्वरका वीचमें रखकर अुसके सबकी हैसियतसे करता है। असे मनुष्य नित्य सुखी रहते ह। अुनके लिजे सुख-दुख अेकसे ही हैं। वे अपने गरीर मन, बुद्धि सबका परमायके लिजे ही अुपयोग करते हैं। असा अुत्तम यन सब नहीं कर सकते। जब हमारे मनमें यह भावना हो कि समव हो ता सारे जगनकी सेवा कर, तभा असा यन हो सकता है। ता असा कौनना काय है जिससे यह भावना सिद्ध हो सकती है? अिस प्रश्नका विचार कर ता मालूम होगा कि कातना ही वह मुख्य काय है और यह अेक ही सेवा अमी है जिस परमायकी दष्टिसे असख्य मनुष्य अेकसाथ अयदा चाहे जब कर सकते हैं। यह मेहनत जगतके लिजे देगके लिजे की जा सकती है। और अिमन असख्य गरीबाका पेट भरना है। अये गूगे बहरे गरीब अमीर वच्चे बूडे सब आमानोम यह सेवा कर सकते हैं। और प्रत्येक तारके साथ रामनाम लिया जा सकता है। मैने तो जवसे चरखेकी खाज हुआ तवसे यह अेक बात रट रखी है। तुम भी गीताक अमे अयोंको कठस्थ करके आचरणमें अुतारो अिमलिजे मैं तुम्हें गीताके अय अिन तरह समझाना चाहता हू केवल व्याकरणकी दष्टिसे नहीं। यह तो म तुम्हें गीताके श्लोकाका अय कम समझाअुगा अिन बातका अेक अुदाहरण दिया। और यनका सच्चा अय भी समझाया। यनमें चरखा है और चरखेमें यन है।

यह सारी बात घर आये तब तक बापूजीन बहुत गभीरतापूर्वक समझाओ। घर आकर बीचडके पर धोये और बापूजीन बगाली वणमा लिंगी। अिम बीच मन बापूजीकी मालिंग करनेकी और बुनके स्नानके लि पानी गरम करनेकी तयारी की।

आठ बज मालिंग कराने समय बापूजी २० मिनट सो लिये। बुह परावत बहुत मासूम हाती है। मालिंग और स्नानके वा भोजन करते हूअ सुदरावर्नी साहबके लिअ पत्र तयार कराया। भाजनमें आठ औसत दूध गाक तथा वार्नी (जो) के बहुत आ जानस बाटकर रोटी बनानका कहा था। परन्तु राती जसी चाहिय वसी बनता नहीं थी। अितलिअे कल्मे वार्नीको गाकके साथ ही कूरमें रख दनकी सूचना की।

यहां बापूजा जिम बुन्याके मेहमान बन ह वह बहुत ही ममताओ और प्रमल है परन्तु म बुसकी भाषा नहीं समझती और वह मेरी नहीं समझता। अिगारेसे आप्रहूपूवक मुझ विलाती है।

आजम मन भा बगला सीवना गुरू किया। बापूजी कटत ह ल्लें हम दोनामें स कौन पहला नम्बर लाना है।

बापूजी अक बज आरामके लिअ ले। मन परामें धी मला। आराम लनल्ले सुदरावर्नी साहबका पत्र जाच लिया। फिर मरी डायरी देखी। वह थूह पमाओ आओ। परन्तु अधिक समयक अभावमें वामें लिपनकी सूचना करके कटा मुख्य बात दज कर ली जाय तो म तपमें सब लिखना जा जाता है। मरे ल्लाका अप्पयन करना। यनकी बात गमझने माय लिनी ल्पी है।

दो बज बापू अक बडे। कुट पत्रह मिनट मात्र। तीन बज रिडकाजीकी पत्राय पत्र आय। अक दर्जी भी थापा। मरे लिअ पत्रावा पागाक मानका दी। गमा मन बज पेओ और गिर पर मिट्टीका पट्टी रखवाओ और बुसी समय 'गागा मिहा (विगर) क नाम मुझम पत्र लिखवाया। अिम बीच काओ पाच निरु बापूजी अप्प रहे। अिमर वा मयाकानें गुरू हूओ। जमान — अिनिरिका जिम मरिस्ट्र मजर स्ट्राअिक्कर डॉ० दामगला और तीन लिअक अरगर अर। अतर माय बापूजीन पत्र चका का नि यात्रामें किन रखम शरों। मरिस्ट्र जमानक माय निगात्रिकाने किम प्रकार काम किया अर अिगकी बने करत हूअ बापूजीन का मरवार काम करनक

लिखे बुझे मजबूर नहा कर सकती। वे खुद अपनी भरजीसे कर ता दूसरी बात है। असलमें यह काम जल्ग-अलग सस्थाओ द्वारा होना चाहिये।”

मुलाकतें पाच बजे तक चली। पाच बजे प्राथनामें गये। बरसातके कारण आनेवालाकी सख्या बहुत नहीं थी। फिर भी ५०-६० भात्री-बहन ता जरूर हागे। अभी लोगकि मनसे डर गया नहीं है। मुसलमानाको यह खबर लग जाय कि हिंदू बापूजीका आसरा लेने गये ह तो शायद वे मारोगे, यह डर हिंदुआमें गहरा पठ गया है।

प्राथनाक बाद सुशालाबहन अपने गावसे आओ थी। अिसलिअे सारा समय अुनके साथ बातें करनेमें बिताया।

धूमकर लौटने पर बापूजीने दूध और अगूर लिये। यहा खाखरा बनानेका काओ साधन न होनेसे आज खाखरे नहीं बनाये। नारियलका मदन बूढी मा बापूजीको जबरदस्ती दे गओ अिसलिअे अुसका थक टुकडा खाया।

बापूजीका कातना पूरा नहीं हुआ था अिसलिअे रातको साढे आठसे नौ बजे तक काता। कुल तार १६० (दोहरे ८०) हुअे। बापूजीने अपनी डायरी लिखी मेरी डायरी साते-साते सुनी। हन्ताअर सुबह करनेके लिअे गहीक पाम रखनेकी सूचना की।

म अकेली बापूजीका विस्तर कर रही थी। अितनमें बाथरूमसे हाथ मुह धाकर व आये और मुझे चादर बिछानेमें मदद की। मने बहुत बना किया ता बाले ' अिसमें म मूकम गवका भाव देखता हू। तुम मना करती हो सो प्रेमके कारण या यह सोचकर कि बापूको तबलीफ होगी। परन्तु तुम्हे और मुझे य सब काम अेक-दूसरेकी मदत्से पूरे करने ह। अिसमें यदि तुम यह आग्रह रखो कि म अकेली ही मव कहगी तो तुम जल्दी बीमार पड जाओओ और मेरी सेवा नहीं कर सकोगी। यह चादर बिछानेमें मुय पर क्या जार पड जायगा? अिसलिअे अब जो तुम्ह सूझे सो तुम करना और मुझे सूझे सा म किया कम्गा।

बापूजीका चादर बिछानेका दृश्य अितना करण था कि देखा नहीं जाता था। मुझे अेकदम विचार आया कि अिस समय यदि पूज्य बा होती ता? परन्तु बापूजीको चादर बिछानेसे रोक्नेका मुझे साहम नहीं हुआ।

अबला चलो रे

साडे नौ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। आधा घटा अपवार मुने। फिर मुझसे कहा कि सारा काम निबटाकर अुनके सानक समय म भी सा जाअू। काम पूरा न हो ता अधूरा रखकर भी तुम्हें सा ही जाना चाहिय। नहाँ तो जब तक तुम जागती रहोगी तब तक मुझ चिन्ता बनी रहेगी। और म भी सो नहीं सकूगा। अिस बातमें दा चिन्ताअें थी। अब तो यह ि अधिक जागरण करके शरीर पर जार डालकर काम करनेसे मरे स्वास्थ्यकं हानि पहुचेगी और दूसरी तथा बडी चिन्ता यह थी कि यह प्रत्ने दूसरी ही तरहका है और खास करकं जवान हिंदू लडकियोके लिअ ता खतरनाक ही माना जाता है। अिसलिअ सावधान नर सत्ता सुखी कहावतके अनुसार म भी बापूजी बिस्तर पर लेट कि तुरन्त अुनके सिरमें तल मलकर और म पर दवाकर प्रणाम करकं सो गया। यहां आये आज तीसरा दिन हुआ। आजसे सारा काम मन सभाल लिया अिससे मनमें सतोप हुआ।

श्रीरामपुर

२२-१२-४६ रविवार

रातको बापूजी डड बज जाग। मुझ जगाया। बापूजीने मुझे दीया और लिखनेका सामान देकर सो जानको कहा। म सब सामग्री देकर सं गयी। अगली बज फिर जगाया। अुन्हान कुछ पत्र लिखवाय थे व अुह पत्र कर सुनाय। बापूजीने अुन पर हस्ताक्षर किय। आजकी डाकमें बापूजीन जो कुछ लिखाया वह बड महत्त्वका और हृदयद्रावक है। अक पत्रमें लिखवाया

तुम्हारे दो पत्र मिल।

भाभी पर मेरी नजर जमी हुअी

है। यत्नि मुअ जसा लगा कि यहां म घोडा भी स्थिर हूँ तब तो भाअी जस बहुताकी सेवाका अुपयोग कर सकूगा। और मुझ वह अच्छा ल्यगा। निभय बननेके बारमें तुम जो लिखते हा वह वास्तविक है फिर भी तुम्हारे मुद्रम शोभा नहीं दता। अिस प्रकार जब हमारे जान हुअे अपराधी आजान् भूमने हो तब लोगाको निभय बनना और रहना आना चाहिय। यह गिना जब तक हम पचा नहीं लने तब तक पग ही बन रहग। यहां हिमा-अहिमाका भेद भूल जाओ। हिमावादी भं बहादुरीकी हिंसा करकं मरना सीख। परतु अहिंसावादीका तो असे समय ही अहिंसाका प्रभाव जानना है। निबल्की अहिंसाको अहिंसाका

नाम देकर हम जिस गिक्तीकी जिदा करते हैं। अंसी अहिंसाको हम डरपावकी युक्ति कह सकते हैं। वह युक्ति हमने सीख ली। और अिसीलिये मुझे अपने वारेमें यह मय पदा हुआ कि मैंने भी — भले अनजानमें — अहिंसाके बहाने या नाम पर कहा डरपोवकी यह युक्ति ही चलाना तो नही सीखा है और दूसराको सिखाया है। अत म अपनी जाच करने और सच्ची परीक्षा देनेके लिये महा आया हू। मेरे पाम पुलिस वगरा मौजूद है। और अब सिक्व भाजी भी आ गये ह। परगुराम और निमलवावू तो ह ही। परमा मनुडी आजी है। यह पत्र अुसीसे लिखवा रहा हू। अिसीलिये तो वही म बेफिक्र बनकर नही घूम रहा हू? 'सुनेपु कि बहूना ।

वापूके आसीवार्द

दूसरा पत्र भी अंसा ही है, अुममें नोआखालीका वरण चित्र आता है।

चि०

तुम्हारा प्यारेलालके नाम भेजा हुआ पत्र मेरे पाम सीधा आ गया। प्यारेलाल वगरा तो अपने काममें लगे हुअे ह। मौतके साथ खेल रहे ह। अिसलिये हम सब अेक जगह थे तब वे जा कुछ कर सकते और भेज सकते थे वह अब नहीं कर सकते। तुम्हारा पत्र काजीरखिल गया तो सतीगवावूने मेरे पास भेज दिया। प्यारेलालको जिस पत्रका पता नही है। वे मेरे पाम आते-जाते रहने ह।

यह पत्र म सुवह तीन बजे लिखवा रहा हू। दातुन-पानी तो चार बजे होगा। फिर प्रायता। अीस्वर निभायेगा ता निम जावूगा। अिनता वरत हुअे भी मेरे स्वास्थ्यके वारेमें जरा भी चिन्ताका कारण नही है। गरीर काम देता है। फिर भी मरी परीक्षा हा रही है। मेरी अहिंसा और सय दाना मोती तौलनेके काटेसे भी वही अूचे काटे पर चढ़े हुअे ह, जा बालके सौवें भागक वजनकी भी परीक्षा कर सकता है। अहिंसा और सत्य तो अपूण हा ही नही सकने। परन्तु मेरी जो अिनका प्रतिनिधि बना हू अपूणता मिद्ध होनी होगी तो हा जायगी। और अगर वह सिद्ध हुअी ता अितनी आगा

अहिमाकी परीक्षा तो अिसके बीचमें ही हो सकती है न? म यह समझता हू जानता हू जिस्लीअे यहा पडा हू। यहासे मुझे बुलाना मत। कायर बनकर भागू तो मेरा दुर्भाग्य। हिंदुस्तानके अभी तक असे लक्षण म नही देखता। अिमालिअे तो मुझे यहा करना है या यहा मग्ना है। कल रडियाके समाचार आये कि मेरे साथ बातचीत करने आ रहे ह। सभीका मिलकर क्या करना है? तुममें से जिसे कुछ पूछना हो वह पूछ सकता है।

*

म तो भटठीमें पडा हू, अिमलिअे असम क्या हाता है और क्या सत्य है अिसका सबूत अच्छी तरह दे सकता हू। बिहार लीगकी रिपोट देखी हागीअे अुसके वारेमें मन का लिखा है। और तुम सबको मेरी राय बता देनेक लिअे का भी लिखा है। यदि अिसमें आधा भी सत्य हो ता भयकर है। मुझे जरा भी शका नही कि जसी निष्पक्ष जाच तुरन्त हानी चाहिये अिसके विरुद्ध काअी अगुली न अुठा सके। अेक दिनका भी विलम्ब नही होना चाहिये। अिसमें जो सत्य हो अुसे स्वीकार करना चाहिये। बाकी जो स्वीकार न किया जा सके वह जाच करनेवाले यायाधीशके पास जाय। मुस्लिम लीगके मन्त्रियसि भी बात करा। सुहरावर्दी साहबके साथ म जो पत्र-व्यवहार कर रहा हू वह पूरा नही हुआ है।

तुम्हारी कठिनाअी यहा बठे अुअे भी जानता हू और समझता हू। पग्न्तु कठिनाअी होते अुअे भी कुछ काम तो करने ही पडत ह। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा हागा यह तो कैसे कहू? काम करने लायक है असा मान लेता हू। आशा करता हू अच्छा हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार जमी नौरव शातिमें पत्रांमें लिखाअी गअी वातसि बापूअीकी हृदय-व्यया आसानीसे समझी जा सकती है।

ठेठ चार बजे प्रायना अुअी।

वापूजीने कहा, बदाबिन म मर जाऊ ता अुससे मेरी विरासत जरूर सुरक्षित रहेगी। महादेवने असा ही किया था। अुसकी जिच्छा तो मेरी गादमें मरनेकी थी और मेरी बातें लिखनेकी भी थी। अुसकी अेक तीव्र जिच्छा अीश्वरने पूरा कर दी। तुम भी मेरी जीवनकथा लिखनेकी अुधेडबुनमें तो नहीं हा न? *

पैने कहा — म जसी लेखिका बन जाऊ तो फिर क्या चाहिये ?

वापू — तो म जिनसे बातें करू, अुन सबके साथकी घातचीतकी नाय लेना तुम्हें सीगना चाहिये। तुम्हारी लिखनेकी रफ्तार तो तज है ही। परन्तु सभी जगह तुम बसे सभाल सकती हा? बस यह मुचे अच्छी लगनेवाली चीज है। इसमें तुम्ह बहुत बहुत सीखनेका मिलगा।

मेरी तदुरस्तीकी बात करत हुअे वापूजीने कहा, ' म इस समय तुम्हारी माके रूपमें हू। इसलिजे तुम्हारी जो भी गिकायत हो वह खुले दिलसे तुम्हें मुनसे कह देनी चाहिये। म तुम्हारे जरिये इस बातका सामी बनना चाहता हू कि अेक पुष्टप भी मा बनकर घेटीकी हर तरहकी गुत्थीको मुल्था सकता है।

वापूजीने ठीक अेक घटा कातत-वानते डायरी परसे मुझे बहुत कुछ समझाया। सवा तीन बजे सतागवावू और अुनकी पत्नी हेमप्रभादेवी (मा) आजी।

अुनके साथ जा कुछ चल रहा है अुमके सम्बधमें बातें की। सात बजे मौन लिया। पाँचे पाच बजे वापूजीने गाक दूध और फ़ाओमें दो सतरे लिये। प्राथनाके बाद घूमे। घूमने घूमते मि० अिंग्लाडक साथ बातें की, और अुह विन किया। माटे छह बजे लोटकर गरम पानी और गहद लिया। फिर अखवारके लिअे भेजा जानेवाला प्राथना प्रवचन सुधारने बठे। अुम बीच मने वापूजीका सूत दुवटा किया। दुवटा करने पर ८० तार हुअे अर्यात आज वापूजीने अेक घटेमें १६० तार बाने। मने विम्तर किया। साढे आठ बजे वापूजा विस्तरमें लेटे। विस्तर पर पडे-मडे बगलाका पाठ

* यह बात दिनोत्में मिलकुल स्वामाविकतासे हमते-हसते वापूने कही थी। वापूजाके चेहरेका वह दस्य आज जब अुनके शब्द सही सिद्ध हो रहे ह, आखकि सामने खडा हो जाता है।

पढा वणमाला लिखी। मन पाव दवाय तेल मला और जपना काम पूरा करके साढ दस बज सोन गयी।

श्रीरामपुर

२३-१२-४६ सामवार

आज वापूजीका मौनवार था जिसलिअ जल्नी जुठना नही था। प्रायनाके समय ही वापूजान मय जगाया। प्रायनाक बाल गरम पानी पीनक पहले वापूजीन अपनी डायरी लिखी। अुसमें लिखा

आज नीं अच्छी आभी। सवा तीन बज भुठ वठा। दुखी हुआ। यहाका काम कसे निवटाया जाय? मरी अहिंसा और काय कुगलनाकी कसी कसौती हा रखी है।

गरम पानी और गट पीकर वापून खुद ही पत्र लिख। आजकी डाकमें सान गुरुजीको सहभोजनक बारेमें लिखा। ठक्करवापा तथा मणिलाल काका (दक्षिण अफीका) के नाम पत्र लिख। और मेरे पिताजीको मरे यहा आनके बाद पहला ही पत्र लिखा

चि० जयसुखलाल

मनुडी अभी सवेरे ६ बज याद टिला रही है और यह पत्र लिख रहा हू। मौनवार है न?

भाभी रतिलालकी तुनाओम बनी हुअी पूनीका जो नमूना तुमन लिया था वह सब कात चुका। पुनिया अच्छी थी। अनी वारीक कताओके लिअ पूना बडी होती है और अुस पत्र या कागजमें पकडा जाता है। भाभी रतिलालका साहस पूरी तरह सफल हो।

मनुडी सङुगा है और कामस सताप दे रही है। मन जिमीस मुना कि परमान्त गाधी जिस मधुर स्वरस रामायण गाते थ वसे ही स्वरस तुम भी गात हा। यह बात मुनी तव पछताया कि जरा पहले पता लग गया हाता तो तुम्ह रोककर रामायण सुनता। परमान्तभाओका स्वर आज भी कानामें गुजता है। तुमन ता भुहे क्या देता होगा? कालिदासमें वह स्वर कुछ कुछ अुतरा था। अब तो प्रभु हमें जब मिलाय तव मिलेग। मरी सूचना यां रखना।

वापूने आगीवादि

‘प्रभु हमें जब मिलाये तब मिलगे’—परन्तु यह मिलन हो ही न सका। बापूजीने मेरे सामने परीक्षाकी गत रखी थी कि ‘यह ता यन है। हमारे पौराणिक यनामें सब तरहसे पवित्रता होनी चाहिये। अतमें काम ऋष, मोह लाभ अत्यादिका त्याग करना हाता है। (जिसलिजे) यदि दो महीने बाद तुम्ह असा माह हुआ कि अपने पिता या बहनासे मिलना हो जाय ता कितना अच्छा हा ता म तुम्ह नापास कर दूगा। यह परीक्षा मेरे लिजे थी और जीश्वर-कृपास बापूजीको अभा लगा कि म परीक्षामें सफ़त हुआ। जिसलिजे १९४७ में हमें जब वर्षा होकर बराधी जाना था अउससे पहले बापूजीने मेरे पिताजाका खुद ही बुलाया। परन्तु दुभाग्यमे वे तब पहुच सक जब बापूजीका मिडला भवनसे अतिम विदाअी हा रही थी। मेरे पिताजी मिलनेके अुलामसे महुवासे खाना हुआ ये परन्तु प्रभुने अुनको मिलाया ही नही। श्रीश्वरकी अनी अगम्य लीला ह।

५

तीन अमूल्य पाठ

श्रीरामपुर,

२४-१२-४६ मगलवार

आज सुबह बापूजीने मुचे तान बजे जगाया। के नाम पत्र लिखवाये। तानक पत्र लिखवाये अितनमें प्राथनाका समय हो जानेसे लिखाना छोड दिया। दातुन-भानीके बाद प्राथना वगरा नित्यक्रम चला। गरम पानी और शहद पीकर बापूजीने अपनी डायरी लिखी। साडे छह बजे अननासका रम लिया। यहा अननास होता है। अितनेमें प्यारे-लालजी अपने गावमे आये। सुचेताबहन कृपालानी भी आजी थी। घूमनेका सारा समय अुनके साथ वातामें चला गया और मालिगवे समय दाना अपने-अपने गाव चले गये।

आज स्नान करक आने पर साडे बारह बज गये ये। अेक बजे भोजन कर सक। खाना आज राजकी अपक्षा देरस हुआ, क्वाकि कुठ डाक आदमीके हाया-हाय कलकत्ता भेजनी थी। अुसमें बहुत वक्त लगाना पडा। भाजनमें प्यारे-लालजी अपने हाथस निकाले हुआे नारियलके तेलका जो मसका रख गये थे वह और अेक खाखरस लिया। यह मगका साचारण थी या मक्खनका

काम देता है। जिसलिअ दूध छह औस लिया और मक्खन खाना छोड़ लिया। बुबला हुआ साग भी घाडा ही लिया।

खाते खाते कनल जीवनसिंहजीने साय वातें का। म घी मलनक लिअे लगभग दो बज अपन कामसे निवटनक बाद जा सकी। अभी तक मन भोजन नहीं किया था जिसलिअे बापूजी नाराज हुअ और कलते अपने पाता घाली लाकर खानको कहा। यहा दोपहरको बहुत देरसे खानका रिवाज है। सुबह लोग अच्छी तरह नाश्ता करते ह दापहरका तीन साढ तीन बज खाना खाते ह शामको चाय या नाश्ता लेते ह और रातको भी देरस भोजन करते ह। परन्तु बापूजीने कहा यह ढग हमारे अनुकूल न हो तो अिगे छोडा जा सकता है। जल्दी अुठना और रातको दस साढ दस बज भोजन करना शरीरमें जहर अुडलनके बराबर है।

पाच ही मिनट घी मलवाया और कहा कि अभी सा ला फिर गामको भोजन न करके फलाहार कर लेना। दोपहरको अनाजीसे तीन बज तक बापूजी सोय। तीन बज नारियलका पानी पीकर कुछ पत्र लिखवाय। साढ तीन बज काता। साढ चार बज पेट जोर माथ पर मिट्टीकी पट्टी ली। बापूजीको कुछ थकावट-सी मालूम होती है। मिट्टी रखनके समयमें मरी डायरी सुनते हुअ दो बार झपकी ले ली। डायरी जोर भी सक्षपमें लिखनकी सूचना की। पौन पाच बज मुचेताबहन वगरा आय जोर अुहान बापूजीके साथ अकान्तमें बातें की।

गामके भोजनमें आठ जोस दूध अक केला और अक ग्रेपफूट लिया। रातका दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। म बापूजीकी कलकी डायरीकी नकल करन ठहर गयी जिसलिअ ग्यारह बज सोयी। ठड और बरसात सूब थी।

(बापू श्रीरामपुर २५-१२-४६)

श्रीरामपुर

२५-१२-४६ बुधवार

आज भी बापूजी अच्छी तरह सोय। प्राधनासे आध घट पहले अर्थात् साढ तीन बज अठ थ। दातुन-पाना किया। प्राधनामें पाचेक मिनटकी दर था जिसलिअ अतन समयमें मरी कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किय और वगला वणमाला लिखी।

प्रायनाचे वाद दसैक मिनटके लिजे वापूजी सो गये । रस पीकर कलके कुछ पत्रा पर दस्तखत किये और मुचे भी बगला जल्दी सीख लेनेको कहा ।

सान बजे घूमने निकले तब लावण्यप्रभावहन और मि० अग्लाड आये । मुनके साथ मि० ग्लैन और अन्थना ढाकासे बडे दिनकी भेंट लाये । अिस भेंटमें सावुन, रुमाल रजर (बुस्तरा), कंची यली वर्गैरा चीजें थी । वापूजीने सताप देनेके लिजे बुह वचन दिया कि आज रेजर स्वय काममें लेंगे ।*

आजकल घूमने समय वापूजी अेक पुल लापनेकी तालीम लेते हैं । पुल बहुत छोटा है परन्तु यात्रामें अिससे बहुत बडे पुल आनेवाल ह । बुहें पार करना आ जाय अिसीलिजे वापूजी यह तालीम ले रहे ह । मुझे भी यह तालीम अच्छी तरह ले लेनेका कहा ।

दापहरको मैं थी मल रही थी अुग समय वापूजी कुछ पेचीदा अग्रेजी पत्रन्यवहार सुन रहे थे । वह पूरा हा जानेके वाद मने वापूजीसे कहा आपने मुचे कॉलेजमें जाकर अेम० जे० या बी० अे० तक पन्ने दिया होता, तो आपका अग्रेजीमें हानेवाला काम मैं भी आगानीसे कर सकती । परन्तु आपने मुझे पढने ही नहा दिया ।

वापूने कहा मुचे तो तुम्हें पढना और गुनना दोना सिखलाना है । अुसका क्या हागा ?

मैने कहा दखिये महादेवकाका अितना पढे तभी तो आपके निजी मनी बन सक । और दूसरे भी अितने बडे लाग ह वे सब डिग्री प्राप्त किये हुअे हैं । अिसलिअ तो वे अितने अूध चडे न ?

वापू हस पडे । बाले "माटे सो खाटे । डिग्रीकी जगह तुम अुपाधि गब्द काममें ला । और अुपाधि सचमुच अुपाधि ही है । मैं बरिस्टर बना अिसका मुझे आज पचात्ताप हागा है । और अिसीलिजे ता मुचे अिस बातका जानद है कि मने का अिन अुपाधिमें नहा डाग यद्यपि म जानता हू कि अुन लागाने सताप नहा है । और सच कहू तो म बरिस्टर हू अिसका मुचे अब खयाल हा नही आता । अिसलिजे अपने अनुभवके आधार पर दूसराको

* अिसी अुस्तरेका वापूजीने सारी यात्रामें अिस्तमाल किया था । यह बात जब भेंट देनेवाले भाअियाको माअूम हुअी तब व अयत प्रसन्न हुअे थे ।

अवज्ञा क्यों है

तो जमी भुताधिस बघाता ही चाँय। हा भागत जगमें सब कुछ अवज्ञा जानना चाहिये। परन्तु आत्रात्रा पनियगिताका पडाभामें जा लगी है। रती है वह मस गगना है। गगामें अगार काम पडा है। विषापी पदन और रत्नमें जितना समय गवाा व अनाय वि काभा रचनात्मक काम करनेमें गवाय ता गकी गग यग जाय। हा अग पडाभा पाछ ज्ञान प्राप्त करनेका ध्यय हा ता अलग बात है। तब ता जानक पाछ पडाभी और पाओके पीछ पाय यह मत्र हाता चाहिये। परन्तु आत्रात्र विषा यियामें परा ताव पाछ पडाभा और पडाभी पाछ गरीया य दृष्टि हाता है। और फिर? फिर अग जानरा अपयाम रपया कमानमें हाता है। काभी डाक्टर बनता है काभा कवाल या चरिक्टर बनता है और काभा अत्रानियर बनता है। और पाग हातके बा नोरीकी गात्र हाता है। अग प्रकार सारी म नतका परिणाम दसा ता पूय। अतम हमारा सारी पडाभा पीठ यही ध्यय हाता है कि हमें बढाम बडी नोरीकी कम मिल। अगमें अपवाज जरूर हाग। चागीत कराड गगामें सभा अगा करने ह यह कहनका मरा हुनु नही। परन्तु पडाओका तममें यह आजकला गात्रन नियम बन गया है। अमुक प्रकारकी पडाभा कर ता ही गवा की जा गनी है यह निरा भ्रम है। कमी भी स्थितिमें रत्नर मनुष्य सेवा कर गपता है। श्रीस्वरन मनुष्यको असी शक्तिया दी ह कि वह काभी बढाना बना ही नही सकता। वरना मनुष्य-जाति अमी भयकर है कि काम न करना हा ता बढान ही बनाया करेगी। तुम देवोगी कि किनाक पाग रपया है ता किसीका गरीर काम दना है किमीकी बुद्धि काम दे सरती है ता किमीका जवान हाय-पर आल कान वगरा। सभी सेवाय काम दे सकते ह। य ता मन तुम्हारे सामन अदाहरण रव। अिसलिअ जो भी शक्ति हममें हो अम वृष्णा पण कर द ता हमें पूरे-पूरे नम्बर मिलग। जिसकी शक्ति कराड देनही हो बह आधा कराड ही दे ता अुस पचास नंबर मिळग। परन्तु जिसकी शक्ति पाओ ही देनकी हा वह अगर पूरी पाओ दे दे ता अस सौमें से सौ नम्बर मिलग।

यवहार साफ होना चाहिये। स्वायनुद्धिसे या डरके मारे मनुष्य यदि कुछ करगा ता वह सेवा नहा मानी जायी। जहा श्रीस्वरापणकी भावना है वहा स्वायके लिअ स्थान ही नही है। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्तिमें बुद्धि करता है। अुचम करे तो वह भी सेवाभावसे ही करता

है। जा मनुष्य जिस तरह सेवापरायण रहता है अमुके हसनेमें खाने-पीनेमें, बालनेमें हर त्रियामें सेवाभाव भरा हाता है। अिनलिअे अुसके सभी कार्योंमें निर्णयता हागी। अम भक्ताको औश्वर सभी आवश्यक शक्तिया दे दता है। अिसीलिअे गीता कहती है

अनयाश्चिन्तयतो मा ये जना पयुपासते ।
तेषा नित्याभियुक्त्वाना यागक्षेम वहाम्यहम् ॥
मच्चित्ता मदगतप्राणा वाघयन्त परस्परम् ।
कथयतश्च मा नित्य तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥
तषा सततयुवताना भजता प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोग त यन मामुपयान्ति न ॥

(जो लोग अनय भावसे मेरा चिन्तन करते हुअे मुने भजते ह, नित्य मुझमें ही रहनेवाले अुन लौगाक योगक्षेमका भार मै अुठाता हू। अर्थात् फकी आणा मुझ पर छाडकर मेरा काम करा। मुझमें चित्त पिरोनेवाले मुझे प्राणापण करनेवाले लाग जेक डूमरेका बोध देत हुअे, मेरा ही नित्य कीतन करत हुअे सताथ और आनदमें रहते ह। अिस प्रकार मुझमें तमय रहनेवाले मुझे प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्ताको मै ज्ञान देता हू और अुस जानसे वे मुझे प्राप्त करते ह।)

'अिन श्लोकोका तुम विचार करो। अिनमें अतिम श्लोक बडा महत्वपूर्ण है। अिसमें महाश्रद्धाकी जरूरत है। औश्वरका काम करनेमें तुम अपनी प्राप्त का हुअी डिग्राका कहा अुपयोग करोगी? म तुम्हारे मनमें यही बात विठाना चाहता हू। और कदाचित्त तुम पत्नी होती कॉन्तिमें जाती होनी तो आज कहा हाती? मरी चले तो मै सभी कॉन्जिक्की लडकिया और लडकाका दगाकी अिस आगमें झाक दू। सचमुच यदि हमारे विद्यार्थियाके मनस डिग्रीका मोह निकल जाय तो तुम ख्वागी कि सारी दुनियाके नकणें हिन्दुस्तान जा बिदुमात्र है वह समुद्र असा हा जाय। तन पाव पमारिये जेती लावी सौर — यह सुन्दर कहावत छाटेम कुटुम्ब पर ही लागू नही हाती, बडे-बडे दगा पर भी लागू हाती है। असा देग वसी हा अुसकी रहन-महन और वसा ही अुसका कामकाज होना चाहिये। परन्तु अप्रेजाका न करने लायक अनुकरण करनेसे हमारा पतन ही हागा। 'हस कौअेकी चाल चलन लगता तो मर ही जाना। परन्तु वह अपनी चाल

६ पंडितजी मिलने आये

श्रीरामपुर,
२६-१२-४६

आज तीन बज अठ।
 बहुत थी। बापूजी लेट लट लिखवा रहे थ। दा अक बार सपका ल ला।
 बापूजी सपकी लेते अुतन समय म अनका डायरीकी नकल अपन लिअे
 कर लेती। दो न्तिकी नकल करनी बाकी थी। बापूजाने मुझ यह गलत
 परिश्रम न करनको कहा। परतु मन कहा आप अपनी डायरीमें मरे
 वारेमें जुल्लेख करते ह अिसीलिअे म नकल कर लती ह ताकि जीवन
 मर वह मरे पास रहे।

प्राथनामें आज नहीं थे। कल रातको वाजीरविलम
 वापस नहीं आय। बापूजी बहुत दुखी हुआ। प्राथनाके बाद क
 वारमें के साथ बातें की और कलका प्राथना प्रवचन सुधारा। मने
 बापूजीको गरम पाना देकर अपनी ककी डायरी लिजी। जाघ घट वाता। मने
 सात सात बज घूमन निकले। घूमत समय बापूजी कुछ विचारामें लीन
 थ। के साथ भी बातें की। राजकी तरह पु पार कराकी तालीम
 जारी है। पर धीत समय को प्राथनाम अुपस्थित न हानवे वारेमें
 पूछा अुनके साथ बातें की। अिसमें बहुत बत ग्य गया। पूछवर
 नहीं गय थ अिसके लिअे वापुन से कहा अन पर मेरा कीअी हक
 नहीं है। अक पुत्रकी तरह व रहने ह अिसलिअे अितना कहना मुझ अपना
 पम प्रनीत हुआ। वे मुझ छाड दें तो म बडा दुग होअूगा। यह लडकी
 भी मुझ छोड सकती है। परन्तु मन अिसे वचन दिया है कि जब तक म
 जिदा ह तव तक अिसे नहीं छाडगा। यह चाहे तो मुझ छाड सकती है।
 तुम भी मुझ छाड सक्ते हा। ता ही मेरी पराभा हागी। गाय अीश्वरको
 मेरी परी ग करनी होगी अिसीलिअे ता वही वह अवल्पित प्रसग अुपस्थित
 नहीं करता हा? वह मानने ह कि मन में रहकर भूल की है। परतु
 म कहा मानता ह? परतु मरी परीला अिसीमें होगी। बापूजीन बनी
 गभीरतापूर्वक के सामन अपना हृदय अलग।

मैं ये बातें सुननेके लिये खड़ी रही अिमलिये नहानेमें देर हा गयी। अिसम मभा कामामें विलम्ब हुआ। खानेम पहले बापूजीक पैगामें घी मलन बनी। बापूजीने अुलाहना दिया, 'तुम्हारा बातें सुननेके लिये खडा रहना मुये अच्छा नहीं लगा। कितनी ही दिलचस्प बातें हा ता भी हमें अपने नियमका भंग नहीं हाने देना चाहिये। परन्तु क साय हुयी बातें तुम्हारे समयने लायक तो जरूर थी, अिमलिये तुम्हें मेरे परामें घी मलनेम मुक्त रखनेकी अिच्छा हानी है। परन्तु तुम नहीं चाहागी, अिमलिये अिस सारे समयका बदला चुकानेके लिये तुम्हें अपनी कुशलता दिखानी हागी। अिसका अय यह नहीं कि खानेमें जल्दी मचाकर चली आया।'

तारसे समाचार आये कि ५० जवाहरलालजी २७ तारीखका आनेवाले ह। अुनके लिये क्या बन्दोबस्त करना हागा अिमक सम्बन्धमें निमलदाके साय बापूजीने बातें की। मुषसे बापूजीका कमीड ले जानेको कहा गया। खानेका अिन्तजाम आभी० जेन० अे० वाले बनल जीवामिहजीके आदमी करनवाले हैं।

दापहरका बापूजीने मेरी कलनी और आजकी अघूरी डायरी सुनी। अूपर अूपरस खुद देख गये। अभी हस्तापर नहीं किये।

गामको बापूने कुछ नहीं खाया। प्रायनाके बाद गरम पानी और गहद ही लिया। पानी पीकर बापूजीने आध घंटे काता।

बापूजी अिस अगोछेको काममें लेत ये वह बीचमें से विलकुल जजरित हा गया था। मने नया देसे पहले विचार तो बहुत किया कि अिसमें कुछ अकल लगाऊ और यदि जोड लग सके ता जोड लगाकर ही बापूजीका दू ताकि गालक जैसा किस्मा न हा। बहुत विचार किया परन्तु बुद्धि कुछ चगी नहा। अन्नमें नया अगोछा बापूजीके हायमें रखा। बापूजीने कहा, "अभी पुराना काम देगा। (म तो मानती थी कि बापू कुछ भी कर तो भी अब अिसमें पबद काम नहीं देगा और जोड लग ही नहीं सकेगा। साय ही असे टुकडेमें रफू भी नहीं हागी। और अिनमे ज्यादा बापूजी क्या करणे?) अिमलिये मने घट अुत्तर लिया कि अिसमें मने बहुत अकल लगायी है। अिस छुट्टी दिये बिना चारा नहीं है। देखिये अब अिसमें आप क्या कर सकेंगे?

बापू हस पड। मेरा कान खाचकर वाले नया करके दो महीन चलाओ तो ? परन्तु अिस रुमालको अभी

मन कहा आप चला ही नहीं सकते।

अन्तमें पुन्हान अुस रुमालको अुनी हालतमें उवल कर दिया ठीक चौकोर बनाकर अच्छी तरह जोडा और रफू कर लिया। (सचमुच अुस रुमालकी अुम्र दो महीने तो बढ ही गयी। परन्तु बालमें मन जिद की और यह कहकर कि अुमे मुस नमूनके तौर पर अपने पास रखना है मने रुमाल ल लिया। यह अगोछा बहुत सुदर बन गया है। हमारे यहां रजाजीमें जमे पत्र डालनका रिवाज होता है कमी चौरस आकारवाली मुन्तर सिलाओ की गयी है। अिससे जगोछा ज्यादा मजबूत हो गया है।) बापूजीकी असी बारीकी और कलात्मक विपायतशारीका कलवाले गान्ध पाठसे आज भिन्न ही प्रकारका पाठ मिला।

अब बहन बम्बयीमें डाक्टर ह। व नोआखालीमें सेवा करन आनेको कहती थी। परन्तु बापूजीने अुनने कहा सुहरावदी साहबसे अिजाजत लेकर शीकमे आ सकती हो।

रातको बापूजीन साड नी बज सोनसे पहले मरी पूरी डायरी सुनी हस्तापर त्रिप और विस्तरमें लेटे।

(बापू)

श्रीरामपुर

२७-१२-४६

आज रातको बापूजी दो बज अुठे। भुच जगाया। मरे लिअ छीटके पत्राशी मल्वार और कुरन बन थ। बापूजीन पूछा तुमन छाट या किम प्रकारकी शानी की जाय, अिम बारेमें मे कुठ कहा था ?

मन कहा यह कपडा नहीं लाये ह। आपन बिडलाजीसे आन्धियामे कहा था। व लाये ह।

बापूजी बाल तब तो क्या कमी हो सकती है ? छाट भउ ही आजी और गन्वार-कुरन भी पहन पाडना। परन्तु मनमें यन्ि यह भाव हो कि अने कपड पन्ननम और अ्ठी ग्गुगी ता अुन निवाल देना। मनुष्य स्वान्ध लिअे मुराकको सट्टी मीनी और तीखी बनाता है। परन्तु यन्ि बढ

यह वृत्ति पैदा करे कि हमारा शरीर जेक देवस्थान है जिसका अपुयोग सेवाथ होना चाहिये और वह सेवा करनेके लिये पौष्टिक भोजन करनेसे शरीर कायम रह सकता है, तो अम मनुष्यका जीवन भय बनता है। यही बात कपडेको भी लाग हाती है। कपडे शरीर ढकनेके लिये, सरदी-गरमीसे शरीरकी रक्षा करनेके लिये हैं, न कि फशन दिखानेके लिये। आज ता हर बातमें फशन ही फशन है। लडकिया बिना बाहाके पोलके पहनती ह बारीक साडिया पहनती ह, और पोलके भी भुतने ही बारीक और चुस्त होते ह। मने असी बहुतसी निकम्मी बातें देखी ह। और यह सोचकर मनमें दुःख होता है कि क्या हमारी सस्कृतिका नाग बहनें ही करेगी।

‘ चुस्त कपडे पहननेसे श्वासोच्छ्वास अच्छी तरह नही लिया जा सकता, फेफडे कमजोर पड जाते ह, और जिसके परिणामस्वरूप स्त्रिया क्षय जैसे रोगोकी शिकार बनती ह। हिन्दुस्तानमें पुरुषासि स्त्रिया और अममें भी युवतिया जिस रागकी अधिक शिकार बनती हैं। जिसके अनेक कारणोंमें से यह भी एक कारण है।

‘ बालाकी भी यही बात है। मने तुम्ह बालोकी सादगीके बारमें भी कहा तो है ही। अक बार और कहता ह कि बालामें जितनी सात्गी रहेगी भुतने ही बाल सुन्दर लगेंगे। बाल सिरकी रक्षाके लिये हैं। भीश्वरने जो कुछ दिया है वह सब सदुपयोगके लिये ही दिया है। अुसकी दी हुआ अक भी चीज व्यय नही है।

‘ दूसरी बात यह कहनी है कि तुम्ह के साथ या और किसीके साथ बातामें समय बेकार नही खोना चाहिये। तुम अुमकी हो। और म तो अपना ही अुगहरण तुम्ह देता ह। बचपनमें समवयस्क लागोकी कुसगतमें पड जानेके कारण मने मास खाया और कडेकी चोरी की। हमेशा बराबरकी अुमबालामें यदि समझनेकी शक्ति हो और साथ ही निश्चय हो कि हम अक-दूसरेके गुणोका ही अनुकरण करेगे, अवगुणाका नही, तो ही दोना व्यक्ति अूपर अुठने ह, नही तो आम तौर पर बुरी बातें ही सीखते ह और दोनासा पतन होता है। सबके साथ आवश्यक बातें ही करनी चाहिये। गुण अवगुणको दूर कर सकता है, पर अवगुण अवगुणको क्या दूर कर सकता है? बहुत शुगल है। फिर भी मनुष्यमें कभी कभी कोजी अैसा दोष आ जाता है, जो मारी अच्छाअियाको ढक देता है। परन्तु मेरे खयालने नायद

मनुष्यकी परीक्षा करनेके लिये ही भीश्वर सी गुणवि साथ अुसमें अक असा अवगुण रख देता है और फिर अुसकी परीक्षा करता है। अिस अवगुणको मनुष्य समझ ले तब ता फिर कहना ही क्या? तब मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता, वह अनत गबितमें लीन हो जाता है। अस मनुष्यत्वमें भव्यता है।'

मनुष्य-जीवनका यह तत्त्वज्ञान बापून रातको अढाआमे साठे तीनके बीचमें समझाया। पाषनामें थोडी देर थी अिसलिअे मेरी दो त्तिनी डायरामें हस्ताक्षर किये। मुझसे कहा मुझे पता नहीं था कि तुम अितनी लम्बी डायरी लिख सकती हो। मुझ अच्छी लगती है। तुम्हें रोज मुझने पढ़वा ही लेना चाहिये और माद रखकर हस्ताक्षर करा लेन चाहिये। हस्ताक्षर करानेका मूल्य आज तुम्हारी समझमें नहीं आयगा। परन्तु आजकल म तुम्हें जो कुछ द रहा हूँ, अुसमें अपना हृदय अुडेल रहा हूँ। भविष्यमें यह डायरी अुसका प्रमाण होगी। साथ ही तुम्हारी कच्ची अुझ होनेके कारण अिस सारी नाप पर मेरे हस्ताक्षर होना जरूरी है। अिसलिअे डायरीमें हस्ताक्षर करानेका काम रोजका राज हो जाना चाहिये। अिसमें त्तिनी देर लगती है? म तो तुम्हे बसे ही तालीम दे रहा हूँ, जैसे मा बटीको देती है।'

जवाहरलालजी जागवाले ह अिस कारण अुनके लिअे सड्डवालाला पाखाना तयार कराया। अुसमें बापूजीने जो सुधार सुवाये अुह करनमें सुबहका सारा समय चला गया।

बाकीका त्रम तो लगभग नित्यक अनुसार हा चला। भोजनमें सबरे बापूजीन रोजकी तरह ही सब चीजें ली। गामको दूधके साथ अक तासरा (पापड जमी खस्ता राटी) लिया था। बापूजी कहते थे 'आज कुछ भूख-सी मात्रूम होती है। बापूजी आज त्तिनभर का बातें करते रहे। सारी बातचीत लगभग खानगी ही थी। अत मेरे लिअे छुट्टी जती थी। मने अपना लिखनका सारा काम पूरा कर डाला।

ने अेण्टीफलाजिस्टीन मगाया था। परन्तु बापूजीन काली मिट्टीको वारीक कपडेसे छनवा डाला और वह मिट्टी का भेजा। अुम मिट्टीमें भीगने लायक पाना डालकर और गरम करके लेपकी तरह लगानेको कहा। बापूजी मानते ह कि अिस मिट्टीमें अेण्टीफलाजिस्टीनके लेपसे भी अधिक गण ह।

बापूजीने अपनी डायरीमें लिखा

आज सबेरे दो बजे अुठा। २-१५ को मनुढीकी जगाया, अुमे के वारमें समझाया। कपडा और बालाकी सादगीके वारेमें तथा या और किसीके साथ वातामें समय न बितानेके सम्बन्धमें भी समझाया। और अिस वारेमें बातें की कि अकमर जसी मोहबत हाती है वसा असर पडता ही है। (डायरीमें) हस्ताक्षर करानेके वारेमें समझाया। वह अच्छी तरह समझ गयी। प्राथनाके बाद के साथ बातें की। अिसमें काफी समय दिया। बगलाका पाठ किया, अितनेमें ५-१५ बज गये। बीमार पडी है। अुमे पत्र लिखा कि वैद्य डाक्टर बाहरम न बुलाया जाय। पचतत्त्व परमेश्वरका आधार रक्कर जसी अिच्छा हो वैसा करे।

ठक्करवापा आये। जवाहरलालजी वगरा आनेवाले थे। परन्तु (रातको) साढे नौ बजे तक नहा आये। वापाके साथ बापूकी थोडी बात हुयी। ७० तार काने। साढे नौ बजे मोनेकी तयारी की।

श्रीरामपुर

२८-१२-४६

आज रातको बापूजी अढाअी बजे अुठ गये थे। परन्तु लालटेन देनेके बाद मुये सुला लिया। और लिखनेका काम आज सारा बापूने खुद ही किया। प्राथनाके समय मुझे अुठाया। प्राथना वगैरा नित्यक्रम सदाके अनुसार।

साढे सात बजे घूमते वक्त जवाहरलालजी तथा मृदुलाबहन आये। व लाग नी बापूजीके साथ घूमने आये। पुल लागनेकी जो तालीम बापूजी ले रहे थे अुस देखनेमें पंडितजीको बडा मजा आ रहा था। पंडितजी तो दो डगमें ही पुल पार कर गये। लौटते समय बापूजीने मुये यह ध्यान रखनेको कहा था कि जवाहरलालजीकी सारी व्यवस्था ठीक है या नही। बापूजीके कहनेसे अुनका कमो-म पंडितजीके निवास-स्थान पर ले गयी। यह देखकर पंडितजी मुष पर नाराज हुअे और बोले, 'तुमको अिननी अक्ल नहा है कि बापूको कितनी तकलीफ हागी? बापूका कमोड हम कसे अिस्तमाल कर सकते हैं? मैं अितना नाअुक आदमी तो नही हूँ।'

मने वहा लेकिन बापूने कहा अितीलिभ्रे म लयी हू।
 वे ज्यादा नाराज होकर बहने लग बापूकी नाराजगी तुम्ह सहन करनी
 चाहिय। बापूका सभालनकी जिम्मेदारी तुम्हारी है। फिर अुनको कितनी
 क्या जरूरत है यह देखनका काम तुम्हारा है न? बापू तो अंत ह कि तु
 तकलीफ भुगत लगे लेकिन दूसरेकी सब जरूरियान देग लगे। अंत बापू ह।
 लेकिन फिर भी कहता हू कि म ता जवान आत्मी हू वहीं भा बला
 जाअूगा। लेकिन किसीको अिम तरह बापूकी जो जरूरियातकी चीजें ह यह
 तुम्ह न दनी चाहिये। चाहे बापू मार भी डालें। तुम डरना नहीं बापू
 मारग नहीं।

यह अंतिम वाक्य बोलते बोलत तो अब क्षणमें पडितजीके चहरे परमे
 नाराजी जाती रही और विनोदका भाव आ गया। बाबूका डांटेकर
 बादमें बुजुग लोग अबसर प्यार करके अुहें मना लत ह बसे ही मुझ प्रमते
 आलिंगन करके कहन लग जाओ बापूसे कहना जवाहरलाल मना
 करते ह। फिर पूछताछ की कि बापूकी तबीयत कसी रहती है भोजनमें
 क्या लेते ह बगरा बगरा।

बापूजीके प्रति पडितजीकी भक्तिको कौन नहीं जानता? परंतु साक्षात्
 दशन होस पावनताका अनभव हुआ। अिस बोधवाणीके समय अुनके
 भावनापूण हृदयसे कभी जोगीले गन् निकलते थ तो कोअी वाक्य अत्यत
 धीमा और भावपूण निकलता था और कभी विनोती गन्का स्वर नानमें
 गूजता था।

बापू कुछ लिखनेमें बहुत मसगूल थ। अिस समयका अुपयोग करके
 पडितजीकी बात लिख लेनेका मुझे मौका मिल गया। अभी मालिंग स्नान
 बगरा बापूजीका सब काम बाकी है। आज बहुत देर होनेकी सभावना है।
 मालिंग करते समय मन बापूजीसे अुपरोक्त बात कही। बापूजी अितना ही बोल
 वट आत्मी जसा ही है। अब वह कमोड काममें नहीं लेगा। रख दो।

ठक्करवापा भी तबीयत खराब हानके बावजूट यटा तक आ पहुचे हं।
 बापू कहन लग अिनके सामन अच्छ अच्छे जवानाको भी गरमाना पडे
 अितना काम ये अिस समय कर रहे ह।

साते वक्त बापूजीने पडितजीके साथ बातें की। अुहे अब खाखरा
 और खोपरेका मसका और तेल—जो प्यारेलालजीने खास तीर पर

निकाल कर भेजा है—चखाया। उसे बताने हुअे बापूजीने कहा, जहा जहा नारियलकी पदावार हाती है वहा मनुष्याको अनाजकी जरूरत नहीं है। नारियलका पानी भी खुराक जसा माना जा सकता है, नारियलका दूध खाया जा सकता है। नारियलका तेल आसानीसे निकल सकता है और आजकलके मिलावटी घीसे बहुत पीप्टिक है। और जो छूछ निकलती है उसकी मिठाजी बनायी जा सकती है। (अस मिठाजीको बगलमें सदेग बहते ह। वह मिठाजी भी बापूजीने अुह चखायी।) हिंदुस्तानमें अैमा प्रदेश बहुत है जहा ताडगुड और नारियलके अुद्योगका विवास हो सकता है। और अससे अनाजकी बहुत बचत हो सकती है। बगलमें असी प्राकृतिक सपत्ति भरपूर हाते हुअे भी आज अुमकी हालत बगल जैसी है। असका कारण लोगके आलस्यके सिवाय मुझे ता और कुछ दिखायी नहीं पडता। हमें प्रकृतिने तो अपार भंडार दिया है परन्तु आलस्य हमें खा जाता है। अिन बातके बाद दोनोने लगभग डेढ घटे तक अेकान्तमें बातें की।

जस अेक सयाना पुत्र पितामे षोडे समयके लिअे जुदा हा जाता है और जब पिता-पुत्र फिर मिलते ह तब पिताकी अनुपस्थितिमें हुयी भली-बुरी मभी घटनाअसि पुत्र बफादारीके साथ पिताको परिचिन कराता है और पितासे अुचित मागअान प्राप्त करक हलका हो जाता है वना ही दृश्य आज यहा है। ये दोना पुरुष अस समय अस मिट्टीके झापडेमें अेक गदे पर बठकर देगके भूत बनमान और भविष्यके प्रश्नाकी चर्चा कर रहे ह। बापूजी दिल्ली छोडकर यहा आये अुसके बाद जा जो घटनायें हो चुकी ह, देगमें अस समय हो रही ह और आगे हागी अुनके लिअे क्या माग अुचित था, है और होगा—अिन सभ्यअमें पंडितजी बापूस मागअान ले रहे हैं। मुने याडी भी चित्रकला आती हाती ता अस दृश्यको आज गअामें लिखनेके बजाय मैं असका चित्र खीच लेनी। यह दश्य अितना भव्य था। लगभग ग्यारह बजेसे साडे तीन बजे तक पंडितजी गकरराव ढैव, कृपालानीजी वगरा मेहमानाके साथ बारी बारीम बातें करनेमें बापूजीका समय गया।

अिन मेहमानाका समय ध्यय न जाय अिसके लिअे बापूजीने दोपहरको साढ तीन बजे मोन लिया ताकि कल साडे तीन बजेसे बातें हो सकें। ग्रामकी प्राधनामें सनी मेहमान आये थे। जवाहरगअजी और कृपालानीजीने भाषण लिखे थे।

अक्ला चलो रे

गामको थकावट हानके कारण बापूजीन छह जीस दूध और पल ही लिय। रातको नौ बजे डा० राममनोहर लाहिया आय। बापूजी साढ नौ बज वाद सोय।

श्रीरामपुर

२९-१२-४६

आज बापूजी पौने चार बजे अठ। पडितजाक लिअ कुछ लिखना गुरु किया अितनमें प्रायनावा समय हो गया। प्रायना वगरा नित्यक्रमक बाद बापूजीन परसाका भाषण सुधारा।

साढ सात बज घूमने निकले। सभी लोग साथ थ। बापूजीका मोन होनसे काशी खास बात नहा हा रही थी। मालिग और स्नानक बाद ग्यारहस अक तकका समय पडितजीके साथ बिताया। पडितजी बातें सुना रहे थ। बापूजीको कुछ पूछना होता तो लिखकर पूछ लेते थ। दोसे अन्धाी तक बापूजीन जाराम किया। मुन मेहमानाको भोजन करान जाना या असलिअ बापूजीन मिट्टी लेते समय परामें घी मलनको कहा। अठकर तुरन् पडितजीका फिर बुल्वाया। जदाभीस चार बज तक पन्तिजीके साथ। प्रायनावे बाद पडितजी गकरराव देव कृपालानीजी और मृदुलावहनक साथ मन्षणा की। आज भी शामका भोजन हल्का ही किया। बिहारके दगोसे बापूजीका बाकी दुस हुआ है।

पू० टकररवापाको आज बुतार नही जाया। आज दिनमें बापू कात नही सक थ असलिअ अिस समय नौ बज कात रहे ह। कातने कातते प्रस रिपाटरसे अगबार सुन रहे ह और म पास बठी अपनी डायरी लिख रही ह। साढ नौ बज तक कातनके बाद कुछ लिखनका काम करके बापूजा विस्तर पर लट।

श्रीरामपुर

३०-१२-४६

बापूजा अन्धा बज अठ ह और पन्तिजीके लिअ कुछ लिख रहे ह। म अपनी डायरी लिखन बनी ह।

आजकल बापूजीको समय नही रहता असलिअ मेरी डायरी नही देस पात। बापूजीका अभावा जीवन-मषन वमा ही है तसा अत्ता भगतने

गाया है समुद्रमें नाव तो वही भी जानेको मुडती है, पर नाविककी आख केवल ध्रुवतारे पर हाती है और अुमी निशानीके आघार पर वह अपनी नावको अपने भाग पर ले जाता है। आजकल बापूजी वसा ही कर रहे ह। अुन्हाने अपना निगान सत्य-अीश्वर रामनामको बनाया है।

आज साढे सात बजे पंडितजी और अय मेहमान विदा हुअे। घूमकर आये तब पता चला कि कृपालानीजी अपनी पेटा भूल गये ह। अुसे फेनी भिजवाया। बापूजीको पिछले तीनेक दिनसे थकावट जान पडती है। रोज दा अढाअी बजे अुठकर काममें लग जाते ह पर यह सब बापूजीके लिअे शक्तिसे बहुत ही ज्यादा है।

शामको चरखा चलाने हुअे मुझसे पिछले तीन दिनकी डायरी पढवाअी। दमरी डाक पढवाअी। बापूजीने कहा ' तुम्हारी डायरी रोज नही पढ़ी जाती, यह मुझे अच्छा नही लगता।

मने कहा आपका समय कहा रहता है ?

बापूने कहा परतु प्यारेलालको तुमने बताया, अिससे मुझे सतोप है। वह भी तुम्हारा काफी पथप्रदशन कर सकते है।' और कोअी खास बात आज नही हो पाअी।

(बापू। अच्छा लिखा है। ३१-१२-'४६ श्रीरामपुर)

पुनश्च

(२८ २९ और ३० तारीखकी मेरी डायरीमें ता० ३१-१२-'४६ को तडके ही अेकसाथ अुपर लिखे अनुसार बापूने हस्ताअ्वर कर दिये।)

यात्राकी तैयारी

श्रीरामपुर

३१-१२-४६ मंगलवार

आज बापूजी प्रायनास षोडी हा दर पहले भुठ। प्रायनामें लगभग १५ मिनटकी देर थी जिस बीच मेरी डायरी दग गय और हल्कागर कर गिये। मुझसे कहन लगे तुम बहुत लम्बा लिखती हो। पर लिखा अच्छा है। मन कहा सक्षपमें लिखू तो सही परन्तु यह नाटवृत्त पूरी हो पर भाभीको (पिताजीको) भजूगी। अतना लंबा न लिखा हो ता भू यहाकी परिस्थितिका कस पता चले ?

बापू हसते हसते बोले चले चले अगर लिखना आव ता प्रायनाके बाद गरम पानी पीकर पत्र लिख। ७ वज प्यारेलाञ्जी अपने गावसे आये। अनक साथ वातें करके घूमने गय।

९॥ वजे मालिशमें मन बापूजीसे कहा जब तक मुहरावर्दी जसे लोग ह तन तक आप झूठसे भरे वातावरणमें कस काम कर सोंग ? भरे अंग प्रश्नका उत्तर तो अक तरफ रह गया परतु जक नया पाठ मुझ मिला।

तुम मुहरावर्दी कस कह सकती हो ? मुहरावर्दी साहब कहना चाहिय। व कसे भी हा परन्तु आज अक अूच ओहदे पर ह। दूसरी दृष्टिसे कहू तो तुमसे अुझमें कड ह। जिस प्रकारकी कुटव हमारी प्रजामें बहुत पाआ जाती है। जब तक हममें विक्क-बुद्धिकी कमी होगी तब तक हम पिछड हुआ ही रहग। पश्चिमके लोग तो अक नौकरको भी अुससे बोखी चीज मगानी हो तो प्लीज गल आग रख कर ही सबोधन करेग और कायके अतमें थक यू कहे बिना नहीं रहेग। यह तो मन तुम्हें अुदाहरण दिया है। परन्तु हमारी प्रजामें यह चीज नहीं है। भापामें शिष्टता और विनय तो कभी छोडना ही नहीं चाहिय। जिस प्रकारकी कुटव हममें साधारण बन गयी है। और सायद ही कान्नी जिस पर ध्यान देता है। मगर म तो भापामें अनिष्टता आ जाय ता अुसे भी सूम्न रूपमें हिंसा कहता हू और राखीके बराबर भूलको पहाड जसी

मानता हूँ। यह कुटेव काही साधारण नहीं है। जो हमसे बड़े या बुजुर्ग हा अुनके प्रति सम्मानपूण भाषा ही काममें लेनी चाहिये। जब प्रत्येक भारतवासीको जैसी आदत पड जायगी तभी हमारे देशका, जो पिछडा हुआ माना जाता है, बुद्धार हागा। अंसी आदतें बचपनसे डाली जानी चाहिये।”

अपनी भूलस मिला हुआ यह बोधपाठ मुने किसी अच्छी पाठशालामें भी पढनेको मिलता या नहीं अिसमें शका है।

आजकी खुराकमें बापूजीने परिवर्तन कराये। दोपहरके खाकरे बढ कर दिये और अुसके बजाय पाच बादाम पिसवा कर सागमें डलवाये। पाच काजू लिये। गामको फल और अेक अौस गुड लिया।

श्रीरामपुर

२-१-४७, गुरुवार

मैने साथ रखनेका सारा सामान बाधा तथा तुरन्त आवश्यक हा असी चीजा और महत्त्वके कागजाका अेक बडा बगलझाला अपने अुठानेके लिये अलग तयार किया।

ठीक साडे सात बजे बापूजीने श्रीरामपुर छोडा। म बापूजीका बडा बगलझाला लेकर छोटे रास्तेस तीस मिनटमें अयात आठ बजे यहा (चडी पुर) पहुच गजी। चडीपुर आकर बापूजीकी मालिगीकी तयारी का, कूकर रखा और बरतन साफ किये। बापूजीके साथ सुशीलाबहन थी। रामधुन चल रही थी और दूसरे कीतनवाले भी कीतन कराते आ रह थे। बापूजी यहा आठ बजकर पचास मिनट पर पहुचे। यहा जिस घरमें हमारा पडाव है अुस घरकी बहनाने बापूका स्वागत किया अुह तिलक लगाया और हार पहनाये।

अदुल्ला साहब, डी० अेस० पी० आये। अुहें बापूजीने कहा, जिन संताके आत्मियाका होना मुझे अच्छा नहीं लगता शोभा नहीं देता। मेरी रखवाली ता बहुत बडा प्रभु कर रहा है। मने अुस रखवाले—अीश्वर खुदा पर ही सब कुछ छोड दिया है। अुस जरूरत हागी ता वह मुझे जिन्दा रखेगा, न जरूरत हागी तो अुठा लेगा।

मालिगी स्नान, भोजन और आराम करके बापूजी अुठे तव लगभग १२-५० हो गये थे।

भाजनमें यहा ताजे बने हुअे मुरमुरे अुवाला हुआ गाक, अेक अेपफ्रूट और दूध लिया। अेक बजे नारियलका पानी पिया। दाने तीन बजे तक काठा।

वातकर मिट्टी लते हुएे वं साथ बातें की। गामका अिम तयालम प्राथना साठ चार बज हुअी कि बहनोके लिअ बहुत ढेर न हो जाय। प्राथनामें बहनाकी अच्छी सख्या रही। प्राथनासे आकर बापूजीन गाम बालीं और दूध लिया। बालींको शाकमें डाला या परन्तु चवानमें बापूजीका कठिनाभी हुअी। आज सुशीलाबहनक गावमें धूमन गय। अुस गानना नाम है चागरगाव। चडीपुरक पास ही है। अक बडा मकान है जिसम दूसरे भी रहत ह और अक कमरेमें सुशीलाबहन रहती ह। अनस तथा अय स्थानीय लोगसे वापून बातें की। हम अचानक ही पहुच गय थ अिमलिअे सुशीलाबहन बहुत प्रमन्न हुअी। लौटते समय तो बापूजीन खूब दौडाया पचास मिनटमें वापम आ गय। जात समय सवा घटा लगा था। आकर मन वापूजीके पर घाय और अुन्हान रामफल खाते हुअ मेरी डायरी सुनी बगलाका पाठ किया और यवाव मालूम होनके कारण लेट गये। नौ बज बाबा (सतीगानाबू) आ पहुचे।

चडीपुर

३-१-४७ गुरुवार

आज रातको बापूजी बहुत जल्नी नही अुठ। सवा तीन बज अुठ। दानुन करते करते किसी प्रसगके आधार पर मुझे कहन लग मरा मनाविज्ञान यह है कि हम कुछ भी काम करे और अुसका सोचा हुआ परिणाम न आवे तो यह समझना चाहिये कि दोष हमारा है। हमें गभीरतास विचार करना चाहिय कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यों नही आया? अिसका जवाव अपन मनस गातचित्त होकर मागना। तुम्हे जवाव मिल बिना नही रहेगा। यदि तुम अितनी विचारक बन सको ता मेरा काम वितना चमक अुठ? तुम्हारे लिअे यह बडा कठिन काम है परन्तु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा। जिस दिन हम अपने दोष देखन लगेंग अुस दिनसे हमें जिस प्रकार लडाबी झगडे और मारकाटमें पडनकी वात नही सूनगी। केवल यही सूनगा कि दुनियाका भला किस वातमें है। आज हमारे दिमाग खाली पड गये ह। हम आपसमें अक-दूसरे पर दोष मठने ह। मरे बहनका यह आगय नही कि असा हम जान-बूझकर करते ह परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जसे आगसे अनजाने हाय छ जाय तो हम तुरन्त अुसे हटा लेते ह अुसमें यह विचार करनकी जरूरत नही पडती कि हटायें या नहा वस ही आजकल जो अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो

गया है। परन्तु अिमका तहमें जाकर हमें यह सोचना चाहिये कि कोअी हिन्दू अेक भी मुसलमानका क्या मारे? या कोअी मुसलमान अेक भी हिन्दूको क्या मारे? अिस दगेकी जिम्मदारी मेरी दृष्टिम सारे हिन्दुस्तानकी है। प्रत्येक भारतीय यह माचे कि 'मेरा हृदय किस आर है? गुद है या अगुद? म प्रत्येक भारतीयको अपना भाअी मानना हू या नही? यदि अेक भी हिन्दू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अेक भी मुसलमान यह चाह कि हिन्दू मरे तो अच्छा हो—भले वह खुद छुरिया न भावना हो, परन्तु मनमें अेक-दुमरेका बुरा चाहता हो—ता म कहता हू कि जा छुरा भावकर मारनेवाले हैं अुनमे ये हलके विचारवाले लग अधिक क्रूर और निदय ह। क्याकि अुनका मन गदा हो जाता ह और यह गन्गी वातावरणमें असे रजकण फलानी है जा सूमसे सूक्ष्म होते ह। अुदाहरणाय, घरमें किमी प्रकारकी गदगी है—अेक टा० बी० का गिकार हुआ आदमी है। कोअी जानता नही कि अुम आदमीका सचमुच टी० बी० हो गया है गायद गुरूमें वह भी न जानता हो कि मुसे क्षय जसा राग है। वह चाह जहा धूककर गदगी करता है। धीरे-धीरे अुम पर मक्खिया बछनी ह और दुमरे जन्तु फलत ह। समझ लो कि तुम्हारे गरीरमें रोगके विरुद लडनेवाले जतु कम हो जाय, फिर भी तुम भगी-बगी रहा। परन्तु तुम्हारे म्दाने पर ये मक्खिया कब आकर बठ गअा और क्षयके जहरीले जतु फल गअी यह तुम भी नही जानती हो। परन्तु तुम्हारे दुबल गरीरमें यह जहरीली खुराक जाय तो तुम क्षयकी गिकार तो अवश्य बनोगी।

[अिसी तरह हिन्दुस्तान अिम समय निबल है। अुममें रोगके विरुद लडनेवाले जन्तु—विचारक निस्वाय सेवामावी और फूट न फटे यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये ह। और अिसलिअे मनमा वाचा कमणा हम जसा चाह या कर बसा होता है।]

'जसा यह सूक्ष्म विानन है वसा ही मेरी दृष्टिम मनका विानन है। हममें कहावत है कि 'मन चगा तो कठौनीमें गगा।' अिस मनकी, विचाराकी तुम वारीकीसे जाच करना कि की या तुम्हारी बनाओ हुअी मने क्या काममें नही ली? यन् म अुलाहनेके तीर पर नही कहता परन्तु यह बतानेका प्रयत्न करता हू कि हमारे विचार क्या रूप लेते ह।

दातुन करने करने धापूजीने अेक छाटीसी बात परस सारे देगक वातावरणमें हमारे मनका, अिच्छाका कितना हाय रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी

कातकर मिट्टी लते हुए के साथ बातें की। गामका जिय खयालस प्राथना साड चार बजे हुआ कि बहनाके लिअ बहुत देर न हो जाय। प्राथनामें बहनाकी अच्छी सख्या रही। प्राथनास आकर बापूजीन गाम वालीं और दूध लिया। वालींको गाममें डाला था परतु चवानमें बापूजीको कठिनाजी हुआ। आज सुशीलाबहनक गाममें घूमन गय। उस गावका नाम है चागरगाव। चडीपुरके पास ही है। अक बडा मकान है जिसमें दूसरे भी रहते ह और अक कमरेमें सुशीलाबहन रहती ह। उनस तथा अय स्थानीय लोगस बापून बातें की। हम अचानक ही पहुच गय थ जिसलिअ सुशीलाबहन बहुत प्रसन्न हुआ। लौटते समय तो बापूजीन खूब दौडाया पचास मिनटमें वापस आ गय। जाते समय मवा घटा लगा था। आकर मन बापूजीके पर धाय और बुन्धान रामफल खाते हुए मेरी डायरी सुनी बगलाका पाठ किया और थकावट माहूम होनके कारण लेट गय। नौ बज बावा (सतीगाबाबू) आ पहुचे।

चडीपुर

३-१-४७ गुक्का

आज रातको बापूजी बहुत जल्पी नही अुठ। सवा तीन बज अुठ। दानुन करत करते किसी प्रसगके आधार पर मुय कहन लग मेरा मनोविधान यह है कि हम कुछ भी काम कर और उसका सोचा हुआ परिणाम न आवे तो यह समझना चाहिय कि दोष हमारा है। हमें गभीरतास विचार करना चाहिय कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यो नही आया ? जिसका जवाब अपने मनस गान्तचित्त होकर मागना। तुम्हें जवाब मिठे बिना नही रहेगा। यदि तुम अितनी विचारक बन सवा ता मेरा काम कितना चमक अुठ ? तुम्हारे लिअ यह बडा कठिन काम है परतु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा। जिस दिन हम अपन दोष देखन लगेंग उस दिनसे हमें जिस प्रकार लडाजी मगड और मारवाटमें पडनकी बात नही सूझगी। केवल यही सूझगा कि दुनियाका भला किस बातमें है। आज हमारे दिमाग खाली पड गय ह। हम आपसमें अक-दूसरे पर दोष मडन हं। मेरे बहनका यह आशय नही कि असा हम जान-सूझकर करते ह परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जसे आगमे अनजान हाय छू जाय ता हम तुरन्त अुसे हटा लेते ह अुममें यह विचार करनकी जरूरत नहा पन्ती कि हटापें या नही बस ही जाइवल जा अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो

गया है। परन्तु जिसका तहमें जाकर हमें यह मोचना चाहिये कि काजी हिंदू अथवा भी मुसलमानका क्या मारे? या काजी मुसलमान अथवा भी हिंदूको क्या मारे? जिस दंगेकी जिम्मेदारी मरी दृष्टिसे सारे हिन्दुस्तानकी है। प्रत्येक भारतीय यह सोचे कि मरा हृदय किस ओर है? शुद्ध है या अशुद्ध? म प्रत्येक भारतीयको अपना भाओ मानता हू या नहा? यदि अथवा भी हिंदू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अथवा अथवा भी मुसलमान यह चाहे कि हिंदू मरे तो अच्छा हा—भले वह खुद छुरिया न भावता हा, परन्तु मनमें अथवा-दूसरेका बुरा चाहता हो—ता म कहता हू कि जो छुरा भावकर मारनेवाले हू अथवासे ये हूके विचारवाले लोग अधिक क्रूर और निदय है। क्याकि अथवाका मन गदा हा जाता है और यह गदगी वातावरणमें असे रजकण फलाती है जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म होते ह। अथाहरणाय घरमें किमी प्रकारकी गदगी है—अथवा टी० बी० का गिकार हुआ आदमी है। काजी जानता नहा कि अथवा आदमीको सचमुच टी० बी० हो गया है शायद गुरुमें वह भी न जानता हो कि मुझे क्षय जसा रोग है। वह चाह जहा धुक्कर गदगी करता है। धीरे धीरे अथवा पर मक्खिया वैठती ह और दूसरे जन्तु फलते ह। समझ लो कि तुम्हारे शरीरमें रोगक विरुद्ध लडनेवाल जतु कम हो जाय फिर भी तुम भली-चंगी रहो। परन्तु तुम्हारे खाने पर ये मक्खिया कब आकर बठ गयी और क्षयके जहरीले जतु फला गयी यह तुम भी नही जानती हो। परतु तुम्हारे दुबल शरीरमें यह जहरीली सुराक जाय तो तुम क्षयकी गिकार ता अवश्य बनीगी।

[अिमी तरह हिन्दुस्तान जिस समय निबल है। अथवामें रोगके विरुद्ध लडनेवाले जन्तु—विचारक नि स्वाथ सेवाभावी और फूट न फले यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये ह। और जिसलिजे मनसा, वाचा कमणा हम जसा चाहें या कर बसा होता है।]

‘जसा यह सूक्ष्म विज्ञान है वसा ही मेरी दृष्टिसे मनका विज्ञान है। हममें कहावत है कि ‘मन चगा तो कठौनीमें गगा। जिस मनकी विचाराकी तुम दारीकीसे जाच करना कि नी या तुम्हारी बनायी हुओ मने क्या काममें नहा ली? यह म अलाहनेके तीर पर नहा कहता, परन्तु यह बतानेका प्रयत्न करता हू कि हमारे विचार क्या रूप लेते ह।’

दातुन करते करने बापूजीने अथवा छोटीसी बात परसे सारे देगक वाता वरणमें हमारे मनका जिच्छाका कितना हाय रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी

जसी अच्छा वसा भुसवा वाय होना है जिस सपथकी अपनी विचारगरणी मुझ बताओ। अिस समय जो हिन्दू-मुस्लिम-बमनस्य पण हा गया है, अुसके लिअ वापूजी देगेके प्रत्यक् मनुष्यके मनको अधिक् जिम्मेगार समनत ह। य बातें बुदाहरण-सहित अितनी सरलताम वापूजीन कही कि विल्कुल गले जुतर गर्हीं। वापूजी तो असी छातीसी मानी जानवाली भूलाको— क्वाचित साधारणत जिहे भूल भी नहीं कह सकते असे प्रसगाको पहाड जसा बना लेते ह। वे हमेगा कहत ह कि मनुष्यको आग बडना हा तो छोटीसी भूलको भी पहाड जसी बनाकर अुस सुधार लिया जाय ताकि फिर कभी असी भूल हो ही नहीं। यह बात विल्कुल सच है। सदाकी भाति प्रायना हुआ। आज प्रायनामें प्यारेलालजी थे अिस लिअ भजन और गीतापाठ अुन्हीने कराया। वापूजीने गरम पानी पीकर अुनके साथ बातें की। निमलगाके साथ भी बातें की और आश्रमकी डाक लिखी। मन भी डाक लिखी और प्रात कालनी बातें नोट कर ली।

सुबह साठ सात बजे यहाकी हरिजन-बस्ती और जिहे नमोपूद कहा जाता है अुनका मुहल्ला देखने गय। वहा दगाअियान असे अमानुषिर काय किये ह कि दिल काप अुठता है। साथमें आजी० अन० अ० वाले देवनाय दास और बनल जीवनसिंहजी थ। आवर वापूजीके पर धोये। और वे कल्का प्रायना प्रवचन सुधारने बठ। अिससे मालिगामें काफी विलम्ब हो गया। मालिगके समय प्यारेलालजीके साथ बातें हुआ। भोजनमें आज आठ औंस दूध बाली सन्ने (खोपरेका) और षोडा कच्चा दाक लिया।

भोजनके समय म पास नहीं बठी थी। प्यारेलालजी थ अिसलिअे मुझ वापूजीन नहाकर कपड धो डालनको कहा कयाकि बारह बज गय थ। म निबटकर आओ। वापूजीने भोजन कर लिया अुसके बाद वापूजीके बरतन साफ करके परामें धी मला। वे आष घट सोय। यहाका नक्शा देवा। दो बज अमियकाबू (गुरदेव टागारके मत्री) जाय। अुनके साथ लगभग घट भर बानें की और देगमें रोगके रजक्ण किस प्रकार बड गय ह यह जसे आज सुबह मुझ कहा था बसे ही लगभग धाराप्रवाह रूपमें अुहे सुनाया। तीन बज बापू और म बहनाकी सभामें गय। सभामें बहुत बहनें थीं। अस्पृयता और पवित्रता पर वापूजीन सुन्दर भाषण लिया। अन्तमें कहा, जब बहनें अिस कायको अपनायेंगी तभी देगकी अुन्नति होगी।

चार बजे पट पर मिट्टी लेते वक्त बिहारके भाभी, व्होल्टन साहब और सिनहाजी आये। अन्के साथ लगभग पाच बजे तक चर्चा चली। बापूजीने कमीशन नियुक्त करनेके बारेमें खूब जोर दिया। बिहारमें नाआखात्रीका मात कर असे कुछ हृत्य हुअे दीखते ह। और आपसमें भी गदगा हो असा लगता है।

बार्ने करते हुअे बापूजीको दूध, शाक और फल लेना था जिसलिअे मिट्टी साढे चार बजे अतार ली। पौने पाच बजे खाना गुरू किया। दूधमें अेक औंस वाल्नी पीसकर डाली थी। सब कुछ मिलाकर पी गये। पाच बजे खाना पूरा हुआ और प्रायनामें गये। कल जरा जल्दी हुअी थी। जिसलिअे आज प्रायना दरसे रखी। वहासे सीधे रामकृष्ण मिशनवाडीमें घूमने गये। आकर मने बापूजीके पर धाये। फिर अन्हाने अखवार सुने। जिस बीच मने अपना रातका कामकाज निबटाया। तार दुबटे किये। सौ तार निक्ले।

आज दिन भर मुझे अितना ज्यादा काम रहा कि सुबहसे घरकी डाक आअी हुअी थी फिर भी रातको बापूजी लेटे तब अन्के पैर दवाने और निरमें तल मलनेके बाद दस बजे वह पडी। और अभी यह डायरी पूरी की। (ग्यारहका घण्टा बज रहा है।) बापूजीके साथ बडा आनद आ रहा है और खूब सीखने और जाननेको मिल रहा है। जिस प्रकार सारा काम रोज पूरा किया जा सके तो कोअी अडचन न हो।

बापूजी सुबह बहुत जल्दी अुठाते ह जिसलिअे मने सानस पहले विनाइमें कहा 'आज यदि आप जल्दी न अुठ सकें ता भगवानके नाम पर अेक दीया जलाअूगी।'

बापूजी हसते हुअे बोले 'भगवान असा लालची नही है।'

(ठीक समझी हो, परन्तु मेरी दक्षिंस कुछ सुधार करने जैसा मालूम होता है। बापू ५-१-४७ चडीपुर)

अपनी डायरीमें तो आज बापूजीने अपना कायक्रम और दिनमें कौन कौन आया यहा लिखा है।

सवेरे नमोशूद्राकी बस्तीमें गये थे। असे देखकर अपनी विचारमालामें अेक वाक्य अुद्धत किया है 'धूमते समय नमोशूद्राकी बाडीमें हुआ नुबसान दखा। सहज ही ये विचार आये कि मनुष्य धमके नाम पर या स्वाथवश असी बरवादी बस करता होगा?'

चाहिये। जिस प्रकार मीठी वाणीसे बापूजीने जिन दोनों भाजियोंको तुरन्त बिना दे दी।

मालिगामें बापूजी पंद्रह मिनट सो लिये जिसलिअ ताज हो गये। अठ कर कहने लगे मेरी कुछ थकावट अुतर गयी। रातके ठीक दासे सुबहक नौ बज तक लगातार काम चला और अुसमें भी बोलनेका ही ज्यादा रहा। बापूजीके लिअ यह बहुत अधिक कहा जायगा। खानमें दो खाखरे साय दूध थोडासा पपीता और अक छोटासा सदेका टुकडा लिया। बापूजीन मुझ मुरमुरे पोहे नारियलका तेल वगरा कसे बनता है जिसका ब्यौरा जान लेनको कहा। फिर बाले और हम चावल साय रखें जिससे तुम्हें राज राज खाखरे बनानकी मेहनत न करनी पड। मुरमुरे बनाकर रख दिये जाय ता व दस पद्रह तिन तक चलें और हमारा काम हो जायगा। मेरे जसक लिअ तो मुरमुरे गहूकी जगह अच्छी तरह काम दे सकनवाली वस्तु ह।

खाना खाकर बापूजी लगभग पौन घटा सोये। कातते समय आज मरी दो-तीन दिनकी डायरी सुनी। बापूजीन कहा कि सब पर अक साय हस्ताक्षर कर दूंगा जिसलिअ पाट पर रख दो।

शारेनगान अक बढिया धनुष-तकजी बनायी है जिस पर बापूजीन काता। कातकर ग्राममभामें गये। चार बज बापूजीके पेट पर मिट्टी रखकर म गामका खाना तयार करन गयी। आज बापूजी आखामें जलन होनकी गिनायत करत थ। आखा पर भी मन मिट्टी रखी। बापूजी आजकल बड गहन विचारामें डूब रहत ह। सूब थके हुआ ह। शामको छह और दूध और घाडा गाव ही लिया।

गामको प्राथनामें अच्छी सख्या थी। लगभग दस बज सोये। बिस्तरमें ता साड नौ पर सेट गये। म आज जल्नी साड दस बज सो। गयी। मुझ सरदीक कारण सुखार है। बापूजाको यह अच्छा नही लगता। सानम पहले बहन लगे आज महरबानी करके तुम जल्नी सो जायागी तो मुझ अच्छा लगगा। मैं मसज गयी कि बापूजाका मरी काफी चिन्ता होती है। कुछ भी बहम किय बिना गारा अतिरिक्त काम छाडकर म सो गयी। अभी बापूजीका मूत्र दुबटा करन कुछ पत्राकी नकल करन और कुछ अम्बवाराकी बनरमें फाजि करनका काम बाकी है। कल निवटा दूगी।

(बापू ५-१-४७ रविवार चडीपुर)

चठीपुर,

५-१-४७, रविवार

बापूजी अगली बजे अठे। मुझे अठायी। मने लालटेन जलायी। सबसे पहला काम आज मेरी चार-पाच दिनकी डायरीको अपर-अपरसे देखकर हस्ताक्षर करनेका था। ता० ३-१-४७ की डायरीमें भाषाकी दृष्टिसे क्या सुधार हा सकता है (व्याकरणकी कुछ भूलारा) सो बापूने बताया। थोड़ेसे चका पर हस्ताक्षर किये और यह समझाया कि किस प्रकार यह सब हिसाब रखा जाय। बापूजीने स्वय ही कुछ पत्र आश्रमको लिखे। माडे सात बजे सदाकी भाति धूमने निकले। धूमने समय रास्ते पर सुधीरदा (सुधीरचन्द्र घोष) के साथ बातें का। बुह विदेशमें राजदूतके नात अथवा मन्त्रि-मंडलमें अुपयोगी हा सकें तो अुस दृष्टिसे कुछ सूचनाअें और मागदान दिया। सुधीरदा बहुत ही सरल स्वभावके और सादे आदमी ह।

जहा हत्याअें हुजी थी वहा गये। सब कुछ अुजाड और वीरान पडा था। हड्डिया भी बिखरी पडी थी। आकर बापूजीके पर घोये। बापूजी और सुधीरदाके बीच खूब लम्बी बातें चली असलिअे मालिगामें बहुत देर हो गयी। मालिग जल्दी जल्दी बरायी। खाने समय बापूजीने को बुलाया। बुन्हाने जानेकी जिच्छा बतायी। मेरे लिअे भी ये बातें समझने लायक होनेस बापूजीने कहा कुछ खानगी नही है। म चाहता हू कि तुम अस किस्सेको समझो, असलिअे यही बठ जाया।" बापूजीने से कहा, मैं समझूगा तुम छुट्टी पर गये हा। तुम पर ने अटूट प्रेम बरसाया है। तुमने मेरे लिअे फकीरी ली है। तुम्हारी भक्तिपूण भावनाके कारण मैंने तुम्हें मुक्त किया। म तो तुम्हें पुत्रके समान मानता हू और मानूगा। अस समय तुम अुत्तेजित हो असलिअे मेरा सारा समझाना व्यथ है। यह भी हो सकता है कि म अपनी मूल न समथ पा रहा होअू।

बापूजीने भोजनमें दो खालरे, आठ औंस दूध खोपरेका मसका जरासी कच्ची भाजी और दो सन्तरे लिये। भाजन करके आरामके लिअे लेटे। म परामें धी मल रही थी। असलिअे मुझस बोले, आज हर परका अडाअी मिनट देकर पाच मिनटमें दोना पाव पूरे करने हैं। तुम अभी तक नहाअी नही? कब नहाओगा और कब कपडे धोओगी? आज तो धानेको ढेरा कपडे निकाले ह। बरतन भी बहुत माजने हागे। परन्तु की बात

समयना तुम्हारे लिअ बहुत जरूरी था क्योंकि तुम व्यौरेवार लिख सकती हो और तुम अितनासे बातें कर लोगी तो मेरा समय भी बच जायगा।

बापूजीके परीमें धी मलकर चरखा तयार करव और बुटें तब नारियलका पानी देनको गारेनदासे कहकर म नहान घोन गयी। महा खानका समय आम तौर पर अढ़ाई-तीन बजेका होता है और म अपन कामकाजसे अढाई बज ही निवटी। रोज तो बापूजीको मरा अितनी देरसे खाना अच्छा नहीं लगता जिसलिअ जल्दी खा लेती हूँ। परन्तु आज अपवाद था जिसलिअ मन घरके लोगाने साथ भोजन किया। जिससे दीदी गारेनदा सब बहुत खुश हुआ। परन्तु बापूजीको मालूम हुआ तो बहने लग असमय खानसे न खाया होता दूध पी लिया हाता या फल और नारियलके पानी जसा हलका जाहार ले लिया होता तो मुझ अधिक पसंद होता। ये सब ता बीमार पडनके लक्षण ह। यदि तुम यहा बीमार हो गयी तो मेरे सब किय-नराये पर पानी फिर जायगा। तुम्ह मुझसे पूछना तो था कि म खाऊ या नहीं? यह सब मुझ अच्छा नहीं लगा। तुम्हे अभी तक जुकाम है फिर भी अितन ज्यादा कपड धोय। परतु अब और तक छोडकर आध घटा आराम कर लो। यह मुझ अधिक अच्छा लगेगा और सन्तोष होगा। तुम्हारा आजका समय बिगाडनवाला तो म हूँ। मने तुम्हें बातें समझनको रोका। किमलिअ रोकना चाहिय था? परन्तु मेरा मन ; माना। खर जो हुआ सो हुआ। यह तो भविष्यकी सुरक्षितताके लिअे अितना कहना पडा।

बातकर बापूजी कारीगराकी सभामें गय। मुझ नहीं ले गय। सोनको कहा। म सो गयी। बापूजीन आकर चार बज मुझे जगाया तुम कितनी थक गयी थी जिसका खयाल तुम्हे मुदेकी तरह सोते देखकर मुझ हुआ। तुम तो कहती थी कि नीद नहीं आती। सुबहके अगजी बजसे तुम्हे अुठाय है। जिसलिअ थकावटका बोधी दाप नहीं। परतु क-ककर बूतेसे ज्यादा काम करानी तो मर जाओगी और म भी मर जाऊगा।

गामका खानमें अनन्नामका रस आठ बीम दूध और अक औंस गुड लिया। प्राथना चागरगावमें हुयी। वहासे हरिश्चरामें जक मुसलमान भाओके यहा गय।

चारदा बाबा और मा आये। यात्रा गुरु होनेवाली है, अिमलिअे अुसके विषयमें चर्चा हुई। बापूजीने कहा, काजीरखिल कम्पका कोजी भी आत्मी मेरी सवामें, खास तौर पर रहे, यह म नहीं चाहता और मेरे साथ जा असवारवाले रहना चाहूँ भी कह दिया जाय कि वे अपने खच जोखिम और जिम्मदारी पर रहना चाहें तो ही रह। बहुत बार अँसा भी हो सकता है कि ये लोग मेरे दलमें मान लिये जाय। अिसलिअे प्रेस रिपोटराको खास तौर पर समया दिया जाय। ने जाना तय किया है। भी बहुत नहा टिक सकता। फिर भी देखना है। लेकिन मनु और निमलबाबू भरी मडलीमें ही माने जायेंगे।

मने बाबा (सतीगवाबू) और मा (सतीगवाबूकी पत्नी हेमप्रभादेवी) दोनाको बापूजीकी अतिरिक्त चीजें सौंप दी।

रातको प्राथना-समासे आकर बापूजी खूब थक गये थे। आधे जाँके बराबर गुड लिया और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। मौन लकर बन्नमे पत्र जाध। दस बजे सोये।

गामके बाद मौन हानेसे बापूजीके पास काअी खास काम नहीं रहा। अब नियमानुमार राज अेक अेक गावमें रहना हागा, अिमलिअे कमम कम सामान साथ रह अिमके लिअे बहुत प्रयत्न किया।

चडीपुर

६-१-४७ सोमवार

बापूजी विगेष जल्दी नहीं अुठे। ठीक प्राथनाके समय ही अुठे। मौनवार होनेस लिखनेका काम अुन्हाने स्वय ही किया। प्राथना बगरा नित्यकमस निवटकर रस लिया। बादमें पत्र पढते-मन्ते सो गये। गायद कल गामको बूतेसे बाहर धूमे थे अुमकी यकाबट होनेसे पर दवानेको भी अिगारेसे कहा। मने पाचेक मिनट पर दवाये कि गहरी नीदमें सा गये। साड़े छह बजे अुठे। साडे सात बजे बापूजी और म अेक कायकर्ता भाअीको, जा बीमार पडे हैं देखने गये। वहा बापूजीने लिखकर अुह कुछ हिदायतें दी। बार बार गरम पानीमें सद्द और षोडा सोडा डालकर पीनेका कहा। कुछ भी खानेके लिअे मना कर दिया। पेट पर मिट्टी लेनेका भी आदग दिया। वहासे आनेमें पूरा अेक घटा लगा। पर धोकर सीधी मालिग की। मालिगमें बापूजी पच्चीस मिनट सो लिये।

शामको प्राथनामें बापूजी नग परा आय। मन कारण पूछा तो मौनसे बाद बतानेको कहा। रातको बापूजीन अपना काम जल्दा समेट लिया और आठ बजे बाबा, मा, अरुणभाभी (सतीगबाबूके लडके) के साथ बार्ते की।

बापूजीके परमें चीरा पट गया है, जिसलिअे हेज्जीन लगाया। प्यारेलालजा आय। अुनके साथ लगभग दस बजे तब बार्ते का।

बापूजी रातको लेटे थे और भ तल मल रही थी तब मुझे चप्पल छोडनेका कारण बताने हुजे कहा "हम हिन्दू मंदिर मस्जिद या गिरजमें जाते ह तब चप्पल नही पहनते। तब मुझे ता रिरद्र-नारायणके पास जाना है जिस भूमिच स्वजन टुट गय है जहा स्त्रिया और बच्चोंकी हत्या हुयी है, जहाके लागेके पास लाज ढक्कनका भी कपडे नहीं ह जहा अनेक निर्दोषीकी पवित्र हड्डिया पडी हुयी ह असी भूमि पर चान्ना है और असे लोमसि मिलन जाना है। यह मेरे लिअे पवित्र यात्रा है। (कलसे नियमित प्रवास सुरु होनवाला है।) असी हालतमें म चप्पल कैसे पहन सकता हूँ ?"

ये गल बालत समय बापूजाके हृदयकी स्थिति वैसी ही थी जसी मक्खन निकालनेके लिये छाछ बिलोते समय छाछकी होती है। जिस पदल यात्राको बापूजी कितनी पवित्र मानते ह, यह ममसाया।

(बापू, मासिमपुर ८-१-४७)

८

अकला चलो रे

चडापुर

७-१-४७, मंगलवार

आज पवित्र यात्राका स्मरणीय दिवस होनेके कारण प्राथनामें 'वष्णव जन' का भजन गानेके लिअे बापूजीने कहा। और अुसमें प्रत्येक बडीके अन्तमें ख्रिस्तीजन पारसीजन सिक्खजन मुस्लिमजन और हरिना जन ता सने कहाअ जे पाठ पराओ जाणे र' जाडकर गानका आदेश दिया।

प्राथनाक बाद लगभग अक घटे तब बापूजी और प्यारेलालजीके बीच बार्ते हुयी। म सामान ठीक करनेमें लग गयी, जिसलिअे मने दोनाकी बार्ते नहा मुनी।

आज को बापूजीने बड़ा हृदयस्पर्शी पत्र लिखा है और उसमें यहाँका विस्तृत चित्र खाचा है। उसकी नकल की। बापूजीने उस पत्रमें लिखा है

मेरे स्वास्थ्यकी चिन्ता न करो। अभी तो बहुत काम देता है। जब तक काम देगा यह तो भगवान जाने। खेडामें मेरी बीमारीका कारण मेरी मूखता थी। तब मुझमें कुगलता थोड़ी थी और स्वादेन्द्रियकी प्रभुता थी। पाच चीजें खाआ या अंक चाज परन्तु मैं जिस बातका प्रत्येक क्षण अनुभव करता हूँ कि जिस अिन्द्रियके वग हो जाआ तो वह हमारे 'यवम्यित किये हुंके कामको चौपट कर डालती है। साथ ही से कहता हूँ कि मेरी चिन्ता न करो। मेरी चिन्ता करने वाला अंक सब गक्तिमान बच हमारे सिर पर है वह काफी है।

के नाम लिखा तुम्हारा पत्र आया था। जवाबकी मत पूछो। थोडे़म पत्र लिखता हूँ सा भी जल्दी अुठता हूँ जिसलिअे। काम सभल नहीं पाता। उसकी भी चिन्ता नहीं करता। कहते गम आती है कि 'हरिजन' मिलता ता है, परन्तु पढ नहीं पाता। अपने-अपने गावमें ह। भला बुरा दखनेमें आयेगा तब तो कह ही दूगा। यहाँका काम अटपटा ह। रास्ता अघेरेमें तय करना है। 'मेरे लिअे अंक कदम काफी है। यह सारी प्रस्तावना है।

बापू सवा सात बजे अुठे। बायरूममें गये। अितनी देरमें मने जिस गद्दी पर बापूजी बठते ह उसका अतिम वेडिंग वाधा और पाचेक मिनटमें बापूजी बाहर आये। घरकी और दूसरी बहनाने बापूजीका तिलक लगाया आरती अुतारी। अंक तरफ मैं थी और दूसरी तरफ बापूजीकी काठकी बसाखी। बापूजी नगे पर थे।

आजका दिन मेरे जीवनमें अतिहासिक दिन बन गया है। उसके आनदकी तो किसीको कल्पना भी नहीं हो सकती। बापूजीके असे अन्भुत महायत्नमें आज मेरे लिअे अुनकी लाठा बननेका अवसर आयगा यह तो मने कभी सोचा भी नहीं था।

ठीक साडे सात बजे अदि तोर डाक गुने केओ ना आसे, तबे अकेला चलो रे — तेरी पुकार सुनकर कोअी न आये तो तू अकेला ही चल — यह पम्ति गाते हुंके बापूजीने नगे पर घरके बाहर रखे। उस समयका दृश्य

असा था मानो 'परथम पहेलु मस्तक मूकी बळती लुवु नाम' (पहन सिर गन्कर बादमें प्रभुका नाम लेना चाहिये।) वाली पवित्रकी अन्हान प्रत्यक्ष आचरणका रूप दे दिया है। अकला चणे रे के भजनके बाद रामधुन अकके बाद अक गाते गाते माग काट रहे थे। तुलसीदासजीन गायन है दडक बन प्रभु पावन बीनो अपियन पास मिटाओ। कुसी तरह य भी निरा जगल ही था जोर बापूजी मानो अतक तिदोपा पर गुजारे हुअ मितम और शासको मिटानक लिजे ही जा रहे थ। सत्रसे आग सनाक आदमी थ बाभमें प्रेस रिपोटर थे जोर जुनके पीछे बापूजी जोर म। दो आत्मी मुदिनसे अक माय चल सकें जितनी चौडा पगडडा था। परन्तु माग बडा रमणाय था। नारियल और सुपारीके हरे हरे पत्त बापूजी पर अक झुक्कर मानो प्रणाम करके अुनका स्वागत कर रहे थे। चारा तरफ हरियाली छाओ हुओ थी। और धनी हरीभरी बनराजिक जूपर मामने गल लाक जावानम सुयव भी माना अिम महापुरपकी अतिहासिक यात्राकी घडाक साथी बनतका निकल आय थ। तिस भव्य अरुणोदयका प्रतिबिम्ब आमपासके सुन्दर तालाबामें पड रहा था।

जगह जगह अनेक सुन्दर अरन थ। मेरे मनमें विचार आया आजका यह सुनला और भय अवसर किस पुष्पक प्रतापसे मिला होगा? पू० बाबू जागावदिका जोर मेरे माता पिताकी अुनक प्रति रहा भक्तिवा ही यह सुफल है। असी जनक भावनाआसे म हर्षित हो रही थी। और अीश्वरसे अक ही प्रार्थना कर रही थी कि मुचे परीक्षामें पार अुतारना मेरे प्रभु! रास्वमें दो जगह ठहरे। चागेरगावसे सुगीअरहन आनवाली थी परन्तु वे दूसरे रास्तेसे गयी।

बीचमें ही सतीगवानू (बाबा) और चारण आ पडुच। ठीक नौ बजे हम यहा (मासिमपुर) पडुच।

मासिमपुर

७-१-४७ दापहरके दो बजे

बापूजी अिम समय कात रह ह और म डायरी लिखन बडी हू। हम यहा नौ बजे पडुचे। यहा किमीका कोओ घर नहा था। जहा देखो वही जले हूअे मकान थे। निमल्लजलनी आ पडुचे थे। निमल्लने अपना सामान आप ही अडामा था। बड सिद्धातरादी आत्मी है।

बाबा (मतीगचंद्र दासगुप्ता) और अनुकी मटलीने जो फोर्लिंग हट' बनाया है जुमे खड़ा किया गया है। नीचे घास है। ऊपर चटाओ विछाओ है। दा खाटों ह अक बापूजीकी और दूसरी मेरी। छाटी छाटी खिड़किया और रोगनदान रखे गये ह। पीछेकी ओर बापूजीकी मालिंग हा सब जमा स्थान रखा गया है। कमाड रखनेकी भी छोटी कोठरी-सी बनाओ गओ है। छाटीमी हाने पर भी यह झापडी छाटी-वडी सारी सुविधा-आवाली और बहुत रमणीय है। ऊपर तिग्गा राष्ट्रध्वज फहरा रहा है।

बापूजीन सुवह आत ही पहले यह चापडी दखी। फिर बाहर जेक पटिये पर जब म अनुके पर गरम पानीस धो रही थी तब (नगे पर चलनेसे बापूजीके पावामें छाले पड गये ह। बापूजीके पाव बडे स्वच्छ और कामल ह। हमारे हायाने भी वे अपने पावके तलुअे ज्यादा स्वच्छ रखते ह। तलुआमें जरासा भी मल या कालापन नहा होता।) वे बोले, 'तुमने दखा कि सतीगवाबूने मेरे असि महलके लिजे बितना परिश्रम किया है? असिके अलावा, अठानेवालेको अक जगहसे दूसरी जगह ले जाना आसान हा, असिके लिअे छोटे-छाटे हिस्से बनाये ह। ताकि छाटा बच्चा भी अक हिस्सा अठा सके। अन्हाने मुझ पर असा प्रेम बरसाया है। परन्तु जसे अपार प्रेमको स्वार्थी बनकर म ही कैसे स्वीकार करू? असिलिअे अपने मनमें मने निश्चय किया है कि यह महल अब किसी और गावमें नही ले जाया जायगा। असिका अुपयोग अक छाटासा अस्पताल बनानेमें होगा या अस ही किसी और कामके लिअे किया जायगा। म ता जहा तहा, जो जगह मिलेगी वही आरामस पडा रहूगा। काओ जगह नहा मिली तो अतमें यहा पेड किनने अधिक ह? व हमें कहा अिनकार करते ह? अनुके नीचे आरामसे पडे रहगे। जसे रामजीको निवाहना होगा वसे निवाहगे। असिकी चिन्ता हम किस लिअे करे? गावामें जो भी कायकता गये ह अुह मने कह दिया है कि जिम गावमें बठो वहीके लोग तुम्हें खाने-पीनेका दें जसे कुटुम्बके आदमियाको खिलात ह अुमा तरह। कायकर्ता अनुक कुटुम्बी बन नाय। व यह भाव न दिखायें कि हम कुछ ह अयना हम तुम्हारी सजा करने आये ह जिसलिअे तुम पर अुपकार कर रहे है। अगर असा भाव दिखायेंगे तो वे टिक नहा सकेंगे। यदि वे बीमार पडें तो गावामें जो दवा-दार और बघ-हकीम मिल अुन्हीसे अयवा पचमहाभूत जो कुछ दें अुसीसे सतोप मानें। यही

नियम तुम्हारे लिज और मरे लिज भी है। तुम दसना अिम निरक्षयवा परिणाम अदभुत हागा। अिसमें मुझ जरा भी क्षया नहीं।'

पर धाकर मन वापूजीकी मालिग की। मालिगमें वापूजी बीस मिनट सां लिये। दो बजस अुठ थ। रातके दोसे दिनक पौने दम तर सतत आठ घटे काम किया। नहान धानमें साडे ग्यारह हो गये। आज पहला हां टिन है अिसलिजे हर काममें थोड़ी देर हुआ। भोजनमें आठ औंस दूध मुवाला हुआ ताक दो खाखरे और अक प्रपमूट लिया।

भोजनके समय सुसीलाबहन और प्यारेलाजी बडे थ अिसलिजे म नहाने धोने और दूसरा काम निवटानमें लग गयी। तीन बजे वापूजी बगलाका पाठ करते करत आठ घट सां लिये। मुझे भी परामें धी मल्कर सा जानकी कहा। परन्तु मुझ और बहुत काम था अिमलिजे म सांभी नहीं। साठ तीन बज वापूजी अुठ। नारियलका पानी पिया। डाक देव और पठ कर वापूजीने अपनी डायरामें कुठ नाट किया। पौन चार बज मिट्टी ली। अदुल्ला साहब और जमान साहबके माप निराश्रिताके बारेमें बातें की। मिट्टी लेते ही रिलीफ कमटी की बठक गुरू हो गयी। परन्तु मैं अुसमें भाग न ले सकी। अुसमें बठती तां दूसरा थोडा जरूरी कामबाज रह जाता। अिसलिज अिच्छा हाति हुआ भी अुसमें शामिल नहीं हुआ। अन्नदावावुक साथ लगभग दो घट निराश्रितोंके प्रश्न पर चर्चा चली। वापूजा मानते ह कि निराश्रिताका दान देनेके बजाय अुह स्वावलम्बनकी ओर माडना चाहिये। कुछ मन भले दना पडे मगर केवल दानसे तो मुफ्तका खाना और मस्जिदमें सोना अिस कहावतके अनुमार अुनकी वृति हो जायगी।

ठीक पाच बज प्रायनामें गय। प्रायनामें रामधुन शुरू की कि मुमल मान भांभी प्रायनामें से अुठने लग। परन्तु प्रायना जागी रती। प्रायनासे पहल शामको वापूजीन अेक केलेका गुला और आठ औंस दूध लिया और साठ सात बजे अक औंस गुड लिया।

अकके बाद अक दगनार्थी और मुलाकाती आते गय परन्तु साडे नौके बान निमलदाने सबका मना कर दिया। बस बहुत कुछ काम निमलदा ही निवटा देते ह।

थाडा धूमनके बाद वापूजीके वर धोये। वापूजीन बगलाका पाठ किया मन विछौन बगराका रातका काम पूरा किया। साडे नौ बजे वापूजी

विस्तर पर लेटे। बापूजीके सिरमें तल मलकर और पैर दवाकर मैंने थोड़ेस नोट लिखनेके लिये आध घंटेकी छुट्टी मागी। बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेका कहा। आजकी डायरी टुकड़े-टुकड़ेमें लिखी गयी है। डर था कि सब काम पूरा नहीं कर सकूंगी परन्तु आज काअी विगेष कठिनाअी नहा हुयी। सवेरे रसोअी और मालिका समय अेकसाथ हानेसे मैं कूकर रखनेका ठहरती हू अुतनी दर बापूजीका हा जाती है। बापूजीने खाखरे दूसर किसी समय बनाकर रखनेका आदग दिया। यद्यपि अुन्हाने खाखरेकी जगह मुरमुरसे काम चला लेनेका कहा परन्तु मैंने अिनकार कर दिया। अिसलिये अय किसी समय बनाकर रखनेका कहा ताकि सबेरे समयकी खीचनान न हो।

प्रभुवृपास अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ।

बापूजीका डायरीकी नकल की। ठीक दम बजे है। मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार साने जाती हू।

फतहपुर,

८-१-४७ बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया। जाजूजीका पत्र लिखवाया। अुसमें के पत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके सबषमें राजेद्रवावूके नाम लिखवाया। फिर मेरी डायरी सुनी। अब रोजकी रोग सुनकर किसी भी समय हस्ताअर कर देनेको कहा। 'महादेव और प्रभा काम करत थे अुसी ढगसे तुम्हें करना मिथाना चाहता हू। तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।' बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मने पत्रकर सुनाअी। अितनेमें प्रायनाका समय हो गया।

प्रायनाके बाद तीन चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताअर किये और वादमें बापूजीने निमलदाके माय काम किया।

हम ठीक मात बजे मासिमपुरस यहाक लिये रवाना हुअे। सायमें कुछ स्थानाय स्वयमेवक ह। थाडा थाडा सामान मबने अुठाया। साने आठ बजे यहा पहुचे। रास्तेमें मुमलमान भाअी मिलने थे। बापूजी सबको सलाम करते थे परन्तु व लोग अिम तरह चले जात थे माना कुछ जानत हा न हा। मैंने

बापूजीस कहा आप किसलिअे सलाम करते ह जब अिन लगाने कुछ पडी ही नही है ? बापू बोले अिसमें हमार कया जायगा ? कभी न कभी य जरूर समयंग । हमें कभी नम्रता नही छोडनी चाहिय । वे लोग यही मानने ह कि यह हमार दुस्मन आ गया है जब रि मुझे ता साबित करना है कि म किरावा दुस्मन नही सबका मित्र हूँ सबक हूँ । और यह दावा म तभी कर सक्ता हूँ जब मुझमें और मेरे साथ रहनवालांमें पूरी नम्रता हो ।

रास्तेमें रामधुन भजनादि कल्की तरह ही चले ।

यहा जब पाठगालामें हमार पडाव है । यह पाठगाला मुसलमानाकी है । बापूजीक पर धाय कि कुछ मुसलमान भाभी बापूजीसे बातें करन आ गये । मुन ता लगा कि सिफ गप्पें ही लगान आये ह । परन्तु बापूजी सबकी बात बहुत धीरजस सुन रहे थ । बापूजी जुन लोगाने साथ बातें कर रहे थ जुस बीच मन अुनके नहानके लिअ सभ गाडकर जुनके चारा ओर कनात बाध ली और मालिगवे लिअ भी बसी ही यवस्था कर दी । कमाड भी अुसी बाय रुममें लगा दिया । बापूजीके लिअ गाक भी अवलनको रस दिया और खाखरे भी बना लिया । हमारे साथ आओ० अन० अे० वाजे सरदार जीवनसिंहजीकी टोली है । य लोग पत्यरके चूल्हे तयार करके वाहर दाल रोटी बनाते थ । असी तरह अेक दूसरा चूल्हा बनाकर अुस पर बापूजीके लिअ नहानेका पानी रसा । हवा और ठड सब लग रही थी । बापूजी मालिगामें सो नही सके । मालिगके समय कहन लग यहाके मसलमान कसी सयानी सयानी बातें करते ह । मानो वचारे बिलकुल निर्दोष हो ।

साडे म्यारह बजे कामसे निवटनके बाद बापूजीको भोजन कराकर म नहाने धोन गयी । बापूजीने भोजनमें तीन खाखरे आठ औंस दूध गाक, यीस्ट और अक ग्रपपूट लिया ।

यहा पानीकी भी बडी तगी रहती है । वाहरसे बाल्टीमें लाना पडता है । सो ले आओ । मेरे और बापूजीके कपड धाने और नहानमें अक बज गया । फिर भोजन किया । आज सरदार जीवनसिंहजीकी दाल रोटी खाओ । रोटी पजावी थी । अितनी माटी थी कि मुद्विलसे आधी खा सकी । परन्तु खाना स्वान्ठ लगा । तीन पत्यर जमाकर अच्छी तरह पकाया गया था । सबन हाथाहाय काम किया ।

खाना खाकर बापूजीके पर मलते समय दखा कि पैरामें बिवाअिया पड गयी ह और खून निकल आया है। अउ बिवाअियोंमें घी भरा। मेरी आसामें आसू आ गये। अगुठेके जोडमें तो गहरा चीरा पड गया है। बापूजीकी अिस अुअमें कितनी बडी परीक्षा हा रही है? भारतके लागाका कसा दुर्भाग्य है कि व अिस महापुरुषको पहचान नहीं सकते। क्या अीश्वर महापुरुषाके यही हाल करता है? रामचड्रजीने चौदह वषका बनवास भोगा। अिमील्लिअे आज वे अीश्वरके अवतारके रूपमें पूजे जाते ह। अिस प्रकार दुनियाका सबक देनके लिअे अीश्वर अवतार लेता ही है। जब जब अधम फगना है तब तब अीश्वरको अवतार अवश्य लेना पडता है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सजाम्यहम् ॥

गीताके अिस श्लोकका अेकाअेक मनमें स्मरण हो आया। अिस श्लोकका यहा म प्रत्यक्ष दर्शन कर रही ह।

दोपहरको कानकर मिट्टी लते लेत बापूजी मुसलमान भाअियाने साथ बातें करने लगे। अउ बातामें बापूजीने कहा यदि आप लोग हिन्दुओको नहीं अपनायेंगे तो आपकी हालत खराब होगी। यहा अथवा जहा भी आप बहु मतमें हैं वहा किसी दुबल हिन्दूको मारनेका काम तो अेक छाटा बच्चा भी कर सकता है। असा नीच काम करनेका आपके कुरान शरीफमें कही भी लिखा हो तो मुझे बताअिये। म तो कुरान शरीफका विद्यार्थी हू। और फिर मुसलमानसे मेरी गहरी दोस्ती रही है। आज भी जमी मेरी यह लडकी है बनी मेरी दूसरी बहुतसी मुसलमान लडकिया हैं। अउनमें से अेक अम्तुम्मलाम है जो यहा अुपवास कर रही है। अुमे ता आप जानते ही होंगे। वह लडकी असी है कि मेरे लिअे जान द दे। अिसलिअे मेरी आपस नअ्न प्रायना है कि जो फोअी असा अनुचिन काम करे अुमे चेतावनी दीजिये ताकि आपका भविष्य अुज्ज्वल बने।'

बादमें मुसलमान भाअियाने बिहारकी और दूसरी दंगलें दी। अिस बीच बापूजीको जरा अूष जा गयी। रानके दो बजेने अुठे ह अिसलिअे गब गब गये ह। परन्तु अूष आ जानेके लिअे बापूजीने अउ लागोंमें भाफी मागी। नअ्नताके असे पाठ गीतनेको मिल रह है।

चार बजे बापूजीने दूध, फल तीन सतरे और थोडासा गाकू लिया।
 अुसके बाद प्राथनामें गये। प्राथनामें मुसलमान भाभी बहुत थे। प्राथनासे
 आन पर हरेरामजी मिले। (य हरेरामजा विडलाजीके यहां नौवर ह।
 हरिजन ह। गिल्लीमें बापूजीकी खूब सेवा करते थे। अुहें विडलाजीने बापूका
 सेवा करन भना था। हरेरामजी बडे ध्यानपूर्वक बापूजीकी सवामें तल्लीन
 हो जाने थे।)

हररामजी बापूजीको प्रणाम करन आये। बापूजीने अुनसे पूछा क्या
 आय हो? और हालचाल पूछे। फिर बापूजीने अिनकार करत हुअ
 कहा 'मह तपस्या है। म विडलाजीस यह कहू कि मेरे लिअे रसोअिया
 माटर-भाडा, विमान नौकर-चाकर सबकी यवस्था कर दो तो वह कर
 देंग। परन्तु अिसका नाम यन नहा। यजमें कठिनाअा ता आती ही है। और
 कठिनाअीके बिना अिस तप कसे करा जाय' अितनी बात समझाकर
 अुह विन किया।

बेचार बड निराश हुअे। मेरे पाम आउर कहने लगे तुम बापूसे कहा
 कि मुये रल लें। मन कहा कि बापूजी जब विडलाजीकी नही मानते तो मेरी
 ता मानन ही क्या लगे? और मैं अुनसे कहू ता व मुनाकी यहासे निवाल दें।

धूमत वक्त अेक मुसलमान भाअाक आग्रहस अुनक घर गये। जाते-आत
 बडी तजीमे चल। सुगीताबहन आ गजी थी।

धमकर आते पर बापूजीन गरम पानी और गहद लिया। प्राथना प्रवचन
 और डाक दया। सुगीताबहनको थोडासा लिखवाया।

मन अपनी डायरा लिखी। बापूजीका और अपना विस्तर किया।
 सुबहक लिअे सामान बापा और बापूजीके पाव धाय। २म बजे अुनके लटनके
 बाद पर दबाये और सिरमें तल मला। बापूजीक सानक बाद अुनका सूत
 अुतागा। फिर कडाअी की। अितनमें साडे दम हो गय। मह बापूजीका
 अच्छा नही ग्या। कहन गगे, म मान जाअू अुसके बाद अधिकन अधिक
 पन्ह मिनटमे ज्याग आगनकी तुम्हें छुट्टी नही है। यदि काम अधूरा रहे तो
 सुबह मझे वह दो कि अितना काम पूरा नही हुआ।

मैं पौन ग्यारह बजे सांजी।

(बापू ९-१-४७ फतहपुर)

दासपाठा,

९-१-४७, गुरुवार

आज भी फतहपुरमें बापूजीने मुये दो बजे जगाया। और रातमें जल्दी सो जानेका कहा। बादमें लालटेन जलाकर जाजूजीने चरखा-सघकी जो लम्बी रिपोट भेजी है असे पढा। अमीमें सारा समय बातों और प्राधनाका वक्त हा गया।

प्रायनाके बाद बापूजीसे मेरी टायरीमें हस्ताक्षर कराये। फिर अुह गरम पानी और गहद देकर रस निकालने गयी। अितने समयमें कल लिखाओी हूथी डाक पर हस्ताक्षर करके बापूजीने मुझे सुधार बताया।

फतहपुरमे यहा आनेके लिअे हम ठीक सात पत्तीसको निकले। यहा अेक छोटासा ज्ञापडा है, परन्तु बडा साफ-सुथरा है। घरमें अेक बूढेक सिवा काओी नही था। अुसका अिस दगेमें दूसरा बहुत कुछ स्वाह। हो गया है। नारियलके पत्ताकी छत है। गुबजवाले घासके चापडे जसा लगता है। बापूजीका यह ज्ञापडा खूब पसंद आया।

बापूजीके पैर धाकर मने मालिश और स्नानकी तयारी की। आज तो सरदारजीके आदमियाने ही खड्डा खोदकर मालिंग और नहानेकी सुविधाके लिअे परदे डाल दिये। बनल जीवनसिंहजीने बापूजीके लिअे माग काटा, और म बापूजीके लिअे कूकर किस तरह रखती हू यह दिलचस्पीमे देना। मने बापूजीसे सरदारजीकी बात की तो वे कहने लगे, ये घडे जबदस्त सनिक् ह। सुभाषदावुक गाय खूब काम किया है। और तलवार-बन्दूकके दाव बढ़िया जानत ह। परन्तु यहा पर अहिंसक बनकर धठे हैं। यह कोओी असी बगी बात नही मानी जा सकती। परन्तु मेरे पाप अैसे बहुतमे सनिक् रहे ह। अफीकामें लडाओीके समय जो सेना थी अुसको अपना काम करना ही पडना था। प्रत्येक काम हिस्मके अनुसार वाट लेने थे। अुसमें अच्छे अच्छे पडे लिखे भारतीय तो खाना पकात ही थे, परन्तु गोरे भी अुत्साहसे गरीब होने थे। अिसलिअे जीवनसिंहजी खाना न पकात तो मुझे आश्चय होता, पकानेसे नही होता। जो सनिक् हो गया है वह हर कामका जाननेवाला होना ही चाहिये।

मालिंगमें बापूजी बीस-पच्चीस मिनट साथे। नहाना दस बजे पूरा हुआ। खानक समय मारवाडी रिलीफ सोसायटीके अेक भाओी जा पुस्तकें लाये थे जुहें देता।

जीवन-चक्र चल रहा है अगे जारी रगनमें अर्षान् सगारक दुग दूर करनमें सहायक हा। दोना अक गाढीके दो पहिये ह। विवाहका अय यह नही है कि विषय-वासनाका पोषण किया जाय बहुत बन्चे पन् विषय जाय— जा यहाँ बहा भन्वते फिरे जि-हे खानके भी लाल पडें तो दूध ता मिले ही बहाम ? विवाहका अय यह नही कि पति-पत्नी आपसमें झगडते रह अक-दुमर पर बिग्न रहें और दोनाके शरीर नाजुक हो जाय। अिसर्षिअे विवाह करनमे पहले में सब लडकियसि विचार करनका बहना ह। विवाह करनक बा ब्रह्मचयका पालन करना बहुत बठिन होता है। यदि ब्रह्मचयका पालन करके दोना विचार पूवक जीवन बितायें तो कितन अूच अुठ जाय ? म अितना अूच अिसर्षिअ नही अुठ ह कि म बरिस्टर बन गया या बाकी अितनी पूजा आज अिसर्षिअ नही हाती कि वह मरी पत्नी थी बल्कि अिसका कारण यह है कि हम दोनोन ब्रह्मचयका पालन किया। अिसमें भी वा यत्नि दड न रही होती ता भी हम अितन अूचे नही अुठ सनत ये। लोगन मुय जा महात्माका पन् लिया है अुसका श्रय बाको है। ब्रह्मचयका पालन करनका अय है निविकार होना। जो निविकार हो अुसके सामन अप्परा भी जाकर क्या न लडी रहे ता भी अुसकी दटि दूषित नही हाती। जो निविकार है अुसमें क्रोध मोह असत्य हिंसा चोरी शूठ परिग्रह आदि कुछ भी नही हो सकता। अयवा म तो यहा तक जाअूगा कि अुस आदमीमें असे अवगुण प्रवेग ही नही कर सकते। अिन सबके साथ अुसके मनमें यदि रामजी रमते हा तो कभी बीमार पन्ना ता क्या अुसे अक पनी तक न होगी और वह मत्युसे रामजीका नाम लेते हुआ एसते हसते अक मित्रकी भाति भेंट करेगा। अुसे रोगसे पीडित होकर मरनका मौका ही नही आ सकता। यह हुआ विवाहित जीवनका बडा लाभ। परन्तु यह लाभ तो कोओ विरल ही आदमी प्राप्त कर सकते ह। यह लाभ अुठाने जितनी हमारी आत्मा प्रबल न हा तो कुछ भी नहा हो सकता। नही तो क जैसे हाल हाते ह।

कोओ काम करना हो तो अुसके वारेमें हमें पूरा पान होना चाहिय। पूनाहरणाय रोटी (वाजरेकी) कसे बनाओ जाती है यह तुम्हें मालम है ? मेरी माकी रोटी अभी तक मझे याद आती है। आजकल तो यह रोटी चकल पर थापकर बनाओ जाती है। मेरी मा बा वगरा सब हापसे थाप-थापकर बनाती थी। अिसमें चकलेकी जरूरत नही पडती। हा

अक हाय किसी समय काम न करे तो शायद चक्केकी जरूरत पड़े। परन्तु अधिक मीठी तो वह तमी लगती है जब दोना हाथोंसे थापकर बनाओ जाय। तुम्हें तो इस स्वादका गायद पता भी नहीं होगा।

‘अिसी तरह अिन दो गक्तियोंके मेलसे अधिक सेवा करनेके लिये विवाह करना ही मेरा अय है। सेवा अर्यात् देशसेवा करना। देशसेवाका अय यह नहीं है कि मत्री बनें तो ही सेवा हो सकती है। घरकी सभाल रखना भी देगसेवा है। अुनाहरणके लिये रसोओ बनाना। रसोओ अिस ढगसे बनानी चाहिये कि अनाजका अेक कण भी असे कठिन समयमें बेकार न जाय। घाडी बानगियामें शरीरके लिये आवश्यक सभी तत्व मिल जाने चाहिये। कपडा यह सोचकर पहनें कि शरीरकी रक्षाके लिये पहनना है। हमारे देशका अेक भी आदमी नगा भूखा न रहना चाहिये। जितनी जरूरत हो अुतना ही सग्रह किया जाय। आजकल बहुतसे घरामें स्त्रिया क्फायत तो करती ह, परन्तु सग्रह अितना करती ह कि जिससे दूसराको खाने-पीने पहनने वगाराकी चीजें नहीं मिलता अथवा महगी लेनी पढती है। यह मितव्यय स्वाथपूण कहा जायगा। अिसलिये असी वक्ति पदा करनी चाहिये कि हम जो कुछ करे वह अपने देशको ध्यानमें रखकर करे। असी दृष्टि रखकर काम करनेवाली गृहिणी मेरी दृष्टिसे बडीसे बडी देगनेवा करती है। आजकल तो देगसेवाका नाम बडा हो गया है। लोग मानते ह कि अखवारामें फोटो और नाम छपना अथवा जेलमें जाकर मत्री बन जाना ही सच्ची देगसेवा है। अिसलिये सभी लाग मत्री बनना और सत्ता लेना चाहते ह। असी हालतमें सच्चे मत्री कसे काम कर सकत ह? बेगक, मत्रियाकी भी देगको जरूरत है। परन्तु मत्री अगर मत्री पदके लिये योग्य हो तो ही शाभा देता है। अुस पदको सुशोभित करना हमारा कतय हो जाता है। अितना समझ सकें तो अेक अपढसे अपढ स्त्री भी देगकी सेवा करती है। ये सब विचार तुम्हीका अिस ढगसे समझाता ह। को भी समझाये तो हैं परन्तु जरा दूसरे गगसे। अुमका रहन-सहन भिन्न है। वह विवाहित थी। तुम अभी बच्ची हो। तुम सत्रह वषकी हो गओ परन्तु मेरी दृष्टिमें तो छह-भात वषकी बालिका ही हो।

‘यह नोआखालीका यन तुरन्त पूरा हो जायगा, असा सोचना आकाग-अुमुम जसा है। अिमलिये बेकार है। अिस समय मुझे अने चिह्न दिखानी नहीं दते कि हिन्दू-मुसलमानाका हार्त्क वमनस्य बिलकुल नष्ट हो

जायगा। वह सभी मिटगा जब मुझमें पूणता आ जायगी। परंतु अभी तक रामनाम अितना हृदयगत हा गया है असा भरा दावा नहा है। दुस स्थानमें मेरा प्रयत्न जरूर है।

' आजकी सब बातमें तुम्हें गभीर बननका कोअी कारण नही। मावे नात म अपना फज अदा कर रहा हू। मेरे मनमें जो भरा है यह तुम्हें पिला रहा हू। अपनी डायरीमें य बातें विचारपूर्वक लिखना क्याकि मुझ भय है कि आजकी हमारी बातें तुम्हें जरा कठिन मात्रूम हागी। साथ ही अक बातमें मे दूसरी अनेक बातें निबल आओ ह। परन्तु आजकी बातें तुम्हारी जीवन-रचनाक लिजे बुनिमादी ह। म मर जाअूगा तब तुम्हारे लिजे अयमुसलालके लिजे तुम्हारी बहनाके लिअ ये बातें अुपयोगी सिद्ध हागी। म पुरर होकर भी तुम्हारी मा बना हू। अिमलिअ मेरा भार आजकी बातें तुम्हें वह दनेने हलका हो गया।

(ठीक है परन्तु र्वा लिखा है। बापू रामचर ११-१-४७ शनि।)

जगतपुर

१०-१-४७ गुरुवार

अुपरोक्त बातें बापूजीन सवेरे तडक ही कही था। अु ह लिखनेमें मेरा पूरा अेक घटा गया। बापूजी प्रायनाके बाद प्रवचन सुधारनमें और अपने काममें लग गय और मने यह सब लिखनका काम पूरा किया। बापूजीन अभी देखा नही। मुझे डर है कि बापूजीको यह लबा लगेगा। बापूजी ७-४० पर बाहर आय और हमारी यात्रा गुरू हुआ। बगलाका पाठ गितनमें साढे सात बजकर दस मिनट हो गय। साधारण नियम साढ सात बज यात्रा शुरू करनका रखा है।

दासपाडासे यहा आनका हमारा रास्ता साफ किया गया था। परंतु मुसल्मान भाजियाने अुमे गोबरसे और जहा तहा मलेसे गदा कर दिया था। यह नी मात्रूम हुआ कि असा जान-बूझकर किया गया है। बापूजी कहने लग यह मुझ अच्छा लगता है। अिस प्रकार यलि मेरे प्रति अुनका रोप बाहर निकले तो अिसमें कोअा दोष नही है।

यह क्षापडा अेक हिल्नुका है। आकर सगनी भाति मालिश-स्तान बगरासे निबटनेमें साढे दस हा गये। मालिशमें बापूजा चालीस मिनट सो लिये।

दोपहरको ग्यारह बजे भाजन हुआ। भोजनमें दो खाखरे, गाक, दूध और अनन्नास लिया। साने बारहसे जेक तक आराम किया। जेक बजे अठकर नारियलका पानी पिया और काता। दो बजे प्यारेलालजी आये, अुनके साथ बातें की। अितनेमें बहनें मिलने आ गयी। बहुतसी बहनाका जवरन् मुसल्मान बनाया गया था। कुछ बहनें जसी दु खी थी मानो अुनके पतिया और पुत्राकी हत्या हुअी हा। बापूजीके सामने वे हिचकिया भर, भर कर रोते हुअे अपना हृदय अुडेल रही थी। बापू बोले, तुम अिस तरह रो रही हो और मैं हिचकिया भरकर तुम्हारी तरह रोता नहीं। तुम्हारे और मेरे बीच अितना ही फक है। मेरा हृदय रो रहा है। तुम्हारा दु ख मेरा दु ख है। अिसीलिअे मैं यहा आया हू। रामनामके सिवा आन्वासन प्राप्त करनेकी और कोअी दवा नहीं है। सबसे बडी दवा यही है। कितना ही रोमें तो भी गअी हुअी चीज वापस नहीं आयेगी। यह जान ल तो फिर अिस प्रकार दु खका कारण महा रह जाता।”

आन्वामनके ये शद बापूजी बडी गभीरतासे कह रहे थे। और जसे जसे व बोलन जाते थे वसे वसे वातावरण गभीर बनता जा रहा था। ये बहनें मिलने आअी तब असा करणामय वातावरण था कि अच्छे अच्छाका दिल भी काबूमें न रहे।

साढे तीनसे चार तक बापूजीने मिट्टी ली। कुछ मुलाकाती आये हुअे थे अुनस मिले। ढाकके पत्रो पर हस्ताक्षर किये।

गामको बेबल गुड ही लिया। दूध, फल सभी छोड दिया। बहने रगे ‘ आज मिलने आनेवाली बहनोका दश्य अँसा था जो आस्राके सामनेसे हट नहीं सकता। कौन जाने अभी असे और कितने दु खद दृश्य देखना नमीवमें बना होगा। ’

नित्यकी भाति प्राथना हुअी। वहासे आकर घूमे। प्राथना प्रवचन देखा। मुलाकाती आये थे अुनसे मिले। आठ बजे लेटे लेटे अखवार सुने।

लगभग दस बजे बापूजी सो गये।

मने अपना सामान मिलाकर पक किया। डायरी पूरी बा। बापूजी डायरीकी नकल की। साढे दस हुअे ह, सोनेकी तयारी है। बापूजीक १२० तार हुअे।

वापाने बापूजीके परोमें लगानेको हेजलीन भेजा है। अुमे आज सोते समय लगाकर पट्टियां बाधी हैं।

११-१-४७

जगतपुरमें रात बितायी। दो बजे बापूजीने मुझ जगाया। मुझने डायरी लिखनेके बारेमें पूछा। फिर पत्र लिगवाय। पहला पत्र मापकणम मामा (पू० कस्तूरबाबे भात्री) को लिगवाया। और दूसरे का लिख वाय। प्रायनाका समय हो जाने पर लिखाना बन्द किया। दानुन-पानी करने प्रायना की। दानुन करते हुए आजकल म क्या सुराक लेती हूँ सब लेती हूँ अित्यादि बातें पूछी। अितन अधिन काममें भी बापूजी मरी छापी छापी बाताते परिचित रहते ह। प्रायनाके बाद सु द गरम पानी देकर और रग तयार करने बरतन मले और सामान तयार किया। मुकट मुझ बापी वकन मिल गया। क्पाकि सुवहने लिख जरूरी चीजें बाहर रगकर सारा सामान मने रातको ही बाघ लिया या। साटे सात बजते ही बापूजीन चलनकी तयारी की। बापूजीने सूतको दुबटा किया। वे बाघरूममें गय अतनी देरमें विस्तर बांधा। पडीमें ठीक सात चालीस हान पर जगतपुर छोडा। रास्तेमें भजन और रामधुन जारी रही। बीचमें अक विन्कुल जला हुआ घर देखा। वहा तूनके दाग भी थे। असा लगा कि वहा हत्याअें हुअी होगी।

मन बापूसे अपनी कल्की डायरी लिख चुकनेकी बात कही थी असलिअ डाक और अपनी डायरी यहा पहुचते ही बापूजीकी भेज पर रख दी। पर धोत समय बापूजीने पत्र देखकर अुन पर हस्ताक्षर किय। मालिगमें डायरी देखने लग। परन्तु थकावट थी असलिअ सो गय।

स्नानके बाद छाते समय मन अपनी डायरी सुनायी। बापूजी थाडमें लिखनेको कहते ह मगर मुझे थोडमें लिखना नही आता। मन कहा मुझे आपका अक अक शा लिखना है। बापू कहन लग यह तुम्हारा बूठा मोह है परन्तु मुझ जबरन् तुमसे कुछ नही कराना है। तुम जितना अधिक लिख सको लिखो मुझ वह अच्छा लगगा क्पाकि मेरा खयाल है कि लिखनस अक्षर मुधरते ह।

सात-साते कल्की डायरीमें बापून हस्ताक्षर किय। अुसमें भी ल्वा लिखनकी आलोचना की। परन्तु कुल मिलाकर बापूजीको वह अच्छा लगा। तुरन्त ही लिख ली थी असलिअ कोजी खास बात छूनी नही थी।

भोजनमें शाक बारह और दूध पाच बादाम और पाच काजूकी चटनी छाथी। बादाम और काजू कराचीसे जयतीभाजीने भेजे हैं। अतः पारमल भक्तता भक्तता आज मिला।

बापूजीके दायें पैरका अगूठा दुखता था। और कोजा स्वाम वात नहा हुआ।

जगतपुरम लामचरका रास्ता बहुत ही खराब था। जमीन बहुत ठडी थी और खेतमें चलकर जाना था। अक नया परिवनन यह हुआ कि आज पहला ही दिन है जब प्रत्येक मुसलमान भाजाने बापूजीकी सलाम ली और अहें सलाम की।

बापूजा अखवार सुनते सुनते जन्दी सो गये। दम बने फिर अठे। मने अिस बीच डायरी लिखी और घरके लिखे पत्र लिखा। मूत अुतार रही थी कि बापूजी जाग गये। दायरूममें जानेके बाद बिस्तर किया। बापूजी साडे दम बजे बिछीने पर लेटे। अुनके मिरमें तेल मला। पर दबाये और सदाकी भाति प्रणाम किया। अुन्हाने मुख पर वासत्यपूण हाथ फेरा। म कब सा गओ अिसका पना ही नहीं रहा। काम खूब रहता है, परन्तु रातको नाद अानेमें पाच मिनट भी नहा लगते।

कारपाडा

१२-१-४७ रविवार

कल डा० सुगीलावहन मय्यरने बापूजीको राज डेड दो बजे अठनेसे मना कर दिया। अिसका अुनके स्वास्थ्य पर असर पड रहा है। अतमें बापूजा ममय गये और जल्दी न अठनेकी बात स्वीकार कर ली। परन्तु आज अपनी आदतके अनुमार डेड बजे अठ गये। मैं भी अुठी। परन्तु दाना फिर सा गये और प्राथनाक ममय अठे। प्राथनाके बाद बापूजीने गरम पानी और राहद लिया तथा रम पिया। सुगीलावहनके साथ बानें कग्नी थीं अिसलिजे और बाआ लिखनेका काम काम नहीं कराया।

हम लामचरस ७-४० को निकले। ८-४५ पर यहा पहुंच। रास्तेमें क सायकी बानामें अुह सबके साथ मिलकर अक हा जानेका कहा। कह सकत हैं कि कारपाडाके भाजी-बहनाने भव्य स्वागत किया। यह गाव

मुगीलाबहन पका है। गावके लोग पर भुनकी बड़ी अच्छी छाप पडा है खास तौर पर स्त्रियां और लडकिया भुनक प्रति बहुत आनंद रगता है।*

अन्हाने बापूजीके स्नान और मालिग लिअे मुन्नर व्यवस्था की थी। असलिअ बापूजी पढुचने ही सीध मालिग और स्नानक लिअे चउ गय। और समय भी बहुत बच गया। मालिग और स्नानक बान्न भाजनमें शात सन्न दूध पाच वादाम और पाच काजू लिय। य वादाम जीर काजू मुगीलाबहन बापूजीके लिअे बहुत समयसे बचा कर रख य ताकि बापूजी भुनक घर आयें तब लिय जा सकें। बापू कहन लग यह ता गरतीक बरा जसी बात हुओ।'

दोपहरको बहनावी सभा थी। अुसमें बापूजीन सग्ने काननका अनुरोध किया। बहनें बहुत अधिक सख्यामें थी। वारीगराकी भी सभा था। अिन प्रकार दोपहरका सारा समय अिन दाना सभाआमें ही चला गया। 'गामका भोजनमें दूध और थोडासा पपीता लिया। आज बापूजीन १५० तार लग भग ४५ मिनटमें काते। धनुष-तकलीसे काता था। गामको यकावट लग रही थी असलिअे लगभग पौन नौ बज ही सो गय। गामको छह बजकर छह मिनट पर मौन लिया। सरदार निरजनसिंह गिल आयें थ।

(बापू नारायणपुर १५-१-४७)

गाहुपुर

१३-१-४७ सोमवार

चार बज जुठ। आज प्रात कालीन प्रायना कारपाडामें मुगीलाबहन पन कराओ। नियमानुसार प्रायनाके बान्न बापूजीन गरम पानी जीर शहद लिया। अक तार कान्मखाके नाम अम्मुस्सलामबहनके अपवासके बारेमें किया। बापूजी डाक पढते पढते सो गय थ। ठीक साठ सात बजे जुठ। और सात चालीस पर कारपाडासे यहा जानका खाना हुअे। चलनसे पहले मुगीलाबहन सबके ललाट पर तिलक लगाया। बापूजीके साथ दोना मुगीलाबहन थी डा०

* मुगीलाबहन प आजकउ कस्तूरवा स्मारक ट्रस्टकी मंत्री ह। नोआखालीमें बापूजीके साथ जितन कायकर्ता थ अुनमें से प्रयकको अक अक गाव सौंपा गया था अुसी तरह अिन बहनको यह गाव सौंपा गया था।

सुशीलावहन नय्यर और सुशीलावहन प। प्यारेलालजी भी साथ थे।
अन्हाने चलते चलते मुझे गीताके १२ व अध्याय-सम्बन्धी प्रश्न समझाये।

हम ठीक साढे आठ बजे यहा पहुचे। आज मालिश और स्नान सब
मन कराया। भाजनमें बापूने दा खाखरे आठ जौस दूध, नीबू कच्चा शाक और
अेक सदशका टुकडा लिया। खाते समय के साथ खानगी बातें होनेके
कारण म नहाने वाने चली गयी और जल्दी काम पूरा कर लिया। बापूजी
खाकर धूपमें जमीन पर लेटे। सिर पर छाया कर ली थी। शाम तक बाहर
खुलेमें ही रहे। सुचतावहन दोपहरको आयी थी। अुनकी भयानक बातें
सुनकर ता दिल काप जुठता था। शूर ढगसे हिंदू स्त्रियोंकी अिज्जत
ली गयी थी। डा० सुशीला नय्यर मुर्दोकी जाच करने लामचर गयी
और वहासे अम्तुसलामवहनकी परीक्षा करके साढे चार बजे लौटी।

गामको आठ औंस दूध और खजूरकी आठ पेशिया भाप दिलवाकर ली।

प्राथनाके बाद घूमकर जल्दी आ गये। सवा आठ बजे बापूजीके पर
घोये और वे सोये। परका अगूठा अब ठीक है। बापूजी कहने ह तुम
सबने मरी सवा कर करके मुझे कोमल बना दिया है, अिसलिये मेरे पर
भी कोमल बन गये ह। अिसका फल तो मुझीको भुगतना चाहिये न ? ”

(बापू नारायणपुर, १५-१-४७)

भटियालपुर,

१४-१-४७

राजकी तरह बापूजी चार बजे ही अुठे। प्राथनाके बाद शाहपुरकी
गहस्वामिनीके साथ बातें की। अुसने बापूजीसे कहा “हमें डर लगता है।”
बापूजी वाले, “अगर डर लगता है तो यह देश छोड दना तुम्हारा धम
माना जायगा। जहा डर न लगे वहा जाना चाहिये। गरम पानी पीनेके
बाद अतन्नासका रस दिया। रस पीकर बापूजाने बगला बारहखडी और
बणमाला लिखी। लिखत लिखते क्षपकी आ गयी। ७-३५ पर अुठे और
भटियालपुरके लिअे रवाना हुअे।

आजका यह गाव प्यारेलालजीका है। रास्तेमें कुछ मुसलमानोके घर पर
दो-दो चार-चार मिनटके लिअे ठहरे थे। म मुसलमान वहनसि मिअेके लिअे
अन्दर जानी परन्तु मुझे देखकर व भाग जाती थी। फिर भी म अन्दर जाकर

अनुसे बातें करती थी। बापूजीस मिलनेकी अनुस प्राथना करती और कहती थी आपसे आगनमें अब सत महात्मा आय हँ। आप अनुसे दान किय बिना कैसे रह सकती ह ? अब बाडीमें पहले तो स्त्रियाने बापूसे सामने आना स्वीकार किया पर वामें अिनकार कर लिया। परन्तु दूसर अुह देगा। दूसरी अब बाडीमें ता कहनान बापूजीके साथ फोटो लिचवानकी माग की। बापूजी बीचमें कुर्सी पर बठ बहनें खडी रही और अुस परिवारके अब लहवेन फोटो लिया। असा लगा जस बापूजीके प्रति बहना और कुटुबके पुरवामें कुछ भवित हो। बापूजी कभी पाज दते ही नहीं परतु अिस ढगसे यहाँ ल लिया गया। यहा आनके बाद यह पहला ही अवतर था जब बहनें अिननी आजागसे मिली।

हम सवा नौ बज भटियालपुर पहुचे। दोना सुगीलाबहन वहा मौजूद थी। डा० सुगीलाबहनन मालिग की। मन बापूजीको स्नान कराया। आज बापूजीके लिअ प्यारेलालजीने खाखरे बनाय थ। आठ औस दूध दो खाखरे और कच्चा शाक लिया। दोपहरको निरजनसिंह गिल गय थ। आज यहा अब ठाकुरजीक मंदिरमें बापूजीके हाया मूर्तिकी फिरस प्रतिष्ठा की गयी। अिसकी मूर्ति दगमें अुठा ली गयी थी। अिस अुत्सवमें बहुतसे मुसल्मान भी आवे थे। जिन मुसल्मानान मूर्ति अुठायी थी जुन्हीके सानिध्यमें मूर्तिकी दुवारा प्रतिष्ठा होना कोअी छाटा-माटा काम नहीं माना जा सकता। मुसल्मानान प्रतिज्ञा ली कि हम अपनी जान देकर भी अिस देव मंदिरकी रक्षा करेग। बादमें आरती हुयी और प्रसाद बाटा गया।

नित्यके अनुसार प्राथना वगराका क्रम रहा। शामको भोजनमें केवल दूध और भापसे पकाया हुआ सेव लिया। रातको दस बज बापूजी साये।

(बापू नारायणपुर १५-१-४७)

कडी परीक्षा

नारायणपुर,

१५-१-'४७

आज भी बापूजी सदाकी भाति चार बजे ही जुठे। परन्तु कह रहे थे कि तीन बजेस जाग रहा हूँ।" प्राथना नित्यक्रमक अनुसार। ७-३५ पर यहा आनेके लिये भटियालपुर छोडा। रास्तेमें डा० सुशीला वहन अलग होकर अपने गाव चली गयी।

यहा पहुचने पर पर धोकर म बापूजीके लिये नहानेकी तयारी करने लगी। पर खानेकी पेटी' में रोज पर घिसनेका जो पत्थर रखता थी वह नही मिला। खूब ढूँढा परन्तु वही भी नही मिला। बापूजीसे कहा तो बोले तुमने बडी भूल की है। कदाचित् मनुडी खो जाय तो काम चल सकता है परन्तु वह पत्थर खा जानेसे काम नही चल सकता। म चाहता हूँ कि वह पत्थर तुम स्वय ही ढूँढकर लाओ। निमलबाबूसे कह देना कि मेरे लिये खाना तयार कर ल। परन्तु पत्थर ता तुम खुद ही ढूँढने जाओ। जसा करोगी तो दूसरी बार काशी चीज भूलोगी नहा। और अिसमें तुम्हारी और मेरी परीक्षा हागी कि म तुम्ह निर्भीकताका कसा पाठ पढा सका हूँ और तुमने अुसे कितना हजम किया है? "

मने स्वयसेवकको साथ ले जानेके लिये पूछा तो बापूने साफ अिनकार कर दिया। और मैं भी थाडी गुस्सेमें बापूजीको छाडकर चली गयी। मुझे डर ता लग रहा था कि काओ गुडा पकड लेगा ता क्या होगा। नारियलकी घनी झाडिया थी और मुक्विल राम्ता था। परन्तु किसी तरह अुस बाडीमें पहुची जहा भटियालपुरसे यहा आते हुअे बापूजीके पैर बहुत ठडे हा जानेके कारण अुहें घानने लिये पत्थर निकाला था। बुडियाने वह पत्थर पेंच दिया था, परन्तु तुरत मिल गया। अुसे लेकर अेव बजे बापूजीके पास आयी। रास्त भर मनमें रामनामकी रट लगाती रही। शायद अिनना थीश्वर-स्मरण मैंने आज तक कभी नही किया होगा। भूख भी अुतनी ही

कड़ानेकी लगी थी। आज बापूजीकी अमृत गवा इन्त गभी अिगम मनमें अपार दुःख हुआ। पत्थर बापूजीके गामने डालकर बोनी — माजिय आपका पत्थर। और म रो पड़ी।

बापूजी गिल तिलावर हग पडे। मुग लगा वि मरा तो दम निरा गया और ये हन रह ह। फिर कहने लग आज तुम्हारी परीगा हा गभी। जीश्वर जा करता है यह भलब लिअ ही करता है। पहा ही तिन मन तुमसे कह लिया था कि मरे यगमें गरीर हाता बड़ी हिम्मतरा काम है। अगर जरा भी हिम्मत हार गभी ता नागम हा जाआगी अिगलिअे वापस जाना हो तो चली जाआ। यह तुम्ह याग है? अिस पत्थरके निमित्तस तुम्हारी परीक्षा हुआ। जिसमें मरी दुष्टिने तुम अुत्तीण हुआ हो। मुझ अिससे कितना आनग हुआ अिसका तुम्हें पता नहीं है। नाय ही तुम जब सुदर पाठ भी सीखी। पत्थर ता बहुत मिल जायेंगे दूसरा कूड़ लूगी — असी लापरवाही नहीं रखनी चाहिय। प्रत्येक अुपयागी यस्तुको सभालकर रखना सीखना चाहिय।

मने कहा बापूजी अगर दिलसे कभी रामनाम लिया हो तो आज ही लिया है।

बापूजी बोले हा जब दुःख पडता है तभी अीश्वर याग आता है। फिर भी अुसकी दया कितनी अपार है। मनुष्य मुत्वमें अुसका स्मरण नहीं करता परन्तु दुःखमें थोडा भी याग करता है तो जीश्वर अुसे बचा लेता है।

अिस प्रकार मुझ पर आभी हुनी अिस जबल्पित विपत्तिने दोषह तकका सारा समय ले लिया और दूसरा कुछ भी काम नहीं हो सवा। डड बज जान पर बापूजी कहन लग तुम्हे सूब भूख लगी होगी। साना हो तो रा लो। परन्तु म तो चाहूगा कि नारियलका पानी या फल लेबर थोडा देर आराम कर लो। अिससे तुम्हारी पक्वावट अुतर जायगी।

मन अिनकार करते हुअे कहा कि कपड धोकर और बहुतसा काम पडा है असे पूरा करने लाअूगी। परन्तु बापूजीको यह अन्छा नहीं लगा।

बापूजी दोना पलड बराबर करा लेते ह। अक तरफ कडी धूपमें अितनी दूर मुझ पत्थर लेनको भजा और दूसरी तरफ वहासे आन पर जबरन् हलका

भोजन कराकर आध घंटे सुलाया। बापूजीका सब काम असा ही हाता है और अिसस सचमच जीवनका वास्तविक निमाण होता है।

गामको राजकी तरह प्रायना हुआ। प्रायनाके बाद धूमते समय बापूजी कहने लगे अगर आज तुम्हें गुडे पकड लेने और तुम बहा मर गयी हानी तो मैं खुशीस नाचता। परन्तु तुम डरकर भाग आता तो मुझे जरा भा अच्छा न लगता। आज प्रातःकाल पत्थरके प्रमगमें मुझे तुम्हारी परीक्षा लेना थी। यह समझकर ही मने तुम्ह भेजा था। मने तुम्हें अिम तरह अकली भेजकर कितना खतरा अुठाया अिसका तुम्हें खयाल नही आया होगा। मुझे लगा कि यह लडकी अेकला चला रे का गीत तो स्वस्थ स्वरसे गानी है परन्तु अिसने अुस पचाया कितना होगा? भगवानकी अिच्छासे तुम पत्थर भूल आयी अिसलिअे मेरे मनमें जो अिच्छा थी वह पूरी हुआ। आजक प्रसग परस तुम विचार करना कि म कितना कठार हो सकता हू। मुझे भी अिसका भान हुआ और तुम्ह तो हुआ ही हागा।

लामचरसे बापूजीने डायरी नही दखी थी, अिमलिअे घूमकर लीटने पर बीस मिनटमें डायरी मुन ली और तुरन्त ही हस्ताभर कर दिये।

बादमें अखवार सुने। साडे नौ बजे सोनेकी तयारा की। आज बापूजीके अेक सी चौबीस तार हुअे। खुराक रोजकी तरह ली। गामको छह औंस दूध लिया। दा औंस कम कर दिया।

(बापू १५-१-४७, नारायणपुर)

रामधरपुर

१६-१-४७

आज रातको तीन बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैं घुटने सिकाडकर सा रही थी। अिमलिअे सीधी सोनेको कहा। फिर कहने लगे 'अब तब ता तुम सब कुछ मुझमें श्रद्धा रखकर करती रही हो। परन्तु अब जो कुछ करो वह समझकर जानपूवक करो, तो तुम्हारी गल्ल बदल जायगी। श्रद्धा अथश्रद्धा नही हानी चाहिये। हम जा कुछ कर अुसमें जानपूवक हमारी श्रद्धा होनी चाहिये। कोअी आदमी कुछ भी पनाअी करे अुदाहरणाय गन् या वणमाला सीखनेकी श्रद्धा तो रखे परन्तु वणमालाका पान प्राप्त न करे ह्रस्व, दीष मात्रा गय, अल्पविराम, पूषविराम वगरा कहा और कैसे लगाये जायें

यह समझ बिना चलता तो कभी बार अंधता भाव ही जाता है। वेग ही गुण ही अंध बनने के बाद न रात के अंधों जैसा दिखना पारि। सीपों कहा है कि

यथेषामि गमिद्धाग्निभग्मगात् कुण्डलुत् ।
 ज्ञानाग्नि मन्त्रमाणि भासगात् कुण्डलुत् ॥
 न हि ज्ञानं गदुं पवित्रमित् विदुः ।
 तत्त्वमं धामगमिद्धं वाग्नाग्नि विदुः ॥
 अज्ञायांलभने ज्ञानं तत्र गम्यन्त्येव ।
 ना लभ्यते परां सातिमिति साधिगच्छति ॥
 अज्ञायाप्रदधानं गमयामा विदुः ॥
 नायं लभ्यन्ति न परां न गुणं गमयाम्यन ॥

अज्ञान अंध अपने भातर ज्ञानपूरा थडा पना करनेकी लागि करता । अज्ञानमें प्रापनाका समय हा गया । अज्ञानमें प्रापनाने बा निमलाने

प्रापना प्रवचनका अनुवा करने बताया । मं डायरी लिख रही थी कि आये और मुनक गावको क्या प्रारंभिक तयारी करनी है यह पूछ गये ।

साढ़ सात बज नारायणपुर छाटा । क्यात यह गाव दूर माना जा सकता है । आज ठर खूब थी । घुप बिल्कुल नहीं थी । रास्तेमें बापूजीने जयें वरकी पट्टी निकल गयी । यह थोडा चल लेने बा पना चला । बापूजी कहन

लग वह पट्टी तो बूढ़नी ही चाहिये । बनल जीवनगिन्नीने अब गाधी आधी दूर तक जानर पट्टी बूढ़ लागे । जिससे बापूजी आनन्ति हुआ । बाल 'मुझे बडा अच्छा लगा । हमारे आलस्यक कारण अब जिगी भी चली

जाय तो भारतको नितनी हानि पहुंचे ? रास्तेकी अक बाडीमें अक बहनन पर धोनके लिअ गरम पानी कर रता

था । वहा पर धोये । अक मुस्लिम बाडीमें भी गय । यहा हम पौन नौ बज पहुंच । पर धोनका पानी तयार था । यह गाव कनुभात्रीना है । मुनकी व्यवस्था सुंदर थी । बायरूम और भालिा घर भी तयार कर रता था । जिस

गायमें जाकर मुझे कोगी साम तयारी नहीं करनी पडी । पर धाते समय बापूजीको डडा रास (काठियावाडी) लिखलाया गया । स्थानीय दहाती बच्चानो सिपासवामीकी जय प्यारे राधवकी जय बोलो हनुमान कुपाकुपी

जय जय जय — धुनके तालाने साम रास अच्छी तरह सिखाया गया

था। बापूजीको पैर धोने समय ही यह रास बताया गया, जिसलिअे अुनका समय बच गया। यह व्यवस्था अुहे बहुत पसद आजी।

आज ने बापूजीकी मालिंग करनेकी माग की। मुणसे पूछा तो मने कहा, 'आपको सेवा करनी हो तो जरूर कीजिये। म जाननी हू रि बापूजीकी कोअी भी सेवा करनेको मिले तो अुसका आनद अनोखा हाता है। जिमलिअे म मना नही कर सकती।' परन्तु बापूजीको यह अच्छा नही लगा। कहने लगे यह मेर स्वभावमें है कि जो चीज लगातार चलती आजी हो अुसे बदला न जाय। मुचे यह आजका परिवतन अच्छा नही लगा। तुम्हें

को अुनका धम बताना चाहिये था। म तुममें अितनी हिम्मत पदा करना चाहता हू कि जा सच्ची बात हा वह मवस स्पष्ट कह दो। तुम्ह कहना चाहिये था कि बापूकी सेवा आपके लिअे मुख्य वस्तु नही है। आपके लिअे अस गावकी सेवा ही सच्ची सेवा है। यदि असमें स आप जरा भी विचलित हागे तो अुतना पाप करग। साथ ही, बापूकी सेवा गावकी सेवा करनेके समयमें से चारी करके ही तो आप करेगे। मान लीजिये कि बापू न आये हाते तो आपने अुतने समयमें गावकी कुछ न कुछ सेवा तो की ही होती? जब तुम अितना और अस तरह कहनेका साहस अपनेमें पदा करोगी अुस दिन म मानूगा कि अब हर हालतमें तुम्हारा कुगल ही है। सच बातसे किमीको बुरा लगेगा या अच्छा लगेगा यह विचार नहा किया जा सकता। हा मर्यागमें रहकर अच्छी भापामें कहना चाहिये। किसीको अच्छा लगनेके लिअे हम अपना नियम तोड दें तो दुनियामें आगे नही बढा जा सकता। तुम्ह पता है न कि वच्चोको हमगा भीठा ही भीठा भाता है। फिर भी माता अुहे जिलानेके लिअे या तदुस्त रखनेके लिअे कभी कभी निष्ठुर बनकर अुनको कडवी दवा भी देती है।”

मालिंग और स्नानके बाद बापूजी अन्दर गये। भोजन अन्दर किया परन्तु भोजन करके जल्दी ही बाहर आ गये। खाना रोजकी भाति ही था—बाडे मुरमुरे आठ औंस दूध, खाखरे गाक और खोपरेका सदेग।

दोपहरकी काआ तीन बजे कातने समय कुछ महिलायें आजी। अुन्हाने अपने हायके सूतकी खादी बापूजीको भेंट की। बापूजीने अुनसे कहा “तुम्हें अपने परिवारके लिअे स्वय ही अस प्रकार कात कर खादी बना लेनी चाहिये। मुस्लिम बहनाक साथ मिल-जुलकर तुम अुहें अपनी बहन बना लो।

अंकला घलो रे

अपनी कला अुह सिखाओ। अतना घर लोगी तो अिम प्रदेशमें तो यह कहा जाता है कि मुसलमानाका बहुमत है अुगवे बजाय यह कहा जायगा कि हिंदू मुसलमान दोनोंका समभाग है। तुम यहाँ तो अमा बहुतगा काम कर सक्ती हो जो पुरुष कभी नही कर सक्ते।

बहनाके जानवे वा बापूजीन मिट्टी ली। मिट्टी लेते हुअ कुछ पत्र लिखवाये। जुठकर रामफल और दूधको फाडकर अुमका पानी लिया। प्रायनाक वा प्रवचन लिखा। रेड्डीजीन कथक्लीवा नाच किया। जराबार सुने और साड दम बच बापूजी सोये।

(बापू पाराकोट १७-१-४७ शुक्रवार)

पाराकोट,

१७-१-४७

नियमानुसार प्रायना। बापूजीको सदाकी भाति गरम पानी और गह दिया। दस मिनट बापूजी सोय। जुठकर अनजासका रम लिया। ७-४० पर हम यहाके लिअे रवाना हुअे। आज पाराकोट और रामबपुरकी दा भजन मडलिया मिल गयी थी। अिस रास्तेमें बरवाद हुअ सवान बहुत थे। साड आठ बज यहा पहुचे। बापूके पर धोकर मन मालिंग जीर स्नानकी तयारी की। अभी तक धूप नहीं आयी थी अिसलिअ बापूजीन घोडी देर तक दूसरा काम किया। मालिंग करक अुहे स्नान कराया तब तक ग्यारह बज गय। खुराक बापूने सदाकी भाति ही ली।

धूपमें ही बठकर खाना खाया और धूपमें ही लेट। बापूजीके पर मलनक बाद कपड धोने और बरतन माजनमें मेरा जक घटा चला गया। ११ बज बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। साड तीन बज मिट्टी ली। चार बजे स्त्रियोकी सभामें गय।

सभामें बट्नाको वातन मुस्लिम बहनासे मिलन और घरवारकी सफाजी रखनका अनुरोध किया।

साड चार बजे सभास आकर केला दूध और हरे जरदालू लिय। खाकर प्रायनामें गये। प्रायनासे अक मुस्लिम मुहल्लेमें गये। बापूजी खूब थक गये थे। आकर पर धोनेके वा प्रायना प्रवचन देला। बगलाका पाठ किया।

अतनेमें नौ वज गये। म पर दबा रही थी जुम समय बापूजी वात्सल्यपूर्ण बाणीसे कहने लगे, 'तुम थक जाओ तां मुझे कह देना। जब मने जाज तुम्हें दौडते दौडते मेरे लिये नहानेका पानी भरकर बाल्टी लाते देखा, तब मुझे खयाल हुआ कि मैं तुमसे बिल्कुल निष्ठुर बनकर काम लेने लगा हू। तुम जरा भी सवाच न करना। क्याकि यह समय लेना कि तुम बीमार पड गयी तो खरियत नही। भरी यह जुत्वट अच्छा है कि तुम्ह दोपहरका आध घटे सो ही लेना चाहिये। परन्तु मुझे जिसका आश्चय और दुख है कि मैं अतना भी समय तुम्हारे लिये क्या नही निकाल पाता। तुम जिसमें मदद करो तो म आध घटा तुम्हारे लिये आसानीसे निकाल सकता हू। म तुम्ह जेक मिनट भी फुरमत नहा लेने देता। वस मुझे यह पसद है। परन्तु यह तुम पर भार न बन जाय, तो मुझे तुमसे अतना काम लेनेमें कोओ आपत्ति नही है।'

मने कहा, आप चिन्ता न कीजिये। मुझे इससे कितनी ही बातें मीखनेका मिलती ह।'

अस प्रकार बातें करते करते बापूजी सो गये। मुझे सोनेमें ग्यारह वज गये।

बाओी सगी मा अपनी बच्ची पर अतना प्रेम बरसा सकती है अुससे भी अधिक प्रेमामृत बापूजीकी आजकी अस बातके अेक अेक शब्दसे झर रहा था। अितनी अधिक चिन्ताआके बीच भी मरे जमीकी वे अितनी मीठी चिन्ता रखते ह। मुझे सवेरे पानी भरकर लात देखकर अुह कितना दुख हुआ ? माताके समान असी प्रेमपूण और मीठी चिन्ता कौन पुरुष रख सकता है ? परन्तु बापूजीने बार बार कहा है कि "जस मने सत्य अपरिग्रह अस्पृश्यता, अहिंसा और अस अनेक आत्म देाके सामने रखे ह वस ही मुझे यह आदम भी पैग करना है कि पुरुष भी माता बन सकता है। स्थियाक प्रति पुण्याकी दष्टि माता जसी मीठी हो जायगी तभी हमारी भय सस्त्रुति स्थायी बन सकगी। सधमुच असे अनुभवमें से आजकल म गुार रही हू। बापूजी मेरी माता बनकर यह प्रयोग कर रहे ह अिम म अपना अहोभाग्य समझकर आनन्दम फूली नही समाती।

(बापू बाल्काट, १८-१-४७, गनिवार)

बाबलकोट
१८-१-४७ गनिवार

आज बापूजी सवा तीन बजसे जाग रहे थ। मुझे जगाकर कहा आज तो अभी निद्रा जा गयी कि रातमें मुझे अब बार भी बुठना नहीं पडा। यह मुझे बहुत अज लगा। प्राथनाके बाद बापूजीने अपना भाषण लिखा और सारा समय और को पत्र लिखनेमें बिताया। अंतिम दस ही मिनट जरा लेट। हमने सात पतीस पर पाराकोट छोडा। रास्तेमें एक मुसलमानके घर पर ठहरे थे। वहा सबको सलाम करके आगे बडे। यहा आनके बाद सारा कायन्न नित्यकी भाति चला। मालिा और स्नानादिसे दस बजे निवटे। बापूजीने रोजकी तरह साखरे शाक और दूध लिया।

मन दो बज अपना कामकाज पूरा करके ढाभी बज बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। पर दबाय और म भी पत्रट मिनट सोजी। तीन बज महिलाआकी सभा हुआ। बहनें बहुत आजी थी।

गामको बापूजीने दूध और अब केला ही लिया। प्राथना वगरा नियमानुसार हुआ। लगभग दस बज सोय। बापूजीके पर अब कुछ अच्छे होने लग ह। तबीयत अितन कामकाजके हिसाबसे ठीक है हालाकि बहुत कम भोजन करते ह बहुत ज्यादा काम करते ह नीद कम कर डाली है और अितनी असह्य ठड पड रही है। यह तो स्पष्ट ही दिखाजी देता है कि औरबर ही अुनमें शक्ति पूर रहा है।

आताकोरा
१९-१-४७

सदाकी भाति सांठे तीन बज जुठ। दातुन-पानीके बा प्राथना हुआ। आज गरम पानी करनमें जरा दर हो गयी। गरम पानी देरसे हा तो फलाका रस भी बापूजी देरसे ही ले पाते ह। रातको म अधन अदर ले लेनी ह जिससे सुवह रना भूल गयी थी। (रोज थोडा आधन अदर ले लेनी ह जिससे सुवह ओसमें भीग न जाय।) असलिअ वह ओसमें भीग गया था। मने अपनी आनीकी चिनी फाडकर लाटनके घासलेटमें डुबोजी। बापूजी पीछस देख रहे थ। लेकिन मुझ असका पता नहीं था। दियासलाजी पेटीसे निकालते ही गपू कहने लग यह चिन्दी बताना तो। मन बतानी।

बापूजीने उस देवा और मुझसे कहने लगे, ' जिसे धो डालो और धूपमें सुखा लो। चिन्दीमें लगा तेल तो जायगा ही। परन्तु तेल बचायें तो नाडा जाता है और नाडा बचायें तो तेल जाता है। जिसलिअे फायदा नाडा बचानेमें ही है। नाडा बन जाय अतनी बडी चिन्दी कही चून्हा जलानेके काममें ली जाती है? मैं कितना लोभी हू जिसका तुम्हें पता है? साथ ही मैं बनिया भी हू। गरम पानी जरा देरस हुआ तो क्या चिन्ता है? चिन्दीने कितना अधिक तेल पी लिया? जिसक सिवा, मेरा ध्यान न गया होना तो वह जल ही जाती न? '

मने कहा, ' पर अितना लोभ क्यों किया जाय? "

बापूजी बोले, ' हा, तुम तो बुदार बापकी बेटो हो। परन्तु मेरे बाप थोडे ही बठे हैं जो मुझे रुपया देंगे? मेरे विनादमें भी हमेशा गामीय रहता है। असे तुम समझना सीख लो तो काफी है।

मने वह चिन्दी धो डाली। वह सूखी अिमने पहले दो-तीन बार पूछनाछ हुआ। और जब चिन्दी सूखी और अुसका नाडेके रूपमें अुपयाग हुआ, तब ही जिस बातकी पूर्णाहृति हुआ।

वादमें बापूजी डाक्के काममें लगे और मैं अपने काममें लगी। कल 'मीस्ट की बोनल फूट गयी थी जिसलिअे बापूजीन हरजेक चीज साथ ही रखनेको कहा। पहलेसे भेज देनेको मना कर लिया। सात पनीस पर हमने वादलकोट छोडा। आजका रास्ता बहुत ही खराब था। सरदार जीयनसिंहजी दो बार फिमल कर गिर पडे। पगडडी असी थी कि मैं और बापूजी बडी मुक्किलसे साथ साथ चल सकते थे। कही कही तो मुझे छोडकर अुह अपनी बाठकी लकडीके सहारे चलना पडता था। जिसके सिवा यह रास्ता फायरताअाने साफ तो बिया था लेकिन रातको मुसलमानाके लडके गदा कर गये थे। अेक-दो भाअियनि अपनी आगामे यह देखा था। यह गदगी — मैं जरा पीछे रह गयी थी जिसलिअे — बापूजी पत्तेसे साफ करने लगे। मने देवा कि सब अेकाअेर रक गये ह। अेकके बाद अेक लाअिन बनाकर चलने लायक वह पगडडी थी। मुने बापूजी पर गुस्ता आया। मने कहा, आप मुझे क्या लज्जित करते हैं? मुने कहनेक बजाय आपने खुद क्या माप किया? अिन पर बापूजी हस पडे और बोले, तुम्हें क्या पता कि अने

काम करनेमें मुझ बिना आनन्द आता है? तुम यह जाननी होगी कि
असि प्रकार मुझ पर तुम्हारा न हावी।'

गावक लोग दंग रहे थे। अंगलिङ्ग्रे मुझे गांवने लागा पर नी मन
हा मन मुस्ता आया। बापूजी जैसे पुरुष तो यह गन्गी साध कर रह है
जिह जगत् पूज्य मानता है और गावक अनादी और अमान साध कर रह
सबे पुत्राकी तरह दस रहे ह। जरा भी काम नहीं आती?

परन्तु बापूजी कहने लग तुम दस लेना बन्ने वे ग राग्ने मुझे
साफ नहीं करने पड़ेंगे। क्याकि सबका यह पाठ मिल जायगा कि गन्गीकी
सफाई करना हलका काम नहीं है। परन्तु मेरे ही लिङ्गे व राग्ना माफ
करेग तो मुझ बुरा लगगा।

मने कहा केवल कठ भरको कर देंगे और बाग्में नहीं करग तो
आप क्या करग ?'

म तुम्ह देखनेको भजूगा जीर फिर अंसा गन् राग्ना होगा तो तुम्ह
साफ करन आऊगा। अस्वच्छको स्वच्छ करना तो मेरा धया ही है।

बापूजीकी यह आखिरी बात कितनी सत्य है असावा कथन करना
मरी शक्तिमे बाहर है। परन्तु असी छोटा छाने अस्वच्छताआगे लेकर
जीवनकी व्यवहारकी राजनीतिकी और धमकी अनेक अस्वच्छताआगे स्वच्छ
करना धुनका धया ही था। और अन्धान कजा प्रचारसे हमें स्वच्छ किय
भी गही। यहा तो म यह दस ही रही ह। खूबी तो यह है कि जं
छोटी या निक्कमी बात मानी जाती है असीको बापूजी महत्वकी और मुझ
बात साबित करक बता देते ह। तब समझमें आता है कि जावनका मन्चे
अधमें जीवनके लिङ्गे यह छोटी बात ही महत्वकी है।

रास्तेमें हम अुस जगह पहुँचे जहा धूपमें अक मदरसा लगा हुआ
था। वहाका राग्ना तग था असि कारण बनल जीवननिहरी पिपल कर
गिर पड। जुनवा पहाडी और कसा हुआ शरीर है अुस पर पौगी सिपाही।
जब वे नी फिमल पडें तो वह राग्ना बापूजीके लिङ्गे कितना सतरनाक हो
सकता है असिकी कल्पना ही कर लेनी पडगी। बापूजी खूब हंस। कहने
लगे समुद्रमें ही जाग लगे तो क्या किया जाय ?'

मन्त्रमें पढनेवाले लडके-लडकिया हमें देखकर भागने लग। बापूजीन
सबका सलाम करनेकी कोशिश की। परन्तु कोजी सलाम नहीं करता था।

अबुल्ला माहवने सबसे अपना काम जारी रखनेका कहा। मुझे सहज ही विचार आया कि भाग्यमें हो तभी मिले न? नरमिह मेहताने सच हा गाया है 'जेहना भाग्यमा जे मने जे लख्यु'—जिसके भाग्यमें जिस समय जा लिखा है। बापूजी जम पुनीत पुरुष जिनके दगन दुग्म हो सकन ह, स्वय प्रत्यभ आकर सामने खडे ह परन्तु अनानने अिन लागाको अघा बना लिया है। यह है भाग्यकी बलिहारा।

आनाकारा लगभग दो मील हागा। परन्तु यहां पहुंचनेमें पूरा अेक घटा लग गया।

यत्र आकर नित्यके अनुमार बापूजीक पर धाकर मने रोजका काम काज गुरू किया। धूप नहीं थी अिमलिअे मालिग और स्नान देरमे हुआ। अिस बीच बापूजीने दूसरा काम निवटाया। मैं जब माग्गि कर रही थी तब बापूजीने अपने हायम हजामत बनायी। अेकसाथ दोना काम निवट गये।

गामका अेक बूढेके घर गये। बूढा बट्रा था गरीरम अगतन था परन्तु बापूजाक सामने अुठ कर खडा हुआ। बापूजीने प्रेमपूवक अुमने गाल पर चपन लगायी। तुरन्त ही बूढेकी पत्नी आयी। अुमने बूढेका कपूरकी अेक माला दी और अेक स्वय रखी। दानाने बापूजीका माला पहनायी। बुढ़िया काप रही थी। अुमने बापूजीके हाय पकड लिये, सारे गाररका लगाये और पावनता अनुभव की। दो मीठे नारियल खास तीर पर रख छोडे थे जिनका पानी पीनेका अप्रह किया। मुझे यह दृश्य देखकर रामायणकी शबरीके बराकी बात याद आयी। आमपाम हरामरा जगल था। जे प्रभुने शबरीके बेर प्रेमन खाये थे वसे बापूजीने नारियलका पानी प्रेमने लिया।

बदमूल पत्र मुरम अनि दिये राम बट्ट आनि।

प्रेम सहित खाये प्रभु बारबार बन्तानि॥

म रात्र रामायण पढ़नी हू। अुसा क्रमम जब आज धूमकर आयी और रामायण पढ़न बटी ता यही अूरखाना मारठा पढ़नेमें जाया। यही समय मैं अुम समय देखा जब बूढे-बूढीने मप्रह करक रख हूअे नारियलका पाना पानेके लिये बापूजीक सामने रखा। बापूजी गामको खानेके बाद कुछ भी नहीं लेन अेकिन प्रेमम लिये हूअे नारियलके पानाका अस्वीकार न करक अकका पानी स्वय लिया और दूसरेका मुझे अवरोधनी पिलाया। अिग अवसर पर बापूजीके चेहरे पर आनन्द झलक रहा था।

वहाँसे लौटते हुअे बापू भजन प्राप्त बढो लग भरो जेमे आत्मी मिल जा
ह तब हमारा आनन्द होना है। ये दाना बुझ-बुझी बरगीत धागताग तो हाने
ही। बापू कुछ बड हा।

दोपहरका बानामें बापूजीका जानना रह गया था। आकर अब बात
रहे ह। सामने साफ सात हुअे ह। शलेनमात्री अगवार गुता रहे
ह। म हायरी लिा रही ह।

पुनःच मेरी हायरी जाननेरे बा बापूने साफ नौ बज गुनी हस्तागर
करनेके बा सोये।

शिरडी,

२०-१-४७

आज बापूजी सवा पांच बजे जागे। प्रायनाचे बाद निवानुगार
गरम पानी और दाह लिया। बापूमें रत दकर और सामान पैच करने में
कलका यह रास्ता बगने गयी। रास्ता गन्ना ही था। अिसतलिअे बापूजीमें
कहने न आकर म स्वय साफ करने लगी। गावने लोग भी तकात्रीमें
शरीक हो गये। अिसतलिअे मेरा काम पत्रह मिनटमें निबट गया। गावने
लागोन मुझसे कहा 'कलस आप न आअिय। हम पुन साफ कर लेंग।

अिस पर मौन खुलन पर बापूजीने कहा 'आज तुमने मेरा पुण्य
ले लिया न? यह रास्ता मुझीको साफ करना था। धर, अिससे दो काम होग।
अेक तो सफाजी रखी जायगी, दूसरे लोग दिया हुआ बचन पालना सीखेंग
तो सचाजी सीखेंग जिसका यहा विल्कुल अभाव है। तुम जानती हा कि हमारे
काठियावाडमें भी सबको रास्त गदे करनेकी बडी बुरी आदत है। तुम यह
मत समझना कि यही सबको धूवन या टट्टी बठनकी गनी आदत है। हिन्दु
स्तानमें बहुत जगह लोगोको यह कुटव है। काठियावाडमें तो सात तौर पर है।
यह सुधार करनेकी बचपनसे मेरी साध थी। परन्तु सयोगवस म काठिया
वाडमें स्यापी होकर न रह सका। तुम्हे मुझ पर जो क्रोध आया वह
अनुचित था। क्योंकि जस खुद हायें तभी पेट भरना है, बसे ही स्वच्छताका
नियम मेरे लिअे है। स्वय मफाजी करनेमें मुझे अपार आनन्द होता है।
(बापूजी सुबह मुझसे पहले शिरडी पहुच गये थ। वहा अम्नुस्तलाम
बहन छुपवास कर रही थी। वह गाव अुनका कार्यक्षत्र था। यह कहा जाता
है कि अुस गावमें कुछ मुसलमान भाअियोने हथियार छुपा रखे ह। अिससे

बहनको दुःख हुआ कि मेरे जातिभाजी यह कैसा कृत्य कर रहे ह। अम्नुस्सलाम बहन शरीफ मुसलमान खानदानकी लडकी ह। बापूजी तो मुहें अपनी सगी बेटीसे बढकर मानते थे। जिस भेनताके कायमें उनका ठोस हाथ रहा। और आज भी वे यही काय कर रही ह। दीखनेमें दुबली-मतली, अुम्र लगभग पचासस अूपर होगी, मगर वे जी-ताड मेहनत कर रही ह। जिन बहनने नोआखालीमें अुपवास किये थे तब वे मृत्युशय्यासे ही अुठी थी असा कहा जा सकता है।)

मैं और निमलदा पीछे रहे, परन्तु सामान अुठानेवाला आज और कोजी न था। बापूजी जल्दी चले गये, जिसलिये सभी लोग चले गये। जिसस बडी कठिनाजी हुआ। परन्तु बापूजी मागमें अेक दो स्थाना पर मुसलमानोके घर ठहरे, जिसलिये म समय पर पहुच सकी।

अम्नुस्सलाम बहन बहुत ही अाक्त हो गयी है। उनका विस्तर बाहर किया और अुटे बापूजीने सूयस्नान लेनेको कहा। बापूजीने दिन भर मुसलमान भाजियास समझौतेकी बातचीत जारी रखी।

अम्नुस्सलाम बहन दिनभर गीता, कुरान शरीफ या भजन सुननेकी अिच्छा रखती है। सब बारी बारीसे सुनाते है।

बापूजीकी दिनभरकी बातचीतके परिणामस्वरूप रातको नौ बजे लिखापडी हुआ और मुसलमान भाजियोने समझौता किया। बहनके अुपवास छूटे। प्राथनाके बाद अुन्हाने बापूजीके हाथा मोसवीके रसका प्याला लिया। सदेशसे सबका भीठा मुह कराया। प्राथना हुआ। प्रभुका अुपकार माना कि अुपवासका सुखद अंत आया। वातावरण जानन्दमय बन गया और सबको गान्ति हुआ।

बापूजी रातके ग्यारह बजे सोये। दिनभर बातें करते रहनेसे थक गये थे।

बेचूरी,

२१-१-'४७

रोजकी तरह प्राथना हुआ। आज सुगीलाबहनने प्राथना करायी। बापूजीको गरम पानी देकर म सामान ठीक करने गयी।

अितनेमें सात बज गये। बापूजी अुठे। अम्नुस्सलाम बहनके पास गये। उनसे बिदा ली। कुछ बहनें बापूजीको तिलक लगाकर प्रणाम कर गयी और हम खाना हुअे।

आज भी गय अिमलिअ मुझ पर कामका काफी जोर पडा। व बीमार पड ह। बापूजी कहते ह यह आत्मी मेरे पास अचानक जा गया। पहले यह मिपाही था। बादमें जाजी० जन० ज० में भरती हो गया। उसने मुझसे कहा कि वह मेरी सवामें ही जीवन बिताना चाहता है परन्तु अिसमें मुझ दगा निधात्री देता है। मगर मुष क्या? मरा जीवन अिसीस बना है। फिर महा भारतकी कहानी सुनात्री कि जब पाचा पाडव और द्रौपनी वनमें (महा भारतके युद्धक बाद) गय तत्र स्वर्गाराहणके समय युधिष्ठिरके साथी अकक वा अक सभी गिरते गय। अतमें द्रौपनी भी स्वर्गमें साथ न जा सकी। जेक कुता बाकी रहा। अिसी तरह अिस यत्रमें पहुँचे ही साथी अकक वा अक निकलत रा रहे ह। यह मुष अच्छा लगता है। अन्त तक तुम रह जाओ तो? कथाचित रह भी जाओ। अिस कहानीसे बडा सुन्दर अथ निकलता है कुत्ते जैसे अल्प प्राणीन अिसकी कुछ भा कीमत नहीं असे क्या पुष्प किये हाग कि वह अिन पाचा जनकि वा भी जित्ता रहा? कारण यही है कि वह वफादार प्राणी था। अिमलिअ यह माननका कोत्री कारण नहीं कि बड माने जानवाले आदमी या ब्यक्ति पाप नहीं करते और छात्र ही करते ह कभी कभी अल्प मान जानवाल बडाने अधिक आग बड हुअ हाते ह।

गामका अक मुसलमान भाभा आय। अुट पडित सुन्दरालजीन महा भजा है। अुनका नाम हुनर है। वे यहा रहग। बापूजीने अुह प्रत्येक काम स्वय करनकी सूचना दी। रमोत्री अानि भी साथ लेनका कहा। सबसे पहल अुन्हें पालाना-मफाभीरा काम सौपा गया। मुझ अिन भात्री पर बडी दया आनी है। बापूजी जानवालकी पत्रे-महत् खूब परीसा लत ह। परन्तु म अिन नाभाव। मन्त्र नहीं कर सकता। यनि कुछ नी सहानुभूति लिखात्रु और बापूजीका मानूस हां जाय ता व मरा तवर ले डात्र। अिमलिअ बहुत दया आने पर भी म कटार बनकर वहाने चगे गत्री — कारण यह था कि कही अुनक साथ बाते करनमें जी पिपत्र जाय और जह मन्त्र कर बडू। अिमलिअ वहाग चत्र ज्ञानमें हां मन तरियत मानी।

मन बापूजीका यह बात कहा। बापूजी कान लग म अिसे दया नहीं लिप्यता कटूगा। मरी ज्या दूमरी तरकारी है। जा काय अिम भात्रीके जीवनमें धानत्रान हाकर अिम अन्निके माग पर चगानवात्रे ह वे कठिन हाने पर भी मन्त्रक ह। अत्र अिम ममय अिमक प्रति सहानुभूति बताना निप्यता ही है।

पटमें कोजी बिगाड हो गया हो और ऑपरेशन करना जरूरी हो, अउस समय डाक्टर यन्त्रि कह कि बेचारेको हथियार लगाअूगा तो खून निक्केला और ज्यादा परेगान हागा तो अफ० आर० सी० अेम० हुआ डाक्टर भी जयोग्य ही माना जायगा। बीमारका पेट अुसे चीरना ही चाहिये और भीतरकी खराबी निकालनी ही चाहिये। अिस प्रकार अुम भाजी पर आजी हुजी तुम्हारी दयाको मैं दया नहीं कहूंगा। अच्छा हुआ कि तुमने अुसकी मदद नहीं की वना पता नहीं म क्या करता।

बापूजीके कार्योंमें क्या सूक्ष्म तत्त्वगान होता है? असा तत्त्वगान मैं किमी कालेजमें गजी होती तो वहा कोजी प्राप्तेमर मुझे अिस ढगस समझा सकता या नहीं अिसमें शक है।

गुबहका भोजन तो रोजकी भाति लिया। शामको प्रायनाके बाद दूधको फाडकर अुसका पानी पिया और नारियलका मसका लिया। प्रायनामें अम्तुस्म-लाम बहनके अुपवास सबधी बातें कही। मुसलमान भाअियाने यह खबर अख-वारामें नेनस मना किया। बापूजीने समझाया कि प्रगट हुजी बात छिपानी नहीं चाहिये। यह खबर अखवारामें न देनेके पीछे अुनका अरूर कुछ न कुछ हतु रहा होगा, परन्तु बापूजी अिस तरह किसीके चक्करमें आनेवाले नहीं थे। खबर छपवानी ही पडी।

दस बजे बापूजी अखवार सुनकर सोये। मने दिनभरमें बहुतसा काम निबटा लिया। कपडामें सारी चालरे धोअी। बापूजीका तकिया रुअी निकालकर और अुम सुखाकर फिरसे भरा। लिखना भी बहुत था। छोटा-बडा सारा सामान भी साफ किया। रातको अूघने अूघते घरकी डाक लिख रही थी। कच सो गजी अिसका पता नहीं चला। सवेरे अुठी ता कागज-बल्म अिधर-अुधर बिखरे पडे थे। बापूजी भी अितने ज्यादा थक गये थे कि गहरी नीदमें थे। अिसलिअे आज अुनके अुलाहनेसे बच गजी। सवेरे मरा यह सारा पराक्रम देखकर अुन्हाने पूछा। मने बताया तो बोल 'म ता कहता ही हू कि मुझ कौन धाला दे सकता है?' मने तुम्हे मेरे सोनेके बाद जागनेसे विलकुल मना कर लिया है तो भी तुमने मेहनत करके काम निबटानके लिअे जागनेका प्रयत्न किया। परन्तु अीश्वरने तुम्हारी आखोंमें नीद भर दी। यह क्या बताता है? अिनलिअे म ता मानता हू कि दगा किसीका सगा नहीं। आअिदा मावधान रहना और असा न करना।

यह अक छोटीसी बात है परंतु अतना तो मानना ही पड़ेगा कि बापूजीका धाखा देनेकी कोशिस करनवाला स्वय ही धोखा खाता है।

पनियाला

२२-१-४७

आज पूज्य बाका मासिक मृत्यु दिवस है। अिसलिअे बापू जल्दा अुठे। मुझ भी फौरन जगाया। दातुनके बाद प्रायना की और सदाकी तरह पूरी गीताका पारायण किया। पारायणमें म अकेनी ही थी। बलस बापूजी कुछ अधिक अके हुअ लगत ह।

प्रायनाके बाद गरम पानी किया। परन्तु सहदकी बोतल नही मिली। कोअी अुठा ले गया धीखता है क्याकि मने रातको सत्र कुछ तयार करके ररता था। सुबह देखा तो वातल गायब थी। परन्तु सुाकिरमतीसे अनुनीदीके पास अच्छा गुड था। अुसमें गरम पानी डालकर नीअू निचोडा और वह बापूजीन पिया। अहने लगे कोअी हज नही। जो ले गये होंग वे खानेके काममें ही तो लेंग। हमारा काम गुडसे अच्छी तरह चल जाता है। अब दोनल् बोन ले गया है अुसका जाच करानेके शगडमें मत पडना।

प्रायनाके बाद कुछ पत्र देखते देखते — हायमें पत्र रखकर ही — बापूजी सो गय। ये पत्र यदि अुनके हायमें से म ले लती तो वे जाग जाते। अिसलिअ सामान वाअनमें मुअ देर हो गअी। बाहर कोतनवाले आ गये थ। सब सामान जमानमें मुअे पाच मिनट ज्यादा लग। बापूजी कहने लग हाय कभीवे जा गय ह। कहा जायगा कि तुमने आज पाच सौ आामियाके पाच मिनट चुराय ह। यह मुझ बदासि नही हा सकता। म जाना हू। तुम पीछम आ जाना। परन्तु आज म जाता हू अिससे यह न समय लेना कि राअ म अिमी तरह बला जाअूगा और तुम दोअ्वर मुअे पकड सवोगी अिसलिअ रोज असा करोगी तो चलेगा। तुम लकी हो और म अूडा हू अिम विचारम तुम अूट सवती हा। परन्तु वह अपराथ हागा। अिसलिअ सदा नियत समय पर काम हाना चाहिये। किसी आामीको समय द कर कहा हा कि सात बज म बाहर निकलूगा तब सात पर दा सअड भी हो जाय तो मुअ अखरेगा। मुझ अुठा देना तुम्हारा धम था। मुअे जगाकर भी चाअें जमा ली हाती तो वह तुम्हारा पुण्यहाय माना जाना और कहा जाता कि तुमन अपने धमका पालन किया है।

बाकीका काम रोजकी तरह चला। सुबहसे मुझे बुखार था। ग्यारह बजे १०३ हो गया। परन्तु बापूजीसे कह देती तो बिस्तर पर लिटा देते, जिस डरसे नहीं कहा। दो घंटे लगभग १०४ हा गया तो सो गयी। चार घंटे अंतर गया। फिर बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। और दो घंटे आराम करके काममें लग सकी, जिससे मनमें सतोष हुआ। मिट्टी लेते समय बापूजी मेरी डायरी देख गये और उस पर हस्ताक्षर किये।

शामको प्रायनामें बरमात हुयी तो भी कोयी झुठा नहीं। बापूजी पर चहर डाल दी। फिर भी म और बापूजी काफी भीग गये। लोगामें से कोयी झुठा नहीं। घुसलमान भायी अच्छी सख्यामें थे। भजनके बाद अेकाअेक नयी धुन दिमागमें आ जानेसे मैंने वही गायी। लोगोने तालके साथ सुन्दर ढंगसे गायी।

रघुपति राघव राजा राम पतित-पावन सीताराम,
श्रीश्वर अल्लाह तेर नाम सबको समति दे भगवान।

यह धुन गायी तो सही, परन्तु मुझे डर था कि बापूजासे पूछे बिना मने जो समझदारी बतायी उसका अनुके मन पर न जाने क्या असर हागा।

परन्तु नियमानुसार धुनके बाद प्रवचन हुआ। उसमें जिस धुनका अनुहाने सुन्दर अुल्लेख किया। जिस पर मेरे सतोषका पार नहीं रहा।

प्रायना-स्थलसे लौटे तब बापूजी कहने लगे 'आजकी धुन मुझे बडी मधुर लगी। लोगको पसन्द आयी। तुमने कहास सीखी? या तुमने खुद बना ली?'

मने उसका त्रितिहास कहा 'पोरबन्दरमें सुदामाके मंदिरमें अेक सभागृह था (आज भी है)। वहा अेक ब्राह्मण महाराज क्या कहते थे। अनुकी क्या पूरी होने पर धुन गायी जाती थी। उसमें प्रत्येक जातिके लोग भाग ले सकते थे। मैं भी अपनी माके साथ आठ-दस बपकी युद्धमें जिस सत्सगमें जाया करती थी। वहा अेक दिन मने यह धुन सुनी थी। यहा तो आज अचानक दिमागमें आ गयी।

बापूजी कहने लगे "श्रीश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुजायी। मेरे यनमें श्रीश्वर किम खूबीसे मदद द रहा है।' उस गति पर मेरी श्रद्धा अधिकाधिक प्रबल होती जा रही है। चारा आरसे जब मेरे कामोका विरोध हो रहा है, तब म अधिक दृढ़ होता जा रहा हू। मेरे साथ मेरा श्रीश्वर है

और वह मुझ कितनी सहायता दे रहा है यह तो तुम दखा। आजकी यह रामधुन जिसकी साक्षी है।

पुरान जमानमें असा ही था। अब राज यही धुन गवाना। कौन जान जिस कठिन समयमें अश्वरन ही तुम्ह यह धुन मुझाओ हो। ठीक समय पर जिससे प्रायनामें नय प्राणका सकार हो गया। मा-बापके साथ भजन-कीतनमें जानसे कभी कभी असा लाभ होता है जो जीवनमें महत्वपूर्ण भाग अण करता है। म भी पोरब-दरमें रामजीके मंदिरमें जाता था तब बडा आनंद आता था। परन्तु आजकल तो सब कुछ मिटता जा रहा है। मुदामाजीके मंदिरमें और वह भी ब्राह्मणन अल्लाहका नाम बहुत स्वाभाविकतासे लिया। आजका यह कलुषित वातावरण ता पिछले पाच सात वर्षोंमें ही बटा है।

धूमकर आन पर बापूने दूधको पाडकर जुसका पानी लिया। नारियलका मसवा लिया और काता। अखवार मुग। साट नौ बज बापूजी साथ। मने काता नही था जिसलिअ कातकर दस बज साओ।
बरसातमें भीग गओ थी जिसलिअ सात समय फिर बुलार आ गया है। परन्तु अब साना ही है जिसलिअ काओ चिन्ताकी बात नही।

डाल्टा

२३-१-४७

आज बापूजी अक नीदमें सुबह हो जानकी बात कह रहे थ। जब सरलर जीवनसिंहजी जगान आय तभी जाग। रोजकी तरह प्रायना हुओ। गरम पानी पाते समय के साथ धुनके कामाके बारमें बातें की। और बादमें धुनक बच्चाके बारेमें भी बातें की। बालकाके बारेमें बालते हुअ बच्चाके प्रति माना पिताकी क्या जिम्मेदारी है और माता पिता आजकल किस ढंगस अपना फज अण करत ह जिसकी मुन्तर ठोस और बोधप्रद बातें बापून अपनी नहीं समझता कि सत्य क्या चीज है असकी मरे पास बहुत गिवायमें आओ ह। मरे मयाग्ने बच्चे अस वनें तो जिसमें भी मैं मा बापका कमूर मानता हू। तुम्हारे जिनन बालकामें स किमीमें भी तुम्हारा गण क्या नही आया? अिमका कारण यह है कि तुमन बच्चाकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। मा-बाप लगातार बच्चे पटा करने जाते ह परन्तु बच्चाके सस्कार या गिवाकी परवाट नही करते। अपन विषय-मुखके लिअ भारतका

(देनाका) कचूमर निकालना जिस ही कहा जायगा। मेरा ही बुदाहरण लो। हरिलालके जमक समयका। वह पदा हुआ तब मने उस पर अतना ध्यान नही दिया, जितना पिताकी हैसियतसे मुझे देना चाहिये था। उसे छाटासा छोडकर म विलायत चला गया। परिणाम क्या हुआ यह तो तुम जानते ही हो। अब उसका ब्याह कर देनेमें ही धुमका भला है। की गादी न की होती तो वह बिगड जानी। अन्हीमे मेरी अेक बात कही कि 'अुसने मनुकं वारेमें जा अीर्ष्याभरे वाक्य मुझे सुनाये ह वे मने मनुसे कहे नही। न कहना चाहता हू।' यह बात सुनकर म अुद्विग्न हो गयी कि मैं तो किसीके बीचमें पडी ही नही फिर असा क्यों हुआ? बिस प्रकार विचारा ही विचारामें पतियालासे डाल्टा तक पहुच गये।

राज अेकला चलो रे' का यात्राके दौरानमें गाया जानेवाला भजन आज नही गाया। मैं प्रात कालकी बापूजी और की बातें सुनकर मनमें दुःखी थी, जिसलिअे यह भजन गाना भूल गयी। परन्तु यहां आने पर चुपचाप बापूजीके पर घो रही थी तब अुन्हाने अुलाहना दिया आज तुमने अपने मनवा गाना मुक्त कठसे यात्रामें नही गाया। जो कुछ मनमें हो वह कह दो। आज तुम कुछ परेगान हो क्या? क्या तवीयत ठीक नहा है? वगरा बातें पूछी। मने बापूजीस कहा कि बादमें बताअूगी।

मालिग वगरा निबटाकर बापूजीको स्नान करा रही थी तब बापू फिर मुझसे कहने लगे, यदि तुम गात हा गयी हा तो अब कहो। मने सुवहकी बात कही और मेरे लिअे अिन लागाको अितना दुःख है वगरा कहा।

बापू बोले 'मनका अितना दुःखी क्या बनाती हो? मुझे भी कितने ही लोग गालिया दते हैं। क्या लोग मेरी अीर्ष्या नहा करते हागे? परन्तु म अिम तरह सब बातें ध्यानमें रखू तो अपनेको मभालना भूल जाअू और पागल बन जाअू। अिसीलिअे मने की कही हुआ बात तुमसे नही कही थी। आज भी तुम्हारे सामने कहनेकी अिच्छा नही थी। परन्तु तुम अपना काम कर रही थीं और के साथ हो रही बातें सानगी नही थीं। यह आत्मी बहुत भला है बेरागी है। तुमने दख लिया कि मने तुम्हारे सामने अुसे बच्चकि लिअे अितना अुलाहना िया, परन्तु अुसने कोअी अुत्तर नही िया। अिसीलिअे मने अुसे अपने पास रख छोडा है। हमें सग गुणप्राही रहना चाहिये। तुम मेरे वानर गुरूको

अबला चलो रे

जानती हो न? काभी हमारी निन्दा करे तो हमें खुसीसे नाचना चाहिये। निन्दक बाबा बीर हमारा यह भजन तो तुम जानती हो।
म बापूजीकी बातोंसे बुल्लासमें आ गयी। मेरे मनमें बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि यदि हम उसे छोटे मामलोमें निराश हो जाय तो हमारा जीना क्या है।

बापूजीन अन्तमें कहा जीवनका आनन्द ही परीक्षा तथा निन्दापूर्ण और आलोचनामय वातावरणके बीच सागोपाग जीनमें है। और तभी पता चलता है कि जीस्वरके प्रति हमारी श्रद्धा कसी है। तभी कहा जा सकता है कि हम जीस्वरके सच्चे भक्त ह या केवल जवानसे बक्वास करते ह। तुम यह भीठा भजन गाती हो न?

जीवनने पय जता ताप थाक लागस
बघती विटवणा सहता तु थाकस
सहता सकट अ बधाय
हो मानवी न लेज विसामा

(जीवनके भाग पर चलते हुअे तुझ धूप लगेगी और यकावट मालूम होगी बढ़ती हुअी कठिनायिया सहते सहते तू थक जायगा। लेकिन जिन सब सकटाको सहन करते हुअ भी हे मानव तू कभी आराम न लेना, आग ही बढ़ते जाना।)

यद्यपि सारा ही भजन बडा मधुर है परन्तु यह हिस्सा मेरी दृष्टिसे तुम्हारी जिस समयकी मनायया पर अधिक लागू होता है।

आज बापूका नहानमें बहुत समय चला गया। मुझ अपराक्त पाठ सिसानमें वे तल्लीन हो गय थे। वाणीका प्रवाह सतत बह रहा था। मुझ पता था कि समय बहुत हो गया है फिर भी उस प्रवाहको रोक देना मेरा जी नहीं हुआ। अन्ते अक अक गल्में एक अक वाक्यमें जान भरा था।

जिस गावमें कुछ अधिन सुविधाओं ह और गाव भी रमणीय है। परन्तु हर जगह बरसानका गीलापन बहुत है। गृहस्वामीने मुझ बडे प्रमसे खाना सिलाया। बापूजीका वगडाका पाठ नियमानुसार चला। आजकी राकमें सरदारलाल जवाहरलालजी और श्वेव कुरेसीके पत्र आय थे।

घनश्यामदासजी बिडलाका भी पत्र था। सरदारदादाको बापूजीने छोटीसी चिट्ठी लिखी। बिडलाजीके आदमी सतरे भी दे गये। अन्हीक साथ डाक भेजी।

बापूजीने दापहरके भोजनमें ता राजके अनुसार ही चीजें लीं। गामका फाड़े हुअे दूधका पानी और गहद लिया। आज लिखनेमें बापूजाका बहुत समय बीता। बहुतसे पत्र आये और उनके उत्तर दिये। सबको बापूजाने स्वयं हा पत्र लिखे। अिमके बाद वे सो गये। आजके तार १२० हुअे। बापूजीने तुनात्रीकी पूनिया काती।

मुरियम

२४-१-'४७, शनिवार

प्राथना नित्यकी भाति हुअी। प्राथनाके बाद आसामके बारेमें बापूजीने जो प्रस्ताव तयार किया था उसके कागज ढूढ़नेमें उनका बहुत समय चला गया। निमलदाने भी तलाश किये, लेकिन नहां मिले। गायद दूमरे कागजके साथ निमलदाकी फाइलमें कलकत्ते चले गये हा। बादमें मरी डायरी सुनी। उस पर तुरन्त हस्ताक्षर किये। बापूजी बगलाका पाठ कर रहे थे उस बीच मने उनका सूत दुवटा किया। लिखते लिखते पन्द्रह मिनट सो लिये। मने पर दबाये। अितनेमें खाना होनेका समय हा गया। यहा आठ बजे पहुचे। डान्टास मुरियम तक अडाअी मोल्का रास्ता है।

आज हम अेक मुसलमानकी बाढीमें ठहरे हैं। बूड़ा प्रेमी कुटुम्ब है। गृहस्वामीका नाम हवीबुल्ला साहब पटवारी है। मुसलमान भाअी बापूजीसे बडे प्रेमसे मिले। मौम्बी साहबने जो चाहिये सो मदद दिलवाअी। मुये अपने घरकी मित्रयोके पास (जनानखानेमें) ले गये। मेरा उनने और उनका मुयसे परिचय कराया और बापूजीको समय मिले तब बहनाकि पास खानेकी बिनती की। अिमके बाद म बापूजीकी मालिग स्नान बगरा निबटाकर राजके काममें लगी। बापूजी नहाकर बाहर आये। तउ मी कुह घरकी स्त्रियकि पास ले गयी। सबने भक्तिपूर्वक अुहें सलाम किया। कुछ बहने गरमा रही था। उनस बापूजीने कहा म तो तुम्हारे बापके बराबर बूडा आत्मी हू। मुअसे कोअी स्त्री पर्दा रखती ही नहा। पर्दा रखना हा तो सच्चा पर्दा लिमें रखना चाहिये। झूठा पर्दा छाड दा। बाहरमें पर्दा रखो और मनमें विकार भरे हा ता बह पाप है।'

हबीब साहबन जिसका सुन्दर अनुवाद करके बहनामि कहा आज हम पावन हो गये। हम पर हिंदुओंका मारनका काला कलक है अमल्लिअ इम पापी ह। हमारे आगनमें ये सुदाके फरिस्ते आय ह उनके दान करव पावन होनमें पदा कसा? यह जरा जोर कर कहा जिसलिअ सय बहनें बाहर आ गयो। कुछ बन्वाको बापूजीन सदेगवे टुकड लिय।

बापूजीन बहनाका सफाजी पर ध्यान आकर्षित किया तुम बाहरकी और हृदयकी सफाजी करो। यह पहना ही अवसर है कि मुसलमान परिचारमें हम जिस प्रकार कुटुंबी जैसे बन सके। बापूजीका धीरज और तप सफल हुआ।

बापूजी मुसलमानोंको मलाम करते थे तो भी वे मानते थे कि गांधी हमारा दुश्मन है। परंतु उन लोगोंको बापून प्रेम और धीरजसे जीत लिया।

दोपहरकी बापूजीने रोजका तरह ही खुराक ली। परन्तु हबीब साहब बापूजीके लिअ खास तौर पर रामफण लाय जिसलिअ खाकरा अक ही खाया। खाकर बापूजी तुरन्त सो गया। मैन परोमें घी मला। नहाकर कपड धोय अतनमें बापूजी जाग गये। अन्हें नारियलका पानी दिया।

मन डब बजे तक भोजन नहीं किया था जिसलिअ बापूजी मुझ पर नाराज हुआ और अपन पास ही थाली लाकर खान बटनकी कहा। भूल हा गयी जिसलिअ उनका हृदय मानना ही पडा। खाना खाकर मिट्टीकी पट्टी रखी। मिट्टी लते हुआपून मुझसे पत्र लिखवाय। ठक्करवापा शारदाबहन और बलसारिभावा। बापू पत्र लिखवा रहे थे अतनम बाबा (मनीगबाबू) और मजिस्ट्रेट आय।

गामको प्राथनाम पढ़ते बापून नारियलका दूध बकरीके दूधका सदेग और अक बला लिया।

प्राथना-सभा जाज बहुत बडी थी और सब गेज आनन्दस रामधुन गा रहे थे।

बापूजी बाल आज प्राथना-सभा बहुत बडी थी और हिंदू मुसलमान सब धुनमें गरीब थे। जुसम वही भी गडबड रहा लिखाया देती थी। अिम गावका बाकावरण अठा रखनमें हबीब साहबका काफी हाथ मारून राना है।

प्राथनासे लौटने पर भी अंके के बाद अंक त्रुटि दान करने आते रहें। साडे नौ बजे तक यही हाल रहा। बापूजी बहुत थक गये थे। सवा दस बजे बापू माये।

(बापू २५-१-४७, हीरापुर, रवि)

हीरापुर,

२५-१-४७

रातका बापूजीक पटमें घाड़ी गड़बड़ थी। मुझे भी बुखारकी हुरारत-सी माझूम हानी थी। प्राथना नियमानुसार हुआ। प्राथनाके बाद गीताके आठवें अध्यायके दलावाके अुच्चारणमें बापूजीने मरी भूलें बतात्री।

अब (बापूजीकी) भात्रीमे बापूजीने कहा, 'मेरे साथ जो लाग स्वयमभवके तौर पर काम करते हं अुनका भोजनालय अलग हाना चाहिये। अुहें हाथमे खाना पकाना चाहिये। नहीं ता जिस गृहस्वामीके यहाँ वे ठहरेग, अुमक लिख भार बन जायेंगे।' अुन्हान यह बात स्वीकार की।

गरम पानी देनेक बाद बापूजीने मुझे जबरन् सुलाया। साडे छह बजे अुठी। अुठकर मने बापूजीक लिखे रस निकाला। परन्तु मो जानस मेरा अिगने और मूअ अुनारनेका सब काम रह गया। मुरियममे यह गाव केवल डेढ़ मील पर हानेक कारण यहा हम जल्दी पहुच गये। मुरियममे खाना हानेके पदर सभी बटनें बापूजीमे मिली। बापूजीने अुनसे कहा, 'हिन्दू स्त्रियाको अानी बहाका तरह समझना। जब तक तुम घरकी और बाहरकी सफाअी नहीं खनन ल्यागा ताव तक हृदयकी स्वच्छता तुममें आ ही नहा सक्ती। अिगलिखे आत्रमे ही अाने कपडाकी, अपने बच्चाकी घरकी और शरीरकी सफाअा करने लग जाना। अिसमे तुम दयागी कि तुम्हारे अिगकी सफाअी अाने-आप हाने लगी है।'

यहाँ आकर बापूजीक थोडा अिगनेका काम किया। मालिग और खानक बाद अुनका भाअि भाअन किया। मुझे भी मापूही खा लेनेको कहा। परन्तु मैं महाअी नहीं या अिगलिखे खन नहीं खाया। आत्र बापूजीने कहा 'काम मज गिगनमें तुम्ह समय नहा खाना चाहिये। अस एाड ता का (कम्पूरा) कम्पा था। तुम जिग तरह मक्खिया अुझने बठागा ता तुम्हारा भी काम पूरा नहीं हागा और मरा भी नहीं हागा।'

दापहरको बापूजी अच्छी तरह लगभग घटभर सोये। तबीयत अच्छी नहीं थी। स्वामीजीन गीतावे कुछ प्रश्न पूछे। अन्तरमें एक बात बापूजीने कही, औरबर-परायण मनुष्य काममें गलती करे तो वह भी सुधर जाती है। आज मैं अधिक खा गया। पेट आराम चाहता था। क करन जसी हालत हो गयी। राका जा सके तो कका रोकना था अिसल्लिअ म सां गया। लेकिन कको रोकना अिममें ककावट बहुत मालूम हुयी। परन्तु रामनामकी अच्छी मदद रही। नतीजा यह हुआ कि म अच्छी तरह सो सका और सब काम भलीभाँति हो गया।

आज बापूजीके बस्तेमें स मने बहुतसे बकार कागज निकाल डाले। निमलदाने अिस काममें अच्छी सहायता दी।

गामको बापूजीन भोजनमें कुछ नहीं लिया। कलसे प्रायना प्रवचनके नाट लनको बापूजीन मुझ कहा ताकि अस्तवागोंमें भाषणको जो रिपोट जाती है अुसमें कुछ छूट न जाय। वसे निमलदा तो लेते ही ह। बापूजी हिलामें बालते ह और वे अफ़जीमें या बगलामें लिखते ह परन्तु मूल रिपोट तो हिन्दीमें ही लिखी जा सकती है।

प्रायनासे आकर पीन घटा घूमे। साठ नौ बज बापूजी और म दोनों साथ ही सो गये। आज जल्तीसे जल्ती सोये।

बासा

२६-१-४७

आज बापूजी बहुत जल्ती जुट। अड़ाअी बज पातान जाना पडा बामें नहीं सोये। मेरी डायरी देखी। दूसरा काम किया अितनमें लगभग राजक अुनका समय हो गया। अिसल्लिअे दातुन-गानी किया।

बापूजीन साथ जा स्वयमवक आने ह अुनका अलग भोजनालय रखनकी बात कही। मैं और निमलदा जहा साने ह वहा ये लोग नहीं खा सकते। कल हीरापुरमें हम जग टट्टे थ वहाक गुम्बामान अिन सबको खाना खिलाया था। अिसल्लिअ अिन बातका साम तोर पर ध्यान रखनक लिअे बापूजीन कहन कयता भाभीम कहा।

२६ जनवरीका खानसुख अिस हानके कारण हीरापुर छोडनत पन्ने कय मानसुख गाज गाया गया। फिर सात चालीसको हीरापुरसे निकले। यहाँ

लिखे रवाना होनेसे पहले कुछ मुसलमान बहनसि मैं मिलने गयी तो मुन्हाने बापूजीसे मिलनेकी जिन्छा प्रगट की। जिसलिअे बापूजीको म अन महिलाअके पास ले गयी। परन्तु अेकके सिवा सब महिलाअें अन्दर चली गयी। मुझे भी दु ख हुआ कि बहनके कहनेसे मैं बापूजीको यहा लायी और वे सब अदर चली गयी। मैंने बहुत समझाया परन्तु वे बाहर निकली ही नही। जिसलिअे अन्तमें बापूजी हर बहनकी सापडीमें जाकर हरअेकको सलाम करके आगे बडे। पदह सोलह वषकी लडकियाँ पास जाकर भी बापूजी सलाम कर आये। जिसपर म बहुत गरमिन्दा हुयी। यह कोअी छोटी-भोटी बदनामीकी बात नही है। मने बहनसि कहा, जिसमें आपसे अधिक मुझे नीचा देखना पडा है। क्याकि आपके कहनेसे मैं बापूजीको लायी और यहा आकर मेरी अुम्रकी लडकियोको बापू जसे महापुरुषको सलाम करना पडा। आप मेरी बहनें ह जिसलिअे आपसे ज्यादा मुझे गम आ रही है। हमारे घर पर अेक महापुरुष आये ह असा आप न मानें तो मुचे कोअी परवाह नही। अपनी दृष्टिसे जिहें म भगवान मानती ह अुहें आप भगवान न मानें जिसे म समझ सकती ह। परन्तु हमसे यह आदमी अुम्रमें बडा है जिस खयालसे तो आपको जिनका सत्कार करना चाहिये। बडी देरके बाद मेरी बात अुहें जची, लेकिन अुनमें से हरअेकके घर हमारे हो आनेके बाद ही। फिर सब महिलायें बाहर निकली।

जिस पर बापूजी कहने लगे, 'देखा तुमने? अेक अेक लडकीका मन जहरसे भरा है। स्त्रियामें भी कितना जहर फल गया है? जिस जहरको मिटानेमें तुम जितनी अुपयोगी हो सको अुतनी होनेका प्रयत्न तुम करना। तुम्हारे गुद हृदयका प्रतिबिम्ब जिन लोगा पर पडे बिना नही रहेगा। जिसलिअे यह समझ लो कि जिस काममें तुम जितनी अुत्तीण होगी अुतना मुचे लाभ हागा। तुम और म दो ही व्यक्ति जिस महायणमें हैं। जिसलिअे यह समझ लो कि तुम्हें मेरा कोअी काम छाडकर भी यह काम पहले करना है। तुमने देखा कि आज पहले बहनें नही आयीं अुसमें पुरुषाकी सिखावट थी? परमो हवीव साहबके यहा जा दश्य देखा अुससे यह अुलटा ही था।'

यहा हम ८-१० पर पहुचे। आजकी यात्रा सबसे छोटी थी। बापूजीको लगा मानो कुछ चले ही नहा। आकर तुरन्त ही मुन्हाने डाक लिखी। रगीश अहमद, कुलरजनबाबू, प्रकाशम् जवाहरलालजी मदालमा बहन डा० जाशी और रविशंकर मुखलको पत्र लिखनेके बाद मालिग हुयी। मालिग

शुरू करनेसे पहले अ० पी० आजी० के अकेले प्रतिनिधि इलेनमाजीन बापूजीके पूछा कि आज स्वातंत्र्य दिवस हानके कारण काजी राग कायक्रम रखा जाय या नहीं। बापूजीने कहा 'म तो यह यज्ञ आरम्भ करके बठा हूँ। भरे लिये यही स्वातंत्र्य दिवस है। परन्तु गावके लोगमें बुस्ताह पना करनके लिये तुम लाग (प्रेस प्रतिनिधि और दूतारे) बुस्ताव बना सकते हो।

अस कारण यहा सरदार निरजनसिंह गिलक हाषा ध्वज-वन्दन हुआ। बापूजी और म बुसमें गरीब हाकर साधे मालिक लिये धूममें लगाय हुअे तम्बूमें गये। सामूहिक भाजनका कार्यक्रम रखा गया था। शाममें समाचार आये कि यदि मुसमान गंग गान आयेंग ता धारा लोग महा आयेंग क्याकि बुह डर है कि जसा करनेसे मभवत बुहें जबरन् मुसलमान बनाया जायगा। अिमलिये बापूजीने कहा 'जा लाग डर हुआ है व सहभाजमें भाग न ल।' भाज अिमी मुहल्लेमें रखनेका कहा। मुझ भी बुहाने गामका भाजमें जानेका कहा। बापूजीने आज अपवास किया है। अिसलिये स्नानक बाद गरम पाना और गहद लिया। गामका अपवास छूटगा। खूब काता। मिट्टी लेते हुअे पत्र लिखवाये जुहली वाचनवाले मणिलालभाजीको, गावलजीको, धीरभाजीको डा० भागवतको और परमानन्दभाजीको।

बापूजीने स्वातंत्र्य दिवसके वारेमें दुखी हृदयसे कहा, 'आज २६ जनवरी है स्वाधीनता दिवस है। जबसे काप्रेसका जम हुआ तबसे भारतने अक नया जम लिया है। सब हिन्दुस्तानी यह जानते नहीं थे परन्तु धीरे धीरे काप्रेसकी वृद्धि हुअी और काप्रेसने गाव-गावमें आन्दोलन करके लोगको यह भात कराया कि आजादा क्या चीज है। अुन जमानेमें अेक भी गावमें कोआ जानता नहीं था कि हिन्दू मुसमान-वमनस्य चीज क्या है। परन्तु आज दानांमें अतिशय वमनस्य फैल गया है। आज दानाके दो तिल हो गये ह यह दुखकी बात है। यदि असा कलुपित वातावरण न होता तो म यहा तिरगा झडा फहराता। मुझमें कुछ भाअियोने पूछा था। मन जान-बूझकर बुहे मना कर दिया। परन्तु यदि किसी अग्रज अफसरने मुझसे कहा होता कि यहा तिरगा झडा नहीं फहरा सकते तो म जरूर वही झडा फहराता। अिसके लिये मेरी जान भी देनी पडती तो म दे देता। परन्तु आज म किससे कहूँ? मान लीजिय कि म यह झडा फहराऊँ और मुसलमान भाजी अुसे सहन भी कर ल। परन्तु मनमें वे यही

मानेंगे कि यह आपन वहासे आ गयी। जसा म नही करना चाहता। परन्तु मेरे मनमें जो भरा है वह तो कहूंगा ही। जब झडेकी बात पहले-महल बुठी तब मेरे मनमें विचार आया था कि अेक ही रग रखेंगे ता अयाय होगा। हिन्दुस्तानमें तो अनेक जातिया ह। हा अेक दिन असा जरूर था जब हिन्दू मुसलमान, पारसी सभी भारतीय जातिया मानती थी कि मही हमारा पडा है। और अिसी झडेक लिअे लोग मरे भी हैं। आज ता कितने ही पडे हा गये ह। परन्तु तिरगा पडा तो हाना ही चाहिये। जसे यूनियन जेर है। किसी समय असा जमाना था परन्तु अब नही रहा। आज 'म किससे कहूँ? अयवा किसके साथ लडूँ?' हम सब भारतीय ह और भाभी भाभी है। स्वाधीनतामें आपसमें अेक-दूसरेके मनमें बरका जहर फल जाय तो वह स्वाधीनता किस कामकी? परन्तु आज तो वह सब हमार लिअे आवाग-कुमुम जैसी बात हा गयी है। हमें असा लगना चाहिये कि जब तक आजादी न मिल जाय तब तक हम धनसे नही बठेंगे। आज हम भाभी भाभी आपसमें लड रहे हैं। आजादीसे पहले पाकिस्तान कैसा? क्या अंप्रेज पाकिस्तान देंगे? कौन जानता है आजादी कसी होगी? अंप्रेज तो यहासे अवश्य जायेंग। परन्तु अमरीका और रस मौजूद हैं। अगर हम सावधान नही रहेंगे तो मर जायगे। अमी अभा 'जन-गण-मन' गाया गया। कितना मुन्दर गीत है? हिन्दुस्तानमें अमी असी चीजें मौजूद हैं। परन्तु अिसे हम हृदयसे गायें तो सब अेक हो जायें। असा नही करगे तो हम मूख कहलायेंगे। यदि आप सबका हृदय स्वाकार करे कि यह अनुभवी बूढा जो कह रहा है वह सही है, तो आनस आप मेरे कह मुताबिक चलनेकी कोशिश कीजिये।

आज मने पडा नही फहराया। परन्तु मेरे साथ जो अखवारके प्रतिनिधि घूम रहे ह बुन्हाने फहराया। बगालके महापुरुष नेताजीने अिसी स्वाधीनताक लिअे अपनी जान कुरबान की थी। यदि अुनके लिअे हम अितना भी 'यन' न करें ता किसके लिअे करेंगे?"

आज बापूजीने घूमनेके बाद दूध और खजूर लिये। म अपना कामकाज निबटाकर प्रेसवालाके निमंत्रण पर वहा भोजन करने गयी। खिचडी और गाक बनाया गया था। खानेके लिअे जानेमें मुझे आधा घटा देर हो गयी अिसलिअे सब मेरी प्रतीप्तामें बठे थे। साटे आठ बजे खाकर आभी तब बापूजी अखवार पढ़ रहे थे। साडे नौके बाद सोये।

बापूजीको रातमें अक दो बार अठना पडता है। मं रोज सोचती हूँ कि अुस समय अुठ जाअूगी और तसला पानी बगरा दे दूगी। परन्तु बापूजी अितने धीरेसे अुठते ह कि मुअ पता ही नहीं चलता। बुलटे ठडमें सिबुडकर पडी रहती हूँ तो मुअ अच्छी तरह ओड़ा देने ह। अिसलज सोनेसे पहले मने बापूजीसे कहा, 'आपकी सेवा करनके बजाय म रातको आपसे सेवा कराती हूँ। आजसे मुअ जरूर अुठा दिया कर।

वे बोले रातकी मेरी सेवाकी बात सगती हा परन्तु दिनमें म तुमसे मवा कराता हूँ। तुम मुदेकी भाति गहरी नीदमें साअी रहती हा। अुस में सुलर निर्दोष निद्रा कहुंगा। मुझे यह बहुत अच्छी लगती है। यह निद्रा अित बातका विश्वास कराती है कि तुम कितनी निर्दोष हो। मनुष्यका जसा मानसिक आतावरण होता है वसा ही परिणाम दिक्षाअी देता है। मले मनुष्य बाल नहीं परन्तु निद्रा आहार व्यवहार आलिस सबसे पराक्षा हो जाती है कि वह किस नोटिका आदमी होगा।

बापूजीके पर दबाकर सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मच्छर दानी बन्द की। अिस वक्त पौने ग्यारह बज ह। मन अपनी डापरी भी पूरी कर ली। दातुनकी कूची बनाना बाकी है सो बनाकर सोन जाअूगी।

पल्ला

२७-१-४७ सोमवार

आज ठड अितनी अधिक थी कि अुठनेका मेरा जी ही नहीं होता था। बापूजीके पर बहुत ठड हो गये थे। बहुत देर तक दबाय। प्रायना आलिस नित्यक्रम राजके अनुमार चला। अब शामकी प्रायनाके समय अपनी डापरी साथ ले जाती हूँ। बगला भापान्तर होता है अुस बीच म लिख लेती हूँ। बापूजी मुवह पानी पीते समय रोज सुन लेते ह। देतकर हस्ताक्षर कर देने ह।

आज बापूजीन बगला बारहलडी पूरी की। अुस लिखनेमें पूरा आध घटा लगा। फिर कुछ पत्र लिखे। सात बज थोडी देर साथ। ७-४० पर हम बासासे चले और ८-१० पर महा पहुच। अक ही भील चलना था। हमारा पडाव यहा अक जुलाहेके घर है। बापूजीका मौन है। जुलाहा परिवार बडा प्रेमी है। धूप निकलनके वान बापूजीको मालिस की। स्नान करने भी व बाहर धूपमें ही रहे।

आज दोपहरके भोजनमें बापूजीने पाच काजू पाच बादाम, मुरमुरे और साग लिया। राजेद्रबाबूकी आत्मकथाकी पुस्तक आधी है। उसे पढनेमें बापूजीने बहुत समय लगा दिया। आज सोमवार है जिसलिये मुझे तो छुट्टी जसा ही लगता है। अपना अतिरिक्त काम आज मने पूरा कर लिया। बापूजीकी चादरे और सतरजी बड़ी मैली हा गजी थी। आज सब धा डाली। लगभग चालीससे अधिक कपडे घोये। अितनेमें तीन बज गये। बादमें कल्के लिये खाखरे बना लिये।

दोपहरको दो बजे बापूजीने नारियलका पानी लिया। शामको प्राथनाके बाद यहाकी युनियनके पुराने अध्यक्षके घर गये। वह मुसलमान परिवार था। वहा बापूजीने नारियलका पानी लिया। बहनें भी मिली। अेक बहन आठवी तक पढी हुअी थी। बापूजीने बहनासे खास तौर पर शिक्षा प्राप्त करने अर्थात् लिखना-पढ़ना सीखनेका कहा और कातने पर जोर देत हुअे कहा कातनेसे सौमें साठ रुपयेका कपडा बचता है। और कपासका ता यह देश है ही। फिर आजकल कपडेकी अितनी असह्य महगाअी है। हमारे जैसे देगमें कपडे पर अनुश ही किसलिये हो? बहनें विचार कर तो अुहें जरूर लगेगा कि क अपना कितना समय फिजूल खो देती ह। छोटी छोटी लडकिया भी कात सकती ह। आप जो पर्दा रखती ह अुसे मनमें रखिये। पर्देका अथ है शरम मर्यादा और सम्म्यता। परन्तु बाहर दिखानेको पर्दा रखें और मन मला हो तो पर्दा किस कामका?

आज हम जिस जुलाहेके घर ठहरे ह अुस पर बापूजी बहुत ही खुग ह। अुसका अुल्लेख करके बोले, 'मुझे बडा आनन्द होना है कि आज मेरा मुकाम अेक जुलाहेके घर पर है। मुझे सब बडे प्रेमस रखते ह। प्रेमके बिना महल कदखाना जसा लगता है, जब कि प्रेमपूण थोपडी महलसे भी अधिक अच्छी लगती है। मच बात तो यह है कि म बगालकी सापडिया पर मुग्ध ह। अिनमें जो हवा और रोगनी मिलती है वह कमरामें कहासे मिल सकती है? परन्तु दुस्वकी बात यह है कि असा सादा जीवन होने और कुदरतकी मेहरबानीके बावजूद यहाके हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके साथ मुहब्बतस नहा रहते। क्या घम भिन्न होनेसे हम अिन्सानियत खो देंगे? परन्तु मुझे आगा है कि यह वैमनस्य हम जल्दी भूल जायगे और अपनी जिम्मेगारीको समझेंग। जहा दगे हुअे हं वहा अभी भी

बाजार बंद ह लोग अक-दूसरेको अविश्वासकी दृष्टिसे देखत ह। अिसमें नूनसान हमारा ही है विसाको फायदा नहीं होगा। अक तरफ अन्न न पकनेके कारण अकाल पडा हुआ है, तो दूसरी तरफ जनान और जढताके कारण हम अपनी ही हानि कर रहे ह। अपन ही परा पर कुल्हाडा मार रहे ह।

हमारे सामन कितन ही अम सवाल खड ह जिनके लिये सरकारको जरूरी तत्कालीन देनेकी आवश्यकता नहीं। हम खुद जुन सवालाको हल कर सचत ह। अुदाहरणके लिये स्वास्थ्य स्वच्छता फल फूलके छोट छोट पौध बुगाना पकके पाखान बनाना और नियमपूर्वक खाद तयार करना अित्यादि अन्नक काम हमारे सामने ह। यदि हम अपन दिमागको अिन कामामें लगा दें तो सबको कितना लाभ हो? विसाको अक पत्की भी फुरसत मिले तो मुझसे कहना। परन्तु यह तभी होगा जब हमारी बुद्धि खले। प्रमुसे म निरंतर यह प्रायना करता हू कि जमा अिस लडवीने सबको समति दे भगवान गाया वसे वह हमारी बुद्धिको खोले और हमें अच्छे काम करनकी शक्ति दे।

यह आजकी प्रायना-सभाका प्रवचन है। निमलदा अिसका बगला अनुवाद कर रहे थ अुस बीच वापूने अपनी डायरी लिखी। मन अपनी लिखी।

बापूजी शामको बहुत थक गये थे। प्रायनाके बाद घूमकर लौटन पर मन आज अुनक पर धाय। आज बहुत ठड है। बापूजीन स्टाम किया हूँ अक सेब और दूध लिया। जोत्कर अुन्हाने थोडासा काता। कातकर अलवा सुने। गलेनभाभी सुना रहे थे। बापूजी बहुत ठड हो गये थे अिसलिअ मन अुनका शरीर दबाया। सवा नी बजके बाद बिस्तर किया। बापूजीन हाथ-मुह धाकर गरम पानी पिया और लेट गय। बापूजीके सिरमें तेल मल्कर और अुनके पर दबाकर म भी पौन दस वज सोयी। आजके जसी ठड कभी अनुभव नहीं की।

रातमें भी बापूजीका बढी ठर लग रही थी अिसलिअ अुन्हान मुझे जगाया। मन अुन्हें और ओटाया और खूब दबाकर अुनका शरीर गरम किया।

सदाकी भाति पल्लामें प्रायना हुअी । आज निमलदाने बहुत मीठे स्वरमें भजन गाया ।

बल रातका बापूनीने स्त्रियोंके कुछ सवालकी छानवीन की थी । उनके जा थोड़ेसे सवाल आये उनमें अेक सवाल यह था कि यदि गुडे स्त्रिया पर हमला कर ता व क्या कर ? भाग जाय या सामना करनेके लिअे हथियार तयार रखें ?

बापूजीने कहा, बचावके लिजे हथियार रखनेकी अर्थात् हिंसा करनेकी तयारी की ही नहीं जा सकती । आल्श अहिंसक साहस बढानेकी तयारी करनी चाहिये । जो मनुष्य अहिंसक है उसक जीवनमें असे सकटका अवसर आता ही नहा । वह शाति और गौरवके साथ हमते हमत मृत्युका आलिंगन करनेका तयार रहता है । क्याकि सच्ची सहायता हथियाराकी नहीं, परन्तु अीश्वरकी ही है ।

ससारके पास आज आदग अहिंसास पदा होनेवाला साहम नहीं है अिसीलिजे वह अणुबम जस गस्त्रामे सुमज्जित है । परन्तु लोकाका स्वाभाविक रूपमें किसी पर आधार रखे बगर स्वतन्त्रतास रहना सीखना पडेगा । किसीके वग हो जानेकी अपेक्षा म्त्रियाको प्राणत्याग करनेकी हिम्मत अपने भीतर पदा करनी चाहिये । तब उनमें अतरकी पवित्रता अितनी बढ जायगी कि गुढाके हथियार अपने-आप नाचे गिर पडेंगे । मुझसे अगर अपने प्राण दे देने और हमला करनेवालेकी जान लेनेके बीच चुनाव करनेको कहा जाय तो मैं बहूगा कि हमने-हसन प्राण देनेमें ही मच्छी बहादुरी है ।'

प्रायनाके बाद बापूने मुझसे कुछ पत्र लिखवाये । उनमें अुपराक्त बातका अुल्लेख किया । पत्र लिखान लिखाने बापूजी सा गये । अेक महिलाने बापूजीको पेंसिलम पत्र लिखा था । अुसका अुल्लेख करके बापूजीने लिखा "अव तुम हमेगा स्याहीसे ही लिखना । पेंसिलस लिखना पाप है आल्स्य है हिमा है ।'

रोजकी तरह हम साडे सात बजे पल्लासे यहाके लिअे रवाना हुअे । रास्नेमें रामबुमार द, मुहम्मद रजा और मुफलिस रहम अिन तीन जनकि

घर गये। इसलिये यहाँ नौ बज पहुँचे। मुफ्लिस रहमके यहाँ राजका भाँति म स्त्रियोंके पास गयी, तो सब स्त्रिया अन्दर चली गयी और बुन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। आज यह अक नया ही अनुभव हुआ। थोड़ी देरमें अक अण्ड बुझकी स्त्री मेरे पास आयी। बुसन बड़ी मल्मनमाहृतस बाने का। पूछा कि मेरा और बापूजीका क्या रिश्ता है। जितनमें दूसरी स्त्रिया भी बाहर आ गयी। अक वहन खाना बना रही थी। अजतने मुझ मछलीका शाक और रोटी खानका बहुत आग्रह किया। मन कहा मछली मैं खाती नहीं, और रोटी खानकी जिस समय मुझ आदत नहीं। जिसस अण्ड बुझवांगी स्त्री कहने लगी तुम वहान बनाती हो। तुम कहती हो कि गापीजी हिन्दू-मुसलमान-अकता करनके लिअ निकले ह। परन्तु हिन्दू अपने-आपको बूचा मानते ह और हमें नीचा समझते ह हमसे भ्रष्ट होत ह। तुम भी तो हिन्दू ही हो न?

मने कहा मुझे खानमें कोई अतराज नहीं है। आपके मनका सतोप देनेके लिअ म रोटी मुहमें डालनको तयार हूँ परन्तु जिस तवे या हापको भी मछलीका शाक लगा हुआ होगा तो म नहीं खाऊंगी। शुद्ध रोटी बनायी गयी। बुसमें से मन अक टुकड़ा तोडकर खा लिया। जिन वहनाने मेरी परीक्षा की। कहने लगी तुममें हिन्दू-मुस्लिमका भद नहीं है। तुममें हिन्दू-मुस्लिमका भद

मने रास्तेमें यह बात बापूजीस कही। बापूजी कहन लग तुमन थोड़ीसी रोटी ले ली यह अच्छा किया। परन्तु तुमन देख लिया न कि मेरे बारेमें भी वहनामें कितनी शका है?

मुहम्मद रजाके यहास सतरे आय। यहा आने पर बापूजीके पर घोकर गुरत मालिग की। स्नानके बाद खानमें दो लाखरे शाक दो काजू दूध और गृहस्वामीको पुग करनके लिअ थोडा नारियलका सदेश खाया। खाते समय बापूजीने अधूरे रह गय पत्र लिखबाय। बादमें आराम किया। सोकर अुटन पर दो नारियलका पानी पिया। कातते समय फिर पत्र लिखवाने लग। अितनेमें प्यारेलालजी और सुगीलाबहन आ गये। इसलिअ पत्र अधूरे रहे।

गामकी प्रायना-सभामें आज वहनाके साथ मरी मुलाकात और रोटी खानका बुल्लेख करके बापूजीने कहा मेरी यात्रामें मुझ अक हिन्दू और दो

मुसलमानोंके घर ले जाया गया। जिससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैं तो भावका भूला हूँ। मुझे पहलेमे नहीं कहा गया था कि अितनी जगह जाना पड़ेगा, परन्तु रास्तेमें निमंत्रण देनेवाले भाजियामें मुहब्बत देनी जिसलिये मैं वहा चला गया। तीना जगह मुझे कुछ न कुछ खानेके लिये कहा गया। परन्तु वह मरा खानेका वक्त नहीं था। मैंने कहा, मुझे फल भेजेंगे तो म जरूर खाऊंगा। मेरे साथ मेरी पोती भी यात्रा करती है। वह बहनाके पास गयी। बहनाने प्रेमस युसबा स्वागत किया और अेक बूडी माजीने यह जानने पर कि वह लडकी मेरी पोती है अुसका आलिंगन किया। अेक बहनने मछाका शाक और रोटी बनायी थी। अुस बहनने मेरी पातीस गात्र राटी खानेका आप्रह किया। परन्तु लडकी बेचारी क्या करती? अुसने अिनकार किया और कहा कि जिस समय मरी खानेकी आदत नहीं। तब बहनाका सदह हुआ कि छुआछूतकी दृष्टिस यह लडकी कुछ नहीं खा रही है। जिस पर जरासी रोटी ताडकर लडकीने खायी जिससे बहनें खुश हा गयी। मुयमें या मेरे साथ यात्रा करनेवालामें जात-यातका भेद नहीं है। हमें किसीके भी साथ बैठकर खानेमें जरा भी आपत्ति नहीं है। मैं अपने मुसलमान मित्रसि प्रायना करता हूँ कि जा हिन्दू यह मानते हा कि मुसलमानोंके हापका खानेसे अपवित्र हो जात ह अुनके प्रति आप अुदार दृष्टिसे देखें। मैं समझता हूँ कि अुनका यह खयाल गलत है। परन्तु सच्चे प्रेमकी परीक्षा किसीके साथ खानेमें ही षोडे होनी है। समय पाकर यह वहम अवश्य दूर हो जायगा। जिस निगामें बहुत काम सफलतापूर्वक हुआ भी है। परन्तु वहम जब तक पूरी तरह मिट न जाय तब तक जहा जहा आपकी सच्चा प्रेम देखनेका मिले वहां अुसकी वद्व कीजिये। तभी आप सब अेक-दूसरेके अधिव निरट आ सकेंगे।

२६ जनपरीके प्रसगका अुल्लेख करत हुआे बापूजीने कहा, "मेरे साथ अखबारवाले यात्रा करत ह। अुन्होंने अेक समूह भाजन रमा था। मुसलमान भाजी तो अुम पगतमें खाने नहीं आवे थे। परन्तु जिसक यहा ये भाजी ठहरे थे अुग्ने हाप जाइकर कहा कि मुयस आप अपने साथ खानेका आप्रह न करें। आप ता अेक निन रहकर चले जायेंगे लेकिन मुझ पर आपत्र आ जायगी। आपके जानेके बाद मुझ पर दबाव पड़ेगा कि तू घप्ट हो गया है जिसलिये तू मुसलमान हो जा।

अस आदमीका डर मुझ सच्चा लगा। और मने अगवारवागमे कह लिया कि आप अस बचारेकी सागडीमें महमाज न रखें। हिन्दू और मुसलमान अपनी अपनी कमजोरी मिटाकर बेन-दुमरेक नजदीक बच आयेंग यह म नहीं जानता। परतु यह मवसल पूरा करनके लिअे जरूरत पडने पर म अपनी जान देनका भी तयार हू। असलिअे आप मव भरे साथ भीबरन प्रायना करे कि हे प्रभो! असा मुन्दर दिन जल्दी ही ला दे। भरे छोटसे प्रसंग परसे आज बापूजीन अत्यन्त गर्दग हृत्पस प्रवचन किया।

प्रायनासे आकर बापूजीन आठ खजूर और आठ औंग दूध लिया। रातका दस बजके बाद बापूजी सोय। तब तब बुन्दहाने प्यारेगलजीक साथ महत्वकी बातें की प्रवचन लिखा और दूसरे पत्र लिख।

जयाग

२९-१-४७

बापूजीका प्रायना अित्यातिका वापत्रम नित्यके अनुसार चला। कुछ डाक देखी और बगला वणमाला लिखी। मुझ सल लिखवाय। बापूजी बगला गल स्वय सीखकर मुझ सिसाते ह और मजकी बात तो यह है कि स्वय बकहरा लिख देत ह और मुझ अुस पर हाय धुमानको कहते ह। अुह कोअी अक्षर या शल समझमें नहीं आता तो वे मुझसे पूछते ह और म अुनसे पूछती ह। दोनोमें स कोअी न समझ सके तो जाते ह निमलदाके पास। बापूजीन आज वारहखडीके अपन लिख अक्षरो पर मेरा हाय धुमवाया ताकि मेरे अक्षर मुपरे। यह देखकर निमलदा खूब हसे। कहने लगे य शिक्षक और गिप्या खूब ह। अस प्रकार आजकल हमारी बगलाकी पन्जी चल रही है।

साल सात बज हमन पाचगाव छोडा। सवा आठ बज हम यहां पहुचे। यहां रातभर जागकर गहस्वामीने हमारी यवस्था बडे प्रेमसे की थी। जगलमें भगल जित्तीका नाम है। रामजीन जब चौदह वष वनवास भोगा था तब वनमें रहनवाले भीला या जगली मनुष्योन ही नहीं पशु-पक्षियोन भी कितने प्रेमसे अुनका स्वागत किया था असका वणन हम रामायणमें पडते ह। वैसा ही यह दूसरा प्रत्यक्ष दशन म कर रही हू। यहां हमारा मुकाम भी जगलमें रहनवाले जुलाहे मोची हरिजन आदि लोगाके यही रहता है। परन्तु व हमें प्रमने नहला देते ह। अुनका सत्वार बम्बयी दिल्लीमें रहनेवाले गहरियोके

मत्कारमे कही बड़कर है, अमा कहू ता अतिशयाक्ति नही हागी। वहा पडे लिखे लोग रहने हैं जिहें बापूजीने अितनी तालीम दी है। वहा बापूजीका विस्तृत साहित्य पढनेवाला बग भी है। लेकिन यहा कवल भक्तिमय प्रेमका राज्य है। स्त्रिया भी अपने पर आ पडनेवाले अितने असह्य दु खोंके बावजूद बापूजीके आने पर अुनका स्वागत करनेक लिअे मगल शख बजाती ह गकुन करती ह, तिलक लगाकर आरती अुनारनेको दीपमाला जलानी ह और मगनादसे आकाशको गुजा दती ह। सचमुच बापूजी जब दौरा करत हैं तब गहराका (बम्बयी, पूना, दिल्ली बगराका) स्वागत मने अपनी आखा देखा है। परन्तु यह स्वागत कुछ अनोखा ही लगता है। चारा ओरका वातावरण प्रकृतिकी गोभासे भरपूर है। नोआखालीके ये गाव बहुत ही रमणीय हैं। अुसमें भा ग्रामीण लागाका स्वागत। फिर क्या पूछना? अिसक सिवा ये मत पुरुष अकेले हा नगे परा अैसी असह्य सरदीमें यात्रा कर रहे हैं अिस पवित्र यात्रामें गराक हानका मुझे जा सौभाग्य मिला है अुसके आनदकी क्या बात कहू? आज म रामायणके अुस प्रमगकी कल्पना अच्छी तरह कर सकती हू जब लक्षमणजी रामचद्रजीसे वनवासमें खुदको साय रखनेकी प्राथना करने गये और रामचद्रजीने बड़ी आनाकानीके घाद अुह अपने साय ल जाना स्वीकार कर लिया। तब अुह कितना आनद हुआ होगा? भगवानने बापूजीकी अिस यात्रामें रहनेका मुने कसा सुन्दर अवसर लिया है! अुसकी दया वास्तवमें अपार है।

यहा आकर बापूजीके पाव धाये। डॉ० सुगोलाबहन आजी ह। आज बापूजीकी मालिग अुन्हाने की। अिस बीच मने बापूजीके लिअे खाखरे और गार्क बनाया। बापूजी नहाकर बाहर निकले कि तुरत अुन्हाने भानन कर लिया। वे बोले, 'मेरी सेवा ता बहुत होती है। फिर भी म बेचन रहता हू। काम बढता जा रहा है और पूरा नहा हा पाता। यह मुझे खटकता है।

आज बापूने कुछ प्रश्नके अुत्तर दिये ह। वह प्रश्नोत्तरी अिस प्रकार है।

प्रश्न क्या आप चाहत हैं कि मुसलमान आपकी प्राथनामें आयें?

बापूजीने कहा मेरी प्राथनामें सबको सम्मिलित हाना ही चाहिये, असा मेरा जरा भी आग्रह नही है। परन्तु यदि मुसलमान भात्री प्राथनामें

बापूजी बहुत व्यगमें वाउ रहे ह यह म पीरन समझ गयी। तुमने यदि मुह धोनेको भी गरम पानी देनेका विचार किया है तब तो यह क्या साहबी होगी? आज जहा लागवा रोटी पकानका लकड़ी नहीं मिलती वहा तुम मेरे लिअे मुह धानका गरम पानी करती हो यह तुम्हारे लिअ और मेरे लिअ आश्चयकी बात नहीं? नहानके लिअे ता गरम पानीकी बात समझी जा सकती है। परन्तु मुह-हाय धोनेक लिअे भी तुमने गरम पानी किया यह मरी समझमें नहीं आ सकता। अतनम सचत हा जाआ कि तुम अभा तक कहा हो? बस मुझ अतना ही तुमस कहना है।

हाय धोनेके लिअ गरम पानी काममें लेनेमें भी बापूजीका गरीबाने दकक कितना खयाल होता है यह अिसस देखा जा सकता है। जहा राट पकानको भी लकड़ी नहीं मिलती वहा हाय धानको गरम पानी किया जा सकता है? अिस हू तब वडा हुआ नाजूकपन हम कब दूर करण? ये गल बोलत हुये बापूजी अत्यन्त दुखी हो गये थे यह म स्पष्ट देग सकी। साते समय यह बहुत ही बदनामरी घटना हा गयी। मुझ भी बहुत खटकी। बापूजीन अिसके भीतर छिपे हुआ सुन्दर पाठका विचार और मनन करनकी सूचना की।

सदाकी भाति प्रायना हुआ। बगलाका पाठ करनके बाद मेरी डायरी बापूजी देख गय।

आमकी
३०-१-४७

बम्बईसे दो बहनें खास तौर पर बापूजीको १२५० रुपय हायाहाय देने आयी ह। बापूजीन यह रुपया मुझ सौपा और सतीगबाबूको देकर भुसकी रसीन लनकी सूचना की।

सात बज बापूजीन रस लिया और दस मिनट आराम किया। सात सात बज हमन पाचगाव छोडा। पौन नौ बज हम यहा पहुचे। यहा आकर तुरन्त ही बापूजीन पडितजीक नाम पत्र लिखा। सारा पत्र अग्रजीमें लिखा परन्तु मम्बोधन चि० जवाहरलाल किया। सुन्दर लगता था। मालतीदीदी (मालती देवी चौधरी) भी आयी थी। मालिग स्नानादिसे निबटकर बापून दस बज भाजन किया। भाजनमें साक दो खाखरे दूध और एक प्रपपूट लिया। आज

शामके लिये दूध नहीं है। हा जाय सा नहीं। दोपहरको हरिस बेलकजेडर आये। कानते कातत वापूने बेक घटा बुनके साथ बाने की। बादमें जामन माह्व आये। बुन्हाने २५० रुपयेका बेक सापडा बनाया है, जिसे देखनेके लिये वे हमें ले गये।

परन्तु वापूजी बाल “हमारी काठियावाडी भाषामें बहू तो यह बेक पिगारा ही है। हम आये पहुँचे थे कि याद आया वापूजीका छोटा रुमाल लाना मैं भूल गयी हू। उसे लाने दौड़ती हुयी डेरे पर गयी और ले आयी। हमारा आजका मुकाम बेक कायस्थके घर है। इस गावमें ५४२ हिन्दू १९५४ मुसलमान २६ जुलाहे और ७५ दूसरा जानियाके लाग हैं। पाच भगियाके घर हैं। जिन भाजीक घर हमारा मुकाम है, बुनका नाम यगादाकुमार दे है।

आज गामके लिये दूध कही भी नहीं मिला। अतमें हारकर मैंने वापूजीस यह बात कही। व बाल इसमें क्या हुआ? नारियलका दूध बकरीके दूधका काम अच्छी तरह देगा। और बकरीके धीके बजाय हम नारियलका ताजा तल खायेंगे।

मैंने नारियलका दूध आठ औंस बकरीके दूधकी तरह तैयार किया परन्तु यह दूध पचनेमें भारी पडा और वापूजीको दस्त हाने लगे। गाम तक तो बहुत ही कमजोरी आ गयी। वापूजीको खूब पमीना छूटा। मिर पकड रखा। मैंने निमलदाका पुकारा। मुझे खयाल हुआ कि मुगीलावहनको बुलवा लू। कभी कुछ हो जाय ता मैं मूख मानी जाऊगी। (मुगीलावहन वापूजीकी प्रायनास पहले ही चली गया थी। थोडासा पत्र पडा।)

म निमलदाको चिटठी देने गयी त्या ही वापूजी जागे “मनुडा तुमने निमलदाका पुकारा यह मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। परन्तु तुम्हारी बुझको देखकर मैं तुम्हें क्षमा करता हू। फिर भी अंस समयमें कुछ न करके हृदयसे रामनाम लेनेकी तुमसे आगा रखता हू। मैं तो मनमें रामनाम ले ही रहा था। तुमने निमलदाको बुलानेके बजाय मनमें रामनाम लेना शुरू कर दिया हाता ता मुझे बहुत अच्छा लगता। अब तुम इस वारेमें मुगीलामें न कहना न चिटठी लिखकर जुस बुलाना। मेरा मच्चा डॉक्टर राम ही है। अत्ते मुझमें काम लेनेकी गरज होगी तब तक वह जिलायेगा, नहीं तो बुठा लेगा।

जीश्वरने मरी कसी लाज रली? खयाल हूजा कि थडालु मनुष्यकी ओश्वर वास्तवमें मदद करता है। मेरी यह कितनी बडी कसौती थी? मुशीलाको न बुलाना ये शल बापूजीके मुहमे निकले और मने निमल्लाम अपनी चिटठी छीन ली।

यह घटना बापूजीक सामन ही हो रही थी। जितलिये वे लट-जेट ही सब बात समज गय। मुझस कहने लग कयो तुमने लिज भी डाला था न? मन मजूर किया।

जान तुम्ह जीर मुये जीश्वरने बचा लिया। यह चिटठी पक्कर सुगीला तो दौन्ती हुअी मेरे पास आती परन्तु मुझे वह जरा भी अच्छा न लगता। म तुम पर और अपन पर चिल्लाता। आज तुम्हारी और मेरी पराक्षा हुअी। यदि रामनामका मत्र मरे हृदयमें गहरा अंतर जायगा तो म कभी बीमार हाकर नहीं मर्या। यह नियम हर आदमीके लिअे है केवल मेरे लिज नहीं। मनुष्य जो भूल करता है अुमका फल अुसे भोगना ही पडता है। आखिरी नाम तक रामनामका स्मरण हृदयगत रहना चाहिये। तोतेकी तरह नहीं बल्कि हृदयसे रटना चाहिये। रामायणमें क्या है कि जब सीताजीने हनुमानजीको मोतियाकी माला दी तब अुन्होन अुने तोड डाला। अुहे गू दखना था कि अुसमें राम गल है या नहीं। जुनकी दष्टिमें मोतीका कोजी मूल्प नहीं था। रामनाममें वे जितने तमय थ। यह घटना सच्ची होगी या नहा अस शकटमें हम क्या पडें? हनुमानजी जसा पहाडी शरीर शायद हम न बना सकें। परन्तु आत्मा तो पहाडी बना सकते ह। मनुष्य चाहे तो अभी मन जा अुत्साहरण दिया अस सिद्ध कर सकता है। सिद्ध न कर सके लेकिन सिद्ध करनका प्रयत्न हा करे तो भी काफी है। गीतामातान कहा है कि मनुष्य प्रयत्न करे जीर फल जीश्वरका सीप दे। जिस प्रकार तुम्ह मुष और सबका प्रयत्न करना चाहिय। अब तुम समझी हांगी कि तुम्हारी मेरी या निमीकी भी बीमारीक बारेमें मरी क्या दष्टि है?

आज के माथ ब्रह्मचयकी बातें करते समय मन जो कहा था वह तुम्हारे समयन जना है। मन कहा कि जो पुरुष मानते ह कि स्त्रियोका छूतमें भी पाप है और अिमलिअ अुहें नहीं छूते कयोकि स्त्रीने स्पामात्रस विकार पत्ता होनरा अुट डर रहता है असे आत्मी ब्रह्मचारी हो तो भी म अह ब्रह्मचारी नहीं मानता। दूमरे यह मत माना कि मनुष्य बूढा हा गया है

असलिये निर्विकार हा गया है। वह निर्विकार अमलिये है कि जुसकी शक्ति बूढी हा गयी है न कि ब्रह्मचरके पालनसे। और मन ता आखिरी दम तक भी बूढा नहीं होता। मेरे कुछ मित्राँ भी अस विषयमें मतभेद जरूर है। परन्तु म ता अनेक प्रयागा और अनुभवके बाट यह दावा करता हू कि अुन सबमें सच्चा ब्रह्मचारी म हू। जो निर्विकार हा अुसे रोग क्या हो? वह रोगसि पीडित रह ही नहीं सकता। जिन्हाने मेरे साथ अस विषयमें बहस की है व बीमार ही रहत ह। जिसके लिये सभी स्त्रिया मा बहन या बेटी ह वह अुनके स्पशसे विकारी क्या बने? भले सामने अप्सरा जसी स्त्रिया क्या न हा। फिर भी मैं तो कहता हू कि मेरी मृत्यु ही यह साबित करेगी कि भरा यह दावा मच्चा है या झूठा। मनुष्यकी मृत्युसे पहले यह नहीं कहा जा सकता क्याकि क्षणभरमें मनुष्य बदल भी सकता है। मन अितना चचल होता है। जिसीलिये मैं अुनक कहा कि यदि म रोगसे मरू, तो यह मान लेना कि म अिम पृथ्वी पर दभी और रावण जसा राक्षस था। परन्तु यदि रामनाम रटते रटते जाऊ तो ही मुझे सच्चा ब्रह्मचारी सच्चा महात्मा मानना।

वापूजी रामनामकी अपनी असीम श्रद्धा पर धाराप्रवाह बोलते जा रहे थे। अेक अेक शब्द हृदयकी गहराअीसे निकल रहा था।

म तो अस घटनास यही सोच रही थी कि भगवानने मुझे बने समय पर बचा लिया। सचमुच सेवा करनेसे केवल अुनके पाव दवाने या भोजन तयार करने जैसे कामसि सच्चे वापूजीका नहीं पहचाना जा सकता। असे अवमरा पर ही अुनके विराट स्वरूपका दशन हाता है। और तभी खयाल होता है कि मच्चे वापू ये ह। गीतामें जिम पुरुषोत्तमका वणन किया गया है बने ही साभान् पुरुषोत्तमके समीप रहनेका सौभाग्य अीश्वरने मुझे दिया यह अुसकी मुझ पर कितनी बडी दया है?

रातका वापूजीने अपने पत्रमें भी अेक वामार बहनको रामनामके बारेमें लिखा, 'रामवाण दवा तो सगारमें अेक ही है और वह रामनाम है। अिम नामका रटनेवाला जिन नियमान्ता पालन करना चाहिये अुनका पालन करे। परन्तु यह रामवाण दवा हम सब कटा कर पाते ह?'

रातको वापूजी अेकदम ताजे हो गये थे। धूम कर लौटनेके बाद हॉरिस अेलेक्जेंडरके साथ ही लगभग सारे समय अुनकी बातें हुयी।

अनुके जानेके बाद बापून प्रेस प्रतिनिधियोंके साथ फिर २५० रुपयेवाले झापड़ेकी बात की। वह झापड़ा नहा परन्तु पिटारा है। उसमें न हवा आ सकती है न धूप आ सकती है। नारियलके पत्तोंका झापड़ा बनायें तो झूपरका शय जुड़ जायगा और पच्चीस रुपयेमें काम पूरा हो जायगा। मुच ठेका बनको तयार हा? म तो अिसमें स कमीगन भी क्या लूगा।' सब खिल खिलाकर हस पड़।

रातका दस बजे बापूजी विस्तर पर लट। मने हमगाकी तरह अनुके सिरम तेल मला। पर दवाकर अब डायरी पूरी कर रही हू। थोड़ी दोपहरमें लिखी थी। अिस समय साठ दस हुज ह।

रातको लेट लेट म विचार कर रही थी कि बापूजीन आधमके नियममें ब्रह्मचयका जा व्रत रखा वह कितनी अुच्च कोटिका विचार करके रखा हागा। अुसके आध्यात्मिक भावका साक्षात्कार यहा हो रहा है। मरे जसी छोटी लडकीकी माता बनकर बापूजी भिन्न भिन्न प्रकारसे मरा निमाण कर रह ह। अिसीलिज अुन्हान मुझ ब्रह्मचय-व्रतकी बारीकी समयात्री।

नवब्राम

३१-१-४७

रोजकी तरह प्राथना हुआ। प्रायनाके बाद नियमानुसार मेरी डायरीमें बापूजीन दस्तखत किये।

बिहारमें जो अुपद्रव और गड़बड़ी चल रही है अुससे परिचित रहनक लिअ जिन भाअीका (गासन-सत्रके) बापूजीने सब बातें समझनके लिअ बुल बाया सा व थी जदुभाअी सहाय आय हैं। हुनरभाअी हिन्दी-अुदुकी डाक देखते ह। बापूजीने बिहारमें कमीगन नियुक्त करनका सुझाव दिया। परन्तु को यह बात बहुत पसद हो असा नहीं लगता। मिट्टी लेट समय हरिस अेले बखण्डर आय। अुनसे बापूजीकी आध्यात्मिक और वतमान हलचलो पर बहुत बातें हुआ।

दोपहरको बहनाकी सभा हुआ। अुसमें अक बहनन प्रश्न पूछा कि अुसका पति सन्यामी हा गया है अब वह क्या करे? बापूजीन कहा जिसका पति सन्यामी हा गया है अुस गुड जीवन विताना चाहिय। वह अपनी रोटी खुद कमामे। परिग्रह न करे। सन्यासी कोअी भगन कपड पहननस ही ह

है उसी बात नहीं। कुष्ठ न सूझे तो चरखा चलाये। मने चरखेको काम धेनु कहा है। वातत समय रामनामका रटन करे। कदाचित्त यह सयास पत्तिके सयाससे मेरे खयालमें बढ जायगा। वह ग्राम-सफाजी और बच्चाकी सफाजी आदि भिन्न भिन्न सेवाके काममें अपनेको लगा दे। खाली दिमाग गतानका घर यह कहावत गायद बगलमें भी होगी। हम बेकार बठेंगे ता हजार अत्यात सूझेंगे। असलिये अेक मिर्नट भी खाली न बठना ही तुम्हार लिये सबसे सुदर माग है।

गामका वापूजीने कुछ नहीं खाया। गहदका पानी और जेक औंग गुड लिया।

आमिगपाडा,

१-२-४७

राजकी तरह प्रायना। फिर वापूजीने पत्र लिखवाये और बगलाका पाठ किया। 'डायरी' गब्द लिखनेके बजाय 'रोजनागी' अथवा 'नित्यनाय' जैसे गब्द लिखनेको कहा। कल्की डायरी सिलसिलवार नहीं लिखी गयी थी। अिमलिये वापूने कहा कि जो बात या घटना जिम समय हो अुने जुमा क्रमसे लिखा जाय, तो किमी समय यह दखनेकी जरूरत पडने पर कि कौनसी बात कब कही गयी हमें तलाग न करना पडे। अत अिमका ध्यान रखा जाय।

दूसरा बात यह कही कि यह डायरी चाहे जिसके हाथमें न पड जाय असकी खास तौर पर सावधानी रखनी चाहिये। हमारे पाम कुछ खानगी ता है ही नहीं फिर भी चाहे जिसके हाथमें जानेसे अुमका दुस्पयाग हा सकता है। यह डायरी भविष्यमें तुम्हें बडी काम आयेगी। जय मुखलालकी अच्छी लैंगी। तुम्हें मालूम है कि सुगीलाने आगाखा महलमें जो डायरी रखी थी वह मेरी दष्टिये अेक अतिहासिक और मूल्यवान डायरी हो गयी है। अिमीलिये म अिस बात पर जार देता हू और ध्यान देता हू। अत तुम अिस ममाल कर रखो या जयमुखलालके पास भेज दा। प्यारेलालको बताओ ता वह बहुतसे अच्छे सुधार कर सकन ह। मेरे पास खूब गहरात्रीमें जानेका समय ही कहा है। मेरा विश्वास है कि प्यारेलाल विद्वान आदमी ह। वे मुझे अच्छी तरह समवन हैं। तुम अुनके पाम डायरी पडने भेजोगी तो कुछ खोजगी नहीं बलिक पाओगी और अुहें मेरे कामकी कलना होगी।

परन्तु मन डायरीमें बहुत कुछ अल्टा-साधा लिखा हो और वे हमी
बुझायें ता ? अिस विचारले मन जिनकार कर दिया ।

बापूजी बोले किमीके मुहकी तरफ हम क्या देखें ? व हसी बुझायेंगे
तो भी तुम सबक सीखोगी । काओ यह कहेगा या वह कहेगा अिमकी कल्पना
किमलिअे की जाय ? ओशवरको जा करना हागा सा करेगा । हम अपना
वत-य-पालन करते रहें । यदि यह कल्पना करके कि अच्छा होगा या बुरा होगा
हम पुरुषाय न कर तो आग नहा बडा जा सकता । परन्तु साहस बढ़ाकर
जसे हम हा वस ही दिखानी दें । और असा करते हुआ काजी हमें सुधारनवाली
बातें कहे तो अुह मुनकर हम जुनवा स्वागत कर । बडसे बड मान जानवाले
मनुष्यका कभी कभी छोट बालक भी असा सबक सिखा देते ह कि बुसवा
मारा जीवन ही बदल जाता है । यह मने स्वय अनुभव किया है । अिसलिअे
जिमस जो सीखनको मिल वह सीख लेनेकी वृत्ति हमें अपन भीतर पया
करनी चाहिय ।

हमने साड सात वज नवग्राम छाडा । सवा आठ वज हम यहा पहुचे ।

भाजन करते समय प्यारेलालजी अपन गावस आय । वे बापूजीके लिअ
स्वय खाखर बनाकर लाय थ । अिसलिअ जुनके वनाय हुआ दो खाखरे गक
दूध और सापरेके सल्लावा छाटासा टुकडा बापूजीन लिया । दो वज
नारियलका पानी और गामको दूध और आठ खजूर लिये ।

हम जिनके यहा ठहरे ह अुनका नाम वृष्णमोहन चटर्जी है ।

आज प्रायना-सभामें बापूजीन अिस्लाम धमकी मुन्तर पाह्ला की ।
राजकी अपधा आजकी प्रायनामें हिन्दू-मुसलमानाकी सख्या बहुत ज्याण
या और खूब गोरगुल या । बापूजीन गाति हो जानके बाद प्रवचन गुरू
किया ।

अक मोन्वी साहबन कहा कि गाधीजाका अिस्लामक कानूनके वारेमें
बालनका काजी हन नहा । अन्हान राम जस (मनुष्य) राजाके साथ खुदाका
नाम जाडनका भी विराय किया । अिम पर बापूजीन कहा मेरे खयालम
धमक मामलमें यह विन्तुल सङ्कुचित दृष्टि है । अिस्लाम धम हिन्दू धम या
पारमी धम कोओ पनीमें बर करत रखनकी वस्तु नहा है । मनुष्यमानको
अमका अप्पयन करते अमके आण्य और मिद्दान जा जीवनमें अुपयोगी

हो, स्वीकार या अस्वीकार करनेका पूरा अधिकार है। मने अइम्लाम धमका अध्ययन किया है अिसलिये यह कहता हू।

वादमें डा० सुशीलाबहन जिस गाव (घागेरगाव) में काम करती ह वहासे सुंदर समाचार आये। अुन्हाने अपनी दवादारूस और सेवास बटुतसे मुसलमान भाअी-बहनाका अच्छा करके अुनका प्रेम सम्पादन किया है। अुह सेवाग्राम जाना है परन्तु वे लाग जाने नहीं देते। साथ ही जिन लोगाने दोगेके समय लूटपाट की थी वे खुद सुशीलाबहनको लूटका माल केवल अुनके प्रेम और सवाके कारण अपने-आप लौटा जाते ह। यह कितना सुन्दर हृदय-परिवर्तन कहा जायगा ?

बापूजीने कहा, 'म ता सरकारको यह सलाह दूगा कि लूट करने वालाका अदालतामें धमीटना छोड दे। हा सच्चे दिलस अुह समयाकर यदि जनता और सेनाके आदमी अिस दिनामें काम कर, ता वह गाति स्थायी शान्ति होगी।

जायन्ताके ट्रस्टियाके बारेमें अेक सवाल बापूजीसे पूछा गया था। अुस प्रश्नका अुत्तर देत हुअे बापूजीने कहा 'जो भी सम्पत्ति है वह सब आकरकी, खुदाकी है यह सवगक्तिमान अीश्वरसे ही मनुष्यका मिली है। आदमीके पास जो कुछ है वह अुसकी निजी सम्पत्ति नहीं परन्तु सत्कारकी सेवाके लिये अुसे सौपी गजी सम्पत्ति है। किमी भी यक्तिके पाम यदि अुसकी अपनी जरूरतसे ज्यादा जायन्त हो तो वह भगवानकी दुखी और गरीब सतानकी सेवामें अुसका अुपयोग करनेके लिये अुस जायदादका ट्रस्टी है। अीश्वर पर यदि श्रद्धा रखें ता वह सगक्तिमान है। वह काअी वस्तु सग्रह करता ही नहीं। मनुष्यको चाहिये कि वह अपनी जरूरतके अनुसार राज लेकर कुछ भी सग्रह न करे। यदि हम यह सत्य अपना ल तो भेरे खयालसे कानूनकी दृष्टिमें यह ट्रस्टीपन ही माना जायगा। फिर किसीको लूटने या चूसनेकी नीवत नहीं आयेगी।'

बापूजीका हर बार जसा गीताजीमें कहा है भिन्न भिन्न स्वरूपामें दर्शन हाता है। काअी भी मामला जुनके सामने रखें तो अुसमें से अटूट खजानेके रूपमें नअी नअी अानें जाननेका मिलती ह। कुबेरके भंडार जसा है। अिस खजानमें स जिनना ल अुतना थोडा है। लनेवालेमें लेनेकी गक्ति होनी चाहिये।

नित्यकी भाति प्राथना हुआ। बापमें बगनावा पाठ। पुस्तक बाप बापूजाने गरम पानी लिया। आज बापूजी प्यारेलाल्जीके साथ बापें करने रहे अिसलिअ बुनमे मरी डायरी पन्वाना रह गया।

बापमें मारवाक महाराजा साहबन दम हजार खपना जा चक भजा है बूस पर बापूजीन हस्ताक्षर कर लिय और अट अन पास्टकाड लिखा। फिर फनावा रस लकर तो गया। म पर दवा रही थी अिसलिअ तयार हानमें दर लगी।

सात पतीमको हम महाके लिअे रवाना हुआ। रास्तेमें दो सप्तर दम। सुन्दर मकान बीरान कर डाल गय ह। मनुष्याकी हत्याये भी हुआ है। बापूजाने के साथ बात करते हुआे कहा कि जन्री नामके विना या मेरे बुलाय बगर कोअी मेरे पास न जाय। अिसीमें मरा वायकतवा और यज्ञका श्रय है। सब अपनी अपनी मतिके अनुसार काय करते रह।

मालिश और स्नान नियमानुसार। दोपहरके भोजनमें बापूजीने साखरे दो दूध आठ औंस जरासा घोपरेका माका और थ्रप्यूट लिया। अिस गावमें २५१ हिन्दुआ और ८०० मसलमानाकी जावाणी है।

गामको अदुल्ला साहब (अेस० पी०) के साथ बात करनके बाद बापूने मौन लिया।

भोजनमें शामको दूध जेक केला और जरासे मुरमरे लिय। रातमें अक औंस गुड लिया। रातको मौन गुरू हा गया था अिसलिअ सास तौर पर कोअी नही आया था।

गादुरखील
२-२-४७

सदाकी भाति प्राथना। प्राथनाक बाप तुरत बापून आज जवाहरलाल्जीको पत्र लिखा। पानी पीन समय मन अपनी डायरी भुन्हे गुनाअी परतु हस्ताक्षर दशपरियामें नहा हा सके। म डायरीको दूसरी पुस्तकाके नीच रखकर चली गयी थी अिसलिअ बापूजीन हस्ताक्षर करनको दूनी तब मिली नहीं। सात बजकर पतीस मिनट पर हम दशपरियास चले। रास्तेमें क्षमनाथ चौधरी और हवीदुल्लाकी बाडीमें थोडी देर ठहरे।

यहा हम यदादा पाल नामक कायस्थके घर ठहरे ह ।

यहा आकर राजकी तरह सब कायक्रम चला । स्नानादिमे निवृत्त होकर वापूजीने भोजनमें पाच बानाम पाच काजू दूध और खापरेका सदेश लिया जा हमार यजमानने बनाया था । वापूजा अिन लोगाकी जरसी भी चीज स्वीकार कर लेत ह ता ये अपने-आपको कृतकृत्य मानते हैं ।

यहा २७१ हिंदुआ और १२१२ मुसलमानाकी बस्ती है । आज मौन है जिसलिअे काओ खास बात नही हुआ । वापूजीका मौन हो बुस निन सब सूना सूना लगता है । शामको वापूजी यहाकी अेक पाठाशाला देखने गये । वहामे आकर दम खजूर और आठ ओंस दूध लिया । दूसरा कुछ नही लिया । नियमानुसार प्राथना हुआ । प्राथनामें अच्छी सख्या थी ।

शादुरखील,

४-२-'४७

अब मौनवारके दिन अेक ही गावमें दा दिन ठहरनेका कायक्रम रखा है, क्याकि गावके ागाको मौनके दिन वापूजीके साथ बातें करनेका लाभ नहा मिलता । जिसलिअे सबेरे मुये बहून याडा काम रहा ।

राज हम जिम समय यात्राके लिअे प्रयाण करते ह अुमी समय अर्थात् ७-३० पर हम घूमने निरले । अेक मुसलमान वकीलके यहा गये । म स्त्रियासे अदर मिलनेको गयी । अुन्हाने वापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की जिसलिअे जुह वापूजीमे मिलाया । साढे आठ बजे लौटे । रोजकी भाति वापूजीके पर धाकर मने मालिग की व स्नान कराया । मुये आजसे वापूजीने गीताके श्लोक लिखनेको कहा । पैर धुलवाते हुअे वापूजीन कुछ पत्रा पर दस्तखत किये ।

के माय बातें कर्ने हुअे नअी तालीमकी चर्चा की । नअी तालीम सीखनेवालेका अपना शरीर मजबूत बना लेना चाहिये । प्रोह्ते मुरमुरे खापरेका तेल खली और खाना पकानेकी अय मव कला सीख लेनी चाहिये । स्वभाव पर अुसे असा अकुस रखना चाहिये कि सत्याचरण करते हुअे सबके साथ प्रेमपूर्वक घुलमिल सके । अुसे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि सीख लेनी चाहिये । गुजराती सीख लेनी चाहिये । बगला भी । आज दिनभर लगभग मुसलमान भाओी और व भी पदाधिकारी ही मिलने आते रहे ।

आजकी प्राथना-स्तभा अेक मुसलमान भाओीकी बाडीमें हुआ । निमग्न अनुवाद कर रहे थे तब वापूजीने मुअे निवकर लिया कि तुम अन्तर बहनीमे

मिल जाओ ताकि बालमें बदन गरात्र न हो। म बहनाके पान गत्रा। मने जुहें औगबिल्ला सुनाया। अक लडकी बहन लगी हम ता लिकुं साथ बात करतमें भा पाप समतना ह। मने कहा तुम्हारा आयत या, जिसालिअ ता कुरानकी यह आयत मन सुनाओ। परन्तु मुझ ता मह जानना है कि तुम किम तरह पढती हो। जिसालिअ अत्र तुम मुझ पढ़तर बनाओ। म तुम्हारे सामने विद्यार्थी बनकर सीखना चाँता हू। मरी अिम बावता अेक बुढिया माजी पर अँठा जमर हुआ। बुन्हान अुम लडकीका डाटा और अक छाटीमी आमत भी मुँ सुनाओ।

अतना निश्चित है कि यहाँक कानावरणमें खूब जहर भरत है। लोगाका धमक बहान जिस तरह मुलावेमें डालकर पाता लोग गतानका काम कर रह ह।

मन बापूजीसे प्रायनाक बात यह बात कही। बापूजी बाँ अिमीलिअ तो म कहता हू कि जहरतस अधिअ पानन अधिअ अनान और जडना पन का है। जम हमारे यहा समसदार जकरनम ज्यान समसदारी बनाना है तो अुस अकलमदका दादा कहा जाता है अुमी तरह अिम आवश्यकतास अिअ पानन बरबादी ही की है।

हमारी प्रायना-सभा गादुरखीलके मुख्य नेता सलीमुल्ला साहबके घर पर हुओ थी। प्रायनाक दौरानमें रामधुन तालियाके साथ अँठी तरह गाओ गओ था। बापूजाका बगन भावामें मानपत्र दिया गया था।

बापूजीन कहा, मुने तो आपके दिला पर बँजा करके सबको अक करना है। यदि दिगमें अकता कायम न हो ता काओ काम मिद्ध नहा हागा और जब तक जेकता कायम नही होगी तब तक हमारे नाममें गलामी ही लिखी रहेगी। हम सब किमी भी नामसे पुकारे जान हा परन्तु गुत्तामी तो हम कब सबगक्तिमान औरबरकी ही स्वीकार कर। म खुदाको केवल मानव जस रामक साथ जोडता हू यह माननमें अनान है। मरा राम ही मने लिअ जीवर है। वह पहले था आज है और जागे भा सनातन काल तक कायम रहेगा। अुमका न जम हुआ है न किमीन जुसे बनाया है। जिसलिअे मब लाग भिअ भिअ धमोका अध्ययन करके अुनका आदर करना साखें। रहीम और कराम नामवाल मर मुसलमान मिअ ह। अुन मित्राकी म अुनक नामसे बगन तो जिसका जय यह नहा होना कि मने अुहें खुदाके साथ जाड

लिया है। और उसे आप गुनाह कहेंगे? बरखा बदला बरसे लेनेमें मरा विश्वास नहीं। जानि जातिके बीच सच्चा भाभीचारा स्थापित हुआ बिना हमें किसी भी काममें कामयाबी नहीं मिलेगी।

'मुझे जबरदस्ती विहार भिजवानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। परन्तु जब मुझे महसूस होगा कि अमुक जगह बठकर मैं राष्ट्रकी अुत्तम सेवा कर सकूंगा तो वहा अवश्य पहुंच जाऊंगा। जिसीलिखे यहा आकर बठा हू।

शामको बापूजीने दूध नहीं लिया। दो आँस मुड लिया। दस बजे सोने गये। पाच सात मिनटमें मैं भी सोने चली गयी।

श्रीनगर,

५-२-६७

नित्यका भाति प्रायना बगराका श्रम चला। मुझे सख्त जुवाम और बुखार हानसे बापूजीने अपने पास सुला दिया और डाक सारी खुदन ही लिखी। सुबह ठेठ साडे छह बजे मुझे अुठाया।

रोजकी तरह मात पतीसका 'गादुरखील' छोडा। यहा वीणाबहन दाम और दूसरी महिलाआने सुन्दर तयारी की थी। व अिम गावमें काम करती है। सवा आठ पर हम यहा पहुंचे। आकपक रागानी पूरी गजी थी। आज हमारा मुकाम अेक तानो (जुलाहे) के घरमें है। पिछले अक्तूबरमें अुमका सबस्व टुट गया था। बापूजीके पाव धोकर मने मालिश की। माग्निमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। स्नानक समय भी सो गये।

बापूजीका भोजन करा रही था अुम समय वीणादीदी अपना थर्मामीटर लेकर मेरे पास आयी और बापूजीके सामने जबरन् मेरा बुखार नापा। १०४ था। यह देखकर बापूजी मुग पर बहुत नाराज हुअे।

मेरा खयाल था कि जल्दा कामसे फारिग होकर सो जाऊगी। परतु वीणादीदी नहीं मानी। और अितना बुखार हाने पर भी काम किया, अिमलिखे बापूजी खूब नाराज हुअे। कहने लगे, 'यदि तुमन सुबहसे अपना काम स्वभाजी या निमलदाबूका मीप लिया होता और तुम सा जाती ता यह हाल न हाना। यह सब अच्छा नहा कहा जा सकता। परन्तु सूक्ष्म दृष्टिस बहू ता यह मूछा भी कही जा सकती है। अिमकी अपेक्षा नम्रतासे आराम लिया हाता ता मैं खुग हाना। मने पत्री बार तुममे कहा है कि काम करने लगती हा ता फिर तुम दारीरकी तरफ नहीं देखती। अिमके लिखे आगापा महल्में तुम्हें वितना ही

वार रलाना पडा था । आज भी रलाना पडगा । जरा भी थकावट मालूम हा ता नाम छोड ही देना चाहिय । तुम जेवती हा कि मरे पास कामका डेर गगा हुआ है फिर भी म वक्त निवात्तर आराम लिय बिना नहा रहता । नहा तो म मवा कसे कर सकता हू ? जिसे सवा करनी है अुस पहू अपनी सेवा करना सीखना चाहिय ।

दा घट आराम लेके वात् मेरा बुखार जुतर गया । गामका ९९॥ हो जान पर प्राथना करन गयी । वीणादागीन आज बडी मत्त का जिसलिअ वापूजीका सेवामें कोओ खास दिक्कत नही हुआ ।

आज वापूजीक प्राथना-स्थान पर मडप-सा बनाया गया था । अुपर भा छत बनाओ गयी थी । प्राथनामें लोगाकी खासी भीड थी । परन्तु गान्नि थी । वापूजीन प्राथना-स्थलको सजानका विरोध किया । कहा जिसस रुपय और गवितका व्यय होता है । थोडीसी अूची बठक रहे ताकि लोगाको दया जा सके और लोग मुझ दस सकें । बठनके लिअ नरम गही जसी हा ताकि थकावट न लग । जिसके सिवा किसी भी प्रकारकी सजावट करनकी जरूरत नही ।

प्राथनामें आज अहिमाके गान्ध पर कहा । वापूजी वाले जा आजादाकी रक्षा करनवाले (मयी) हाग वे विरोधियाका मार डालनक लिअ तयार नही हाग परन्तु खुद मरनका तयार हाग । हिन्दुस्तानके स्वराज्यके मामलेमें अग्रज क्या कहत हैं या क्या नही कन्त हू जिसकी मुप परवाह नही अुमका आधार हम पर ही है । जिसलिअ तो जब जवाहरलालजी और दूसरे साधियोने राग्य गसन अपन हायमें लिया तब मन कहा था कि आजस आपको काटाकी सज पर सोना है । हमारा ध्यय भारतकी सपूण स्वतन्त्रता प्राप्त करना है और अमके बिना चन नही लेना है । परन्तु यदि कोओ यह मानता हो कि हम अग्रजाको तलवारके जोरसे निवाल देंगे तो यह बडी भूल है । अग्रज लोग तलवारसे कभी नही डरते । अग्रज जातिकी लगन दुत्ता और हिम्मत विलक्षण है । जिसलिअ तलवारकी ताकतसे वे कभी नही भागेंगे । परन्तु यदि हम मौतका बन्ना मारकर नही बलि मर कर देंगे तो जिस अहिमाके साहससे वे अव्यय हारकर चले जायग । अहिमाके सामने वे खड नही रह मरने । अहिमामे बल्कर किसी गवितको म नहा जानता । मेरा ता दूड विन्वाम है कि अभी तक हमें पूरी आजादी नही मिठी जिसका कारण

यह है कि हमारी अहिंसा कच्ची है। परन्तु कुछ भी हो। आज तक अहिंसाकी ताकतका विकास करनेका जा प्रयत्न हुआ, थुम ताकतका जवाब ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मडलका तयार किया हुआ दस्तावेज है।

“युद्धके परिणामाका हम विचार करे, ता मालूम होगा कि मित्रराज्याकी भी लाभ नही हुआ दुश्मनका तो हाता ही कहास? असख्य मानव कट गये। परन्तु फिर भी आज दुनियाकी स्थिति असी है कि वह अिम समय अनाज और कपडक बिना जघमरी हो गयी है। म ता बिना किसी हिच किचाहटके कह सकता हू कि परिणामकी परवाह किये बिना घमक रूपमें नही, तो केव प्रामाणिक नीतिके रूपमें अहिंसाको अपनाकर अिम गकितसे प्राप्त हानेवान् आत्म विश्वास पर आधार रखनेमें हमारा अधिक श्रय है।

अग्रेजी भापाके वारेमें बोलते हुअे बापूजीने कहा अग्रेजी गिक्षाने हमारी बुद्धिको जानके भोजनक जभावमें विलकुल भूखा मारकर हमें पगु बना दिया है। म ता चाहूंगा कि हमारी अितनी अधिः समृद्ध भापाओकी गिक्षा विद्याधियोको दी जाय। हम यदि लगनस काम कर और अग्रेजी गिक्षाका माह छोड दें तो जनताको सच्ची नागरिकताके घम और अधिकाराकी गिक्षा बहुत जल्दी द सकत ह।”

आज जब प्रवचनका बगलामें अनुवाद हा रहा था तभी म घर चली आयी थी। बापूजीके लिअे दूध और सेब तयार करके सो गयी। फिरसे रातको बुखार हो आया। परन्तु साढे आठ बजे अुठकर बापूजीका विछौना करके मने रोजका कामकाज पूरा किया। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पाव दवाकर फिर जटदी सो गयी।

बापूजीको मेरा काम करना अच्छा नही लगा। जसा लगा कि नाराज ह। परन्तु म चुपचाप कामकाज निबटाकर सो गयी। (आजकी डायरी ता० ६-२-४७ के दिन लिखी गयी है।)

घरमपुर

६-२-४७ गुरूवार

रोजकी भाति प्रायनाके लिअे अुठी। बापूजीने कहा कि तुम्ह रातभर बुखार रहा अिसलिअे सो रहो। परन्तु मुअे अच्छा लगा अिसलिअे अुठ बठी। प्रायनामें गीताजीके अध्यायमें भूल हा गयी। शुक्रवारका अध्याय मने आज पढ़ना आरभ कर दिया। बापूजीने सचेत किया। मुझसे कहने लगे यह

भूल बताती है कि तुम बीमार हो फिर भी या तो मैं तुम्हें आराम नहीं लन देता या तुम नहीं ऐनी। बापूजीका पानी जोर रम ऐर म मा गयी। बापूजीन को पत्र लिखा। अुसम लिखा कि त्रीग और राजा लोग कुछ भी कर। मरी दष्टिसे काप्रसको कुछ नहीं करना है। कपड और खरासक मामलेम मरा विचार सीधा जोर दन है।

सात सात बज हमन धीनगर छाडा। रास्नेमें अक मुसलमान नाआ सिक्दर जूनियाकी बाडीम खे। म स्त्रियाके पाम गयी। आकर रोजकी तरह बापूजीकी मालिग स्नान जियादि काम पूरा किया। भाजनमें बापूजीन पाच काजू पाच वाणम गाक फल और दूध लिया। मेरी तरीयत टीक रही। सब काम किया। परन्तु दोपहरके वात १०४ टम्परेचर हो गया। अिसलिअ चारस पाच तक बापूजीके पास सो गयी। पाच बज प्रायनाके समय जागी और नियमानुसार बापूजीक साथ प्रायना करन गया।

गामको बापूजीन भोजन कुछ नहीं किया। केवल गुड ही लिया। अिसलिअ प्रायनाके बाद मरे पास बोयी खास काम नहीं था। बापूजी कहन लग तुम्हें सुला सक अिसीलिअ मन केवल गुड लिया है। बापूजीन मरी चिन्ताके कारण और मेरे आरामके लिअ मिफ गुड लिया अिसका पता मुय रातको लगा। मन माना था कि गायद तवीयत ठीक न होनेके कारण वे दूसरा कुछ लेनस अिनकार कर रटे ह। परन्तु व दूसराकी चिन्ता वितनी ज्यादा करते ह? मझ गडकी वात मुनकर दुख हुआ। सोचा मन अपना स्वास्थ्य नहीं सभाला अिसीकी यह सजा मिली।

आज सपाओके बारेम बापूजीन कहा कि स्वच्छता तो मेरा मुख्य और मनपन विषय है। पचिमकी बहुतता वात मुझ पसन् नहीं मगर वहा स्वच्छताका नियम मन खास सीखा है। यहाके तागवाम जसी पानीमें कपड धान हाने ह और वही पानी पीना हाता है। यह देखकर मुझ बडा दुख हाता है। लोग जरा भी सकोच निय बगर जहा-तहा धक्ते ह पान खाकर पिचकारिया छाडन ह। यह सब हमारे देगम स्वाभाविक बन गया है। अिममे क्या दुख होता है। यह हमारे लिअ गमकी बात है। हिदुस्तानम अन्क रोगाका कारण अिस प्रकारका गदगी ही है। अितन पर मा भारत जी रहा है यही मरे लिअ ता अचरजकी बात है। यहाकी आवालीमें मूयका अनुपात दुनियाम भवस अधिक है। पूरी सफाओ रखनमें गरीबी बनी

बाधक नहीं होती। सिर्फ हम आलस्य छोड़ दें तो अपने देगको स्वर्णभूमि बना सकने ह। जपेजामें कहावत है कि स्वच्छता देवी गुणके निकट पहुंच सकती है। और यदि हम बाहरकी सफाई रखनेके नियमाका मनन करगे तो अन्दरकी सफाई रखना हमें अपने-आप सूजेगा।

बापूजाकी प्रवृत्तियाँ परिचित रहनेके लिये सब अखबारी सवादाता साथ रहनेकी माग करते ह। बापूजी कहते हैं अखबारवाले अभी-अभी अिम क्षेत्र पर चलाओ की है। यहा तो उनके लिये किमी भी प्रकारकी सुविधा नहीं है। यदि वे मेरे आमपास ठाटवाट खडा कर ताँ मै अुह चले जानेका कटू दू। परंतु वे बहुत सादे ढंगने दहानके अनुकूल बनकर जीवन बिता रहे हैं। मेरी मलाह है कि अखबारवाले यहा सवाददाता भेजकर व्यथ खच न कर। फिर भी अखबारवालाक पास अपने आदमी भरे पास भेजनेको ज्यादा रुपया हो तो व मुझे रुपया ही भेज दें। यहाका कष्ट सब काजी महन नहीं कर सकते।

बापूजीसे अेक प्रश्न यह पूछा गया कि '१९२५ में आपने कहा था कि म तो गायन विधानमें यह धारा रखूंगा कि स्वतंत्र भारतमें जा गारीरिक परधिमन राज्यकी कुछ न कुछ सेवा कर सक अुसीको मत देनेका अधिकार दिया जाय। क्या आप अिम बात पर अुब भी कायम हैं?' बापूजीने जवाब दिया अिम बात पर ताँ म मरूंगा तब तक कायम रखूंगा। मगवानने मनुष्यको बनाया है अिसलिये प्रत्येक मनुष्यका यह धम है कि वह काम किये बिना खाना न खाये। रुपयेवाले अपना रुपया दे दें और सबके साथ हाथ-पर चलाकर खायें। बुद्धिम रुपया बटोरकर भोग विलासके साधन खडे करके जग जाराममें जीवन व्यतीत करना पाप है।'

राजाअके विषयमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, हिंदुस्तानमें राजा तो ६०० ह और प्रजा करोडाकी मरूयामें है। राजाअाने म कहुंगा कि तुम राजा न रहो और प्रजाके सबक दन जाओ। अिसमें तुम्हारा और प्रजाका सबका कुगल है।

बापूजीके पाग आनेवाले भिन्न भिन्न प्रश्ना पर अलग अलग चर्चाओं हानी ह और उनसे बापूजीके निश्चिन विचार विस्तारसे जाननेको मिलने हैं।

रोजकी तरह प्राथनाके लिख साते तीन बजे जुठ। प्राथनाके बाद मेरी दोना दिनकी टायरीमें बापूजीन हस्ताक्षर किय। राजकी तरह बगलाका पाठ किया। निमलदान एक बगली बालिकाका बगलामें लिखा पत्र सुनाया। सात पतीस पर घरमपुर छोडा। सवा जाठ बजे हम यह पहुचे। यह मकान डाक्टर भुपेन्द्रकुमार मजूमदारका है।

मेरी तवायत अच्छी है जिसलिख बापूजीन सभी काम करनेकी अजाजत द दी। आकर रोजकी भाति मन बापूजीकी मालिग की स्नान कराया। बापूजी नहाकर निकले जितनमें मुशीलाबहत प आशी। बापूजीक लिख अन्हाने सभालकर थोडस काजू-बादाम रख छोड थ सो लायी। बापूजीन भोजनमें गाक दूध थोडे मुरमरे और दो काजू लिय। खाकरे नहा साथ। बाकी सारा थम नित्यकी भाति चला।

दोपहरको बहुत लोग मिलन आयें। उनमें प्रोफसर राजकुमार चन्वर्ती सतागवावू मनोरजनवावू चारुदा मा (हेमप्रभादेवी) जमान साहब और पुलिस अफसर भी थ। कनल गाहनवाज साहब (आशी० अन० ज० वाल) और हरिदासभाओ तथा बलाबहन (नताजीकी भतीजी) आशी। निरजनसिंह मिल भी जाय।

बापूजी मिट्टी लेने लेन पाडी दर सो गये। थुठकर अन्हान मरे बारेमें आये हुअ एक स्वप्नकी बात कही तुम अम मरत देखती हो और अम बचानका घम समयकर अुसके पास जाती हा। परन्तु तुम असके पास पहुचनी ही हो कि वह आदमा विफारवग हा जाता है। तुमन अुस चाटे लगाय। अिसलिख अुमन आकर तुमन माफी मागी। तुम मुय यह बात कहन आती हा जितनमें मेरी आय खुल जाती है। म तुम्ह गावागी देने जा रहा था।

बापूजा कहन लग म तुम्ह अिम स्वप्नक जमी बनाना चाहता हू। यह स्वप्न निद्र करनमें बापों या गायक यगात्रा समय भी लग सकता है। परन्तु चिन्ता भी समय लग अुसम हमें क्या? हम कतय करते करत मर गय ता अगले जममें अिम पूरा करग। परन्तु अिसमें बीमारीको जरा भी स्थान न्ना हाना चाहिय। हमारी मापामें दढता हानी चाहिय रत्न-सहनमें

मरणा और विवेक हाना चाहिये। और डरके लिये थाडा भी स्थान नही हाना चाहिये। अितना तुम पचा लोगी तो खूब अूची अुठोगी।”

अूपरकी बातें हा रही थी अितनेमें ठक्करवापा आ गये। डाकका बडा-सा डेर लाये। वापा और वापूजीने थोडीसी बातें की। आजकी डाकमें सबके पत्र बहुत गरमागरम ह।

शामको जमान साहबके साथ बातें करते समय अुन्हाने बताया कि निराश्रिताक लिये सदाव्रत खोला गया है, जहास अुह मुफ्त अनाज दिया जाना है। अिस पर वापूजीने अपने विचार बताते हुअे कहा प्रत्येक मनुष्यको मेहनत करके ही खानेका अधिकार है। सरकारको अिस तरहका काम खोलना चाहिये। जुदाहरणाय, रास्त सुधारना देहातकी पुनरचना करना सहकारी ढग पर अुद्याग स्थापित करना आदि। असे अनेक काममें जा लाग साथ दें जुन्हाको पूरा रागन लेनेका अधिकार है। हमारे यहा जो मुफ्त दान दिया जाता है और हमने अुसका जा अथ किया है, अुसका म विरोधी ह। सशक्त लोग कुछ भी काम न करे और सरकारकी तरफसे रहने तथा खानेकी मुफ्त सुविधा पानेकी आगा रखें, यह मरी दृष्टिसे अुचित्त नही है। वसे जो लोग बेघरवार निराश्रित हा गये ह अुनके प्रति मुझे पूरी सहानुभूति है। सट्टा करके जो लाग रुपया प्राप्त करते ह वह सच्ची कमाअीका पसा नहा है। हर आदमी अपना पमीना बहाकर खुद मेहनत करके कमाये और खाये तब तो हमारे यहा स्वग हो जाय, अिसमें मुझे काअी सदह नहा है। कवि डॉक्टर लेखक शिक्षक वकील और वापारी कुछ भी स्वाय रखे बिना यदि सच्चे दिलसे अपने-अपने फज अटा करे और अपने पान अथवा कुलताको अपने अपने ढगमे मानव-सेवामें खच कर तो हमारा भारत ससारमें प्रथम श्रेणीका देग बन जाय।’

वापूजीने जमान साहबको अिस प्रवार अपने विचार बताये अिस पर मैं विचार कर रही थी कि वे अितना बडी अपशा अिन लोगसे वसे रखते ह? मने वापूजीस पूछा तो वे कहने लगे

अक आदमी भी अिस प्रवार करने लग जाय ता अुसका असर दूसरा पर पडेगा। हमें निराग न होकर प्रयत्नशील रहना चाहिये। हिन्दुस्तानमें अगर स्वार्थी हैं ता परमार्थी भी कम नही ह। साथ ही म तो गीता-माताका अभ्यामी ह। अिसलिये कहूंगा कि गीतामाताने कहा है कि तुम

श्रद्धा रखकर किसी फल्की अपेक्षा रखे बिना शुद्ध भावनासे अपना कतम करने रहो।

आज बापूजी प्रार्थनासे लौटन पर वात पाय। रोज दोपहरको ही वात लन ह। परन्तु आजका दिन मुलाकातियास भरा हुआ था। कानत वातते अग्यवार सुन। मन डाक सुनाओ। फिर पर घोय और बापूजी विस्तर पर ल। गामका कुछ नहीं खाया। बहुत थक गय ह। गरम पानी और गहल किया। पाच ही मिनटमें विस्तर पर लेट गये। वातमें म पर दवा रही थी कि सो गय।

बापूजीके सोनके वात मन घरक लिजे पय लिखा। बापूजीके लिखे हुजे पत्राकी नकल करके डायरी लिखी। काता। जितनमें साढे बारह हो गय। परन्तु लिखनका काम बहुत च गया था। थुसे पूरा कर लिया। अिमलिज हल्की हो गयी।

नदीग्राम

८-२-४७

म रातका दरसे सोन गयी तव बापूजी गहरी नीन्में थ। परन्तु डेढ वज भुड और मुग जगाकर लालटन जलानेको कहा। मुनसे कहा म रामनाम तो ले ही रहा था परन्तु अक पत्र मजिस्ट्रेटको लिखना था अिसलिजे मन पर बोश है। नीन् भुड गयी। और भी बहुतसे पत्र लिखने ह। और कल बापा जो ढर सारी डाक लाम ह वह भी पानी है। अिसलिज लालटन जलाये।

मन लालटन जलाकर वागज कलम बगरा लिय। मन कहा आप लट ल मुपमे लिखवाअिय न ?

बापूजी बोले तुम ७७ वषका हो जाओ फिर लिखना। अभी ता मा जाओ। म अक गल भी बाल बिना मा गयी। मुझम कहन लग जिस लडकीका म तिनमें सानक लिज पूरा आराम नहा दे सकता और जो रातको र तक काम करनी है अग यदि आधी रातको भी बुठाकर काम करनका कह ता म कना पारी माना जाअगा ?

म तुरत गमय गयी कि क रातमें साढे बारह वज तक लिखनी रनी यह बापूजीके ध्यानम बाहर नही रहा। मेरा कयूर था अिसलिज कुछ वातनकी गुनाअिया नही थी। बापूजी मेरा जितना ध्यान रखने ह ?

बापूजीने डेढे सवा तीन बजे तक काम किया। बादमें मुझे फिर जगाया। तलतुन-पानी किया। प्रायना हुयी। आज बेलावहनने प्रायनामें सुन्दर भजन गाया।

प्रायनाके बाद बापूजीने गरम पानी जोर गहद लिया। और बगला पाठ करके सो गये। म थोड़ी देर बापूजीके हाथ-पर दबाती रही। पन्द्रह मिनट साथे। अठकर रम लिया और यहा आनेका समय हो गया।

लगभग रातके डड बजेस काम कर रह ह फिर भी बापूजी कहत ह कि "मुझे षकावट नहीं मालूम होनी। मुझम कहा यदि तुम रातका भरे साथ ही जल्दी सो गयी होती ता सारा काम तुमसे कराना। परंतु तुम दरमे साने आधी अिमलिअे तुमसे कसे काम लेता? मुझे भी जल्दी न सोनेका अपमान हुआ।

साढे सात बजे प्रसादपुर छाटा। आठ पच्चीसको हम यहा पहुचे। बापाका पत्र भिजवाया। बापूजी दूमरी डाक देख रह थे, अितनेमें मने मालिगीकी तयारी की। मालिगीमें पचास मिनट सोये। सारी रातका जागरण या अिमलिअे अितना सो लिये यह अच्छा हुआ।

दोपहरके खानेमें खुराक बहुत घटा दी। दो साखर छ और दूध और गाव ही लिया।

रातते समय सुरेद्र घोष लावण्यप्रभाजहन और मिदनापुरके कायकर्ता आये। मुधेताबहन कृपालानी और मनोरजन बाबू भी आये।

आज बापूने कुछ प्रश्नाके अुत्तर देत हुअे कहा 'मुमल्मान हिन्दुआका बहिष्कार करत ह जमी बातें भरे पास जरूर आओ ह। परन्तु सभी जगह यह स्थिति नहीं है। अिमके सिवा हिन्दुआके पाम जितनी जाती जा सक अुमसे अधिक जमीन है। अिसमें दोना वर्गोंकी अपार हानि हानी है। मैं तो यह मलाह दूगा कि व जितनी खु जात सब अुतनी जमीन रखे अधिक जमीन अपने कजेमें न रखे। हम कोओ अनिरिकन चीज नहा रम सरत—फिर वह छागी हा या बडी। समाजका अिम आत्मा तक पहुचनेकी साधना करनी चाहिये।

'म यहा दा-नीन महीनामे आया हुआ ह। अिम अममें अितना बहर दगता ह कि हिन्दुआने किमी ह तक अपनी बहादुरी सिवानेका साहम किया है जयदा या कहे कि अपनी कमजोरी मिगओ है। थोडे अिन

पहल ही भटियालपुरमें जिस मन्दिरका मुसलमानाने नष्ट कर दिया था वही प्यारेलालजीकी मेहनतसे मेरे हाथों फिर दब प्रतिष्ठा हुआ है। अगममें मुसलमानभाभी भी मौजूद थे। अतना ही नहीं बुद्धान प्रतिष्ठा भी ली कि भविष्यमें अपनी जान देकर भी हम जिस मन्दिरको बचायेंगे। पहल अपनी जान कुबान करेग वामें ही काभी मन्दिरको हाथ लगा सवगा। जिस प्रकारकी हवा पदा हो जयवा मुसलमान भाआ असी प्रतिष्ठा लें यह बोधी असी-वसी बात नहीं है। मेरे दौरेमें अमी छाटी-माटी बातें होती रही ह, जिनसे हमें अतना आत्म-सतोप जरूर होता है कि कुछ न कुछ काम हो रहा है। यदि म शुद्ध हाजू जा कहता हूँ वही करता होखू तो यह काम अवश्य टिकेगा। म यह भी मानता हूँ कि सबक जा सावजनिक सेवा करता हूँ अुसका अुसके निजी जीवनके साथ भी मेल बठना चाहिय और अुसका जीवन अुतना ही विदुद्ध और पारदशक होता चाहिय। प्रत्येक सच्चा काय मनुष्यका अमर बनाता है। मनुष्यके मर जानके बाद अुगवा काम रव जाता है यह कहना गलत है। जिसलिअे मेरे साथके लोग और कायकर्ता नीतर और बाहरसे शुद्ध हांग तो अुनका काम अवश्य चमकेगा। नहीं तो समाज अपन-आप अुहे अुस स्थान पर नहीं रहने देगा। यह मेरा कानून नहीं दुनियाका कानून है। यदि सावजनिक मेवकमें चाडा भी आडबर य अभिमान हागा तो वह अक क्षण भी नहीं टिक सकेगा।

आजकी पाथनामें सुशीलावहन पके साथ कारपाडासे ८० स्त्रिया आधी थी। मुशीलावहन कह रही थी कि अिनमें से कुछ बहनें तो असी ह जिहाने कभी गावसे बाहर पर नहीं रवा। रामधुनको वहनान सुदर ढगस गया।

जिस गावमें मुक्किलसे वापूजीके ही रहन लायक छोटीसी जगह मिली है। सप सबक लिअ तम्बू तानन पठ ह। जमा दूश्य दिवाजी देता है माना काभी काफिरा पडा हो। क्याकि सत्रादशाताओ और फोटोग्राफराका दल बहुत बन् गया है। अिसके अलावा गावके लोग भी शामिल हो गये हैं। खतामें तम्बू तानकर सब पडे ह।

प्राधनासे आकर वापूजीन पट हुआ दूधका पानी लिया। डाक देखकर दम बजे बाद सोय। म कलके बुनाहनके कारण वापूजीके तिरमें तल मल कर और पर दवाकर फौरन सो गजी।

विजयनगर

९-२-४७

रानकी भाति प्रायना। प्रायनाके बाद नियमानुमार बगलाका पाठ क्रिया और कुछ पत्र स्वय ही लिखे। यहा कापकतकि रूपमें मुख्यत बहनें ही काम कर रही ह। ये बहनें भजन गात-गाते सुबह जल्दी ही बापूजीका लेने नदीग्राम आ पहुची थी। उनमें स दो छाटी भुमकी बहनाका बापूजीकी वैसायी बननकी बडी अिच्छा थी अिसलिअे अुह वैसायी बनने दिया और मं निमलदाके माय छोटे रास्तेसे यहा आ गयी।

यहा आकर बापूजीके पहुचनेसे पहले ही मैंने सारी व्यवस्था कर ली। अिसलिअे बापूजीके आने ही पैर धोकर मालिग की। और स्नान करके साडे दम बजे निवट गये। अिनने दिनके सफरमें बापूजीन जलासे जल्दी आज भोजन क्रिया।

बेलाबहन यहासे गयी। किशोरलाल काकाको दमा है, अिसलिअे बेला बहनने अुनके लिअे अक जडी-बूटी भेजनेको बापूजीसे कहा। व कहती थी कि यह अुनकी आजमाजी हुआ जडी-बूटी है। परन्तु बापूजीने विनादमें कहा, अगर किशोरलालका दमा जडमे चला जाय तो म तुम्हें अिनाम दूगा।'

मुय पर अभी तक सरदीका असर है, अिसलिअे बापूजीने दापहरका मुला दिया और कहा, मैं अुठाअू तब अुठना। म साती रहा। परतु जागनेके बाद क्या दग्ती ह कि बापूजीने चरखा सुद तयार कर लिया है और कानने बठ गये ह। मने रोपमें कहा म अभी भी जागी न हानी ता आप अुठात ही नहा न? मुने यह खयाल नहा या कि आप सुद चरखा तयार करके मुने अुठायेगे।'

बापूजी हसकर बहने लगे तुम्ह क्या पना कि अपना काम आप ही करनेमें मुने कितना आनद आता है। तुम तो रोज करती ही हो और आगे भी करोगी। परन्तु मुने जब जब अपना काम सुद करनेका मौका मिलता है तब अुमका सदुपयोग करनेका आनद लूट लेता हू। तुम जरा और अच्छी हो जाओ, फिर म घोडे ही तुम्हें अेक घटा सोने दूगा? म कितना निरम बन सकता हू यह अनुभव करना हो तो तुम लीहै जसी मजबूत बन जाओ। लुहारको लाहा तब आगमें तपाते और अूस पर जारन

अकला घतो रे

ह्याड भारत बक्त लोट पर त्या आनी हे? अता निष्टुर म तमी बन सकता हू जब तुम तप हुअे लाह जमी बा जाभा। और जुग लाहेने आकार भी बसे सुदर बनो ह? अता आकार तुम्हारा म तमी बना सकता हू जब तुम अितनी मजदूत बन जाभा। अिसलिअ तुम्ह मरा प्रत्यक काम करनवी अिच्छा तमी रखनी चाहिये जब तुम्हारे नसमें भी राग न हो।

बालमें बातते हुअ दूतर पत्र लिखाया। अितनेमें अपलटाक बनी मुहम्मद भाभी आ गय। आज बापूजीन प्रायनास पहू ही पाच बीग पर मौन र लिया। प्रायनामें लिया हुआ भाषण पढ़ा गया। आजका भाषण पापकर्ताआकी प्रनोत्तरीके रूपमें था।

बापूजीके पास अक प्रश्न घर आया कुछ पापकर्ताआको सवामें अपना जीवन बितानके बाद कुछ अशामें सत्ताका भी शौक हा जाता है। अिसलिअ अुनके साथी अथवा अुनक मातहत काम करनवाले पापकर्ता अुन पर किस तरह नियंत्रण रखें? और सस्या लोकतात्रिक नीतिका किस प्रकार कायम रख सकती है? अनुभवसे पता चलता है कि अस पापकर्ताआके साथ असहयाग करनसे कार्योंमें विघ्न आता है।

बापूजीन कहा मनुष्य स्वभावसे सत्ताका शौकीन है। और अिस शौकका अस तो मृत्युके साथ ही होता है। अिसलिअ सत्ताके पीछ पड हुअ सवकको अकुशामें रखनका काम दूसराके लिअ मुश्किल है। अिसक कभी कारणमें अक कारण मह है कि दूसरामें भी यह दोष जान-अनजान होना सम्भव है। साथ ही जगतमें सवया अहिंसक ढंगसे चलनवाली अक भी सस्या दसनम नहा आती। और तत्र तक हम यह नही कह सकते कि काअी भी सस्या पूरी तरह लाकतात्रिक ढग पर चल रही है। जब तक लोकतत्रकी अहिंसाका आधार न हो तब तक वह कभी पूण नही माना जा सकता। यन्ि अुद्देश्य अथवा बाप शुद्ध हो ता अहिंसक असहयोग सफल हुअ बिना रह ही नही सकता। और असे असहयागसे सस्याको बिलकुल जाच नही आयगी। अिस प्रयागमें अहिंसाकी मात्रा थोडी हो या बिलकुल न हो तो ही असफलता मिलेगी। मन अनुभव किया है कि जो लाग दूसराकी सिखायत करते ह वे स्वय ही सत्ताका लालच मनमें रखते ह। अिसलिअ जहा अक ही किस्मके दो प्रतिस्पर्धियामें भद किया जाता

है बहा अम बतानेने किमीका समाधान नहीं होता और दोना पक्ष रापसे भर जात है।

‘जसे हमारे गहरामें दलबन्दी है और सत्ताके लिये गदी चारें चली जाती ह, वसी ही गावामें होने लगे तो भारतके लिये अफमासकी बात हागी। यदि कायकर्ता सत्ताके लिये गावामें जायेंगे तो वे देहातकी प्रगतिमें बाधक हागे। म ता यह कहूंगा कि परिणामकी आगा रखे बिना हम अपना काम करत रहें और अुस काममें स्थानीय लोगकी सहायता नें। यदि हमें सत्ताका माह नहीं लगा हागा ता हमारा काम हरगिज नहीं विगडेगा। गहराके पढे लिखे और सुधरे हुअे माने जानेवाले लग हमारे गावाकी तरफम लापरवाह रहे ह। यह हमने भयकर अपराध किया है। यदि हम अिसका हृदयम प्रायश्चित्त करेंगे तो हममें धीरज आयेगा। म ता गावामें घूम रहा हू। बहा कमसे कम अेक-दो प्रामाणिक कायकर्ता तो मिलते ही ह। अिमलिये अब भी गाव अच्छे ह। परन्तु अुनकी अच्छाओ स्वीकार करने या मानने जितनी नम्रता हममें नहीं है। जिस स्थानीय दलबन्दी द्वारा काम करना है अुन गावामे अलग ही रहना चाहिये। और यदि मव दलाकी या जो किमी भी दलमें न हा अस लागाकी अच्छी सहायता मिलनी ही तो अुसे नम्रताम स्वीकार कर लेना चाहिये। हम दहातियामें से अेक बन सकें अिमी अुद्देश्यसे मने प्रत्येक गावमें अपने अेक अेक साथीको रखा है। और जो कायकर्ता बगला न जानता हो अुसीके साथ दुमापियेका काम करनेके लिये अपवाद-स्वरूप दूसरा साथी रखा है। अिससे मुजे लाभ हुआ दीखता है। हमें जल्दबाजीमें निणय कर लनेकी बुरी आदत है। बाहरकी मन्त्रक बिना काम नहीं हाता, यह गलत बात है। स्थानीय सहायता जितनी मिले अुमे लेकर हम अेकेले ही हिम्मत और ममयक साथ काम करेंगे ता जरूर विजयी हागे। फिर भी यदि सफ़्ता न मिल तो और किमीका (किसी व्यक्तिका या समयका) दोष बताये बिना अपना ही दाप बताना हम मीचेंगे तभी हमारी बुद्धति हागी। अिममें मुने जरा भी गका नहीं।’

यह मकान जोगेगचन्द्र मजूमदारका है। अिम गावमें १२६९ मुसलमान और ८६५ हिंदू ह। बन्दुतसे घर जला दिये गये ह। लोगके नाम पर म्पया भी लिया गया है। लगभग सबको जबरन मुसलमान बनाया गया है। शिष्टाग्रामें बहुतेसे जुगह है। अमीर आग तो अक्किाग बाहर रन्ने हैं।

प्रातःकालके भोजनमें थोड़ा मुरमुरे पाच वागम दो काजू साब और जाठ औस दूध लिया। दोपहरको दो बज दा नारियलका पानी। गामको प्राथनासे पहल आठ जीम दूध और भुसमें अक चम्मच सारकका चूण डाला। प्राथनाके बाद अखबार सुनते हुअे गरम पानी और दो चम्मच गहूँ लिया। शामको लगभग अढ़ाई मील घूमे। पौन दस बजे बापूजी बिस्तरमें लेट। मुझ सोनमें साठ दस हा गय।

विजयनगर

१०-२-४७ सोमवार

अस गावमें दो दिन तक रहना है जिसलिअ आज तो प्राथनाके बाद कोजी खास काम नहीं रहा। रोजकी तरह प्राथनाके लिअे अुठ। दातुन करके प्राथनाके बाद बापूजीन बगलाका पाठ किया। मौन दिवम हानक कारण और को बढ मननीय पत्र लिखे। अभी तक भरी सरदी नहीं मिटी जिसलिअ अक पर्चे पर लिखा

यह जुवाम मिटानका अुपाय तुम्हें दूटना चाहिय। राम-नाम तो रामबाण दवा है अुससे जरूर मिटना चाहिय। छाती और गलमें कुछ न कुछ लपेट रतो तो ठीक रह। कुछ भी हो रामनामका अेक बानून यह है कि कुदरतके नियम न टूटन चाहिय। जिस पर विचार करना सीख लो।

ठीक सात पतीसको घूमन निकले। गोपीनाथपुर जानवाले थे। पता लीस मिनट चलन पर भी हम गापीनाथपुर नहा पहुचे जिसलिअे बापूजीन पूछा कितनी दूर है? जवाब मिला कि अभी दस-पन्ध्र मिनट और लगग। जिस प्रकार आते-जाते सट्टज ही दो घट बीत जाते। जिसलिअे असा साचकर कि जिस तरह चलनेसे यात्रा पूरी नहीं हागी। हर बातकी सीमा होनी चाहिय। हम लौट आय। मुक्ताम पर आय तब ८-५५ हो गय। आकर बापूजीक पर धाय। मालिशमें बापूजी तीस मिनट सोय। आज मौन दिवस है जिसलिअे सुनसान लगता है।

बापूजीन दापहरके भोजनमें अक साखरा साग आठ औस दूध और अक प्रपकूट लिया। दोपहरको नारियलका पानी लिया। लगभग सारा दिन बापूजीन लिखन-पठनमें ही विताया।

जेक भाआने बापूजीस बात कही कि अेक मुसलमान व्यापारी सच्चा तराजू रखता था और अेक हिंदू व्यापारी झूठा तराजू रखता था अिसस क्या यह नही लगता कि मुसलमान व्यापारी प्रामाणिक ह और हिंदू व्यापारी अप्रामाणिक ह ?

बापूजीने जवाब दिया अिस अधूरे जगतमें कोअी अेक जाति पूरी तरह प्रामाणिक नही और न कोअी अेक जाति पूरी तरह अप्रामाणिक है। जो कोअी अपने ग्राहकाको अिस प्रकार धाखा देता है, वह व्यक्ति अप्रामाणिक है। परंतु अिस परसे सारी जातिको कसे बेअीमान कहा जा सकता है, यह मरी समयमें नही आता।

“नाआखाली तो जेक असा रमणीय प्रदेश है, जहा अपार प्राकृतिक संपत्ति है। यदि अिसमें हिंदू-मुसलमानोकी अप्रव अेकता और हादिक मित्रता हो जाय तो मै अिसे पृथ्वी पर स्वग कहूंगा। बेचारे हिंदुआको अभी तक डर है। जा लौट आये ह अुनकी स्थिति अन्धी है अमा मुझे अफसर कहते ह। मेरे अनेक मुसलमान मित्राने कहा है कि हम चाहते ह कि बे अपने अपने घर लौट आयें। परन्तु अिस समय अुनके लिअे कोअी खाने-पीनेका बन्दोबस्त है? अभी तक जसा म चाहता ह वसा वातावरण प्ण नही हुआ है। जसे खानेका स्वाद मुहमें रखने पर ही मालूम होता है वसा ही यह काम है। यह तो तभी हो सकता है जब तमाम अपराधी जो छिपकर घूम रहे ह बाहर आकर अपना अपराध प्रगट करके प्रायश्चित्त करें। तभी डरके मारे जो ाग घबराये हुअे ह व भय-मुक्तिरी ाति अनुभव कर सवेंगे।

म तो यहा अपनी अहिंसाकी परीक्षा पास करने आया ह। अहिंसामें अमफलताके लिअे ता स्थान ही नही है। म यहा करूंगा या मरूंगा। अिसबे हृदयमें दाना जातियाके बीच या मानव-जातिये बीच अक्य — मत्री स्थापित करनेकी लालसा है, असे अहिंसकके लिअे दूसरा कोअी रास्ता ही ही नहा सकता। मेरे लिअे ता है ही नही।’

आज ामको भोजनमें केवल अेक अीम गुड ही लिया।

दा बहनें (जा स्थानीय षायदर्शी ह) रातको गरम पानास जल गभी। अुनके लिअे म वसलीन लेने जा रही थी। बापूजीने मना किया। “देहातमें अभी देवाका अुपयोग क्या किया जाय? अुनके पैर पर मिट्टी लगवाकर

चूने और तलवा लेप कराओ। मुझसे कहन लग 'यदि स्थानीय काय कर्ता इस प्रकार प्रसिद्ध विन्सी दवाओं काममें लें तो फिर जिन मानके लोग पर क्या असर डालेंगे? जुल्ट देहाती लोग जब कुटव सीखेंगे। चाय, बीडी सिगरेट आदि गावामें इसी तरह पढ़ची ह। यह किसका दोष है? देहातियाका नहां परन्तु गहरियाका। अुन वहनाका मिट्टीस आराम भी मिला। रातको दस बज सोनसे पहल म अुनकी खबर लेने गया तब व आराम कर रही थी।

बापूजीके प्रत्यक्ष कायमें सूक्ष्म विचारोसे भरे पाठ रहते ही ह और वे भी अबसे नहीं परन्तु विविधतापूण।
अुन वहनाक समाचार लेनके बाद बापूजाके सिरमें तेल मलकर पर दबाकर और पत्र लिखकर म भी सोन चली गयी।

११-२-४७ हैमचंडी मंगलवार

जाज माकर अुठ ही वे कि निमल्लान के आय हुआ तार सुनाये। प्राथनाक बाद तुरत बापूजीने अुनके अुत्तर तयार किय। ओसक कारण लखडिया गीली हो जानस चूल्हा नहीं सुलग रहा था। असलिके गरम पानी बनमें दर हो गयी। रस भी दरस पीनको मिला। अस कारण रस पीनके बाद तुरत ही बापूजीन यात्रामें चलना गुरु कर लिया। विजयनगर छोडनसे पहल बापूजीन यहाके पाखानाका निरीक्षण किया कि व कसे ह जीर अुनकी सफाअी कसे हाती है। कुछ सूचनाय भी दी। कुल मिलाकर अुन्हें सतोप हुआ।

रास्तेमें जीवनसिंहजाको पगबर साहबके कुछ सुन्त बचतामन सुनाय। य बचतामन केवल मुसलमाना पर ही लागू नहीं हाते परन्तु मनुष्यमात्रके मनन करन योग्य ह।

१ मुसलमान या किसी भी दूसरी जातिक किसी आत्मी पर जुम हाता हा तां अुसकी मदद पर पढ़व जाना चाहिय।

२ जो ध्यभिचार करता है चारी करता है गरब पीता है या डाका डालता है अथवा स्पय-पसक व्यवहारमें धाववाजी करता है वह न सच्चा

मुसलमान है और न सच्चा अिन्सान है। जिसलिजे ह मानव तू चत और सावधान हो जा।

३ जिसका अपने मन पर और अपने-आप पर काबू है अुमकी विजय सबसे बढकर है।

४ मनुष्य जब व्यभिचार करता है तब प्रभु अुस अपनेसे अलग कर देता है। (अुसके साथ प्रभु नहीं, परन्तु शतान बसता है।)

५ मनुष्यामें सबसे बुरा आदमी दुष्ट विद्वान है। भला अपठ मवम अच्छा आदमी है।

६ जिसकी जवान या हाथम मनुष्य-जातिका या अय किमी प्राणीका जरा भी चोट नहीं पहुचना वह पूरा मुसलमान या अिन्सान है।

७ जा व्यक्ति प्रभुके पना किये हुअे प्राणिया पर दयामाव रगना है अुम पर प्रभु प्रमद रहन है।

८ जा स्वय विदवासघात नहीं करता बल्कि काजा दुस्मन भी कभी अुम पर विवाम रखे ता अुमकी मददके लिअे दौडता है और दिय हुअे वचनका पालन करता है वही सच्चा अिसान है।

९ जा झूठ बालता ह जा वचन भग करता है अुमे म अपना नहा मानना।

१० आत्मी जा अपने लिजे चाहता है वही अपने भाओके लिजे न चाहे तब तक वह सच्चा अिसान नहीं सच्चा मुसलमान नहीं।

११ जा अपने लिजे श्रम नहीं करता अथवा दूसरेके लिजे भी काम नहीं करता, अुसे प्रभु बन्हा नहीं देना।

१२ अुपवास और समयस मेरे अनुयायी ब्रह्मचारी बनेंगे, बन सकने है।

१३ मनुष्यका आधा अग स्वा है।

१४ साध्वी स्त्री दुनियाकी सबसे कीमती भव्य और अुम्न चीज है।

१५ जा जानता है और तदनुसार चत्ता है वही सच्चा जाना है।

१६ स्त्रिया पर हाथ न अुठाआ, कुदष्टि न डाना। अपनी स्त्रीके तिवा सब स्त्रियाको अपनी माता बहन या देवीक ममान समजा।

बापू बहने लग, 'गौभाग्यस घमगाम्नामें अमे बडे कीमती कानून और प्रत्येक मनुष्यक लिजे मुगी हानेके रास्ते बताये गये ह। अुनका आचरण

और मनन हम कर सकें तो आज हम सत्सारकी श्रद्ध मानी जानेवाली जातियामें प्रथम पद भोग सकते ह।

पर धोते समय बापूजीने मुझसे कहा पगम्बर साहबके ये वचना मृत काजी कष्टस्य करके रोग सुबह मनन करे और गामको अिनमें से कितन पाले गय या नही पाले गय असका मनम ही हिसाव लगाकर तन्नुसार चले तो मने विश्वास है कि पद्रह दिनमें अुस ब्यक्तिका ब्यक्तित्व अनोखा बन जाय।

मालिङ्गी तयारी करनमें मुझ नित्यकी अपक्षा अधिक विलम्ब हुआ जिसलिअ बापूजीन बहुतसी डाक (गुजराती) को लिख डाली। यहा आज चापडीके सिवा और बोअी सुविधा नही है असलिअे सब कुछ नय मिरेसे और खुद ही किया। लगभग हफते भरसे मुझे सरदी और बुखार रहता है असलिअे आज निमल्दाकी दी हुआ कुननकी गोलिया मन खाअी। निमल्दान अपना काम छोडकर मरे काममें बडी मदद दी। हुनर भाअीन माग बाटा। बापूजीके लिअ कूकर रखकर अुनकी मालिङ्गी की सब हाया-टाय काम करते ह। निमल्दा तो कल्कत्ता विश्वविद्यालयके बडे प्रोफमर ह परन्तु चूल्हा मुलगाने बठ गय। अस प्रकार हमारी मडली या कुटम्ब मिल जुल्कर काम करनवाला है। और म सबसे छोटी हू अस लिअ मरे प्रति सबकी अपार सहानुभूति है।

बापूजीको डर है कि मुझे निमोनिया हो जायगा। मुयसे कहने लगे यलि आज बुखार चढा तो तुम्हें वेटीगिट पक् देना ही पडगा। मणिलालकी तो वचनकी आगा ही नही थी। मन अुस पर अुस समय सतरा अुठाकर असका प्रयोग किया और वह अच्छा ही गया। गायद सबसे अच्छी तदुस्ती अस समय जुनीकी है। असलिअ जब सप्ताह भरम बुखार और जुकाम नही जा रहा है तो अस तरह बठा नही रहा जा सकता।

मन अिनकार किया।
बापूजी बोल तुमन मुझ वचन दिया है कि म कहूंगा सा तुम करोगी।
अिमलिअ जो वचन न पाके अुमकी कीमत तावक पसके बराबर है।

बापूजा छोटी-छानी मानी जानवाली बातामें कहावताका सुदर अुपयोग करत हसनर काम निकाल लेने ह। और सबसे नव्य पाठ ता आज

बापूजीने पगम्बर साहबक जिन वचनाका मनन कराया था अुनमें दिया हुआ अेक वानून है। अुसकी भी बापूजीने याद दिलाजी।

दोपहरके भाजनमें दो खावरे गाव और आठ औंस दूध लिया। खिलाकर और कपडे धाकर बापूजीके परामें घी मला। मुचे बापूजीने सानेको कहा। सानेके पहले देशी जेण्टीप्लोजिस्टीन — मिट्टीको छनवाकर जोर गरम करके अुसमें थाडा नमन सूठ और अजवायनका चूण और हृदी मिलाकर दूब अेकअेक किया और अुसे गरम गरम ही छाती और पसलियो पर लगाकर तथा रुखी रखकर मैं सो गयी। अुसके बाद ही बापूजी साये। बापूजी बीमारकी असी प्रेम और चिन्ताभरी देखभाल करते हैं।

गामका बाबा (सतीगवानू) और हेमप्रभावहन (अुनकी पत्नी) आये।

शाम तकका काम आज धीरे धीरे निबटाया। शामका प्रायनामें गजी तब बुखारकी तैयारी हो अेमा लग रहा था। परन्तु प्रायनास ठीटकर बापूजीका दूधमें खारवचा जेक औंस चूण डालकर दिया और तीन सतरे लिये। बादमें माअी। बुखार बापूजीने ही देखा। १०५ हा गया था। सिर बहुत ज्यादा दुख रहा था। निमलदाका खयाल था कि आज १५ घन बुनन पेटमें गया है अिमलिजे गायद बुखार नहा आयेगा। परन्तु ठीक समय पर आ गया। बाबा और मा (हेमप्रभावहन) सभी बठ थे।

‘तुम अेक अपराधीकी तरह समझदार बनकर अब सो रही हा न?’

बापूजीने ह्यात-हृसन कहा और ‘बेटरीट पक’ मुभ लेता ही पडा। खूब साअी। ठेठ रातके शाडे बारह बजे जागी। पत्तीनेमें तरखनर हा गयी। शलेनभाअीने बापूजीको अखबार सुनाये। बादमें बापूजी भी सो गये। साडे बारह बजे म जागी और बापूजीने बुखार नापा। नॉमल हो गया था। अुठकर बापूजीका विस्तर किया। फिर बापूजीने पर धाये पर दबाये, सिरमें तेल मला और सुबहूवे लिअे दातुन धगरा तयार करके मैं और बापूजी दोना अेक बजे फिर सोये। अेक नीदमें सुबह हो गयी। जब निमलदाने जगाया तब बापूजी जागे और मुने जगाया।

प्रायनाके बाद प्रातःकाठ मुझे गरीर-भवधी कुछ घातें मननीय और प्रेमपूण ङगम अिम तरह समझाअी जैसे मां अपनी बेटीको गमपाती है। अुनमें स कुछ बातें प्रत्येक स्थाव समझने लायक होनेस कहा देनी ह।

अबला बालो रे

लडकियाँ गरीब झूठी गरमस विगडने ह। असमें भारतका बाबडा सबमे ज्यादा है। स्त्रिया यह भूल जाती ह अथवा उन्हें समझाया ही नहा जाता कि जाजकी बाला कल मा बनगी। असलिअ प्रत्येक भारतीय असके लिअ जिम्मेदार है। वह देसको महापुरुष भी दे सकती है और सत चार बन्मास या हत्यारे भी दे सकती है। जब अपनी पुत्री तेरह चौन्ह बपकी होती है तब उस खलती बदती लडकीके प्रति जो ममप दार भी नहीं होता और नासमग भी नहीं होती माता पिताको सबसे अधिक प्रम और ममत्व दिखानकी जरूरत है। और यह जिम्मेदारी खाम तौर पर माताकी है। परतु असके बजाय हमारे समाजमें अुल्टी बात होती है। वह लडकी बडी होती है असलिअ मानो गरीब गायसी लगती है। असक साथ अिम तरहका बर्ताव होता है मानो असन कोअी सामाजिक अपराध किया हो। बाहर कही भी जानकी असे मनाही हाती है। अस करण स्थितिको करणता असके कोमल मस्तिष्क पर असर करती है।

अिसी प्रकार लडकियाँकी आजकलकी पोशाकन अुनका सत्यानाग किया है। वे अितने चुस्त कपड पहनती ह या अुहें पहनाये जाते ह कि अुहें देखकर मुझ दया जाती है। वे पूरा श्वासोच्छ्वास ले पाती हांगी या नहीं असमें मुझ गना है। फगनन तो सत्यानाग ही कर दिया है। लडकिया अपन गरीरकी रसासे फगननी रक्षाको अधिक कीमती समझती ह। यह हमारी कमी दयाजनक स्थिति है? और अिन सब बातके कारण हे अत्यन्त दुबल और अाकत बनी रहती ह। यदि स्त्रिया कुछ न करके अपनी मर्यादा रखें अपन शरीरको नीरोग बनायें और अपन रगडगमें अपनी खुराकमें अपन खबहारमें अपनी पोशाकमें अपन वाचनमें कापोंमें पदन लिपनमें तथा रहन-सहनमें पूरी सादगी और सात्त्विकताको अपनायें— और यह स्त्रियोके लिअे स्वाभाविक वस्तु है—ता मेरा विश्वास है कि हमारी सतानें गामा पहलवान या दयान्त मरस्वती जसे बहादुर सात्त्विक सता (य हमारी ही स्त्रियाके बालक थ न?) क समान हांगी। परन्तु अमे वाक जाज अगुनिया पर गिनन लायक हो गये ह। मुय असह्य आत्मा स्त्रिया चाहिये। परन्तु आज तो यह जाननासे कुसुम तोडने जसी बात है। असमें पुरपाका अपराध जरा भी कम नहा है। परन्तु अक

समय और दूसरा न समझे, तब भी बात बनती नही। जसी लालमा रखने वाला म तुम्हारी मा बना हू। यदि अिस दृष्टि म तुम्हें तालीम न द सकू ता म अपनका असा विचार करनेका अधिकारी नही मानूगा। अिस लिजे मुझे खुशी हूकी कि तुम निभयतापूर्वक यहा रही हो। तुम्हारे अिस साहसकी म कीमत और बढ़ करना हू। जब तक तुम मेरे हाथमें रहागी तब तक म तुम्हें तालीम दकर तयार करनेमें हरगिज नही चूकूंगा। अिसमें मेरा समय जरा भी नहा बिगडना। म मानता हू कि कराडा स्त्रियामें से अेक लडकीकी मा बनकर खुसीका सही ढगमे पालन-पोषण करके माका आदा टुनियाको म बना सकू तो भी यह आत्म-सतोप तो प्राप्त करना कि सारे सभारकी लडकियाकी मैंने सेवा की।

'पुरुषाको अेक नया पाठ दूगा कि व अपनी बहन-बेटियाको अुनकी माता बनकर आदा णिया दना सीखें। मैं मानता हू कि मनुष्य आत्म-सतोप प्राप्त करनेके लिजे दूसराकी कितनी ही फटकार सहन करके और दुख अुठाकर जय प्रयत्न करता है तब अुसमें दूसराकी परवाह करनेकी बत्ति अपने-आप कम हो जाती है। परवाह करनी भी नही चाहिये। आत्मा ही परमात्मा है। अत परमात्माको पानेके लिजे बडीस बडी मुसीबत भी आ जाय तो क्या अुम सहन न किया जाय? और क्या मानवको प्रसन्न करनेके लिजे अुसके अिगारा पर नाचा जाये? हा, अिसमें मर्यादाके लिजे काफी गुजाअिग है। कोअी यह माने कि अुमे गराद पीने या व्यभिचार करनेमें आत्म-सतोप मिन्ना है और दूसरका कहा न करे, तो यह निरा दम और असत्य है। यह ता तुम समझती हा न? परन्तु गुद भावनाने — गुद हृदयसे अिस परमात्माका आत्माका सतोप देना हा मनुष्यका प्रथम कनय है। म यही करनेका प्रयत्न कर रहा हू। अिसे म अपने अिस यत्नका अेक अवि भाय जग मानता हू। यहा मेरी जितनी परीक्षा हो सक अुतनी मुझे करनी है। मुझ अपनी ही परीक्षा देनी है। अिसमें कभी असफल हा जाअू ता? यह सब अीश्वराधीन है। अीश्वरके सिवा मुझे कितनीकी सान्नी नही चाहिये। सफलता असफलताकी चिन्ता हम क्या करें? और अिसमें कही दम होगा तुम भी कही दम करती होगा भले हम अुमे जानत भी न हा, ता यह सभारको मालूम हा जायगा। यह यत्न अनाया है। म यहा लोगका प्रेममे वगमें करके भाअीचार पदा करनेकी तपचर्या कर रहा हू। अिसमें कहा भी

दमकी गुजाबिग नही हा सकती। होगा तो बह अपन-आप बाहर आयगा। और ससार असे जानकर मुझ पर फटकार बरसायगा। अरुमें भी हमारा भला ही है जगतका भा भला है। जगतको पाठ मिलेगा कि यह नमी महात्मा था। दूसरी बार वह किसीको जिस प्रकार महात्मापन नही दगा। ससारका ता दोना दृष्टियासे श्रय है। म सच्चा मटात्मा हाअू या थूठा। यदि सच्चा हू ता ससारका लाभ ही है। मरे जीवनस असे कुछ सीपना हा तो मीव। और यदि म थूठा हू ता नी ससारका लाभ है दूसरी बार वह किसीको अितनी आसानीसे महात्मा जता पद नहा दगा। अिसलिय वह सावधान हो जायगा। यह अक और अक तो जमी स्पष्ट बात सभगानका म प्रयत्न कर रहा हू।

१२ तारीखको पानी पीते पीते सुबहकी नीरव गातिमें अिस प्रकार अपन हृदयकी गहराभीसे निकली हुजी बातें अक साममें बापूजान बह डागी। अूनके अक अक गल्ल अक अक वाक्यमें अूनका वात्सल्यभाव अुमडता दिखाना देता था। मुव परसे समस्त स्त्री अगतका चित्र प्रस्तुत करते समय अुतना ही गाभीय अूनके चेहरे पर अलक अुठा क्यकि व जिन्मदार स्त्री थुदाराक ह।

कफिलातली

१३-२-४७ बुधवार

सुबहकी प्राथनाके बाद गरम पानी पीकर जो बातें कही था वे कल्की आसरी नी आज लिखनके कारण असमें आ गया। कल्के मोट आज प्राथनाके बाद जब बापूजी अक पठ रहे थ तब सुबह-सुबह ही अिग डाले।

सात सात बज हैमबडी छोडा। रास्तामें फण्ड यूनिके स्थान पर रुके थ। य लाग बड सेवाभावसे काम कर रहे ह। बापूजी अूनका काम देखकर बड प्रसन्न हुआ।

आज म बिल्कुल अच्छी हो गयी ह। (दगी अण्टीफोत्रिस्टीन) गरम मिट्टीके लपमे। यह लप अक ही दिन लगाया। अुसन अच्छा काम किया। अक बिल्कुल बिबर गया। और अक पासी भी अिसमें शक नही हुआ।

यहा जात हुअे रास्तेमें भी सुबहकी वाताके मिलसिलेमें और म अच्छी हा गजी हू जिस वारेमें वानें करत हुअे वापूजाने मुझे समझाया। वे बाले

म तुम्हें गड रहा हू। जिसमें सफलता मिलेगी या असफलता पट मैं नहीं जानता। कुम्हार जब घडे या हडिया बनाता है तब उसे पता थाडे ही रहता है कि आकारमें डालनेसे ब फट या टूट जायेंगे। वह बेचारा आनदसे, जुत्साहमे बच्चे सुन्दर आकार बना बनाकर आकारमें रख देता है। जुनमें से कुछ टूट जाते ह कुछ तडक जाते ह और कुछ सुन्दर और पक्के बनकर निकलत ह। जिस प्रकार मैं ता कुम्हार ठहरा। जिस समय कुम्हारकी तरह अच्छे घडेकी आगास म तुम्हें तयार कर रहा हू। वह टूट जाय या फट जाय तो मेरी और तुम्हारी तबदीर। तुम या म कोअी भी क्या करें? जिसलिअे हमें जिसकी चिन्ता करनी ही नहीं चाहिये। हमें ता कुम्हारकी तरह अितना ही देखना है कि मिट्टी अच्छी बूब दर्जेकी हो ककरीली न हा और आकार सुंदर और पक्का बने। आकारमें जानेके बादकी चिन्ता करनेवाला ता श्रीस्वर है। जिसी तरह हमारे जिस यनमें सत्य, शुद्धता और निमलता हो, कही दभका नाम न रू क्षण क्षण पर सावकर कदम अुठाया जाय अपने हृदयस दस बार पूठा जाय और किमीको अच्छा-बुरा लगनकी परवाह न करके विवेकपूर्वक जा सच हो वही किया जाय। यदि म यह मानता हू कि असो मिट्टी मेरे पास है, तो मुझे आकार गडनेमें कोअी बाधा नहीं होगी। यदि मिट्टीमें ककर हा (अर्थात् तुममें कोअी दोष हा) तो वे आकार गडनेमें बाधक ही हागे। तुम मिट्टी हा और म आकार तयार करनेवाला कुम्हार हू। मने तुम्हारी तारीफ लिखी है। जिसलिअे तुम्हें सचेत करता हू। तुम मुज जो भी पूछना हा निडर हाकर पूछ सकती हो। परन्तु सत्यके लिजे लडना तो मेरे लिअे अेक खेल है। अैसी लडाअियासे म कभी हारता नहीं। अभी तक श्रीस्वरने निभाया है।

तुम देखोगी कि मने जमा बद्धत बनाया है और बद्धत तोडा है। सावरमती जैसे आथमका विखेर देनेमें मुझे देर नहीं लगी। जिसलिअे जिस काममें भी मुझे जरामी भी ककरी दिखाअी दगी तो अुस कुम्हारकी हडियाकी तरह जिसे तोड डालनेमें मुझे देर नहीं लगेगी। तुम सतत जाग्रत रहो जिसीलिअे आन सुबहस तुम्हें यह सब कह रहा हू।'

बापूजीका सुबहकी वातास भी आज अभीकी बातें मुझे अपन लिजे अधिक गभीर गयी। क्या बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनके बराबर नहीं? प्रभु जिस परीक्षामें पास होनेका बल मुझ दे रहा है यह पुसकी असीम कृपा है।

डॉ० सुशीलाबहन नय्यर रेड ब्रास केन्द्रमें थी। वे हमारे साथ ही यहां जाओ। व कस्तूरबा ट्रस्टकी बठकमें घरीन हान दिल्ली जा रही हैं। सुशीलाबहनन बापूजीका ब्लड प्रेशर (खूनका दबाव) देखा। १९२/११० था। यहां सात मास बच पहुंचे। मालिग स्नात वगरास नियतनमें ग्यारह वज गय। भाजनमें बापूजीन दो खावने दूध सन्देशका अक छोटा टुकड़ा और एक थपकूट लिया। भोजन करते हुआ कुछ डाक सुशीलाबहनके साथ लिल्ली भजननी तयारी की। साठे बारहसे एक तक आराम किया। बाल्म काता। कातते कातते पन लिखवाय। अडाभी वज नारियलका पानी लिया। साठ तीनसे चार तक मिट्टी ली। आज सिर और पैर पर दो पट्टिया ली। मुलावाती आने ही रहे थे। फिर भी दस मिनट सो लिया। प्राथनाक बाद स्टीम किया हुआ अक सेब और आठ औंस दूध लिया। धूमकर लौटन पर अखवार सुन और डाक सुनी। रातको गरम पानी और गहल लिया।

बापूजीकी रातमें काफी थकावट मालूम हुजी। पौन दस बजे बिस्तर पर लेट।

बापूजीके मा जानक बाद न जरा भी जागती हू तो अुहे अच्छा नहीं लगता। जिसलिअ न बापूजीके सोनके समयस पहल सब काम कर लेना कागिंग करती हू।

पुब केरवा

१४-२-४७

रोजकी तरह प्राथनाके लिअ साठ तीन वज अुठ। दातुन करके प्राथनाके बाद बापूजीने बगलाका पाठ किया। फिर मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किय। डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी सवा छ वज सा गय। सवा सान वजे अुठ।

बापूजीक आजके पत्रामें ये बातें थी ' जो मनुष्य अनीतिको अप नाला है वह सग करन योग्य नहीं है। ' जो मनुष्य अनीतिको अप अुसका कितना भी मूल्य

लगाया जाता हा, तो भी हमें खुसकी परवाह नहा करना चाहिये। अब तक ता औश्वरने मरी लाज रखी है। मनुष्यकी सजाको ता म पी गया ह।

बापूनी कितने औश्वरमय हो गये ह, यह आजके खुनके पत्रसि मालूम होजा है।

के बारेमें कमीगन नियुक्त करनेके सबधमें बापूजाने अपना राय प्रगट की। बापूजी मानत ह कि जिमकी जहमें मत्य है खुम पर कुछ बाराप लगाया जाने पर पच द्वारा तटम्य जाच हानेमें किसीको बाजा आपत्ति हाना ही नहीं चाहिये। बल्कि जाचके लिअे पच नियुक्त करनेका आग्रह रखना चाहिये। साचका कभी आच होती ही नहीं।

हमने माडे मात बजे कफिगनली छोडा और आठ बजकर दस मिनट पर यहा पटुच गये। गाव बहुत पास ही लगा।

आत ठड और बादल हैं। यहा आकर बापूजीके पर घाये। फिर खुहाने गलेनभाजाम 'गिगण पुस्तककी अतिम बगला कविता पटी और खुमका अनुवाट किया। किसी भा बगला जाननेवालेका बापूजी अपना गुरु बना रत ह भल बट वाचक हो या बडा।

हवा ज्यादा चलने और बादल हानेके कारण मालिग अदर ही की। स्नानके वाट भाजनमें आज खावर छाट दिये। सिफ आठ औंस दूध और जरा-सी खापरेकी पीनी टुकी गिरा ली।

दा बजे गरम पानी, गहल और अेक श्रेपफूट लिया। चार बजे नारियलका पानी पिया। भाजनका यह सारा परिवतन बापूजीको खूब काम रहता है अिमलिअे किया।

गामका दूधका पानी लिया और गोपीनाथ वारडोलाजी मौलाना साहब जवाहरलालजी और जयरामदासजीका पत्र लिखवाये।

बापूजी मुहम्मद साहबके वचनामूत पट रहे थे, तब तीनेक मुसलमान भात्री आये। खुहाने बहा हमें आगीवाट दीजिये कि हमारा दिठ साफ रूट।' जिस पर बापूजी बोले

मम्मद साहबने कहा है अिम दुनियामें रहो, मगर अेक मुसाफिरकी तरह या आकर चले जानेवातेकी तरह रहा। मौत किसी भी वक्त आकर अिन्यानका पकड लेगी। सबसे अच्छा आत्मी वह है जो अधिक समय वाकर जच्छे काम करता है। मनुष्यकी परीखा खुमके बोल्ने या कहेसे

बापूजीकी सुबहकी बातासे भी आज अभीकी बातें मुझ अपने लिये अधिक गभीर लगी। क्या बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनके बराबर नहीं? प्रभु जिस परीक्षामें पास होतका बल मुझे दे रहा है यह जसकी जसीम कृपा है।

डा० सुशीलावहन नय्यर रेड क्रास के ड्रमें थी। वे हमारे साथ ही यहां जाती। वे कस्तूरबा टस्टकी बैंकमें गरीब हान दिल्ली जा रही ह। सुशीलावहनन बापूजीका ब्लड प्रेशर (खूनका दबाव) देखा। १९२/११० था। यहां साठ नात बच पहुंचे। मालिग स्नान बगरासे निबटनमें ग्यारह बज गय। भोजनमें बापूजीन दो खासरे दूध सपदेशका एक छोटा टुकड़ा और एक प्रपफूट लिया। भोजन करते हुए कुछ डाक सुशीलावहनके साथ लिल्ली भजनकी तयारी का। साठ बारहमे अक तक आराम किया। बादम काता। कातते कातते पत्र लिखाये। अठ्ठाबी बजे नारियलका पानी लिया। साठ तीनस चार तक मिट्टी ली। आज सिर और पेड़ पर दो पट्टिया ली। मुन्काती आते ही रहे घ। फिर भी त्स मिनट सो लिये। प्राथनाक बाद स्टीम किया हुआ अक सेब और आठ औंस दूध लिया। घूमकर लौटन पर जलवार सुन और डाक मुनी। रातको गरम पानी और शहं लिया।

बापूजीको रातमें काफी थकावट मालूम हुआ। पौन त्स बज बिस्तर पर लेट।

बापूजीक सो जानके बाद म जरा भी जागती हू तो बुढ़े अच्छा नहीं लगता। जिसलिअे म बापूजीक सोनके समयस पहले सब काम कर लनका कागिग करती हू।

पूर्व बेरवा

१४-२-४५

राजकी तरफ प्राथनाक लिअे साठ तीन बजे खुठ। दातुन करके प्राथनाक बाद बापूजीन बगलावा पाठ किया। फिर मेरी डायरी मुनकर हल्लापर किय। डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी मवा छ बज सा गय। सवा सात बज खुठ।

बापूजीक आजक पनामें य बातें थी जा मनुष्य अभीतिको अप नाना है वह सब करन योग्य नहीं है। बुमका कितना भी मूल्य

लगाया जाता है, ता भी हमें अुसकी परवाह नही करनी चाहिये। अब तक ता जीस्वरने मरी लाज रखी है। मनुष्यकी सजाको तो म पी गया हू।'

बापूजी कितने अीस्वरमय हो गये ह, यह आजके अुनके पनास मालूम होता है।

क वारेमें कमीशन निपुक्त करनेके सदधमें बापूजीने अपनी राय प्रगट की। बापूजी मानत ह कि जिसकी जडमें सत्प है अुस पर कुछ आराप लगाया जाने पर पच द्वारा तटस्थ जाच हानेमें किसीको कोअी आपत्ति हानी ही नही चाहिये। बल्कि जाचके लिअे पच नियुक्त करनेका जाग्रह रचना चाहिये। साचको कभी आच होनी ही नही।

हमने साढे सात बजे कफिलातली छोडा और आठ बजकर दस मिनट पर यहा पहुच गये। गाव बहुत पास ही लगा।

आज ठड और वादल ह। यहा आकर बापूजीके पर घोये। फिर अुहाने शलेनभाआने शिक्षण पुस्तककी जतिम बगला कविता पढी और अुसका अनुवाद किया। किता भी बगला जाननेवालेका बापूजी अपना गुरु बना लेते ह भले वह बालक हो या बडा।

हवा ज्यादा चलने और वादल होनेके कारण मालिग अदर ही की। स्नानक बाद भोजनमें आज खाखरे छोड दिये। सिफ आठ औस दूध और जरा-सी खोपरेकी पीसी हुआी गिरी ली।

दा बजे गरम पानी, गहद और अेक ग्रेपफूट लिया। चार बजे नाटियलका पानी पिया। भोजनका यह सारा परिवतन बापूजीको खूब काम रहता है जिसलिअे किया।

गामको दूधका पानी लिया और गोपीनाथ वारडोलाजी, मोलाना साहब जवाहरलालजी और जयरामदामजीको पत्र लिखवाये।

बापूजी मुहम्मद साहबके बचनामूत पड रहे थे, तब तीनक मुसलमान भाजी आये। अुहाने कहा, हमें आशीर्वात् दीजिये कि हमारा दिल साफ रहे।' अिस पर बापूजी बोले

'मुहम्मद साहबने कहा है अिस दुनियामें रहो मगर जेक मुसाफिरकी तरह या जाकर चले जानेवालेकी तरह रहो। मौत किसी भी बखत आकर अिन्सानका पकड लेगी। सबसे अच्छा आदमी वह है जो अधिक समय जीवर अच्छे काम करता है। मनुष्यकी परीक्षा अुमके बोलने या कहनेसे

मालिश और स्नानके बाद भोजनमें तीन खाखरे छ औंस दूध, गार्क जीर 'पीस्ट' लिया। फलामें जेक सतरा और अेक प्रेपफूट लिया। खात खाते जवाहरलालजी और वारडालाजीजीको पत्र लिखाये।

आजके पत्र मुसस खाते खाते लिखवाये, असलिअे म दरसे नहायी और दरसे भोजन किया।

बापा (ठक्करबापा) का हैमचरस लिखा हुआ ८-२-४७ का काड आज मिला। पासके गावका काड सात दिनमें मिला। असा यहाका डाक विभाग है।

अिस गावके लग बापूजीको अभिनत्न-पत्र देना चाहते ह जिनमें मुसल्मान भायी भी ह। लकडीका खुदा हुआ मुदर वास्कुट बनाया है।

बापूजीकी यहा कसी ज्वलत विजय हा रही है, अिसका वणन करना कठिन है। जहा राम सल ही नहीं लिया जा सकता था, वहा रास्ते भर यात्राके दौरानमें रामधुन और भजन गाये जात ह। मुसल्मान भायी-बहन यह आप्रह करते ह कि बापूजी अुनके यहा ठहरे, और अभिनत्न पत्र देनेका या अैसा ही कोअी सावजनिक काम करना हो तो अुसमें गावकी प्रत्येक जातिके लग मिलकर काम करते ह। यह कोअी छोटीसी बात नहीं है। बापूजीने भजनकी 'परयम पहेटु मस्तक मुकी' (सबसे पहले मस्तक रखकर) कडीको प्रभावगाली ढगसे आचरणमें अुतारा है। अिसीलिअे अुहे अैसी ज्वलत विजय मिल रही है। फिर भी वे कभी अैसा दावा नहीं करत कि यह सब अुनके द्वारा हुआ है। निष्काम कमयाग करनेवाले बापूजीके मुहसे सदा यही निकलना है कि 'भगवान ही सब कुछ करा रहा है।'

यह मानपत्र सावजनिक सभामें पढनेके लिअे मना करते हुअे बापूजीने कहा, 'मानपत्र मुअे अभी ही दे दीजिये। असे समयमें मानपत्र कसे लिया जाय? प्रेम ता हृदयका होना चाहिये। और हृदयके प्रेमका प्रदान करनेकी जरूरत नहीं होती। मने क्या किया है? जो कुछ आपको अच्छा हुआ लगता है वह तो खुदाकी मेहरवानीस ही हुआ है। प्रेमको हृदयमें रखकर काम कीजिये। मेरे प्रति आपके दिलमें प्रेम हा तो मेरा काम कीजिये। यही मुअे मानपत्र देनेके बराबर है। न तो लोगोको डराविये और न लोगोमे डरिये।

भूपरकी बाप बापूजीने चार पाप आन्वित्योगि कही खिनमें हिन्दू मुसलमान जुलावे बगरा गांवक प्रतिनिधि प और वर वाग्ने अगा गमय ल लिया। अिन सागाकी अिच्छा प्रापना गभामें मानात्र लनी थी।

यह लण्डीका वास्केट मुस अच्छा लगा। कल्याणी दुष्टिग ना गुल्दर है ही। परतु मन भुग अित अतिगिगि यात्राक विजय विद्व या प्रगाणीर रूपमें अपने पाग रगनेकी बापूजीग मांग की। बापूजीने पौरन हटा हुअे मजूर किया में जानता ह तुम्ह अंगी चीत्रें गघट करता पग है। परतु अिमसे प्रेरणा लेती रहागी तो मुग अच्छा लगा। *

निमलगा विजयनगर गये ह। प्रापनामें प्रवषनगा अुवाग बावान किया। पहल बापूजीन दालनभागीग कराओ कहा या। प्रापनामें जान हुअे अबलगनीके पुत्र सरहुदीनभात्री मिने। बुन्हान बहुगनी बाने गुनाभा। प्रापनाके बाग यहाके अर मन्िरमें पारिस्तान कब बनाया गया या अुं देसन गय। बाबाके साथ अिस सम्बधमें बाने हुअी। पाग्य कारवाअी करनेका स्थानीय भाअियाने आवासान लिया।

यहा अिमाम साहब बीमार थ अुह भी दगन गये।

अिस धानमें छ यूनिपन ह। यह चौपा है। आवाणी ४५००० है। अिस यूनिपनकी आवाणी २२००० है। अिसमें ९५ फी सगी मुसलमान और ५ प्रतिगत हिन्दू ह। हिन्दू जमीदार व्यापारी या जुलाह ह।

बापूजी साढ नीके बाद विछीन पर लट। कातना बाका या अिमलिअ कातते समय रातका अस्तवार सुने।

रायपुरा

१६-२-४७

रौजकी भाति प्रापनाके लिअ अुठ। अिस गावमें आज दूसरा दिन विताना है। अिसलिअ सवरे कोअी विगप काम नही रहा। प्रापनाक बाग बापूजीका गरम पानी और शह दकर कुछ पत्राकी नरल की। अपनी टायरी लिनी। और घरके लिअ पत्र लिखा। बहुत लिनाके बाग पर पत्र लिख

* आज वह अतिहासिक वास्केट सचमुच मेरे पास प्ररणात्मक प्रसागीके रूपमें सुरक्षित है।

सकी। समय ही नहीं रहता। अब अेक गावमें दो दिन रहना हो तभी पत्र लिख डालनेका नियम रखनेका बापूजीने कहा। मेरी बडी वहनने बापूजीसे गिकायत की थी कि मने अुह अेक महीनेमे पत्र नहीं लिखा। अिसलिअे बापूजीने रम पीते समय मुचे डाटा और अपने सामने बठाकर सबको पत्र लिखनेका आदेश दिया।

ठीक साढे सात बजे धूमने निकले। ने कुछ प्रश्न पुछवाये ह। अुनके बारेमें बापूजी कहने लगे ये प्रश्न मुझेसे पूछने चाहिये थे। नापा शिक्षित है। मैं कुछ अपलक्षण (दाप) ह, जो प्रगट हुअे बिना नहीं रहत। परन्तु मनुष्यमें जब अेक तरहका घमडीपन आ जाता है तब वह अपने अवगुण नहीं देख सकता। गव मनुष्य-जातिका दुश्मन है। परन्तु मुझे दुश्मन, गन्धु आदि शब्द ही अच्छे नहीं लगते। असलमें वह गवका अथवा अपनी भूलका समझकर अिस कमजारीको दूर कर दे तो कितना अूचा चढ सकता है? अिसलिअे अुमके जीवनसे हमें सबक मिलता है। अुमे हम दुश्मन कम कह सकते ह? म तुम्हारी भूलें निकालकर तुम्ह बताअू ता तुम्हारा दुश्मन थोडे ही बन जाता ह? अिससे तो तुम्ह सीखनेका मिलता है। अिसी तरह यदि हम अपने घमडीपनका पहचान सकें तो जीवनमें बहुत अूचे अुठ जाय। परन्तु यह पहचाननेकी शक्ति सबका स्वय ही प्रगट करनी हाती है। जो व्यक्ति अन्न खाता है अुस व्यक्तिको अपनी आता द्वारा गरीरकी शक्तके अनुसार अुम अन्नका पचाना पडता है। आतें शुद्ध हागी ता पाचक रम अपने-आप पदा हागे — अन्नका खून ही बनेगा। और आतें कमजार हागी ता वह व्यक्ति रागी बनेगा। अिसी तरहका बिनाम मनुष्यके प्रत्यक काय पर लागू होता है।

धूमकर लौटने पर बापूजीके पर घोये। मालिग और स्नानके बाद भाङ्गनमें बापूजीने अेक खाखरा आठ औंस दूध और साक लिया। बादमें मणालसाबहन और किशारलाल काकाको पत्र लिखे। दो बजे गाववाल्के प्रीति भाजमें गये। वहा बडा शोरगुल था। बापूजीने कोअी खास वान नहीं कही। साढे तीन बजे करीब लौटे। आकर बापूजीने बची हुआ अेक पूनी काती। कातकर सिर जीर पडू पर मिट्टी ली। पर दबाते समय फिर अन्नकी पाचन क्रिया परसे मनुष्यके नतिक व्यवहारकी बात कही और नम्रना बडान पर जोर दिया तथा अिन बात पर विचारनेका कहा।

भूठ तब यूनिवर्स के अध्यक्ष मजरा हव सय अहम और अस्त
जमान साहब आय। मुहाने यह गिनायत की कि हिन्दुआन झूठ मुसलम
चलाये ह। बापूजीन कहा अगर झूठ बेम हाग तो अह मजा हागी।
नाम-मते वगराके बिना म कस विचार कर सकता ह ?

प्राथनाके बाद बिडलाजीव मुनीम भरवनामजी आये। बिडला वाम
गारोकी तरफसे २५५३ रुपय नौआवाली कप्ट निवारणक लिअ दे गय।
आजकी प्राथनामें बहुतेसे मुसलमान भाओ य। मुख्य मौखियामें थी

मजमलअली चौधरी फजलुल रहमान फजलुल हव काजी अजीजुल रहमान
और वजीजुल्ला साहब य।

अिन सबके मनमें बापूजीके प्रति अच्छा आनर है जसा मालूम हाता
था। म प्राथनामें कुरानकी जो आयत बोलती ह उसके अुच्चारणमें तरासा
सुधार करनकी जक मौलवी साहबन सूचना की। असलिअ बापूजीने
जुनके पास आय घट बठकर सही अुच्चारण सीख लेनको कहा। रातको
आठ बज जब बापूजी अखवार सुन रहे थ तब मौलवी साहबन बड प्रमसे
मुअ सही अुच्चारण सिखाया।

शामको बापूजीन अक बेला और छ औस दूध लिया। और साने
वक्त गरम पानी शहद व सोग लिया।

बापूजीके औसत तार जब १०० या कभी कभी १५० भी हा जाते ह।
सात पूनियोसे अितने तार निवल्त ह।

पौन दस पर सोनकी तयारी की। रोजकी भाति बापूजीके पर
दवाकर सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करक म भी फौरन सो गयी।
मौनके कारण सब कुछ शान्त है।

रोजकी तरह प्राथनाके बाद बापूजीन बगलावा कवहरा लिखा।
गरम पानी पीते हुआ डायरी मुनी और हस्ताक्षर किय। बादमें डाकवा
काम गुरू हुआ।

अक पत्रमें बापूजीन लिखा पिछले पत्रका जवाब बाकी ही था कि
आज दूसरा पत्र आ गया। पहले पत्रका अन्तर तुरन्त दन लायक नहीं था। मुअ
पर आजकल काम और विचारका खासा भार रहता है। यहाका काम

दिन दिन सरल नहा बल्कि कठिन हाता जा रहा है। क्योंकि हमले बलते जा रहे हैं। फिर भी मेरा विश्वास बढ रहा है। साथ ही हिम्मत भी। अन्नमें ता करना या मरना ही है न? बीचमें कुछ है ही नहीं। मरी तीमरी यात्रा अब गुरु हागी यह निश्चित नही है। हैमबर २५ तारीखका पहुंचना है। आगेका आचार तो मरी घकावट पर रहेगा। २५ तारीख तककी यात्रा भीश्वर पूरी करा दे तब भी अच्छा ही समजूगा।

अब लडकीने मरी तरह दापूजीके भाय रहनेकी माग की। उसके अक्षरमें लिखा तुम मरे पाम आना चाहती हो यह विचार मुझे पसन्द है। परन्तु जब म राज जेक नये गावकी यात्रा करता हू तब सभी प्रकारकी परेगानिया और मुसीबनें हाती हैं। गावामें धूमन है तब चीजें बहुत नही मिलनी जगहकी तगी रहती है, और पानी ता बहुत ही खराब हाता है। असी स्थितिमें तुम्हें बुलानेका साहस नही हाता। जिसलिजे मेरी अच्छा यह है कि तुम भाडा धीरज रखो। प्रभुकी अच्छा हागी ता अमा समय आ जायगा जब तुम मरे भाय रह सकोगी। तुम्हारे लिखे अनुमार तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। तुम वही प्रगति करती रहा। वुननके काममें खुब कुशल हा जाजा और कातनेक काममें भी पहला नम्बर रखो तो अमून्य साबित हा सकती हा। क्याकि तभी सब जगह तुम्हारा अुपयोगिता सिद्ध होगी। मराठी तो अच्छी सीख ही ली होगी। न सीखी हो ता सीख लेना। नैसर्गिक अुपचारके वारमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लेना। अुद् लिपि और भाषाका बढिया ज्ञान प्राप्त कर ला। मस्हत भी सीख लो। यह सब विनादमें ही कर लेना चाहिये। अैसा करागी ता समय बहा चला जाना है, जिसका पता भी नही चलेगा। पत्रा द्वारा मुजमे मिलती रहना। का बुझार अभी मिटा नहा यह अच्छा नहीं लगता। तुम नैसर्गिक अुपचारका अच्छा अध्ययन कर ला यह मरल है। फिर तो तुम ही का बुझार मिटा सकती हो। अुमक खानेकी सभाल रखनी चाहिये। म मानता हू कि कठिस्तान घषण स्नान और मिट्टीकी पट्टिया दनी चाहिये। अुमका मस्तिष्क शान्त हाता चाहिये। और राम रटन करना चाहिये।

अेक और पत्रमें यहाक डाक विभागका काम डीला है। डाककी दृष्टिसे नें बहुत दूर हू।

आजके विविध पत्राम बापूजीकी मानसिक दशाका और यहाकी स्थितिका तयार हाता है।

६-५० तक काम किया। बामें पंद्रह मिनट आराम किया। मने सामान बाधा। कुछ सामान आगे भेज लिया। ७-३५ को राजके समय यात्रा आरम्भ हुआ। ८-५५ का रायपुरास यहा पहुच।

यहाका स्वागत भव्य था। लगान बडे प्रम और श्रद्धास तयारिया की थी। ध्वज तोरण पताका बगरा सजावट की गयी थी। यह सब बापूजीकी हिम्मत पर ही हुआ।

बापूजीका आज मौनवार है। असलिये कुछ गभीर विचारामें लीन मान्म होत ह।

पर धाकर गलनभाआक पाम थोडासा बगगावा पाठ पढा। अिननमें मन मालिगीकी तयारी की। मालिश और स्नानक बाद भाजनमें गार छानकर अुसमें पिसे हुअे पाच वागम और पाच काजू डाले। गरम दूधमें अेक नीबू निचोया और बह फटा हुआ दूध आठ औंस लिया। भाजनके बाद अेक घटा आराम किया। मने परोमें घी मलकर बहुतमे कपड धान य सा धोय। बापूजीका सूत दुबटा किया। वागज नमाये। बहनाके पाम गयी। भाजन किया। अिननमें बापूजी अुठे और एक नागियाका पाना पिया। बादमें काता। कातते समय मने पत्र सुनाय। तीन बज मिट्टी ली। बापूजी जाय घडे सोय। शामको श्रेफुट और आठ औंस दूध लिया।

दूध पीते पीते बक्त हो जानसे बापूजीका मौन खुला। मुबहकी अितनी आकपक सजावटकी तरफ दिनभर मेरा ध्यान नही गया। असलिये बापूजीन मुझसे बहा तुम्ह मह जानना चाहिय कि ये सब चीज जिन लागान कहाम जुगुभी और यहाक मुख्य कायकता कौन ह अित्यादि।

अब मेरी समझमें आया कि आज बापूजी जरा गभीर बया थ। म सारी बात समझ गयी। म तुरत दौडी और मने सारी जाच की। जिन गावमें तान मौ हिन्दू और पंद्रह मौ मुसलमान है। हिन्दुआयें ब्राह्मण कायस्थ और गून् ह। सजावट लाल-नील वागजा तल और घीके दीया, और जरी तथा पताकाअसि की गयी थी। देहातमें तो असी वस्तुअें

हरगिज नही मिलनी। जिसलिअे कायकर्ताको बुलाकर बापूजीने पूछा 'आप ये सब चीजें कहासे लाये ?

असु भाजीने कहा बापू आपक चरण हमारे यहा कब पटन। आप आनेवाले थे जिसलिअे हम सबने आठ जाठ आने दकर तीन मौ रुपये त्रिकठे किये थे। अुसीमें स हमने यह खच किया है।

जिससे बापूजी बडे दु खी हुअे य फूल और जाहाजलाली ता क्षण भरमें मुरमा जायगी। जिसस मुझे यही लगता है कि आप सब मुअे धावा द रहे ह। मेरी हिम्मत पर यह ठाटबाट रचकर साम्प्रदायिक भावनाका आप अधिक अुत्तेजित कर रहे ह। आपको पता है कि म जिस समय जग्निकी ज्वालाआमें जल रहा ह। अितनी अधिक फूटमालाअें सजाजी गजी ह अिनके बजाय सूतके हार सजाये जात तो मुअे अितना न खटवना। क्याकि वे हार शाभा बढाते ह और अुनसे कपडा भी बनता है। जिसलिअे कुठ भा बेकार नही जाता। मरे खयालसे अिम गावमें रुपया बहुत है। नहा तो जिस कठिन समयमें आपको असी सजावट करनेकी बात न सुपती। आपके मनमें मेरे लिअे जो प्रेम है अुमे नाबित करनका यदि यह मारी सजावट की हो ता यह बिल्कुल अनुचित है। जिसस प्रेम जरा भी प्रगट नही होता। आपको मेरे प्रति प्रेम हा ता मरे कहने पर अमल कर। अुतना मेरे लिअे काफी है। अितने कल्लेआमके बाद अिन फला पर रुपया खच करना आपको कस सूझा होगा यही म समझ नही सकता। और फिर आप ता काअ्रेसके कायकर्ता है सावजनिक कायकर्ता ह। आप कहत ह कि आपने मेरी पुस्तकें पडी ह। आप जम० जे० तक पडे ह। फिर जिस सजावटमें विलायती और दशी मिलका कपडा रेगम और ग्विन वगरा काममें लिअे गये ह। यह सब मेरी दृष्टिम दु खद है, अितना ही कहना चाहता ह।

'आपके अुदाहरण परमे म अपने समस्त साथी कायकर्ताआका निचार करना हू तो गका जुठने लगती है कि जो लोग अेक दिन देगमवकके रूपमें जनताके सेवक माने जाते थे व हा कायकर्ता कोअी पद या मत्ता मिग्गन पर जिसी तरह तो फूटहार पहनाने या पहननेके लालचमें नह फम जायगे। म दखता हू कि आज भी म छानी ठोकर यह नही कह मयना कि मेरे कायकर्ताआमें स किसीकी भी परीक्षा ली जाय तो बह सना

सादगीका जीवन बितानवाला ही मिला जितने ही मोटर-वगले हो ता भ
 वह अपना ध्यय नहीं छोडगा। आज यह बात नहीं है। ठीक है आजकी
 जिस घटना मुझ अधिक जाग्रत बना दिया है। जिसमें म आपका दाप
 नहीं देखता। आप तो जैसे थ वसे दिखाओ दिय। परन्तु जिससे जीस्वर मुझ
 जिस बातका भान करा रहा है कि म कहा हू। पता नहीं अभी तकतीरमें
 और क्या क्या देखना लिखा है?

बापूजी अपन हृदयकी तीव्र "यथाको धाराप्रवाह रूपमें प्रकट कर रहे
 थ। वचारे कायन्तर्ता भाओी शरमिन्दा हो गय। मुह क्या पता था कि सजावटका
 परिणाम यह आवेगा? बापूजीने हारो और पताकाआमें जितना धागा काममें
 लिया गया था उसका गाला बनानकी सूचना की। बीस छोटी छोटी आटिया
 हुआ। प्राथनाक बाद रातको जाटिया लेकर व भाओी आय। बापून मुझसे
 कहा तुमन देख लिया? अिन बीस आटियासे जितने कपडाको जोड ल
 सकत ह? यह सब देखना तुम्ह सिखाना चाहता हू। तुम जहा देखो कि
 अमुक काम भरे स्वभावके विरुद्ध हुआ है वहा तुम्हें जाग्रत होकर पूछताछ
 कर लनी चाहिय। वसे निमलबाबू करते तो ह। तुम्हें अपन भीतर
 "यावहारिक दृष्टि पना करनी चाहिय। जीस्वर करगा तो वह भी हो
 जायगा। परन्तु तुम अितना जान लो कि जिस समय तुम्ह जिस ढगसे म
 गिधा दे रहा हू जस ढगसे मन किसीको नहा दी है। प्रभावतीको जरूर
 कुछ दा थी। परन्तु जिस तरह विलकुल अवेलीको नहा दी। जागला महलमें
 तुम्ह अस पाठ नहा मिन्त थ। वहा ता वा लाड लडाती थी न? परन्तु
 वहा भी कुछ तालीम ता मिली ही है। जुममें थ सब पाठ पूरक बन
 रहे ह।

रातको जब बापू लटे हुआ थ और म अुनके पर दबा रही थी तः
 बुहान मयस यह बात कही।

अमा ही दूगरा प्रमग कटनी हू जिसत मय पाठ मिला।

गामन मरा पे बहुत दुःख रहा था अिमलिअ रातका गरम पानीकी
 सेक करनका बापूजीन कहा था। परन्तु म गरम पानी करना भूल गओी।
 साने वक्त मुन पूछा क्या सक की थी? मन अिनकार किया और
 पाना गरम करना रह गया वगरा बातें क्य। बापूजीनो यह अच्छा न लगा।
 व बो" जा आमी अरन काममें आलस्य करे वह कभी न कभी दूसरेके

काममें भा आलस्य करेगा। तुम्हारा शरीर तुम्हारा नहीं श्रीश्वरका है। जैसे किसी मकान-मालिकका मकान हम किराये पर लन ह तो उसे साफ रखते हैं, विसी समय मकानको नुक्सान पहुँचा हा ता उसकी मरम्मत कराते ह और जसा करनेसे ही मकानकी सुषडना बनी रहती है तथा रहनेवालेकी प्रतिष्ठाकी रखा हानी है, वसे ही हमारा शरीर श्रीश्वररूपी गृहस्वामीका है। बिसमें कभी कोश्री टूट-फूट हा तो उसकी मरम्मत करना अपना फज समझकर उसे अदा करना चाहिये। नहीं तो श्रीश्वर नाराज हागा ही। श्रीश्वरका फरमान आयेगा तब अिस शरीररूपी घरको हमें छाडना पडेगा। परन्तु यदि अिस शरीरका हमने समालकर रखा होगा और अिसने द्वारा लोकाकी सेवा की हागी ना ही अिमका जाना साधक हागा। तो ही श्रीश्वर प्रमत्त होगा। बना अिस पृथ्वी पर जा असख्य कीडे-मकाडे रेंगत हैं अुन्टीमें ने हम भी माने जायगे। साना बठना खाना पीना सत्र नियमित हा ता बीमार पडनेकी नौबत ही न आये। परन्तु कभी शरीरके कम्पुर्जे चलत चलने अटक जाय ता वह श्रीश्वररूपी महान गृहस्वामीका है, अमा मान कर उसकी सेवा करनी ही चाहिय।'

फिर दस बजे बाद गरम पानी कर देनेका कहा। अिमलिअे मुझे मानेमें दर हा गयी।

बस तो सब कुठ नियमित ढगसे हो रहा है। दिनभर मौन रहा, अिसलिअे वातावरण गान्न था। परन्तु मौनके बाद हम सबको समझानेमें बापूजीको बडा थम हुआ। हमारा मुकाम राजकुमारथीके यहा है जो कायस्य ह और खेती करत ह। बस्तीमें ३०० हिन्दू और १५०० मुसलमान ह।

आजकी डापरीमें बापूजीने हस्ताक्षर करके अिस प्रकार लिखा है

आनूनिया,

१८-२-४७

आज मुझे शोध आ गया। यह है मेरी अनामकिन। अिससे अपने आप पर अर्ग्वि पैदा हुजी। अहिनाकी गायद मच्छी परीक्षा हागी, यह भी विचारणीय मालूम हाता है। श्रीश्वरकी महान कृपा है कि वह मुझे निमा लेता है। तुम पूरी तरह जाग्रत हा जाओ।—बापू

आरुनिया,

१८-२-४७ मंगलवार

रोजकी भाति प्रायनाके समय बुठ। बादमें गरम पानी और शह लते हुअ मरा डायरी सुनकर हस्तापर विय। वापूजीने अपना जा अमह्य दुस कर प्रकट किया अुस मने नही रेखा या। बुट्टाने मुझम पूछा तुम्हारा डायरीमें मन जा लिया है वह तुमन दखा ?

मन कहा म आपका डायरी रबर गरम पानीका गिलास घोन चणी गयी थी जिसलिजे मन नही दखा। वापूजी वाले काशी भी चीज हा यदि हमन जस दूसरेको सोपी हो जीर वह हमारे लिअ ही हो ता हमें फिरस देन लेना चाहिये। तुम जानती हा कि म अब काठ भी लिखता हू ता जसे दुबारा पढ बिना टाकमें नहा जान देता। मेरी यह आदत पहलसे हा है।

मन जुनकी नाथ दयी। वापूजीके जदगका पार नही था।

फिर (बगालके भूतपूव मुख्यमंत्री) प्रफुल्लवावूको और मरे बारेमें मरे पिताजीका पत्र लिख। प्रफुल्लवावून वापूजीका अभय आश्रममें जानके बारेमें लिखा था। अुसक अुत्तरमें वापूजीन लिखा यदि कुमिल्ला जाअूगा तो अभय आश्रम जरूर जाअूगा। मेरी यात्रा जारी है। असा लग रहा है कि हैमचर पटुच कर मुझ थोडा जाराम रना ही पडगा।

साठ सात बजे हमन देवीपुर छोडा। नौ बजकर पाच मिनट पर हम यहां पटुच। पर धोते समय वापूजीन बगलाका पाठ समझाया। बादमें मालिग स्नानादि। भोजनमें दो खोखरे गाक जीर खोपरेकी थोडी छू ली। दा ग्रपफूट लिय।

आज गाक बडा विचित्र था भिडी पती करेले और थोडीसी लौकी थी। वापूजीन सबको जकसाय अुबाल डालनको कहा। अुसमें भिडी डाल देनस गाक खूब चिकना हा गया। और जमी गाकमें खाते समय दूध डलवाया। मिश्रणको चम्मचस हिलान लग। यह देखकर मुझ लग रहा था कि वापूजी जिसे गलेमें कमे अतारेंगे ? मने हसते-हसते अुनसे अपन मनकी बान कही। वापूजी बोले अरे भूख हा तो सब कुठ गलेमें अुतर जाता है।

मरे लिअ अपन हायस अिमी गाकमें से दो चम्मच अलग रसा जीर मयम खानको कहा। (वापूजी निम्बुल अुबला हुआ शाक मिच मसाला

डाले बिना स्थायी रूपमें वर्षोंसे लेत रह ह। और वह ठीक लगता है। परन्तु असा पचमल शाक भी, जिसमें अूपरसे दूध मिलाया गया था बापूजा पी गये।) मुझे जा शाक खानेका दिया अुम खाना जरूरी था। लेकिन अुम खानेमें मुये कोअी दवा खानेस भी ज्यादा बठिनाअी हुअी।

खात समय हिन्दू पत्रके प्रतिनिधि रगस्वामीजीसे कुछ पत्र लिखवाये।

दापहरका आराम लेत समय बगलाका पाठ किया। दा बजे सुचता बहन आजी। खाकमार भाजी भा मिलने आये थे। अुन्हाने बापूजीस बिनती की कि "आप जिस आग्यका पत्र लिखें कि अतरिम सरकार खाकसाराका छाड द।"

बापूजी बोल जिस तरह जबानी बात म नहा जानता। आप अपनी सारी सामग्री भरे पास भर्जे ता मै अुस पर विचार कर सकता हू।

आज बापूजी कुछ ज्यादा थके हुजे लगत है। कह रह थे आखें जग करता ह। आत्मा पर मिट्टीकी पट्टी रखी। हैमचर जाकर आराम लेावाले ह। मुझसे कहने लगे 'अब अक्कि दिन कहा ह?' मले ही मरी मृत्यु तक न समझे। फिर भी मृच पर अुसके गाक या मोहकी भावनाका असर जरा भी क्या हा? परन्तु मने तुमस कहा न कि मरी अनासक्ति बहत थोडी है यह मने परमा ही लिखा है। यदि म 'स्थितप्रन हा जाअू और अपना काम जारी रखू तो कुछ भी हा सब भरे लिजे अेकमा बन जाय। सुख दुख दाना समकर जाने। हा अुस आर जानेका मेरा प्रयत्न चलता है। मुझे आगा तथा दड विरवास है कि जितने दिन जिस प्रयत्नमें लगे अुतने जिस दिगाकी सफरता प्राप्त करनेमें नही लगेंगे। जिसलिअे ता मने का साहसपूर्वक छोडनेकी अिजाजन दे दी। जिसलिअे यदि मेरे हृदयमें रामनाम अक्कि हा जायगा ता म गुणामे नाचूगा। तुम भरे प्रत्येक कायमें जितनी मजग रहोगी अुतनी ही तुम्हारी मन्द मुये मिलेगी और अुतनी ही मरी शक्ति बन्गी। बस तुमने नूत मोखा है।

दापहरके बाग विहारमे अेक भाअी आये ह। व खाम तीर पर रामायण सुनाने आये ह। वे मग तक आ गये ह जिसलिजे अूह सनोप दनेके लिजे बापूजीने रामायण सुनी और कहा आप बल विहार चले जाअिये। केवल रामायणके स्वर सुननेक लिअे आपका ठहराना मुझे अच्छा नही

विरामपुर,
१९-२-४७

आज महाशिवरात्रि है। आज पू० बाकी श्राद्धतिथि होनेक कारण येने बापूजीसे पूछा पू० बाबा जिस समय अवसान हुआ था उस समय अर्थात् गामका माल पतीस पर हम गीतापाठ गुरू कर तो कला रहे? बापूजी कहन लग तुम्हारा विच्छा सान पतीस पर गीता-पारायण करनेकी हो ता मुय काजी आपत्ति नहीं। आज भजन सो नहीं किया जा सकता। मुझ कहना चाहिय कि का न हाती ना म अितना अूषा नहा बुडा होत। वान मुझ खूब अच्छा तरह पहचान लिया था। और बाका परिचय भरे सिवा दूसरा कौन अधिक द सकता है? वह भेरे प्रति वितनी बफालार थी? और अन्तिम समय जब मैं सोच रहा था कि बा किसकी गोदमें जायगी उस समयमें मुम तो थी हा। अतमें अुयव मुझीको बुलाया और मरी गोदमें आविरी सास ली। असी थी बा। आज जिस यज्ञमें अुसे यात्र करक और अुयव मनुगुणाकी स्तुति करके अुन गुणाको हम अपनायें। यही बाबा मच्छा श्राद्ध है। मरी सवा अुसने निर्दोष भावसे की थी। मरे प्रत्येक वायमें गारी हुश्री सबसे लेकर अन्त तक तन मन और धनसे बाने लगातार मरी अतुलनीय सवा थी।

सवरे प्रायनाक समय बापूजीन मुझ अूठाया तब दातुन करते-करते पू० कस्तूरबाक लिअ बापूजीन ध लुगान प्रवट विय।

आज क्वाचित् हिंदुस्तानमें अनेक स्थाना पर पू० बाको श्राद्धजलि दी जायगा। परन्तु यह अजलि बापूजीने मुझे प्रात चार बजे ही सुनाथी। मन बापूजीक ही मुखसे अिनन भावनामय शब्द सुननेके लिअ अपनाको भाग्यशालिनी माना।

मनरेकी प्रायना राजकी तरह आलूनियामें हुश्री। प्रायनाके बाद बापूने देवभाआके माय बाते की। बाण्ये गरम पाना और गहद लिया। आध घंटे बाद अनघ्रामका रम लिया। कुछ पत्रा पर हस्ताक्षर विय। दस मिनट आराम किया। सात पचास पर रोजकी भाति यात्रा आरम्भ हुश्री। यहा पड्डकनेमें ७० मिनट लग। रास्तेभर मजन मडगीन मुन्दर मजन गाय। त्रियलिअ मरे लिस्ममें गनेका वरम थोडा ही था। मन आज अब ही मजन गाय। रास्तेभर मजन-मडगी ही गानी छी। अत्तर बापूजाक पर

घाये। व बगलाका पाठ करत रह, अितनेमें मैने मालिगके लिजे तम्बू बगरा तमार कर लिया।

आज बापूजी खूब यक गये थे। मालिगमें काफी साये। स्नानके बाद जाजूजी जवाहरलालजा थ्रिडि हान्स, कुल्कर्णीजी स्वमणीदवी हरि सिंह घाय और अब्दुल्ला साहबका पत्र लिखवाये और हस्तागर किये।

आयनायकमजी आये हैं अिमलिजे अनके साथ बापूने बहुत बातें की। नाडे बारह बने बापूजा आराम करनके लिजे लटे। मने परामें घा मलकर अपना काम किया। मूत दुबटा करना बपढाके पबन्द लगाना डायरी लिखना बगरा। आयनायकमजीके साथ अमलप्रभावहन और पुष्पन्दुबाबू भी आये हैं। अमियबाबू (अमिय चक्रवर्ती) भी ह। अिमलिजे आजका दिन भरा भरा लगता है।

अुठकर बापूजीने नारियलका पानी लिया और डाक देखी। दो बने कातत समय आग्रनायकमजीके साथ बातें का। बापूजी कानन-कानते बातें करत रहे। निरक बाग बढ गय थे अिसलिजे मुखसे बाले मगानमे काट डाला। मन बाल काटे। जिम प्रकार बापूके पाम नमयकी बग तर्गी रहती है। आयनायकमजीके साथ बापूजाने मेरे विषयमें बहुतमी बातें की। व भी खुग हुअे। तान बजे मिट्टी लेउ समय भी बुन्हाकी मडली थी। नअी तालामके वारेमें चर्चा हुअी।

मिन्हटमे बहुत मतर जाये ह। पू० बाकी आडनिधिके निमित्तम यच्चाका वाट दिये। बापूजी बाणे तुम जानती हा न वा छाकर प्रसन्न नहा हाना थी परन्तु खिलाकर प्रसन्न हाती थी।

गामका बापूने दूध और आठ खजूर लिये। बादमें प्रायनामें गये। प्रायना-ममामें अेक यह सवाउ पूछा गया कि अमुक स्यापित स्वाय रखनवाले लाग किमी हिंदू बायकनकि विरुद्ध जान-बूयकर झूठी बातें फन्वें और अुसकी निन्दा कर ता क्या किया जाय ?”

बापूजी — मै ता यह कूगा कि अहिमाकी दृष्टिमे देवने हुअे मनुष्यके बायोंमे अुसवा जा परिचय मिले बहो सच्चा परिचय है। कभी काआ गनरूमो हा गअी हा ता व्यपकी बातमे या अुत्तेजनासे अुन दूर कराना फनटमें नही पठना चाहिये। परन्तु कुछ अवसर जस नी आउ ह जब बोल्कर मफाअी दना घम हा जाता है और चुप्पी माघनेम हम लगभा अमय ठहरने ह। अिमलिजे ठीन रास्ता यह है कि बायक माय वाणीम स्पष्टीकरण करनके अदगर कौनसे हात हैं, अिसवा विवेक

अबला बली रे

रनकर काम किया जाय। और अतः प्रणवा पर अच्छी भावामें अतः बारमें
अवश्य स्पष्टीकरण किया जाय।

टीन सात पतीस पर मन गीता-पारायण शुरू किया। मर पाग पू० बाता
अर फोटो था। अतः सामन रनकर पूरुमाग अण बरख मन प्रणाम
किया और पारायण आरभ किया। प्रायनामें आपनापरमूर्जीक साथ
आभी हूअी महिलायें और दूसरे महमान तथा स्थानीय लग सरार हूअे।
मुगलमान भाभी भी थ। पारायण ता मने अर ह। किया। दूगर मत्र गुन
रहे थ। सवा घटा लगा। बहुत गाति और गाभीय था। पारायण पूरा
होने ही बापूजीने मरी बहनको लिया

अिम दिन और अिस समय सात पतीस पर वान दह छाडी
थी। पारायणके समय नय आय हूअ अतिमि मौजू थ। आज अिम
यनमें बाक अवसानका दुश्य आराममें तरन लगा। कारण मनुषा भी
थी। वह तेज गतिसे गीता-पारायण कर गवी और वह भी अरल।
आगाता मन्लमें भी तो हम अनेले ही थे न? अिसलिअे जब म
छठ अध्यायके बाण लेट गया और नीन्का अक क्षारा जा गया तब
बुछ असा आभास हुआ माना बाका मिर मेरी गोन्में रपा है। *
मन अुपवास रखा था। अिसलिअे प्रायनाके बाण फडाहार किया
और दूसरा काम किया। बापूजी आज पौन ग्यारह वज तक महमानाक
साथ बातें करते रहे।

यह मकान तारिणाचरणदास माछीका है। यहा १०० टिडू लोण आय
ह। ६००० मुसलमानाकी आवादी है और ३५० हिन्दुआकी।

वाणकायली

२०-२-४७

आज रातमें असाह्य ठड थी। रातके बारह वजे बापूजीन मुझ जगाया।
मने अुह आनाया और दवाकर गरम किया। अुनक पर खूब ठड हा गये
थ। क्षापडमें तेज हवा सनसन करती बहुती रहती थी। परतु अुस रोकनका
कोजी अुपाय नहा था। आजकल बापूजी असा कष्ट भोग रहे ह।

* छह अध्याय तक बापूजी अच्छी तरह बठे-बठ आखें बंद करके
सुन रहे थ। परन्तु बाणमें थक जानसे लेट गय थे।

रातको साढ़े बारह बजे बुहाने मुझसे कहा ' मरे पराके तलुअे बहुत ठडे हो गये ह । ' मने देखा कि हाथ जोर पैर जेकदम ठडे पड गये ह । असा लगा कि बापूजी काप रहे ह । घासलेट बचानेका रातमें बापूजी लालटेन भी बुझवा देत हैं । असल्लिअे अमावस्या जसी घोर अघेरी रात थी । चारा धार सत्राटा छाया था । नारियल और सुपारीक वृक्षाकी साय-सायकी आवाज बडी भयानक लग रही थी । वे ही अकेले असकेे सामी थे कि लोगामें मानवता पदा करनेके लिजे यह तपस्वी कमा बठोर तप कर रहा है । छप्परके छेदामें से घुसनेवाली हवा और ठडके म राकू भी कसे ? अस काठरीमें म और बापूजी दो ही थे । मनमें कितने ही विचार आ गये । सोचा, सायमें गरम पानीकी धली तो है परन्तु गरम पानी कहा किया जाय ? किसीको बुठाना तो सभव ही नही था । बापूजीका डर भी था । जा लाल टेन भी नही जलाने देते वे प्राजिमसकेे लिअे तो घासलेट देने ही क्या लगे ? असलिजेे सभी विचार व्यथ थे । जितना ओठनेको था सब मने बापूजीका ओठा लिया । मिर पर भी आढा दिया और मेरे हायामें जितना जोर था अुतना जुनका शरीर दबाया । तब कही आधे घटेमें बापूजीको खूब राहन मिली और व सा गये ।

प्राथनाके बाद नित्यकी भाति सब कुछ हुआ । रातको आज यर्मासमें गरम पानी भरकर रखनेके लिअे यर्मास मगानेकी अिच्छा हुअी और बहुत डरते डरते बापूजीकी स्वीकृति ली । बापूजीने कहा ' काजीरखिलमें अतिरिक्त यर्मास हो और अुन लोगके अुपयोगमें न आता हो ता भेज दें । नया तो खरीना हा नही जा सकता । रुपया कहा है ?

आज बापूने बगलाका बबहरा लिखनेको अेक कापीमें खाने बनाये । (हमार यहां गुरूमें बच्चाका धारटखडी मिलाकेका जमे खाने बनाये जाते ह ठीक जुमी तरहने) मुझे यह देखकर बडी हसी आअी । मने कहा आपने असी लकीर खीची ह मानो बालबगमें पडते हो ।

बापूजी कहने लगे, सच है ! मनुष्य जब तक जिधे तब तक विद्यार्थी ही है । बबहरा पक्का करने और अ्तर अच्छे बनानेका यह मुन्दर ढग है । मुझे ता अपने शिक्षक अिमी तरह अक और बबहरा आदि सिखात थे । यह तरीका बहुत अच्छा है ।

बान्में रम पिया । बगलाकी बालपोधी पडते-पडते दम मिनट सो लिये । सात पत्र पर अुठे । सात पचीसको हमने बिरामपुर छोडा । आठ पचीस

अंकला चलो रे

पर हम यहा पहुचे। यहा आनमें पूरा अेक घटा लग गया। राजका भाति यहा आकर बगलाका पाठ किया। मालिगमें बापूजी पौन घट साय। भाजनमें तीन खाखरे गक दस औस दूध और तीन सतरे लिय। दामका दूध दापहरको आराम करके अक नारियलका पानी पिया। गामका दूध और सतरेका रस मिलाकर मन लिया। दोपहरको सेवाश्राम आश्रमकी कुछ डाक आयी। वह मन पढकर सुनाओ। कताओ और मुलाकारों नियमा नुसार हुओ। रातको आठ बज रगरवामीजीसे पत्र लिखवाते लिखवान जपकी आन लगी अिसलिअ सो गय। आज बापूजी कुछ अधिक थके हुअ लगते हं क्याकि दिनमें तीन चार बार अिसी तरह सो गय थे। परामें विवाजी फटनकी गिकायत कर रहे थ। आजकल यात्रामें रोजकी अपेक्षा कुछ ज्यादा चलना हाता है और ठड भी बहुत है अिसीलिअे असा हुआ होगा। अगूठमें फिर चीरा पड गया है। अिसलिअ अुसमें भी दद रहता है। ठडका असर अुस पर नग परा चलना। और बापूजीके पर ता अितन अधिक कामल ह के जरा भी फटन पर चीरा पड जाता है। जो हा जाय सा सही। गेवरकी क्या अिच्छा है अिसे कौन जान सक्ता है?

कोमलापुर

२१-२-४७

सदाकी भाति प्रायना। बादका सारा समय आयनायकमजीन ल लिया। मींगाना साह्व और जाकिर हुसन साहबक गिना-मवधी विचाराकी चर्चा की। साण पाचके बाण रम पिया और थवावटके मारे लट गय। मन पर दबाय। बापूजी ५-५५ तक साय। फिर मूदुलावहनको पत्र लिखवाया और सारी डाक विडलाजीके आण्मी भरवणमजीके साथ भजी। मुझागणभाओकी पत्र लिखवाना गरू किया परतु पूरा न हा सका। लान्प्यलता बहन थवावट हातक कारण बापूजीका काआ दवा लनका सुयाव लिया। बापूजी बहन लग मरी दवा तो रामनाम है। म कव तक त्रिना हं यह दूमरी बात है। अिसलिअ अिम दवान या ता म कभी बीमार नहा पडूगा और बीमार पडूगा तो हृदयगत रामनामके बल पर चौवीन घटमें अट्टा हा जाअूगा।

साण साण बज बीगायनी छोडा। सवा नौ बज हम यहा पहुच। रास्तभर आयनायकमजीसं बानें की। बाचमें दो जगह टहरे थ अिसलिअ

देर हुआ। पर धोते समय बापूजीने बलकी रिपोर्ट सुधारी। मालिगमें भी यही काम किया।

बापूजीने आज भोजनमें थोड़ा फरबदल किया। अंक खाखरा और अंक चम्मच बकरीका घी शाकमें लिया।

बापूजीको कमजारी और थकान होनेके कारण थोड़ा थोड़ा मक्खन निकालकर और अंसका घी बनाकर मने थोड़ीसी गुड-पपड़ी बनाजी थी। बतानके बाद ही म बापूजीके पास ल गयी। मने कहा जाप गुड लत ह गेहू लते ह और बकरीका घी तो लिया ही जा सकता है। अिसलिये पपड़ी बनाजी है।' मुझे डर था कि शायद न ले। परन्तु सौभाग्यसे अंक छोटीसी डली ले ली। फल नहीं लिये।

मुझसे बाल 'तुम पपड़ी बनाकर लाओ, अिसलिये तुम्हारा अुत्साह भग करके तुम्हें दुःखी न करनेके खयालसे अिच्छा न हाने हुअे भी पपड़ीका अेक टुकड़ा ले लिया। परन्तु अिससे मेरी थकान या दुबलता चली थोडे ही जायगी? वह तो रामनामकी दवासे ही मिटगी। यह थद्धा तुम्हें भी अपनेमें पदा करनी चाहिये कयाकि अिस समय मरी तमाम बाहरी देवभाल तुम्हारे हाथामें है। यह पपड़ी तुमने अपने मनमें चिन्ता रखकर मरे लिये बनाजी, परन्तु मुझे तो बनाकर तुम लाजी तभी पता चला। म नहीं जानता कि तुम दूध लेकर मक्खन निकालती हो, कयाकि रसोअीमें जब तुम काम करती हा तब म मान लेता हू कि खाखरे बनाती होगी या असा ही और कुछ काम करती होगी। मुझमें गवित जाये अिस अुद्देश्यसे तुम मुझे पपड़ी अिगानी हो। परन्तु अितनी ही थद्धासे तुम रामनामकी रामवाण दवाको जानकर हृदयस अुसका रटन करो, ता अुसस मुझे अिस पपड़ीकी अपेक्षा कअी गुना फायदा हो और हमारी शक्ति आजस कअी गुनी बढ जाय।"

बापूकी रामनामकी थद्धा अत्यन्त प्रबल होती जा रहा है।

काकामाह्वको पत्र लिखा। अुममें बाफी समय लगा। निमल्ल और देवभाअीने हिन्दी अंग्रेजी बगला और अुदू डाक पढकर सुनाअी। अंग्रेजी और बगलाका पत्र-यवहार ज्यादातर निमल्लदा सभालने ह। देवप्रकाशभाअी और हुनरभाअी हिन्दी अुदू और कुछ अंग्रेजीकी डाक। मेर हिस्सेमें आज कल डाकका काम बहुत कम हो गया है। गुजरानी और कभी-कभी मगठी डाक रहती है। अलबत्ता खानगी हिन्दी-गुजरानी पत्र बापूजी अखिवाण

मुझाने लिखवाते ह और अुनकी नकल मुझे ही करनी हानी ह। अुनमें म
 अपुपयागी पत्रोकी तारीखवार फाइल भी रखनी पडती है।
 शामको बाबा (सतीशचंद्र दासगुप्ता) आये। निरजनसिंह गिल भी
 अुनके साथ थ। बिहारकी रिपोर्ट आ गयी ह। जसा लगता है कि गायद
 बिहार जाना पड। रिपोर्ट बडी दुखद है।
 गिलके साथ बातें की। अुन्हान सिक्क भाजियाका सारा चाज आजस
 कनल जीवनसिंहजीकी सौप देनकी स्वीकृति दे दी है।
 स्टनली जासको भी पत्र लिखवाया। बाकीका क्रम नियमानुसार
 रहा। बापूजीकी तबीयत कुछ ठीक है। परका घाव अभी तक भर नही
 परतु भर रहा है। मौसमका असर है। जिसलिज ठीक हो जायगा।
 दूसरे पत्रमें लिखा गिलके बयान परसे बिहारके बारेमें मेरा धम
 कदाचित् घहा जानका हो जाय। यहाके मुसलमानका बरताव देखते हुए
 यहा मरी जहिंसाकी सच्ची परीक्षा होगी।
 ब्रिटिश प्रधानमन्त्रीन भाषण दिया जुस परसे लगता है कि गायद
 अभी युद्ध बाकी है।
 जिस गावकी जाबादी ६३८७ है। २३८७ हिंदू और ४०००
 मुसलमान ह।
 आज बापूजीने १६ तार वाते। साड दसके बाद सा सके।

(चरप्रदेश) चरकृष्णपुर
 २२-२-४७

आज रातको २-२० होन पर बापूजीन समझ लिया कि ४-१० हो
 गये। मचे बुठाया। मन भी नीदमें ही आखें मलते हुए बापूजीको दातुन
 और मजन लिया। परन्तु आखोंमें स नीद बुडती ही नही थी। जिस
 लिज मन घडीमें देखा तो अभी ढाभी ही बज थ। बापूजीकी घडी
 लिताजी। मुझ बहुत नाग जा रही थी अुस पर यह भूल निकली। जिस
 लिज बडा मजा आया। दानो फिर सो गय। चार बज सरदार जीवनसिंहजी
 नियमानुसार जगान आय अस समय जाग। दातुन करके प्राथना हुअी।
 प्राथनाक बाद बापूजीका गरम पानी लिया। म फलाका रस निकालकर
 लाजी जिस बीच बापूजीने बगनाका पाठ किया। परतु अधूरा रहा।
 मन्ना वक्त गुजरानी पत्रांतरक लिअ रखा।

मात पनालीस पर कोमलापुर छाडा। आठ पैतालीम पर यहा पहुच। राजका तरह बगलाका पाठ पूरा किया जा मुबह मेरे साथ बातें करनेमें वकन चला जानेस अधूरा रह गया था। मने मालिग जीर स्नानकी तयारी की जितनेमें बापूजीने पूरा लिख लिया।

भाजनमें अेक खाखरा पपडीका अेक टुकडा गाक और छह औंस दूध लिया।

भाजनक समय रेणुकाबहन रायके साथ बातें की। फिर आराम करने वकन मने परामें घी मला और बापूजीने रगस्वामीजीस पत्र लिख-वाये—सुहरावदी साहबको धीकृष्ण सिंह (बिहारके मुख्यमंत्री) को और मौलाना साहबको। सवास डेढ तक बापू माये। यहा भीड बहुत है। म बापूजाके लिये कुछ भी तयार करने जाती हू कि पीछे पीछे स्त्रिया और बच्च आ जात है। पानी बहुत गदा हानेक कारण कपडे धोने दूर जाना पडा। दा बजे कपडे धाने गयी। बापूजीके भोजनक बरतन भी तभी साफ किये। अिस बीच बापूजीने देवप्रकाशभाजीके साथ डाकका काम निबटाया और चरखा काता। स्त्री और पुरुष कायकर्ताआमें अमूल्यभाजी चक्रवर्ती आभावहन वधन सुधाबहन सन और वेनरजी मिले।

म आजी तब ठक्करबापा और गरदेगानदजी (रामकृष्ण मठक स्वामीजी) बठे थे। स्वामीजीने मठमें आनेका निमन्त्रण दिया था। बापा थके दूधे लगते थे। घाडी देर बातें करके चले गये। साडे बारह बजे बापूजीने आठ औंस दूध और अगूर लिये। रेणुकाबहनने मुझे बडी मदद दी। स्वभावकी बहुत मिलनसार है।

प्रायना नियमानुमार हुअी। प्रायनामें बापूजीने फरिस्तानी जेक सुन्दर कहानी कही

कहा जाता है कि खुदाने यह पृथ्वी बनाअी अुस समय वह अधर अुधर हिला करती था। अिसलिये खुदाने बडे बडे पहाड बठा लिये। अिस पर फरिस्त खुदास पूछने लगे हे मालिक तेरे बनाअी हुअी वस्तुआमें अिन पवनसि काअी अधिक बरवान भी है? खुदाने कहा हा लाहा जिन पहाडाका तोड मक्ता है, अिसलिये वह ज्यान्ग ताकतवर है। फरिस्ताने पूछा तब लाहेम भी कोअी ज्यादा ताकतवाली चीज है? खुदाने कहा हा आग लाहेस ज्यान्ग ताकतवर है क्योकि वह लोहेको गला दता

अक्ला चलो रे

है। फिरस्ते अुसस भी कोअी बलवान है? खुदाने कहा हा पानी है क्याकि पानी आगको बुवा देता है। फिरस्त कहन लग पानीसे भी बढकर बुछ है? खुना बोले हा हवा है क्याकि हवा पानीका हिलाती है। तब फिरस्ते पूछन लग हे खुदा हवास भी काअी ताकतवर है? खुदान कहा दान है। दान दनवाला भला आत्मी अपने दायें हाथम देवर बायें हाथम भी गुप्त रख ता वह सभीको जीत लेनमें समय हाता है।

प्रत्यक अच्छा काम दान है। आप अपन भाअीको हसकर बुलायें रास्ता भूल हुअेको रास्ता दिखायें प्यासको पानी पिलायें यह सब दान है। मनुष्य जीने-जी अपन जसे मनुष्याके प्रति या अपन जसे प्राणियाक प्रति जा भलाअी करता है वही अुसकी सच्ची पूजी है। वह मर जायगा तब लाग पूछेंगे कि यह मरनवाला अपन पीछे क्या छां गया है? परन्तु फिरस्ते पूछेंगे कि मरनेवालेन पहलेसे कितन भलाअीके काम करके यहां भज ह?

अिसक बाद यह प्रस्न नमोदूदा (हरिजनाकी अक जाति) का हानके कारण जुन आगाक सबधम कहा म भविष्यवाणी कर रहा हू कि भारत परस ब्रिटिश हुकूमतका हमारे दगमें निरिचत रूपसे नाग हो जायगा। ब्रिटिश लागाका जस भारतस नामोनिगान मिट जायगा अुसा प्रकारसे यदि जल्पयताको जडसे नष्ट नहीं किया गया तो हिंदू धम सबथा नष्ट हो जायगा।

समान अधिकार पर वाग्ते हुजे वापूजीन कहा हिन्दुस्तानमें हमें दुनियाकी दूसरी प्रजाआको जाचयमें डागनवाला स्वतंत्रताका जादस जीवन बिताना हा ता भगिया डाकटरा वकीला गिणको यापारिया और अय आगाका लिनभरकी प्रामाणिक मेहनतके बलमें समान वेतन मज दरा या सुराक मिलनी चाहिय। अिस बारेमें मरे मनमें जरा भा शका नहा है। यह हा सक्ता है कि भारतवासी अिस ध्ययको पूरी तरह सिद्ध न कर सकें। परन्तु यदि हमारे दगको सब तरहस सुख-सतोपकी भूमि बनाना हा ता सबका अिम ध्ययकी आर दष्टि रखकर चलना हागा।

अिस प्रकार वापूजीव प्रत्यक विचारका खूनी दखनको मिलता ही रानी है।

प्रायनाक बाद बीणाबहन बसु, बलाबहन लावण्यलताबहन रेणुकाबहन बगरा स्त्री-नायकनाअिते साथ बानें की।

आपका हमारा मुकाम श्रेष्ठ नमानूँ तक घर है। घरके मास्त्रिका नाम महानद बच है। अत्यन्त गरीब होने पर भा बृहान प्रेमपूर्वक हमारा मुविचाआका खयाल रखा है।

भगवान रामन भीलनीके घर पर कस प्रेमम निवाम किया था? बुम आतिथ्यका आनद सूटने समय थुह अमाध्याक राजमहलसे भा वडी गुना अधिक आनद होना था। अन्तमें जूठ वेर तक किमी मनचाह मिष्टान्न भी जधिक स्वादसे खाये थे। रामायणका वह चित्र आज हूवहू दखनका मिलता है। बापूजा अिम गहम्बामीके आतिथ्यका आनद बडी प्रमन्नताम लूट रहे ह।

अिस गावकी आवादी २५०० है। अुममें ३०० मुमन्मान हैं। अिम गावके सब लोग लौट आये ह।

रातका बापूजीने घरवालासे वाने करनेक वान अवधार मुने। बच्चाके साथ खेले। दस बने बिछौने पर लेटे। मैं भी नियमानुमार बापूजीक सिरमें सेल मलकर पर दवाकर और फुटकर वामकाज निदगाकर साडे दमक वाद साआ।

चरणगण

२-२-४७ रविवार

आज प्राथनाके बाद बापूजीने बगलाक अका पर हाथ घुमाया। २ का अक साधनेमें बाफी देर लगी। गानभाजीने ० लिखवाया और अुम पर भी दस बार हाथ घुमाया। वानमें अलास ० लिखा। मुझे ता यह लक कर बहन मजा आया। बापूजीने लकाका तरह बलून रमपूर्वक बगलाक अका पर हाथ घुमाया।

यह मुक्तिसे पूरा हुआ कि वालपायी पन्त-पन्त व्याकरणकी दृष्टिम अेक गच्छ बापूजीकी ममथमें नही आया।

मुझे भी जल्दी तरह ममथमें नही आया। निओ और गाआ' — अिन गानमें क्या फक है यह जानना था। दम मिन्द मने जीर बापूजीने सिग्पच्ची की। अितनमें निमलदा आ गये। व भी थोडी र परगान हूअे परतु बादमें बृहाने समझाया। मुझसे कहने लगे बापूजा यह वाल पोषी कितनी बुगलताम पन्त ह? अिम प्रकार बापूजीने वालपायीक गदामें निमलदा जस प्राप्तेरका भी कुठ क्षण तक परेगान किया।

फिर दबप्रकाशभाआक साथ बातें की। आज जरा भी आराम नहा लिया। जुनस बापूजीन कहा कि नजी तालीमकी दृष्टिस ही आपकी यहा काम करना है।

साढ सात बजे चरहृष्णपुर छोडा। यहा हम साढे आठ बजे पहुच गये। मालिग स्नानान्तिस् निवटनमें साढ दस बज गय। रगस्वामीजीक साथ ब्रिटिग सरकारके वकनव्यके सिलसिलेमें बातें की।

भाजनमें बापून गहूका दलिया और गाक खाया। मन आधा औंस तक मकपन निकाला था वह भी खाया। खाते खाते डाक सुनी। म नहाने गया। कपड ज्याग थ जिसलिअ धानमें देर लगी। आकर देखती हू तो बापूजी गहरी नादमें मा रहे ह। जिसलिअ मन परामें घी मला। सवा बारण बज बापूजी जाग। मुझसे कहा म सो रहा होभू तब भी तुम्हें परामें घी मलनकी छूट देता ह। फिर जब बापूजी तीन बजे पेडू पर मिट्टी रखकर सोय तब मन परामें मालिश की। आयनायकमजी राज कुमारायहन तथा मौलाना साहबक पत्र लाय थ। बुहे पत्र और मुयसे पत्र लिखवाय। कुछ नकल करनका काम सौपा।

*

पू० वा और महानैवकाकाका जिन दिनों बापूजी रोज घाद करते ह। आजकी लिखी लगभग सारी ही बातें सबके पत्रके बुत्तरमें बहुत स्पष्ट थी।

बापूजीकी दाणी पर छोटासा मसा हो गया है जिसे नृपेनदान घोडके बालन बाध दिया। साण चार बज बापूजीन अक साखरा चार वादाम और चार वानू और घाड मुरमुरे खाय। वामें काता। प्रायनाका समय हान पर प्रायनामें गय।

प्रायनामें कुछ प्रान पूछ गय थ। उनमें जब प्रान बाल विवाह और विनना विवाहके बारेमें था। जुमना बुत्तर देने दूअ बापूजीन कहा

जिग मामलमें मरा राय स्पष्ट है। यदि बाल विवाह न हो ता बान धियवा हानकी बात ही नहा रह जाती। नमोतूदा (हरिजन बग) में यन्ना विनयका जा प्रया है वन् विलकुठ मिन्नी चाहिय। म यह मानना है कि प्रत्येक व्यक्तिका जीवनमें एक ही विवाह करना चाहिय। सिविल

मरेन का रिवाज मुने विल्कुल पसन्द नहा। जहा हृदयाकी जेवना है परस्पर सम्मति है, वहा मिविल मैरन क्या किया जाय? परन्तु जिममें गहरा नही जाअगा। धार्मिक क्रियाका वात अलग है। अमुका जय जावनका नवनिर्माण हा रहा हा अमु समय श्रीश्वरस प्रायना करनक लिजे की गरी अेक विधि है। वह मुने बहुत अच्छी लगती है यद्यपि जुनमें अनेक बुरे रिवाज धुन गये हैं। परन्तु जिम चचामें मैं अभा नही जाअगा।

'हमारी यह यात्रा हैमचरमें पूरी हो जायगी और जुसके वात नया विभाग गुट हागा। अितनी यात्राके अिम सुखद जतके लिजे मैं जीवका अुपकार मानता हू। ठक्करवापा ता हरिजनके सेवक और पुरोहितकी तरह ह। अन्हाने यह जिला अपना मरजीस पसद किया है। अेक कहावन है कि बढाजीका मन बबूलमें। जुमी तरह ठक्करवापाने अपने-आप जापक बीचमें वमनेका काम टूट लिया।

आप अपनेका हल्के या अस्पय मत मानिये। आपका अुद्धार धारामभा या कोजी और सस्यायें नहीं कर सकेंगी। जिसके लिजे आपका स्वय ही परिश्रम करना पडेगा। वापाने मुने यहां जा बरवादी हुअी वह बनाजी। मुने बहुत दुख हुआ। परन्तु जिसक लिजे न ता आप राखिये और न कायर बनिये। हिम्मत रखकर अपनी महनत पर पूरा भरामा कीजिये। ता गग अपने अुद्धारके लिजे स्वय मच्छाजीसे मेहनत करत ह अुहें श्रीश्वर अवय्य सहायता देता है।

प्रायनाके बाद वापूजीने पत्र लिखे। मौन गुरू हो जानेस मारा वातावरण गात है।

यह घर अेक मिस्त्रीका है। जातिस नमागूद है। जिस गावकी आवाग ७६६८ है जिममें हिन्दू कवल ५० हैं। आन वापूजाक ९० तार हुअे। सवा नौ बजत बजत वापूजी विस्तरमें लेट गये।

हैमचर

२४-७-४७

नित्यकी भाति प्रायना हुअी। प्रायनाके बाद गरम पानी पीन पीन वापूजीने मेरी आधरी सुनी।

मान चालास पर चरगालादी छाडा। रासमें मालनीपीदी (मागनी देवी चौपरी) और अुनक साथ काम करनेवाली बहनें वापूजीका मिगने

अंकला चलो रे

जाआ। वहनान रास्तेभर मधुर कठस मगल प्रभातिया गाआ। ठक्कर बापा नी बापूजीका लेने आय। बापूजी ठक्करबापासे विनादमें कहन लग क्या आज ता जापका महमान बननवाला हू न? हम दोना बूडे मिल गय ह। दानाकी ठीक जमेगी। और खूब हस।

रास्तेमें हम रामवृष्ण मिश्रके आश्रममें गय। बापा और विसन भाआन सुंदर सुविधाओं कर रखी थी। दरवाज पर ही वहनान आकपक चौक पूरा था। गातिनिकेतनमें शिक्षा पाओ हुआी वहनाक हाथा चौक पूरा जाय ता कमी कस रह सकती है? फिर मालतीदीदीन बापूजीके माय पर निरक करक अगत लगाय गबुनगीत गाया और सप्त बजाया। जाते ही बापूजीन पर धुलवाकर जवाहरलालजीका पत्र पूरा किया। बगलाका पाठ किया। यहा बनिया तयारी थी जिसलिअ मुझ तास तीर पर मालिदा और बायकमका तयारी नहीं करनी पडी। बापूजीक लिअ बूकरमें शाक रखकर सीधी मालिग बी। अजितभाओ बगरा कायनर्ताआन भी खूब काम किया। नहाकर बापूजीन भाजनमें गाक दूध और अक सब लिया।

बापूजीन कपड धोनमें सीभाय माननवाले अजितभाओन आग्रहपूवक बापूजाक कपड धाय। बड-बड सुगिािन आभी बापूजीके कपड धोन और गाप हूअ बरतन माजनमें जीवनका अमूल्य लाभ समतकर यह काम करत ह। बरतन एक प्रज्युअट सुगस्वारी वहनन मन्। मालतीदीदी मुपस वहन लगा नमें तुमग और्षा हाती है। जिसलिअ बापूजी जितन तिन महा रह अनन तिन तुम्ह बापूजीका हमार लायन काम हमें देना ही पडगा। बडी प्रमा ह। अपना लडकी बरवहनरा तिनभर या करक मुत प्यारम मिलाती ह। मर तिन या करकर दही जुगती ह। जबरन् दूध पिगती ह। अन्हान बरग्य नजन भी मुझ गिनाय। बापान अपन रसाडमें मरे लिअ खाना बनवाया था। सानमें दाल चान् गाक रागी और पापड था। बापाके लिजे बिलागाआकी तरफग ग्याअिया भजा गया है।

यग (नाआगागा) आनक बा अर्थात् गगभग तान महीनमें आज गिन तर परका मानि मन खाना गाया। गारर गौन पर बापूजाका माड बार बज नातिपका पानी लिया। गानत समय मन पत्र सुनाय। माड तान बज बापूजान दा पावरे मुरमुरे तीर बाडू गाया। मका चार बज मिट्टी ग। पौन पाच बज प्रायनामें गय।

यहा जा जले हुअे और लुटे हुअे मकान थे अुह प्रायनाके बाद देखा । मयकर दृश्य था । मकानाकी जगह राख और जला हुआ मलबा तथा टीन वगरा पडे हुअे थे । सजीमडीकी दुकानें मस्मीभूत हा गयी थी । बहुत कुछ मलबा अुठा ले गये थे । फिर भी काफी पडा था । फिर सुरेगभाजी यहा जा रात्रिगाला चलान ह अुस देखने गये ।

निमलदाने यहा तम्बू तानकर ही नारी व्यवस्था की है । दो घर ह । जेकमें ता बापा रहत ह और दूसरेमें बापूजी रहते है । प्रेस प्रतिनिधियाने भी तम्बू ही ताने ह ।

नौ बजे बापूजीने अखवार सुने । थाडा लिखा । पीने दम बजे सानेकी तयारी की ।

यहा हफनेभर रहना होगा और दूसरे सहायक ह अिसलिअे मरे जिम्म तो मुख्य मुख्य काम ही करना रहता है । बापूजीका कुठ भी काम करके वृताय हानेका भक्तिपूण भावना यहाके भाजी-बहनामें है ।

हैमबर

२५-२-४७

रातकी तरह प्रायना । प्रायनाके बाद गरम पानी और गह्ल दकर मैं थोडी देर सा गयी । बीस मिनट बाद बापूजाको रम दिया ।

साडे सात बजे याना पर निकलनेके समय घूमने गये । आजी० जेन० अे० वाले श्री देवनाथभाजी दासके साथ छाटी छोटी बालिकाजाने बापूजीका सलामी देकर जयहिन्द किया । आम और ठड हानेस मालिग थाडी दरसे की । साडे नौ बज मालिगके लिअे गये ।

भाजनमें दूध, फण गाक और अेक केला लिया । बाबा (मतीगदावू) आये । दापहरका आजी हुआ डाक मन पत्कर मुनाअी । साडे बारह बजे बापूजाने यह काम करक मालतीबहन और रेणुकाबहनम बातें की ।

तीन बजे यहाके रिलीफ-अफसरने जेक सभा रखी थी अुसमें गये । अफसरका नाम नूरप्रवी है । सभा अक घटेस अधिक् चम्पी । चेमरमेन और दूसरे वक्ताअाने अपन भाषणाका अितना लम्बाया कि हम लोग अूब गये । बापूजीने जा समयना था सा ममथ लिया । परन्तु सभासे अुठ कर जात ता अच्छा न लगता । अिसलिअे समयका मत्पयाग करनेके लिअे अितने गार गुल्में भी थाडा नीद ले ली । सूचीमें दख लिया था कि बापूजाका किसके बाद

अकेला चलो रे

वापना है। अम भाभीका भापण पूरा होनको आया तब मन साचा कि
 वापूजीको जगा दू। लकिन जितनमें वापूजी सुन ही जाग गय। नीच पर
 वापूजीका अगा जवरदस्त काबू है। वापूजीन अपन भापणमें कहा
 मर पास न तो बगला भापा है न बुल्ला आवाज। आपन दवा होगा
 कि जो भापण हुआ व मन सुन परतु माय ही म सो भी लिया।
 यहा जो कुछ कहा गया सा तो हवाभी बातें ह। अिसका किसाना पता
 नहीं कि विमानमें अडकर हम कहा जा सकेंगे। म नभ्रतापूवक अिनना ही
 कहूगा कि जिस बगन नुरत रात मित राक वही काजिय। योजनायें कागज
 पर घरी रह ता अुनका काभी अथ नहीं। हममें अक बरी आतत यह है कि
 हम करते पाया ह और विनापन बटुन करते ह। अिमलिअ जैसी बग बढी
 यात्रनात्रासा विचार करनके बा अन्तमें व कागज पर ही रह जाता ह।
 नुसगान य हाता है कि अिमग हम लागाना आम जननाता विवाय
 गा बटा ह।

हम जा काम कर व आपन निलग पूछार कर। हर काममें हम
 आपन निलग पूछें म पाप ना नरी कर रना हू? अगर नित हा कहे ता पापका
 प्रादचित्त करना चाहिय। जग राममें धूबना नरी चाहिय। धूबना हा तो
 आपन निलग पूछें कि मन यका पूरा य पाप ना नरी हुआ? अगर निल
 का कि पाप हुआ ता प्रादचित्तक रूपमें बना गफाभी कर दें। अिगने
 दूसरा बार यमा न करनका मावधाना अपन-आप जा जायगी।
 दूसर बना करग या कटग अिमना राट लगने हमें बडे ना रटना
 चाहिये। हमें यदि रामगान न्यार्पित करना है ता हमारे प्रत्यक काममें यह
 गाथा ही नरी जा मारता कि दूसर बना कटग। मरार राममा तानकाय
 काम हमें मरकणा ता हा हमारा अग्रति हागा।
 मरा बार बर गमाग वाय अाय। आर वापूजीने ज अौग गृह
 अौग दूय जिना।

प्रापना-जानने अक अतत पूछा गया यदि परलक रिवाज पर
 बरार्थ न अमना जिना जान ता क्या अमा नरी लगता कि अमना निरपारी
 परिवारा अग्रिह रगा हू ?
 बरार्थ — यहा बना य है कि परलका रिवाज मांगा पातक बनक
 है। यहा सब निरपार नित बरार्थ मर पर कदा रग म परतु

गतरस किन्ही पर-पुरुषकी तरफ बुरी नजरसे देखती हा तो यह निरा ढाग है, पावड है। जिसील्लिअे म परदेका विराधी हू। और असे परदेसे स्वास्थ्यकी ष्टिम ता नुकसान हाता ही है। स्त्रियोको हवा और रागनी काफी नहीं मंगती जिसल्लिअे व बीभार रहती ह। परन्तु परदेकी जा मूल भावना है हि सयमकी है। यह सयमरूपी परदा ही सच्चा परदा है।

प्रश्न—आप लोगाको मजदूर बनकर पेट भरतका कहते ह। तब पापार और गिम्बाका काम कौन करेगा? जिसस हमारी मस्त्र्तिका नाग ही हा जायगा?

बापूजी—यह सवाल पूछनेवाले मेरे कहनेका अथ भलीभाति नही समजे । गल्लिअे पीछे रही भावनाका अध्ययन करना चाहिये। केवल गब्दाका नही बड रचना चाहिये। हाथीके मुहवाले गणपतिका देखें ता वह विचित्र प्राणी जाना जायगा। परन्तु प्रतीकके रूपमें वह कल्पना मनुष्यको अूचा अुठाती है।

दस सिरवाला रावण अेक बेवकूफ आदमी लगता है परन्तु असका अथ यह है कि जिम मनुष्यका सारामारका भान नही जो मनुष्य अक वचन पर टिका नही रत्ता क्षण क्षणमें बल्ला करता है और आवेगमें जिधर अुधर मटकता रहता है, वह कजी सिरवाले राक्षसके समान है। मतलब यह है कि जा अेक बात पर कायम नही रहता वह अेक सिरवाला नही है। मरी दृष्टिमें रामाषणमें बताये गये दस सिरवाले रामस रावणका यही अथ है।

दत्तकथाजामें अस गूढ अथ भर ह। मजदूरकी मजदूरीमें गार्गीरिक् थमका विभाग तो है ही। मेरे कहनेका अथ यह है कि हर प्रकारके काम करनेवाले सब लोगका बराबर बतन मिले। वकील, डॉक्टर गिम्ब, भगी—सब अपना-अपना काम ता जरूर धर, मगर अुनका बतन समान हा। असा न हा कि अेक डाक्टरका आठ गौ रुपये मिलें और भगीका आठ आने मिलें। यदि हम समझ ल कि दानाकी सवा अुत्तम है अेकमी है ता फिर दानाका रत्न-सहन क्या अेकगा नही होना चाहिये। यदि सब लोग यह सिद्धांत स्वीकार करव जिम पर जिम अमर करें तो राष्ट्रका ही नहीं बल्कि दुनियाका अुदार हा जाय और ममात्र-अपवस्था मुक्तदायी बन जाय।

विलासतमें मरुवे भगीका पेगा करने वाले बडे बडे नामाकित जिजी-नियर और मराभी गारुत्र निष्णात हाने ह। परन्तु हमारे यहा जब सन आलम्प और जटना नही मिग्री, तब ता कुछ भी हाना मठिन है।

प्रायनामे लौटन पर बापूजीकी नयी यात्राका जो नक्का बाबा लामे ह अम पर चर्चा हुअी। मन सामान अलग निकाल। सारा फालतू सामान बाबाको सोप दिया।

सादे नौ बज बापूजीन भरी पूरी डायरी लेट लटे सुनी। म जो पढ़ रही थी अुसमें रिलीफ-अफसरका नाम नूरनबी लिखा था। जिस पर बापूजीन ध्यान दिलाया कि या तो नूरनबी साहब लिखना चाहिय या नूरनबीजी या नूरनबीभाभी। लिखी हुअी भापा दुबारा पढ़ लेना चाहिय ताकि पता चल जाय कि कही कोअी अनुचित अथवा असम्य बात ता लिखनमें नहा आअी।

रात हो गअी थी जिसलिअ म जल्दी जल्दी डायरी सुना रही थी। तो भी असा सोचकर यह पक्ति बापून दुबारा पढवाअी कि कही सुननेमें भूल तो नही हो रही है और जब यह पक्का कर लिया कि मन कवल नूरनबी लिखा है तब यह भूल मुय समझाअी। बापूजी असे महान गुरु ह।

हैमचर

२६-२-४७

राजकी भाति प्रायना हुअी। गीतापाठ बिसनभाजीन किया। की ओरसे अक छोटीसी पुस्तिकाके रूपमें पत्र मिला है। वह पत्र बापूजीन प्रायनाके वाट मुयस पढवाया। बापूजी कहन लग अक पय दो काज हो जायग। तुम पढ़ लोगी और म सुन लूगा। और तुम्हारा ममझमें न आय वहा समना भी सकूगा।

साट सात बज घननके त्रिअे खाना हुआ। लौटकर स्थानीय कायकर्ता भाअियाम वार्नालाप। अन्तुम्मलाम बहन तथा वनुभाजी आय ह। साट नौ बजे मालिश। मालिशमें बापूजी आध घटा सोप। स्नानादिसे निवटनमें अेन घटा लगा। भाजनमें अक खाखरा गाक और जाठ और दूध लिया। अंधिवाग ममय अन्तुस्मलाम बहन और वनुभाजीसे बातें करनमें ही गया। वीचमें रिनीफ-अफसर नूरनबीभाभी जा ग्य।

दा बज यहाके बाजारमें गयी गअी अक आम सनामें गये। वहाम बातर बापूजीने मिट्टी ली। मिट्टी लेकर थोडा साथ। पौन चार बजस प्रायनामें जान तब ठक्करवापाके साथ वार्ने का। साढ चार बजे प्रायनामें गय। प्रायना-नभामें कहा

“हममें मनुष्यता हो तो हमें छोटा-छोटी बातके लिये सरकार पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। अुदाहरणाय कोसी रास्ता माफ रखना हो, मुझे अपना गाव प्यारा हा और गावकी मुघडता अच्छी लगती हा ता मुझे स्वय वह रास्ता साफ रखना चाहिये। जहा-तहा अनजाने भी यूकना नहीं चाहिये। कूडा-ककट अुसकी जगह पर ही ढाला जाना चाहिये। जस अनेक काम मेवाके पडे ह। अिसमें जवाहरलालजी सरदार या जिन्ना साहबका पूछने जानेकी बात घाडे ही हो सकती है? दहातका मदि सुखी बनाना है ता ग्राम-सन्नायने स्थापित करक गान्ति और महकारस अपने मल-बुरेकी जिम्मेगारी हमें समाज लेनी चाहिये।

“जिस मनुष्यकी स्वाय-यागकी अिच्छा अपना जानिस आगे नहा बढनी वह अपने-आपको जीर अपनी जातिका स्वार्थी बना दता है। परन्तु मघ पूछा जाय तो स्वाय-यागकी अिच्छाका परिणाम यह हाना चाहिय कि व्यक्ति अपनी जातिके लिये सबस्वका त्याग कर जिलेकी सवाक लिये जानिका त्याग कर प्रान्तकी भवाके लिये जिलेका त्याग करे और प्रान्तसे आगे बढकर राष्ट्रका सवा करे। समुद्रक अयाह पानीसे जेक बूद अलग हा जाती है ता वह किसी काममें नहा आनी और सूख जाती है। परन्तु जब वह बूद महामागरका जेक अग बनती है तब अुस पर बडे बडे जहाज तरत ह।

मन्ची स्वतन्त्रतास बना हुआ हिन्दुस्तान अुमका पडामा राज्य जगर सक्त्में आ फग ता अवय्य अुमको मन्च दगा। अफगानिस्तान, लका और दमाका ही अुदाहरण लीजिये। पडोमीका मन्च करनका नियम अिन तीना पर भी लागू हागा। अिस प्रकार ये त्तग जिन जिन गेगाकी महायता करगे व सव हिन्दुस्तानक पडामी बनेंगे। अिस तरह जगा मने कहा व्यक्ति अगर समग्रक माय त्याग करेगा ता वह समस्त मानव-जातिका अपनी सवाक क्षेत्रमें अवय्य ममा लेगा।

प्रायनाक बाल बापूना घूम। गामका अक ओंग गुड आठ ओम दूय और फल गिये। आज बापूनाक ९० तार टूरे। घूमकर राजका भानि अगधार गुने। अशागुभात्री विमनभात्री और अणुम्भनाम सहनक माय बाने की। मैं पर दवा रही थी तब की बात परस बापूनीने मुझे अक सँदानिक बात कही।

जब अपना दाप जैसे-तैसे हटानका प्रयत्न करती है तब
 भुसकी गिनती झूठमें हाती है। परन्तु सब कुछ शुरू भुसीने कराया है। वह
 सवाभावी है परन्तु उसे सच झूठकी समझ नहीं है। असी हालतमें मनुष्यका
 बोझ भी काम चमकता नहीं। अिसीलिज के अपवास मरी दष्टिस नहीं
 चमके। यह अिन अवगुणाका निश्चित परिणाम है। मनुष्यका हमगा स्पष्ट
 रहना चाहिय। अपनी भूलका सूक्ष्मदर्शक यत्रने देखना सीखना चाहिये
 और दूसरेकी भूलको पहाड परस देखना चाहिय। यदि यह नियम अपना लें तो
 हम हजारों पापामे बच जाय। जो अपन प्रति सच्चा हो उसे किसका
 डर हो सकता है? मनुष्यका सबसे पहले अपन प्रति सच्चा बनना चाहिये

भयसे या बहुत बार किसी लाभके लोभसे या दोष छिपानेकी वृत्तिसे
 झूठ बोलनके अवसर आने ह। परन्तु जो दोष करना ही न चाहता हा भुसके
 लिजे छिपानको होगा ही क्या? और जो उसे मनुष्य हाते ह वं कभी काभी
 भूल हो जाय तो भुसके निवारणक लिज अपनी भूलको प्रगट कर देनेकी वीरता
 दिखाते ह और भुसमे मुक्ति प्राप्त कर लेते ह। अिसीलिजे ता मने बल
 लिखा कि यदि कोआ दाप दिखाओ दता हो तो भुसे जाहिर कर
 दो। अिसका परिणाम दोना पक्षाके लिज लाभदायक ही हाता है। अिससे
 दापका मल धुल जाता है और हम साफ हो जाते ह। और हमारी आत्मा
 हृदय और चहरेका तेज पहले जसा ही चमकता है।

प्रामाणिक और शुद्ध हेतुसे अपने अत करणको साधी रखकर काम
 करत रहनवालेकी प्रभु अवश्य सहायता करता है। अिसका म महा अनुभव
 कर रहा ह। बडम बड तूफान भी असे निष्ठावानका स्पदा नहीं कर सकते।
 सच्चे और दढ व्यक्तिका हृत्प-बल कस भी तूफानके सामन कभी डीला नहीं
 पडता। अम समय दिखनवागे असफलता भी सफलता ही होती है। अिसस
 अमपन्ता या सफलता दाना स्थितियामें ससार पर आगीबदि ही जुतरता है।
 यट म अनुभव करता ह अिसीलिज कहता ह कि प्रभु यहां मरी मदद कर
 रहा है अिसमें मय जरा भी गका नहा है।

विहार जानकी बात साफ नहा हो पानी अिमलिज टलती रहती है।
 रातका म बागके पास बठी। बुद्धे कुठ पन पन्कर सुनाये। कुछ पत्र
 मुननके वाट व कहन लग कुछ बातें स्वस् मिलनेम जितनी समझमें
 आती हैं अुतनी पत्रसि समझमें नहीं आती। बापूजीक साय मने जो बातें आज
 की अुनक अनुभवसे यह कहता ह। पत्र-व्यवहारमे कितनी ही गलतपद्मिया बड

जाती ह। आज बापूजीके साथ हुआ आय घटेकी बानोंसे और तुम्हारे यहाक निवाससे जा कुछ प्रत्यक्ष देख रहा हू अम परमे मेरा मन बहुत हल्का हो गया है। बापूको कभी कभी पत्र-व्यवहारम समझना बडा कठिन हाता है।

बापाके पाससे आओ तब बापूजी सो गये थे। म भी तुरन्त सो गओ।

हेमचर

२७-२-४७

नियमानुसार प्रायना हुआ। प्रायनाके बाद बात करने आओ। परन्तु बापूजीने बगला पाठके बीचमें बातें करनेसे अिनकार कर दिया। घूमने हुअे के साथ बातें की। बापूजीने साफ कह दिया कि तुम अिम समय विलकुल बदल गओ हो और झूठ वाल रही हो। यह बात नाट कर लनेको बापूजीने मुखमे कहा। बापूजी पर बडी नाराज हुआ। बापूजा बोले 'अिसकी कोओ परवाह नहा। जो सच मालूम हो वह म न कहू तो कौन कहेगा?' सच बात कहनेका मेरा धम हो जाता है।

साढे आठसे ग्यारह तक मालिंग स्नानादिका क्रम चला। भोजनमें दूध गाव और अेक केला लिया। आज बापूजी जेक बजे सो सके। फिर अम्तुम्मलाम बहनने खादी-सम्बन्धी जो लेख लिखा था उसे देखा। दो बजे नारियलका पानी पिया। साढे तीन बजे सुषाबहन सेन आओ। अुन्हाने अपनी अहिमाकी परेगानी बताओ ता बापूजीने सुन्दर अुत्तर दिया रामनाम रूपी तलवार लाहकी तलवारम कहीं ज्यादा मजबूत है। फिर जाता। आजके ७५ तार हुअे।

साढे तीन बजकर दस मिनट पर फजलुलहक साहब आये। किसीने अुन्हें कनेरके फूडाका हार पहनाया और फाटोप्राफरने अुन्हें खडा रखकर पहले अुनका फोटो लिया। तेज धूप और गरमी थी। अुनका शरीर बहुत मोटा था और बठना तो बापूजीकी शापडीमें ही था। म बापूजी पर पखा झल रहा थी। बापूजीने मुने मूचना का कि अुनको भी पखेकी हवा मिल सक असा धुमाओ। अुस मुखाये हुअे हारके कारण निकलनेवाले पसीनेकी तरफ अितनी गभीर बानामें भा बापूजीका ध्यान गया। हार अुतार दनकी सूचना की तभी हक साहबने अुनारा।

सवा चार बजे तक मुलाकात चली। अुनके साथ प्रो० महमद अजीमुद्दीन, मुहम्मद सिराजुल अिस्लाम और नूरेजमान मिया थे। बापूजीने

खरी खरी सुनाभी। अिन लागाक जानक बाण थाड मुरमुर वीर
अक आसके लगभग गुड-पपडीरा टुकडा लिया।

आजकी हमारी प्रायना दगावे त्तिनामें वरवाण हुआ अक मन्त्रिसे
मवानमें हुजी। आजका प्रायना प्रवचन कल्क प्रवचनक आधार पर ही था।
मनुष्य अपन पडासियाकी और मानव-जातिकी सेवा जवसाय कर
सकता है अिस सत्यका म निश्चित रूपमें मानता हू। परन्तु मन यह है कि
पन्नासीकी सेवा निजी स्वाय साधनके हेतुमे न की जाय। अर्थात् सवन जो
सेवा करे अुसमें किसीस अनुचित लाभ न जठाय अपन सेवाकायमें विगाका
भी गोपण न करे। असी सेवा हाती देखकर लग अवस्य अुसकी जार
आकपित हाग और अुसकी छन अुह जरर लगगी। असा हां ता वह
सेवाकाय पन्ते पलते सारी दुनियाको अपन क्षत्रम समा लेगा। अिसस यह
सिद्धात निकल सकता है कि दूसराकी बात छाडकर अपन घरका कुम्बकी
और सबस नजदीक रहनवाले पडासियाकी सेवा की जाय। स्वल्गीकी
भावनाका यही जय है।

मेरा मिान ता लागामें सच्ची हिम्मत पन् करके अुहें बहादुर बनाना
है। आप लोग यदि अपन मनमें रहनवाले डरका निकाल डालेंगे ता आपको
काअी डरा नही सकेगा। मुसलमान जब देखेंगे कि आप निडर और माहवी
बन गय ह तो व खुद आपके मित्र बन जायेंगे। सच्ची बहादुरी तत्रवार
हाथमें लेकर सामनवालेको मारनकी कुशलतामें नही है परतु मानव मानवका
दुस्मन किसलिअ हो सकता है यह हकीकत जाननमें सच्ची बहादुरी है।

अुद्यागीकरण पर बापूजीन कहा अमरीका अिस वकन अुद्यागामें
दुनियाका सबसे आग बडा हुआ देश माना जाता है। फिर भी अुस दशमें
गरीबीका मनुष्यको भ्रष्ट करनवाली बुरी आदताका और बुराअियाका नाश
नहां हो पाया है। अिसका कारण यह है कि मनुष्यमात्रमें रहनवागी शक्तिका
अुपयाग करनक बजाय वहा अपार धन कमा लनवाल बटूत थोड व्यक्तिपाके
हाथमें सत्ता अकत्रित हो गजी है। अुससा परिणाम यह हुआ कि
अमरीकाका अुद्योगीकरण वहाकी गरीब जनताके लिअ और ससारके शप
भागके लिअ भी बहुत खतरनाक हो गया है।

परन्तु हिन्दुस्तानको यदि जिनसे वचना हो तो अुसे पश्चिमके दशामें
जा कुछ अच्छ तरव हा जुह अपनाता हागा वीर आकपक हाते हुजे भी

पदिचमकी नाग करनेवाली आर्थिक नीतिसे दूर रहना हागा। देशके कच्चे मालका निकास करके बादमें तयार हानेवाली चीजें हम बेहद रुपया देकर खरीदते ह। अिमने स्थान पर भारतके ४० करोड लोगकी शक्तिको सगठित करके अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयाग किया जाय और व्यवस्थित रूपमें गाव गावमें कच्चा माल बाटकर अुसका पक्का माल वहीं तयार किया जाय तो देशका धन दगमें रह और किर्मीको अस दगे-फसाद करनेकी फुरमत न मिने। मेरी रायमें अिसीमें सच्चा आर्थिक नियोजन समाया हुआ है।

प्रायनाके बाद लगभग डेड दो घटे लगानार डाक लिखवाओ। नी बजकर पचीस मिनटके बाद अखवार सुने। बातें करते करते आज बापूजी दस बने सोये।

हैमचर

२८-२-४७

राजकी तरह प्रायना। प्रायनाके बाद क साथ बाँने की। अमा लगता है कि की भूलस बापूजीको दुख हुआ है। ने बापूजीके पास जाकर अपनी भूल जाननी चाही। अिस पर बापूजाने अपने विचार प्रगट किये और कहा ने यह जानना चाहा कि अुसकी भूल कहा है। मुने आश्चय हुआ। दुःख हुआ। दुःख अपने पर होना चाहिये था। मुने सदेह हुआ। अगर मने भूल का है ता अुसका प्रारम्भ अुसकी प्रेरणासे हुआ। यह मन्देह मने अुसके सामने रखा और दा किस्से सुनाये। और अब यह भूल लगती हा तो यह स्पष्ट लिखाजी देता है कि अिसमें का ही दीप है।'

बापूजीका हृदय जितना विगाल है कि प्रत्येक कायमें दूसराकी भूले स्पष्ट दिखाओ देत हुअे भी व अपनी ही भूल मानत हैं।

निमल्ला तो यह देखकर बहुत माराज हा गये। मुयसे कहने लगे, ये लाग देशत हैं कि गाधीजी अिस समय चलती हुजी भट्टीमें पडे ह फिर भी ये विचार क्या नहा करत? मगर बाटमें हसत हमन बाऊ, अिम वूटेकी यही सूबी है कि अुसकी दष्टिमें काओी बात या कोओी चीन बेकार नही, छाटी नहा है। अिमोलिअ व दगके अद्वितीय नेता ह। धम ता गाधाजीके बराबर पडे लिखे आदमी देशमें बहुत ह गाधीजीस दीवनेमें बहुत रुपवान मनुष्य भी हैं। परन्तु गाधानीमें आ विगालताकी गक्ति है वह अनुपम है।'

अमा लगता है कि बिहार जातका बेक-न्ना निनमें ही तय हा जायगा। सुधीरदा (सुधीरबाबू धाप) का धूमने जानसे पहल गुमेच्छाका तार किया।

अकला चलो रे

बापूजीका सुबहका प्रम हमेशा बगलाका पाठ करनेका होता है। वह आज के साय बातें करनेमें बल गया। यह बापूजीका अच्छा नहा लगा। घूम कर लौटने पर सबसे पहले बीस मिनट तक बगला लिखी।

बापूमें मालिश स्नान वगैरा हुआ। और सब छोड़ दिया। बिहारकी और स्नान किया हुआ अक सेब लिया। और सब बापूजी कुछ गभीर विचारामें डूब गया ह। मुझ तो यह डर लगता है कि बापूजी कहीं अपवासका या बोधी बातमें और आजके प्रसंगते बापूजी कुछ गभीर विचारामें डूब और कडा कर्म न भुजा ल। सुशीलावहन प और सतीशबाबू आय ह। अहान नबी यात्राका नक्का बताया।

कातत समय बिहारम डा० सयद महमूद साहबके निजी मंत्री मुस्तफा साहब आय। अहान बिहारकी करण और भयकर रिपोर्ट पढकर सुनाओ। अुम रिपोर्टमें स्त्रियो पर जो अयाचार हुआ है अुस पढते पढते मुस्तफा साहब रो पड। बापूजीका चेहरा गभीर था परन्तु हृदयमें जो बन्ना हो रही थी अुसका प्रतिबिम्ब चेहरे पर स्पष्ट दिखाओ देता था। अिममें काफ़री भी गरीब थ। खूब मारकाट हुआ। लडकिया पर अुमे अयाचारका पार ही नहीं था।

हिन्दुआन बिहारमें य कागी करतूतों की अितस बापूजीके हृदयमें असह्य बदना हा रही थी। बापूजीन जस० डी० ओ० साहबक मारफत बिहारक मुख्यमंत्रीको तार किया कि म आ सकता ह या नहीं? क्याकि य मारी बातें व आला देतना चाहते थ। बापूजीकी सम्यता भी निराली ही है। यद्यपि बिहारक मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह अुनर परम भक्त और पुरान साथी ह तो भी बापूजी कहन ग बिना अिजाजत लिये म बिहार नहीं जा सकता। यन्ि यहा आनक लिअ सह्रावदी साहबकी अिजाजत लेना जरूरी था ता वहा जानक लिअ भी वहाक मुख्यमंत्रीनी अनुमति मुअ अवय लेनी चाहिय। जा नियम साधारण लागू पर लागू हाता है वह मुझ पर भी लागू हाता चाहिय न?

मन बना परन्तु हर बातमें तो वे लाग आपकी सलाह लेने ह आपको ही पूर्य मानत ह अपना बुजुग समझन ह। बापूजा बोले अिमन क्या? परन्तु आज अुनर पन्व कारण यह गपना हमें अवय लिमाना चाहिय। निजी व्यवहार चाहे जसा रखें परन्तु गानून ता सबर अिअे अवसा हा हाता है। अना है बापूजीका याय।

लगभग तीन बजे बापूजी स्थानीय कापकर्ताओंकी सभामें गये। वही मिट्टी ली। चार बजे नारियलवा पानी पिया। आज अन्न बिल्कुल नहीं खाया।

प्रायना-सभामें यहाँके नमाशूद्रासे बापूजीने शिक्षाके बारेमें कहा, 'आप लोगामें पताओके लिये जो बेपरवाही पायी जाती है, उसके लिये अूचे वगने हिन्दू ही कसूरवार हैं। हिन्दू समाजने जान-बूझकर आपको अुठने नहा दिया। परन्तु अब आपको खुद ही यह खयाल मिटा देना चाहिये कि आपकी जाति नीची है। तभी आप अूचे अुठेंगे।

आज दूसरी बात जो कहनी है वह बिहारके विषयमें है। मुचे सभाचार मिले ह कि बिहारके हिन्दुआने असे अत्याचार किये ह जा त्रिपुरा और नोआखालीके अयाचारोका भुला देते ह। मेरा यह खयाल था कि यहा बठे बठे म बिहारका काम कर सकूगा। परन्तु डा० सयद महमूदके मनी मुस्तफा साहब अभी मेरे पास अनुका पत्र लेकर आये थे। अनुके पत्रमें लिखा है कि 'अगर आप आयेंगे ता आपकी अपस्थितिमें यहाकी स्थिति बहुत सुधरेगी और मुसलमानाका विश्वास हो जायगा कि आपको जितना दद हिन्दुअके लिये है अतना ही मुसलमानाके लिये भी है। अिमलिये आज मने जमरी तार देकर पुछवाया है। नोआखाली और त्रिपुराकी पदल यात्रा थोडे समयके लिये मुलतवी करनी पडेगी। आप सबसे विनती करता हू कि मरी गैर-हाजिरीमें आप सब भाभी भाओकी तरह रह। म बाहर जाअूगा, मगर मेरा दिल तो आपके पास ही हागा।

अिसमें जरा भी शक नहीं कि अब अंग्रेज भारत छोडकर चले जायेंगे। अब भारतवासियोंके (भारतमें रहनेवाले सभी जातियोंके लागव — तमाम दानके लोगके) मेलजालमे रहनेका निश्चय करनेका समय आ गया है। जसा नहीं हागा ता भारत आपसकी भयकर लडाओकी आपत्तमें फम जायगा और हम अखड भारतके टुकडे टुकडे कर डालेंगे। अिसमे किमीका भी लाभ नहीं हागा। मसारमें हम हसीके पात्र न बनें, अिसका गभीरतापूर्वक विचार करना प्रत्येक भारतीयका धम है। आप सब अिस पर विचार कीजिये।"

बापूजीने धूमते धूमते कहा दोपहर तक ता त्रिपुराका कायत्रम तयार हुआ था। परन्तु रातमें जसे रामजीके राज्याभिषेककी तयारिया हो रही थी और सबरे अूह अेकाअेक वनमें जाना पडा वसा ही मेरे सबपमें भी हा गया है।"

धूमत समय राग्नमें जल दूध पर दग। आतर कुछ भी नगी गाना। मुग्गा माहव कहा सायें बुहान बना गापा यगराव बारमें बापूजीन स्वय पूछाछ की और सारी व्यवस्था कराभी। प्रायना प्रवचन लगा। एग स्वामीजीग पत्र लिखबाद। रागन गाइ स्वाग्न बज गजनन पट्ट बापूजाते कहा तुम अपनी तपारीमें रहना। सागात जग गत हा गत अराम बन कर दना और मां गकर गतीगवाबूक।

हैमचर

१-३-४७ रनिवार

बापूजी आज पीत चार बज जुठ गय। माना जरी। बाग्में वा जगानर भुनक साय चातें की। बापूजीन दानारा अपना अगना धम समयाते हुअे कहा यति मुसमें विवाग हा ता यहां (नाआगाजमें) स्थिरता रखकर काम करो। फिर जहता नहा आनी चाहिय मनकी सचत्ता भी नहा हानी चाहिये। यति अमा न कर गवा मुसमें दाय पाते हा ता मेरा त्याग कर दो। मेरी बात बग्नकी दकिन अब गनम हा गभी है।

मवरेकी प्रायनाब बाल गहन और गरम पानी लिया। बाग्में अन प्रासवा रत पिया। हुनरभाआते रजाभुरहमान असाती साहबकी और हुमराका बुदुमें जा पत्र लिखवाये थुन पर बुदुमें दस्तवत बिय।

धूमते बकन अब अनापाथम गगन गय। जात-जाते डड़ घटा लगा। पीने दा बजे लोटे। मालिगमें धाडी देर बापूजी सो गय। अच्छा हुआ कपारि आज बहुत जल्दी खुटे थ। विहारकी स्थिति बिगड रही है। अभी ता पट्टनाम कोअी समाचार नही आय। स्नानपरमें बापूजी बाले, जवाब आय या न आये, तुम तयार रहना। कल ता निकरता ही पडगा। चीनीस घट हो जान पर भी बिहारस कोअी अुतर नही मिला यह बापूजाको अच्छा नही लगा।

दापहरको बापूजीके लिअे और हमारी मडलाके लिअे रास्तवा खाना बनाया। बापूजीके लिअे खाखरे और गुड-मपडी बनाजी। हमारे लिअे तारि यलने तेलका मात टारकर अलग खाखरे बनाप। दोपहरका लगभग सारा समय अिमीमें चला गया। आज भी बापूजीन गाक दूध और फल ही लिय। बापाक साध चातें की। दो बज रामकृष्ण मिशनवाल आये थ। साडे तीनसे चार तक काता। बाग्में मिट्टी ली।

प्राथना-सभामें जा रहे थे कि सामनेसे मृदुलाबहनको आते दखा।
बुनके साथ विदेगासे चार विद्यार्थी आये ह।

मृदुलाबहन पंडितजीका, खानसाहबका और दिल्लीके दूसरे बहुतसे
पत्र लायी ह। वहाकी बहुतमी नजी नजी बातें भी जाननेको मिली।
प्राथनाके बाद लगभग सारे समय अन्हीके साथ बातें की।

बनुभाभी अपने गाव गये। गामको वापूजीने जेक केला और दूध
लिया। रातको तो मुलाकाती अेकके बाद अेक आते ही रहे। बिमेनभाभीने
और मने रातको दर तक सामान बाधा। अन्हाने और अजितभाभीने बेहद
मदद दी। निमलदा भी अपने काममें मगगूल थे। अुह तो अितना काम
रहता है कि रात और दिनका फक ही नहीं रह जाता।

वापूजीका पौन भागका काम वे ही निबटा देते ह। रातका साढे
ग्यारह तक मुलाकातियाकी भीडमें बठे रहे। अब आयेगे प्रेम रिपोटर। म
अपनी यह डायरी अन्हीके तम्बूमें बैठकर लिख रही ह। सामान भी
ज्यादानर तम्बूमें हा बाधा जिसस वापूजीको आवाज न सुनायी दे।

अब वारह बजे ह। सोने जाती ह।

हैमचर

२-३-४७

बल रातका बाबा (सनीगवावू) आये थे। म और वापूजा तो हमारे
कमरेमें लालटेन बुझाकर गहरी नादमें सो गये थे। लगभग साढे वारह
हुअे हागे। मैं भी थक गयी थी। मुचे नाये काअी आध घटा ही हुआ हागा
परन्तु आधी रात जसा लगता था। बाबाने वापूजीकी मच्छरदानी छाकर
अुहें जगाया। दाना बातें करत थे, अिमलिअे म अेकाअेक जुठ बठी। मुझे
डर लगा कि रातका मरा दरस मोना वापूजीका अच्छा न लगा हा, अिमलिअे
स्वय अुठकर दातुन-पाना कर लिया हागा और प्राथना भा कर ली हागी।
अिमलिअे जसतम खडी हा गयी। दातुन लने गयी ता वापूजी हमकर कहने
लगे कि 'अभी समय नहीं हुआ। दातुनमें दर है। तुम सा जाआ।' म नाममें
थी अिमलिअे और किमी बातमें न ग्य कर मा गयी। बाबा कर गये
अिसका मुचे पना नहीं। परन्तु रात तक बिहारसे काअी ममाचार नहा
आये अिमलिअे बल कपा करना हागा, यह जाननक लिअे दास आथ थे।

रोजकी तरह प्राथना हुआ। बादमें बगलाका पाठ। बापाके रसोअियका हस्ताभर करके दिये और अुमस पाच रूप्य लिय। प्यारेलालजीक नाम पत्र लिखा। आन दोपहरका दो बज जाना तय हुआ। मालिन और स्नानके बाद मृदुलाबहन तथा बापाके साथ बातें की। बापाक साथ भोजन करते समय भी बहुत बातें की। भोजनमें अक खाखरा गाक जीर दूध लिया।

आज बापूजीका मन कुछ हल्का मालूम होता है क्यकि विहारके बारमें कुछ तय कर सके और सबका स्पष्ट मुता सब। अिस प्रकार हृदयमें जो भरा था सो खाली कर लिया। बापूजीके दान करन जानवाले लोगस सब जगह भर गयी थी। अजितभाओकी विहार चलनकी बडी अिच्छा है। परन्तु बापूजीन यही रहकर काम करनका आदग लिया।

मन साठ बारह बज सारा सामान गिनकर बनल जीवनसिंहजीको सौपा। छोट बड सब मिलकर बीस नग हुआ। मेरे साथ जो सामान है अुसमें स बापूजीके कागजाका बस्ता पानीकी बोतल थूकदानी बगरा चीजें थलेमें ही रखी ह। नोआखालीका टोप चरखा खानक बरतनोवागी बेंतकी छाटीसी पेटी अक छोटासा विस्तर और लाठीके सिवा बाकी सब कुछ जाग रवाना कर दिया।

[चादपुर पहुंचनके बाद]

जानसे पहले म बापासे अिजाजत लेने गयी। अहान मुझसे अक पत्र लिखवाया। प्रणाम किया तो मुझे मीठा

आनीवाट लिया तुम बापूजीकी जिस ढगन सेवा कर रही हो अुसमे म बडा प्रसन्न हुआ ह। तुमन बडा पुण्य काय किया है। जीस्वर तुम्ह मुक्वी रख। तुम्हारे दान अमृतलालभाओ ता बड बलिया आदमी थ। मेरे और अुनक बीच बडा मीठा सबध था जब हम नवी बदरमें साथ रहते थ। जयमुखलाउ जुम समय बहुत छोट थ। तुम्हारे दादा अितन पवित्र मनुष्य थ कि अुह यात्र करके हम पावन हा सकते ह।

बापा आससि अछी तरह काम नहीं कर सनत अिसलिअ मुझसे बहन तय समय हा तो मय तुमन अक पत्र लिखवाना है। रवाना हानमें दम ही मिनट बाकी थ। परन्तु जल्दी पत्र था अिसलिअ जल्दी जल्दीमें लिखवाया। अुसकी नकल मुझे दी।

फिर म और ठक्करवापा बापूजीके पास गये। बापा और बापूजीके मिलनका और बिदाओका दृश्य बड़ा पवित्र मालूम होता था। बापाका यह कल्पना ही नहीं थी कि बापूजीको इस प्रकार अचानक बिदा देनी पड़ेगी। परन्तु हमारे अेक सप्ताह यहाँ रहनेसे बापा बहुत खुश हुआ और दोना अेक-दूसरेके अनेक कामाको समय सके। अतमें सभीका इससे सतोप हुआ।

बापूजीने हैमचरमें ही कात लिया था। मिट्टी तयार करके साथ ले ली।

ठीक दस बजकर दस मिनट पर हम जीप गाडीमें चादपुरके लिअे रवाना हुआ। वहनाने बापूका तित्क लगाया और गकुन किया। हमें दही-चीनी खिलाओी। हमारी जीपमें अितने आदमी थे—बापूजी मुडुलाबहन, चाह्ला, देवभाओी और म। बापूजी आध घटा जीपमें बठे बठे सो लिये। रास्तेमें अेक नदी पार करनेके लिअे नावमें बठना पडा। जीपगाडी भी पार अुतारी गओी।

यहाँ हम ठीक ३-४० पर पहुँचे। गावाकी गतिसे शहरकी अगतिमें आ गये। थोडा पदल चलकर बाबू हरदयाल नागवे यहाँ गये। यहाँ बापूजी इसी घरमें आजसे बीम बप पहले भी आये थे। बापूजी कहने लगे 'जब तो घरमें कुछ परिवतन मागूम होता है।' अपार भीड थी। भीडमें स चलकर घर तक पहुँचनेमें दस मिनट लगे। आकर हाथ-मुह धोकर नारि यलका पानी पिया। सरदार जावनमिहजी लगाकी भीडको काफी सभाल रहे थे चित्ला चित्लाकर अुन्हाने अपना गला बठा लिया था।

मुडुलाबहन तो अपने स्वभावके अनुसार खूब मन्द करनेमें लग गओी। मुपमे बोली 'किसी भी प्रकारसे बापूजीको तकलीफ नहीं हानी चाहिये। किसी भी चीजकी जरूरत हा ता मुझे कह देना। बापूजीने अुनसे खानसाहब और दूसरे लोगाको पत्र लिखवाये। आखा और मिर पर मिट्टीकी पट्टा ला। महाकी व्यवस्था सुन्दर है। आज रातको नौ बजे गाआल्दो जानेवाले स्टीमरमें बठना है।

नाआम्वालीमें लगभग पचासम अधिक गावामें पदल यात्रा की। अब सवारीमें यात्रा गुरु हुआ।

बापूजी साढे चार बजे अुठे। प्रापनामें जानेको रवाना हुआ। मोटरमें न जाकर बापूजीने पल ही जाना पमन्द किया जिसस लोगाका भी सतोप

हो। दोनों तरफ वाडन किया गया था। अब तरफ मृदुलाबहनका सहारा था और दूसरी तरफ म थी। स्त्रिया अपन घराकी छत परसे जच्छ अच्छ कपडे पहनकर फूल और चावलकी वर्षा कर रही थी। कही कही गडुनका शखनात हा रहा था। सारा सडक फूलामे छा गजी थी।

सभाम बहुत गोरगुल था। पहन वापूजीन रामधुन गुरु करनको कहा। अिसके बाद कुछ शांति हुआ और सारी प्रायना कराओ। चिल्ला बेल्लाकर गलेनभाओकी आवाज भी बठ गओ था। अिसलिअ मुझे अकेले प्रायना करानी पडी। गलेनभाओ अ० पी० आओ के रिपोटर ह परतु गारी मडलीके सदस्य हो गय ह। वस सारे प्रस रिपोटर और हम सब म्नी जस हा गय ह। परन्तु गलेनभाओ प्रायनामें बडी मदद देते ह।

प्रायनामें गाति रखनका अनुरोध करनके बाद वापूजीने कहा म मे भी बडी सभाआमें गया हूँ और वहा मन सपूण गाति पाओ है। गगला नहीं वाल सकता अिसका मुव दुख है। परन्तु तौटूगा तब आगा रखता हू कि बगला बोल सकूगा।

चादपुर मेरे लिअ नजी जगह नहीं है। जब अलीभाओ और बाबू हरदयाल नाग जिन्दा थ तब म पहले पहल आया था। अक ओर यहा दुवारा आनस ह्य होता है दूसरी ओर दुख होता है। जब म देहातमें यात्रा कर रहा था तब लोग रो रहे थ बड दुखी थे। परन्तु रोनस कुछ नहीं होगा। सबको अस मागस ही जाना है। यह बाबू हरदयाल नागकी भूमि है। व जो काम कर गय जुमसे प्ररणा लेकर हम वसा ही काम कर तभी हमारा जीना साधक है। म चादपुर क्या आया? मेरी यात्राके दो हिस्म पूरे हा चुक थ। तीसरा हिस्सा गुरु होनको था कि डा० सयन महमूँ माहबके मत्री आय और जुन्हान मुझ बिहार जानका आन्देश लिया। अिसलिअ आज वहा जा रहा हू।

जस किमी हिन्दूके मरन पर मुझ सग भाओके मरनका दुख हाता है वस ही किमी मुसलमानक मरन पर भी मुझ जुतना ही दुख हाता है। हम सब अक ओश्वरके वालन ह। अिसलिअ म नोआखाती और त्रिपुरा जिलामें घूमा। जब तक गाति कायम नहा हा जायगी तब तक न तो मैं चन टूंगा और न दूसराको लन टूंगा। भले म अकेला ही रह जाऊ ता भी चिल्लाता रहूंगा।

“विहारमें मेरी कुछ चलती है। जिसलिखे आगा रक्ता हू कि बहावा काम जन्दी पूरा करके महा आ जाऊगा। परन्तु जिस बीच आप अिकदालकी जिस कविताका सच साबित करके दिना दीजिये मजहब नहीं मिनाता आपसमें बैर करना। हिन्दी है हम बतन है हिन्दास्ता हमार।

प्राथनाम लौटकर बापूजीके लिखे घरकी बहाने बकरीक दूधका जा मूँग आग्रहपूर्वक बनाया था वह लिया। अिन बहनाकी अिच्छा थी कि बापूजाक खानेकी थाली वे ले जाय। जिसलिखे अेक छाटी लडकीका मने तयार करके द दी। वही आठ औंस दूध अर और यह मदग ले आजा। बहनाकी अिच्छा थी कि बापूजी अुनके बरतनामें खाय। बापूजीने बसा ही किया।

बापूजी बहुत ही थक गये थे।

अचानक अेक स्पगल स्टीमर आ पहुचा जिसलिखे महुलाबहनने अुमीमें जानेका प्रवष किया। यह बडा अच्छा हुआ नहीं ता पसेंजर स्टीमरमें जाना पडता। अुम हालतमें बापूजीका मानेकी मुविधा नहीं मिलता।

बापूजीका मौन गुरु हो गया। रातका आठ बजे बापूजीकी अर्तिम वस्तुअें महुलाबहनको सौंपी। बापूजीका मच्छराका मरहम मल कर सार सामानक साथ मैं स्टीमर पर गयी। कबिनमें बापूजीका विस्तर करके रातकी दानुन बगरा अुपयोगी चीअें रखा।

बापूजी मृत्युबहनके साथ दम बजे स्टीमर पर आये। कबिनमें थाडा लिखकर बनन जीवनमिहजीके माय खूब धाने की। बिना करने आनेवालामें चाना और बनन जीवनमिहजीके माय करीब अगात्री महीनेका साथ हानेके कारण हम सबका कुटुम्ब जमा प्रेम हा गया था। सब गद्गद हा गये। ग्यारह बज सब गये। स्टीमर चगा। साडे ग्यारह बजे बापू मा पाये। खूब थक गय थे। निरमें तेल मगा। पैर दबाये और प्रणाम किया। बहुत दिना बाद बापूजाने आज खूब जोरकी धप लगायी। बिठठीमें लिखा

हैमबरमें बारा तुम पर बडे खुग हुआ। मुपमे कह रहे थे। परन्तु मतोपका बात यह हुआ कि हफ्तमर अुनके माय रहनेस म बापाका काफा ममगा सका और अुन्हाने अपनी कुछ मायनायें छाड दी। व ता महायागी है। अति नम्र मनुष्य ह। तुमने देना कि अुन्हाने अितने दिनमें कबल अेक हा लिन मरा थोडा ममय लिया। आम तौर पर वे मेरा समय लेने आत ही नहीं थे। अुनकर असा

अंकला चलो रे

काम है। बुनकी जाटका दूसरा आत्मी नहीं है। भूल मात्रम हा जाय तो तुरत सुधार लत ह। बुसमें अह दर ही नहा लगनी। तुम बुनकी कुछ सेवा कर सकी यह मुझ अच्छा लगा। अमीलि मन तुम्ह प्रोत्साहन लिया था। तुम्हारी दो लिनकी डायरी दफ्त रह गयी है। असे यही रस देना। प्रायनाके बाद सुबह पत्र टूगा। आजकी यह डायरी स्टीमरमें साठ बारह बजे पूरी कर रही हू। बापूजीके पर दवाकर मच्छरदानी बन की। बत्ती और कबिन बन करके बाहर बठकर अपनी दिन भरकी डायरी पूरी की। साठ चार बजे तककी चाणपुरमें लिखी थी। बापूकी चादपुरमे गाआलदा आने हुअे स्टीमरमें पूरी की। आज बापूजीके ८८ तार हुआ।

चाणपुरसे गाआलदो जानवाले स्टीमरमें
३-३-४७

अभी-अभी दातुन-पानीसे निवटकर रोजकी भाति प्रायना की। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। म रस निवालने गयी असे बीच बापूजीन बगलाका पाठ किया और फिर अपना डाकका काम गुरू किया। बापूजी पत्र लिखनमें अितने मशगूल थ कि म रस हायमें लेकर दस मिनट खडी रही परन्तु बुनका ध्यान नहीं गया। आज मौन भी है। अन्तमें मन दो बार पुकारा और हायमें गिलास दिया तब हसकर पिया। फिर अपना काम गुरू कर दिया। और पत्र लिखते लिखत ही सो गय।

बापूजी लेटे ह। म अपनी डायरी लिख रही हू। रात अच्छी बीती। यात्रा गान्त है। सामन सुंदर किनारा लिखाजी दे रहा है। सवरेके सवा सात बज ह। बापूजी साठे सात बज अुठ। घूमन निकले। म और बापूजी डक पर चक्कर काट रहे थ। बापूजीका मौन था। बहुत तेज चल रहे थ। थोडी दरमें प्रेम प्रतिनिधि जा हमारे माथ सफर कर रहे ह गलनभाजी और दूमरे लोग आय। निमलदा भी देख गय। सामनसे जब स्टीमर महात्मा गाधीकी जय क नार लगाता हुआ हमारे साथ हो गया। जब बडी नदीमें अिम प्रकार दो स्टीमर चल रहे थ। हमारे स्टीमरक कप्तानने मुसक कहा नि अुमक मसाफिर खास तौर पर बापूजीक दशन करनको ही यात्रा कर रहे ह। बापूजीन वहा खड रहकर सामनवाल स्टीमरके मुसाफिराकी हाय जाडकर प्रणाम किया। मूयदेव अुग रहे थ और बुनकी सुनहरी

त्यों सीधी बापूजीके तेजस्वी चेहरे पर पड रही थी। विनारा अत्यन्त भाव था। और नदी गान्तिमे कल-कल करती टूजी बह रही थी। उस आवरणमें बापूजी सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरका हाथ जाडकर सडे ह और उन मुसाफिराने स्टीमरका जयनाम्ने गुजा दिया। मुनाफिराने उनतापूवक बापूजीको प्रणाम किया।

आज पर नहीं घाने थे। बापूजीने का पत्र पूरा किया अिननी रमें मैने मालिग और स्नानकी त्तयारी की। दस बजे नहा-धाकर निवत्त न। बापूजाने भोजनमें गाक, अेक खाखरा और बकरीके दूधके बजाय लका बनाकर रखा हुआ सन्ने लिया। दूध महा नहीं मिलता। ग्यारह वि मूलावहन वाने करने आयीं। मैं बापूजीके कपडे धगरा जमाने और गान चगी गयी। फिर जा सामान निकाला था अुस ठीक किया। अित्तमें अक बज गया। अेक बजे बापूजीके पडू पर मिट्टी रखी। पैरामें घी मला। बापूजाने आराम लेन हूअे बगला वालपोयी पूरी की। दो बजे अुठकर नारियलका पानी पिया।

हम ठीक अडाअी बजे गाआल्दा पहुचे।

स्नान पर बहुत आदमी आये थे। बारीक रत खूब तप रही थी और गरमा भा लग रही थी। ट्रेनमें आये तो वहा डिब्बेमें काकासाहब बठ हूअे थे। बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीकी बैठकका बन्दोवस्त करके हम हाथ-हाथ सामान ले आये। तीन बजे गाडी चली। बापूजी और काकासाहब बातमें लगे। आज मौन दिन था। अिमलिअे लिखकर बातें करते थे। सांने चार बने दो काजू दो वादाम और दो खाखरे लाये। बापूजीने बातें अचूरी रमा और खाकर आन्वामें बहुत जलन होनेके कारण मिट्टीकी पट्टा रखकर ना गये। मैं तो सामान निकालने और रखनेमें ही लगी रही।

साठ बजे मौन गुला। पुराने मारे प्रेस प्रतिनिधि बापूजीसे मिलने आन। क्वाकि अिस नअी स्थितिमें नोजाखानीमें जा प्रेम प्रतिनिधि बापूजीके साथ यात्रा करते थे अुहें क्वाचित् अुनक अधिकारी बापूजीके साथ अब न ना गये। प्रापनाक वाअ अक प्रेस प्रतिनिधियाने अतिम बार गन्गद कउसे अेबला चलो र' नजन गाया। सबकी आत्तामें पानी भर आया। प्रापनाके वाअ बापूजीने फिर काकासाहबक साथ बातें की। आराम किया। नौ पचास पर हम मान्पुर आये। आकर बापूजीका विस्तर किया। वे हाथ मट धाकर स्वस्य हूअे सबसे मिले और लगभग साडे ग्यारहके बाद सोये।

अकला घलो रे

म खूब थक गयी थी। जिसलिअे बापूजीके सोनवे बापू बुनवे सिरमें तेल मलकर और पर दवाकर नहायी। सामान मिलाया। सुनहकी तयारी की। बापूजीके लिअ दातुनकी कूची बनायी। यह फुटकर काम निबटाकर डायरी पूरी की। थक गयी थी जिसलिअ भोजन नहीं किया। अब अंक बजनमें दस मिनट बाकी ह। सोन जाती हू। निमलन अभी तक जाग रहे ह। बुनका काम तो रातको दर तक चलता रहता है।

सादी प्रतिष्ठान,
सोन्पुर (बल्कता)

४-३-४७

रोजकी तरह प्रायनाके लिअ बुठ। म कब सोयी आदि पूछताछ करके बापूजी कहन लग ह मन नोआखाली छोड तो नहीं दिया परन्तु अब यात्रायें दूसरी तरहकी होगी। गायद काम बढ़ेगा। परन्तु जो नियम नोआखालीमें पालन किय जाते थ बुनमें फक नहीं पडना चाहिय। यह यज्ञ अब नोआखाली तक ही सीमित नहीं रहेगा। अब तो जब तक दोना जातियामें पूरा भाओचारा न पदा हो जाय हममें मानवता न आ जाय तब तक मुझ निरतर करना है या मरना है। अत मेरा और तुम्हारा तप जितना गुद्व होगा बुतना असर जिस काय पर बुसका अवश्य होगा। बिहारका काम नाआखालीस ज्याग कठिन साबित हो तो मुझे अचभा नहीं होगा क्याकि कभी-कभी जब अपने आत्मी भूल कर बठते ह तब बुसे सुधारना बहुत कठिन हो जाता है। बिहारकी रिपोर्ट देखते हुअ मुझ लगता है कि नोआखालीकी अपना बिहारका मरा काम ज्यादा मुश्किल होगा ज्यादा बढ जायगा। जिसलिअे तुम्हें बहुत सावधानी रखनी है। तुम अपना खाना-पीना आराम नियमानुसार घूमना सभी कुछ नोआखाली जसा नियमित रखोगी तो ही मुझ सताप होगा। कल रात म देरस सोयी जिसलिअ प्रात काल पौने चार बज ही चेतवनी दी ताकि जिस नय परिवतनसे म अनियमित न बन जाऊ। प्रायनाके बापू मेरी डायरी देखी। बापूजीको गरम पानी और शहद दकर म रस निवालन गयी। जिम् बीच बुन्हाने अपना बगला पाठ लिखा। आज तो वे बगला बालना सीख रहे थे। म रस लेकर आयी तो मुझसे बगलामें पूछा तोमार नाम की? (तुम्हारा नाम क्या है?) और खूब हसे। बापूजीको दस तक अब लिपना अच्छी तरह आ गया है।

साढे सात बजे नित्यकी भाति घूमने गये। दूसरी बहनें लाठी' बनने-वाली थी, जिसलिये मैं घूमने नहीं गयी। मुझे काम भी था। परन्तु यह बापूजीको बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। पर घोंटे समय थुलाहना दिया, 'भर तुम मेरी लाठी न बननी। लेकिन जिससे क्या? तुम्हें घूमना न छोडना चाहिये। तुम्हारा घूमना भी मेरी दूसरी सेवाका एक भाग है। जिसलिये आज तुम नहीं घूमा, जिसका मुझे दुःख है। मैं खुश होऊंगा यदि आज तुम मालिगसे छुट्टी ले लो और अतनी दूर घूम लो।

मने कहा, मालिगस छुट्टी लेना तो मुझे अच्छा नहा लगेगा।

बापूजी कहने लगे ता मैं कमोड पर जाऊ तब एक बार दौड लेना। अुससे भी पूरा तो नहीं, कुछ सतोप हा जायगा। परन्तु बिल्कुल न घूमना तो पाप है।

मने बापूजीके कहे अनुसार दौड लगा ली। बापूजी नियमितता पर अितना ध्यान देते हैं।

पौने नौ बजे गहीद सुहरावर्दी साहब — यहाके मुख्यमन्त्री — आये। लगभग सवा दस बजे गये। जिससे मालिगमें बहुत देर हा गयी और मालिग अच्छी तरह नहीं हो पायी। सुहरावर्दी साहब अपनी ही बातें करते रहे। बापूजीका बोलने ही नहीं देने थे। जबरदस्त आदमी ह। बापूजीको भी लगा कि वे गोलगोल बातें कर रहे ह, मुद्देकी बात नहीं करते। बापूजी कहने लगे ओस्वरने सोचा होगा वही होगा।

बारह बजे स्नान बगरा पूरा हुआ। भोजनमें चाक, दूध और फलामें घाडे अगूर लिये। और कुछ नहीं लिया। भोजन करते हुअे काकासाहबस बातें की।

दशनाथियाकी अपार भीड थी। मेरा नहाना घोना ठेठ दो बजे पूरा हुआ। अठासी बजे डा० कुलरजन बाबू (प्राकृतिक चिकित्सक) आये। बापूजीके कानमें कुछ बहरापन-या लगता है। अुसे मिटानेके लिये एक विणेश प्रकारका स्पज करनेका तरीका अुन्हाने मुझे बताया।

फिर बापूजीन घाड पत्र लिखे अपनी डायरी लिखी। कल रात मैं देरस सोयी थी जिस पर बापूजीने लिखा

मनुडीके बारमें। अभी तक अुसकी बालबुद्धि नहीं गयी। प्रौड बननेकी बहुत ज़रूरत है। मुझे तो आगा है कि घोंडे

ही समयमें प्रौढ़ हो जायगी। बहुत भारी है। मरी गूब उवा करती है।
 बुसमें तल्लीन हो गयी है। परन्तु माने-मान और मानका ध्यान नहीं
 रखती। बुसका धारीर बिगड़ता है यह मुझ राखना है। कम
 मुझ काफी सताप दे रही है।

मन जब यह नाथ दग्नी तब यह साचकर मुझ बड़ा आचप हुआ
 कि बापूजी कितना घाँ रमत ह! मन अुनगे बड़ा भित डायरीमें आगन
 मेरे विषयमें जा लिखा है वट मुझ पग नहा है। क्याकि आगती डायरी
 तो सन लोग पढ़ेंगे।

बापूजी वाल श्रिससे क्या हा गया? हम जस हा बने ही गिगाभी
 दें तो ही जीवनमें आग बड़ सकते ह। मानगी नामका घाँ ही तुम्ह
 मनम निवाल देना चाहिय। हमन बाभी चोरी घाँ ही की है कि मानगी
 रखें? म चुप हो गयी।

शामको प्राथनासे पहले बापूने दूध और फल लिय। प्राथनामें जानस
 पहले मने सारा सामान गिनकर टुकामें हावडा स्टेशन पर खाना कराया।

शामको प्राथनामें भारी भीड थी। प्राथना-सभामें बापूजीन समझाया
 कि वे बिहार क्या जा रहे ह और लोगासे भाभीचारा बढानका अनुरोध
 किया। प्राथनाके बाद दसेक मिनट घूमे।

ठीक साढ़े सात बजे हम सोनपुरसे खाना हुआ। हावडा स्टेशन पर
 बापूजीके दानाके लिअे जो अपार भीड आभी थी अुसक बारेमें तो क्या
 लिखू? मानव-समुद्र ही अुमड आया था। और फाटोप्राफराका तो टिड्डील
 ही निकल आया था। प्रकास आलें चौधिया जाती थी। परन्तु अुन लागावे
 प्रेमके कारण यह कठिनायी सहती ही पडी। जिस बीच बापूजीन अपना
 घघा—हरिजन पण अिकटठा करनेका—गुरू कर दिया। बापूजीके हायमें
 पसे रुपय आने दो जान चार जान और नोटाका खासा डर हो गया।
 सब लोग बापूजीके हायमें ही देते थ। हममें स बोभी हाय फलाता तो
 शायद ही कोभी देते व। खूब रेजगारी गिनतको हो गयी है। बल पटनामें
 गिन लगी। जिस समय (रातके दस बज) यह डायरी बदवान स्टेशन
 पर पूरी कर रही ह। बापूजी सो रहे ह। लग निमलदाके समझानस
 शातिपूर्वक बापूजीका दशन कर रहे ह।

बापू-मेरी मा

लेखिका मनुबहन गांधी

जिस पुस्तकके लेखके बारेमें श्री विशोरलाल मंगरूवाला लिखते हैं 'अिनका महत्त्व यह है कि ये पूज्य गांधीजीके स्वभाव और आखिरी दिनाके कामा पर अच्छी तरहसे रोगनी डालत है।"

कीमत ० ६२

डाकखच ० १९

फलकत्तेका चमत्कार

लेखिका मनुबहन गांधी

भारतकी आजादीके बाद कलकत्तेमें भडक बुढनेवाले साम्प्रदायिक दंगेकी भीषण आगकी गांधीजीने जिस चमत्कारी ढंगसे शांत किया जिसका वणन जिस डायरीमें है। बलवत्ता आनेसे पहले की हुजी बुनकी काश्मीर-यात्राका वणन भी जिसमें शामिल है। बुस समयके गांधीजीके जीवनकी प्रतिनिधीकी षाकी और बुनका गहरा मतामधन हमें जिस अधिवृत्त डायरीमें मिलता है।

कीमत १००

डाकखच ० ३०

बा और बापूकी शीतल छायामें

लेखिका मनुबहन गांधी

१९४२ म १९४५ के बीच लेखिकाको बा और बापूके माय रहन हुअे जो तालीम और शिक्षण मिला बुसका चित्र जिसमें प्रस्तुत किया गया है। बा और बापूके परस्पर सबध और गहस्प-जीवनकी विरल शाकी भी जिसमें पाठकाको मिलेगी।

कीमत २५०

डाकखच ० ८५

नवश्रीवन ट्रस्ट अहमदाबाद-१४